



ন ব্ৰহ্মজন আন্দীয়ালে বিভিন্ন নিৰ্দালনা দক্ষমসূত্ৰী সংগ্ৰহণ কৰে হয় সংগ্ৰহণ কৰিব ব ব্ৰহণি ব্ৰহ্মীৰ বাৰ্ক্ত আৰু সমান নিৰ্দাণ সংগ্ৰহণক নিৰ্দালনা কৰিব লগতে প্ৰস্তুত্বি প্ৰতিবাহিত কৰিব ইয়া বাৰ্কাহন কৰিব আৰু মান্ত্ৰী কৰিব কৰি ভাৰৱন্ত্ৰী স্কুলৰ বিশ্বসাধান কৰে সন্তুত্ব স্থানিত আৰু সংস্কৃতি কৰিব সংগ্ৰহণ কৰিব বিশ্বসাধান কৰিব স্থানিত কৰিব

শশ্বের মহিনা।

खगान सिय।

ক্ষা চকুল নার আমাদিধের

কানের ও পাম কোনলকারী প্রক্রিণ কান্দান

কামাদিধের অবঁণ ক্রিয়া সক্ষা

কামাদিধের অবঁণ ক্রিয়া ক্ষা

কামাদিধের অবঁশ করিয়াছেল,

ক্লাহার কামান তাই। সমান্ কপে অবগ্রুত্ব

ক্রেমান্ত আমান তাই। সমান্ কপে অবগ্রুত্ব

ক্রেমান্ত আমান তাই। সমান্ কপে অবগ্রুত্ব

ক্রেমান্ত আমান তাই। সমান্ কপে অবগ্রুত্ব

ক্রেমান্ত মানান্তঃ কর্নের

অক্রেমান্ত মক্ষা

ক্রেমান্ত মানান্তঃ ক্রেমান্ত

ক্রেমান্ত মক্ষা

ক্রেমান্ত মানান্তঃ ক্রেমান্ত

ক্রে

কর্ণ একটি অপুর যন্ত্র, জনসীক্ষয় ক্র প্রকে এমনি অপুর কৌশলে নির্দাণ করি-গ্লাছেন, যে তকারা আমরা অনায়ালে স-কল প্রকার শব্দ জ্ঞান বালে করিতে নুমর্থ হই। আমাদিধের কর্ণ কুছর মধ্যে যে কোন প্রকার শব্দ করিছা হয় আমরা তব-কর্মক ডাছা অনুভব্ধ করিছা হয় আমরা তব-কর্মক ডাছা অনুভব্ধ করিছা পারি। প্রকারিয়া হয়, ক্রিয়ায়র ডিলিয়াক্র ইবপ্রিয়ায়র ডিলিয়াক্র एस छाए। अवार्धि दक्ष्ट् शतिकात के लिया चित्र द द्विएक शारतम बार्ट, छोटा चित्रविष्क ভारिता (नेशिटल दिण्यहाशिक **इटेंटल एक**) कर्रात नाम का कुछ आन्। रख दक्क भरनदक्क কম্পনা ক্রিতে পারে না। প্রথেম্বর্ মনি সকলে চনৎকার পদার্থের সংখেতি कट्नीत काना किशादक्त नायुक् कार्यक्रिक मनि प्रभूका जरून अमन क्षिकारकन है ভন্দারা কোন, প্রকার শক্ত আর অনুত্র क्हें (ड व्यापक) यादक मा। (य व डि क्र वर्णसित्राह चार्यक्षा मन्न ज्वसंद **स्ट्राह्य** बार्ण भर्तीका करिया (नर्ग, रम जाद केंग्र-লীপটের অপাত্তকলা ফীভননা **করিয়া** काम करशरे निव्रष्ट था किएए शास्त्र मा। প্ৰভিড্গৰ দেখিয়াছেন, যে কোন বালা যক্ত काहे त्यम शृहक त्हान गता कार्या कार्य या पिटनेय रेन पुरा महत्वादा सीय वर्डि यक बाक्क करते, यामामिरणह मतीत वह नसंख्य भूप्रदेश त्नहें दर्ग निम्पट क्रिश ७३ व्यवस्थिता सम्ब रहम ₁ कर्¶त क्रेक्स कोलस स ar effet na can to page and arthur निष्या गाम्

ত্রপত্র করে উংগতি হয়। সেই রপ কর্ বংশা কোর প্রকার পাদিত বার প্রবিষ্ট বংশা ভারের গঠনের কৌশলামুদারে ত-বারায় করেব শাদ জানের অনুভব হয়।

कर्रांत यञास्ता । का यस ममून (य अ-ा কটি শ্লান্ডিয়া অবয়ৰ আছে, তাহা**তে পর**-নেশর চমংকার টোশস প্রকাশ করিয়া-(छन। एका भेट्टर ले चक्रिके मामानाफः कर्न कुरत पार्थ १ कारतत है। प्र विलेश छे छ इत। अभिने पर दि गेल पृथक् पृथक् त्यामना-चित्र महा भएन अस्त ब्रेकान स्वाहरू या-বরণ ক্ষিয়া। উজ ক্ষেত্ররচনা ক্রিয়।ছেন। में इत्करण कान अकात भक्त मश्चाद रहेरन ভংক্তাৎ ঐ অধি চহুটার এক কালে স্পা-নিন্ত চয় এবং ঐ জীছির অপর প্রাশুস্থিত क्षवात्री भारवं स्मरे अस मधा लंड इरेग्रा मस्तिक छेन्नीड क्षेत्राहर नफ छाटनत উৎপত্তি হয়। বে ত্বক্ চারা কর্ণ কুৎরের রহনা করিয়াছেত, ভাছা এত স্থান যে হয়ি অস্তৃতি তুল্বাকার পশুর, শরীর ভিন্ন মনু-' ব্যাদি অনা কোন জী। জন্মর করে তাই। कुक्टे इंग्रना। विश्व साम्बर्गा वह स्य व-अत स्था परिष्ठ वास् व्यक्ति हरेया भ-ক্ষের উৎপত্তি হয়। কর্ণ কুইয় ক্যোন সা-भोगा भाग विवासक जास गाव छेना भाषात শ্যায় আবর্তন বিশিষ্ট, কর্ণের বাহিরে ও **শভ্যন্তরে যে সমস্ত অর্থার দেখিতে পাওয়া** यात्र जाहात अद्योध भिवर्षक नाहर छाहाता সকলেই আমাদিগের শক্ত জানের অন্ত কুল-काष्ट्रका कतिया भारक, उत्पर्धा अकृषि स्वत-वदवत्र अन्तर्व इत्रेक्त समामिद्यत स्वयं। या ध्रमात सम्मत स्थातमाम स्ट्रेट नीरि व ना । दशन मिन्स कि हिन्दू का शिहि वर्षा वर्षा दक्षण शकात प्रशासामा वर क-राहा पाँच प्रचीतः नाटक शास्त्रशास्त्रशास्त्र रह कि कर् कुरत गरश दकान मक प्रमन व्यक्तिक रह ते क्रिक्न वाह

कार्या केराव राहित (क्या क्रम्पकात (क) क्रिकेस्य जन्मा होति कार्य क्रिके (क्रिके क्रिकेस्य जन्मा क्रिकेस्य क्रिकेस्य क्रिकेस्य

कृष्टि स्त्र मा। कर्त्त्र अनिस्तृत्त्रेष्ठ गक्ति खराहे जामहा गर्स क्षकात व्यवन देश नाज করি। ঘর্ষন কোন উভয় বস্তু পরস্পত্ব প্র-তিহত হরুরা শদের উৎপত্তি হয় তথা ঐ वश्व बर्गत क्षित्रियां काता यठ छिन वाहरी य भन्नमाप म्यानिस्ट इस उटछानि अधक् भूक भरकत छेर्थ पिछ रहेता शादक निकेस यामा কৰ্ণেতে কথন কোন কায়ণ জনিত শব্দকেই বিচ্ছিন্ন ও বিভিন্ন আবণ করি না, যে কোন কারণে শব্দের উৎপত্তি ইউক, আমরা তাহা সর্বাদাই অবিচ্ছিন একস্বর কলে অবণ করি: अनंश्या शत्यान् विशिष्ठं बीवः नि रख रहेट्ड যে শব্দ নিৰ্গত হয় তাহা কথন এক নহে। তাহাও অসংখা, दिख आमता आमानित्यत व्यवस्थितित अक्रिक्टम वे व्यवस्था मस्मृत সমষ্টিকে এক শ্রিয়া প্রতায় করি। জগ দীশ্বর আমাদিগেও শ্রবণেক্রিয়েতে উলিখিত ক্রপ আশ্চর্য্য শক্তি প্রদান করিয়াছেন ব-निसारे आमता (वन् वीवापि स्थावा वामा যত্রের শক্তকে মার জ্ঞান করিয়া আনন্দিত स्रे विभिन्न विद्याती एतत विकास कृष्णत मः ম্মেন্ন মঞ্জীত প্রধণ করিয়া অভুল স্থপ লাভ कति अवर बसूबा कर्र भिन्य छ छान्धर्य। म धूत निकी दृष्टीयने कतिहा छिन्डटक विरमामयुक्त করিতে পারি। আমরা যদি প্রত্যেক প্র तमात् ममुध्यतं गक् माद्यक् खटख बत्ध অমুভব করিতে পারিতাম, তাহা হইলে कान चत ७ कान मन्द्रिकामानिका करन मनूत्र विविद्या श्राचीत्रमान- हरेड मा, भागता এনন অপৰূপ অবগ স্থাৰে এক কালে বঞ্চিত रहेजाम।

आमामिकात मश्रकत छेल्ल शार्ष छ-सन्न कर्ग मश्रकाविक आष्ट्र, किन्छ आमामि-सन्न ताम मिक्किन मण्डू स् शुक्काद खरूबि इत्र या निर्देश स्थ क्ष्यता मास्यत छेरुभवि इत्र आमता छर्रकाद छाइ। स्वरंग क्षित्व क्ष्य स्ट्री । इकाम निर्देश स्वरंग क्ष्यत्व क्ष्या क्ष्य स्ट्री । इकाम निर्देश स्वरंग क्ष्यत्व क्ष्या क्ष्य स्ट्री । इकाम निर्देश स्वरंग क्ष्या क्ष्य स्ट्री स्थाप क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या स्ट्री स्थाप क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या स्थाप क्ष्या क प्रतिक क्तिएक साहित मा, दिस्स कारात स्त्रीत मेंशुक्त गडिन, त्व खाहा अक शादन दिव बा-क्षिण मन्द्रका नम अद्य क्रिंडिंग शास्त्र। আমাদিবের চকু বারা আমরা প্রচাৎ হিত त्य दर्गन दिसम् अठाक कतिहरू ना भारत, आहा आमाहित्सत अवदर्शिक्ततंत्र बाति म-भूकुछ इस् ि सम शहरमंत्र क्रमा जगरीयत सन्दर्शस्त्रितात अवन्ति माज धर कतिया क्लास মূরেম নাই, সন্ধুষ্য স্বথন ফর্ণপথ দিয়া কো-ন শক এবং করিতে না পারে, তথ্য সে মুখ নালেন করিলেও কিঞ্ছিৎ শক্ত আবৃধ ক-विटक शादत, ग्रंदशंत मधा फिश्रा व्यवदर्गक्ति-েও কেটি কুত্ৰ পথ আছে, আনেকে স্তুন্দর কংশ কোন বিষয় জা**ভি পৌচর** ফরিবার কনা শাবণ কালে মুখ বিস্তার করিয়া যদি অক্সাৎ কোন কারণ ৰশত: আবণেজিয়ের বহি**ৰ্দেশস্থ প্ৰশ**ত প্ৰ मुक्त विकास मास, जाहा इहेरलक ब्लाटक এক কালে অবশ্বস্থো বঞ্চিত হয় দা য়-ংক অভ্যান্ত্রীয় পথ যারা শক্তের কিঞিৎ অমুক্তৰ হয়। আমাদিগের আকণ শক্তি ষাদৃশ তেজস্বিনী হটলে আমরা সম্পূর্ণ ৰূপে সুখা হইতে পারি ফরণাকর কিম্পি-তা ভাষাকে ডক্রপ করিয়াই রচনা করিয়া-ट्रिन। अवर्राधित देश अस्थिक ममिक কলবান্ হইলে আনেক স্থার আমাদিগের कर्त करोत ७ कर्तम सीय रहेड धरेर किश्विक प्रवेश रहेत्व व बाबत परिक नक আবণ করিতে না পাইয়া বিশদত ইইতাম।

ক্রণাময় জগদীখন আমাদিগের আব-শেক্তির কর্ণের সহিত পদের বে কি অন্ত্রুত্র সম্বন্ধ নিগজ করিয়াছেল, ভাষা এক মুখে বর্ণন করিয়া শেব করা যায় লা। কোন প্র-কার স্বস্থা করিয়া কেনির আমরা তাহাতে কর্ণপাত না করিয়া কেনির আন্দেশ করিছে আকিছে পারি না ক্রমের উৎপত্তি হই-লে আমাদিপ্রের মন আস্থান হাইতে ভা-হাতে কড়িত হাইতে মাজে। আন্দেশে ও আর্থন ক্রমের প্রক্রিক ক্রমের সম্বাদ্ধি ক্রমের প্রক্রিক ক্রমের সম্বাদ্ধি ক্রমের প্রক্রিক ক্রমের

राष्ट्रि नावव स्ट्या स्थाप परे के बर्ग किय कांत्रका काराज सम्बद्ध वक प्राक्त-सामा स कात करा कराव्य भावन्य काल्य रहा चीत्र कर्शनिःचंड एशनेश नकींड कार्या कार्ना अदात है ५ करे तात्रत अरीकात कांग्रस. क्षतर दकार दकाम मधी उ निशुन बादिक अ भन वारतीकिक शास्त्रक विमान्दल महल में-মুষ্যকে উন্নত্ত কলিতে পারিত। **সঙ্গীতের** সংখ্যাহিনী শক্তি প্ৰভাৱে পাৰাণ **দ্ৰীভূত** इंडमा, मृङ जीविद एदमा, जिक्सार क्षाहर व्यक्षित उद्भवि हुए। जन्द द्वेषित व्यक्ति ৰ্ডাৰ হওৱা ইত্যাদি সেনেক প্ৰকার **অৰ্ডাৰ** ব্যাপার সম্পন্ন ইইবার জনশাভিত্তালয়ে, अवर समाप्ति **जात्रक जाताप ल्यादक काहा** সতা বলিয়া বিশ্বাস খার**"।** এরা**রুতিক** নিয়ন বিফ্ল এই সমস্ত উৎকট বৰ্ন কোন প্রকারে সভা এ সম্ভব হুইতে পারে মাঞ্জা यांच्य हेराट्ड रकान निकाम ऋशिन कार्निस्छ পারা যার না, কিন্তু সঞ্চাতের **যোহ**নী শক্তি ছায়া *অকৃত্ প্রভাবে যে সকল ইটনা* যটিয়া থাকে, তাহা প্রতাক্ষ করিলেও ল-কলকে বিস্মাপন হ*ইছে* হয় এবং ভা**ছা** অলৌকিক ঐক্তসালিক ভিন্নাবৎ প্র**ভীত** হয়। কোন ব্যক্তির বেণ্ডুর **অংগ করিয়া** প্রান্থর মধ্যে গো, তথ্য প্রভৃতি পশু দিগকৈ এ হয় ভিমুখে থাবিত হটুতে দেখা পিয়া-ভেগা। স্কীতপ্রিয় ব্রুজ্জাতি যে **স্কার্** বংশীক্ষরে আকৃতি হইলা ব্যাপ কর্ত্তক্ত হয়, ইছা অনেকেই অবগত আছেন। আ मा (भे . जटमर्टन द्विष होत ्वामा कृतिशा विके রস্থ ভুঅসংকে ধৃত ভ্রিটে দেখা বার্ল্লবি প্ধর ভুক্ত জাতিকেও যে অগদীয়াই স্থ-दाम्या मनोट द्रम भारमग्र **सहित्मही क्रिक्र**ि (धन, डाराट्ड कि मात सरसङ्ख्या ना-भुक्ति। मान (थमारेवात मम् এक ध कार ओर्पाजिक किया बाह्य में जिल्लांटक नार्ग

Parance is different a significant of the second se

ছাবে, আরব দেশীর নশিকের বর্ধন আঁক্রি-কার প্রশাস প্রশাস সক্ষী অতিক্রম করির। দেশান্তরে বালিতা করিতে যাতা করে তথ কালে তাহানিগের পণ্যভারবাহী উই স-কল কুং নিপানায় আছ হইলে উই চাল-কেরা এড প্রকার গাণ করিয়া ঐ সকল প্র-রিআন ৬ ভারাক্রাশ উট্টের পথআতি দুর করে।

ডেনমার্কস্বুপতি চতুর্থ হেনিরি একদা मश्रीरतत भाजि भंदीका कर्नार्थ हेक्ट्रक इट्रेग्ना धक वर्षक शायकरक चारमण व ति-लान, '' य द्वि च्यकीश मजी हालाश चाता महक मञ्जूषादक छेत्रछ कतिरात व गर्य कत्, তাহা অদা অমান প্রত্যক্ষ দেখাও "। গা-युक् इाकाद এই चारमगासूनारत अमनि **অপুর্ব্ব স**্কীত আরেম্ব করিল, যে তৎশ্রারণে भी ब्राक्टा श्रवः घटाजन ७ উग्राम् अन्य हरेग्रा পড়িলেন এবং উন্মন্ত হুইয়া নিক্টস্ত চারি পাঁচ ব্যক্তির প্রাণ নফী করিলেন গা কা-**ন্দ** রাজ্যে একবার এক ব্যক্তি উন্মন্ত কোন लारकत आकर्या दीना वाना आवन कतिया मीर्य कारमञ्जूषाम द्वात श्रृष्टेर ज्याद्वाता লাভ করিয়াছিল 🜓 সঙ্গীতের অদ্ভত মোহিনী শক্তির এই ৰূপ অনেক উদাহরণ প্রাপ্ত হওয়া যায়। কলতঃ করুণানিধান বি-শশিতা যে শব্দের মহিত ভারণেক্রিয়ের অ-নির্বেচনীয় সম্বন্ধ নিবন্ধ করিয়। আপনার মহিমারাশি প্রকাশ করিয়াছেন ভাহাতে আর কোন সনেহ নাই। তিনি কেবল আমাদিণের বিপদসারাও স্থথ বিস্তারের উদ্দৈশে অসংখ্য প্রেকার মধুর স্বরের সৃষ্টি ক্রিয়াছেন এবং তাছা সন্ত্রোগ ক্রিবার बना बामानिनरंक वह बाक्या खरलिस्य প্রদান করিয়াছেন। কোকিল প্রভৃতি যে े किन स्रवेद विश्व कुरनत भान व्यवन क-রিজল স্থার সঞার হয়, তাহারা অবস্থা विटमारम ७ अङ् विटमटय लाकालरमञ्ज मनि-কট ব্যাগমন করিয়া স্থাবেত গান করিতে शांक - १वर जानक मुख्य शकी कान थ-কার সম্পত্ত সর অবণ করিলে ভাহাতে चीत चत्र भिक्षिक कृतिया विद्यान विद्याप

क्षात्री चार्तना मत्या त्य कृतन त्वान वसू-(वात वान बारक, अनुव विरुष्ट कुन धार्मना হইতে সেই ছলে সমাগত ইইয়া গান করে। অনেক ভ্রমণ কারি লোকে পক্ষী বিশেষকে সন্দর্শন করিয়া সন্নিহিত লোকালয় জানি-তে পারে। একজন প্রসিদ্ধ এছ কার । বাজ করেন যে তিনি একদা রাশীয়া রাশ্যা-মুৰ্বভৌ কোন কানন মধ্যে অন্যান চুই শত याजन श्रथ श्रयां हैन कतियां लाकानरम् নিক্ট ভিন্ন আরু কোন স্থলে পক্ষী জাতি जम्मर्भन कर्तन नाई। आत अक जन अ-মণ কারী শুব্যক্ত করিয়াছেন,যে তিনি কোন সময় কোন স্থানে ভ্রমণ করিতে করিছে কোন মনুবালয় না পাইয়া কুৎ পিপানার মৃতক প্রত্যাছিলেন, অনস্তর এক দল শুক প্রত্থী সন্দর্শন করিয়া তাহাদিগের প-স্চাৎবন্তী হওয়াতে ক্রমে লোকা**ল**য় প্রা**প** হইয়া প্রাণ দান পাইলেন। এই **রূপ অ**-নৈক প্রকার পক্ষির আচার দুকৌ বোধ হয় যে জগদীশ্বর যেন আমাদিগের আবণেজি-মের তঞ্জি সাধন করিবার উ**দ্দেশেই সমস্ত** স্থানুর স্বরের কৃষ্টি করিয়াছেন। তিনি আমাদিগকে ভারণেক্রিয় প্রদান করিয়া বৃদি শকের স্ফিনা করিতেন তাহা হইলেও উহা নির্থক হইত এবং সমস্ত শব্দ **স্ক**ন করিয়া তাহা অহণ করিবার ইজির রচনা মা করিলেও তাঁহার শব্দ রচনা বিকল হ-ইত।

পরমেশ্বর আমাদিপের এই এক শ্রাক্ত প্রদান করিয়া যে কি পর্যান্ত মঞ্চল বিবান করিয়াছেন তাকা কন্ত কীর্ত্তন করিব। প্রবণ শক্তি আমাদিপের অনব ক্রথের হেতু এবং অশেষ প্রকার ছংখ নিবারশের উপায়। বিশেষতঃ প্রবংগিলেরের রারা মন্ত্রা আতির বাদুল উপকার দলে বংসার মধ্যে আর কোন প্রবি প্রকার দলে বংসার মধ্যে আর কোন প্রবি প্রকার কলে বংসার মধ্যে আর কোন প্রবি প্রকার কলে বংসার মধ্যে আর কোন প্রবি প্রকার করে আতি প্রবাণ করিয়া জানি গ্রের ক্রাক্তির মুক্ত প্রবাণ করিয়া জানি গ্রের ক্রাক্তির মুক্ত ক্রান্ত রাক্তির স্বাক্তির স্বাক্তির ক্রান্ত করের আন্তর্গান করের ক্রাক্তির স্বাক্তির স্

W. de f t. Vight. Camphan de fi Veja. পথাতীত দুৱৰতী বিপদ বাৰ্তা অবগত হ-ইয়া কত সময় সাবধান ও সতৰ্ক হইতে পারে এবং অক্স হইলেও কেবল শক্ষ জ্ঞান-দারা আপন আল্লীর গণের পরিচয় লাভ ক্রিতে পারে। কত সময় কত ভ্রমণ কারি ও কত বিদ্যা বাৰ্ষায়ী মন্ত্ৰণ গণ গালোক বর্জিত অন্ধীয়ত গিরিক**ন্দর** সাবন বিবর মধো গভিত ইইয়া কেবল এক শক্ত জা-নের অপ্রায় শুরুতর বিপদ কইতে পরি-আৰু পাই ।ছেন। মত্ৰা জাতি অবেণ-सित्र विविधि इंदेरन यासक अकात सूर्य ভোগ ও জ্ঞান লাভে বঞ্চিত চইত, সন্দেহ নাই। মত্যা ভাবণেনিয় বিহীন স্টলে তা-হার বাগি<u>ন্দি</u>য় বিফল হ**ৈত। যে বাগি**-ক্রিয় আমাদিগের বিশেষ ভূষণ **স্বরূপ** এবং আমাদিগের সমস্ত গৌরবের নিদানভূত তা-হা শ্রবণেন্দ্রিরে মান্তর্য। ব্যতিরেকে ক-नाशि कार्याकाती हुए हैं। इस विश्व वा-ক্তির বদ;পি বাক। ক্রি হর ন। যে वाङ्गि अन्य दिवित इश्राम् व्यवसाई मुक् इ-ইয়াথাকে। জল বধিরতাই যে মুক হট-বার প্রতেপ্রবল কারণ ভাষার ভুরি ভুরি **প্রমাণ প্রাপ্ত হ**ওয়া গিলাছে। এক জন ক্র**ম** বধির ভালার চড়বিবংশতি বর্ষ বরংজনেমর সময় পুনব্বার অব্ধ শক্তি লাভ করিয়াছিল. আর এক জন মুক্ত ঐ রূপে কিয়ৎবর্ষ বয়ং-**ক্রমের সময় অ**বণ শক্তি প্রাপ্ত হওয়াতে বা हाल इटेग्राहिल। (म दाख्टि अक मिन व्य-ক**ন্মাৎ কথা কহিতে** আরম্ভ করাতে সমস্ত লোক বিসায়াপন হইয়া তাহার কার্ণ জি-জাসা করিলে, সে কহিল আমি ইহার তিন চারি মাস পূর্বে অবণ শক্তি প্রাপ্ত হইয়া গো-পৰে সকল শব্দ অভ্যাস করিতেছিলাম এক-ণে বি**লক্ষণ স্থ্যস্পন হওয়াতে** কথা কহিতে আরম্ভ করিলাম। অতএদ মানব জাতি আৰপেক্তির বিবর্জিড ছইলে যে অনেক মুখে ও অনেক জ্ঞানে ব্যক্তিত হইত এবং **স্তরাং ভাহার মানব জন্মই বিকল** হইত जोहात आत मरमह नाहे। जननीयत म-কল ইন্সিয়কেই পরস্পার সকলের সহার कतिका करे चर्क महत्त्व प्रध्न कहि-अंदर्ग । विनि जागामित्त्रत स्वरंतिहरू

সমুদার শক্তাহণের উপযুক্ত ওরিয়াছেন এবং শব্দ সকলকে সম্পূর্ণ রূপে অবগ্রো-গ্য করিয়াছেন। আদরা সেই তথে দাতা সনাতন পুরুদকে নার বার নমকার করি।

মরুভূমি ও মরীচিকা।

জন খুনা শুষ্ক বালুকাময় প্রশস্ত ভূমি খণ্ড যে ছালে ভূগানি কোন প্রকার উদ্ভিদ **উ**ংগর क्य सा ए। हात् **गाम मतः भृभि । अ**दे मङ्ग्रिम पृथि दे यदनक आदन विमामान অন্তে: অদিয়া বহুত্র **মধ্যে পার্দীক** দেশে ও খারব দেশে বিস্তর মরু ফেতে দে-থিতে পাওর যায়। কিন্তু আফুকা গাঁও। তে যেম্বৰ প্ৰসাৱিত মকু দেশ সকল বি-नामान चाएड, पृथिती मध्या व्यात कृताणि তেমন মরু ক্ষেত্র দেখিতে পাওয়া যায় না। প্রায় আফ্রিকার অর্চাংশ মরভূমিতেই প্র ন্ত্রিপূর্ণ। জাফিকার **সর্বা**জ্ঞান **মরুভূমির** পরিসণে অতি বিতীণ্, ইহা প্রায় এক সহত্র সাদ্ধ ভিন শত জোশ দীয় এবং তিন শত ণ্টি কোশে প্ৰশ্য। এই ভূমি খণ্ড ভূম-ধাব্তি ৰাগতিখার হুইতে মিসর বাজোর নীমা প্র্যান্ত ব্যাপিয়া আছে এই দুরু প্র**ন**্ রিত কমর্ময় মক মেত্র এক প্রভার লো-হিত বণ বালুকা কণায় পরিপুরিত এব: लिशहर अञ्चित्रमधीत। श्रायक धन **य**शम पुत्र हरेएड ये विश्वीर्ग एक फ्राप्ति अपि मु চ্চিপাত করে, তথ্য উচা উদ্বেশ সাগর কুলা তমুমূত হয় এবং উহার মধ্যস্থিত কুদ্রে কুদ্র জন পদ সকলকে বীপত দেখায়। তীৰ যাতি,বাণিত্যকারি ও রেশ দর্শকানি পথিক নৰ যে বাক্টেও যে প্ৰকাৰ কৌশলে ঐ ছ র্গন নরু দেশ অভিক্রম করে ভাষা মনে হুইলে চমৎকৃত হুইতে হয়। করুণানি-ধান বিশ্বপিতা যদি ঐ প্রকার তুর্গমন্থান অতিক্রম করিবার জন্য বিশেষ উপায় স্থ জন না করিতেন, তাহা হইলে বোধ হয় মনুব্য জাতি শত বর্ষ পরিআম করিলেও উহার কোশার্ক পথ উল্ভান করিতে পা ক্লিড না।

আরব বৈশীর বনিকেরা বখন ও তুর্বন ভূমি অভিক্রম করিয়া আক্রিকা বভেষা

শিক্ষ্যা করিতে যায় তথন তাহারা ঋত ঋত े छेट्डेंब शुर्छ शना जात खनान करत वर শত শত ব্যক্তি একুত্র দল বন্ধ হইয়া বা-ত্রা করিতে থাকে। যাত্রা কালে উহারা রুপন মরু ভূমির উপর দিয়া সরল পথে গখন করিছে পারে না। পথিক এবং ব-শিক নেগের বিশ্রামের নিমিক্ত ঐ মরু কে-ত্রের মধ্যে মধ্যে জলাশ্য ও লোকালয় আ-চে, বণিকের। তথায় **উপস্থিত হ**ইয়া কি-য়ংকাল অবস্থান পূথাক পথভাচি চুর করে, স্বতরাণ ঐ সমস্ত বিজ্ঞাম কানের অ-ন্তুরোধে পথিক ও বণিক দিগকে নানা প্র-করে বক্র গতিতে গমন করিতে হয়। প-থিক গণ এই ৰূপ এক একটি বিশ্ৰাম স্থানে সপ্তাহ কাল বাস করিয়া পুনব্রার যাত্রা করে এবং এই ৰূপ গমন করত ক্রমে নিয়া স্থাবাঞ্জিত ও বাণিজাের নির্দিক স্থানে

স্থান পরিত্যাগা করিয়া চলিতে আরে ন্ত্র ক-য়িলে পুনবার মতক্ষণ আর এক বিভাম স্থান প্রাপ্ত না হয়, ততক্ষণ আর ফোন মণেই কোন **স্থানে বাস** করিতে বা আ-**জা**র পাইতে পারে না, ততক্ষণ ভাষানিগ-কে ক্রমাগত পর্যাটন করিতে হর, এবং তৎকালে ভাহানিগের প্রতি যে কোন গ্র-কার নিপদ উপস্থিত হয়, তাহাও অপ্রতি-হত চিত্তে সহাকরিতে হয়। এই প্রকার মধাৰভী পথে কখন কখন এমন অগ্নিদ্য উত্তপ্ত বায়ু প্রবাহিত হইতে থাকে যে তা-হাতে মনুনাও **উট্ট প্রভৃতি সকল প্রাণী**ই এক কংলে দধ্যবৎ হইয়া পড়ে, উক্ত বায়ু জারা তাহাদিগের সমভিব্যাহারী সকল বস্তু*ই* नै भ ७ 🕆 क इंड्रेग यात्र । दनिक अवर প্ৰিকেরা ঐ জন্ম শুনা শুষ্ক দেশে পান করিবার জন্য আপনাদিনের সঙ্গে এক প্র-ভার *চ*র্মা কোৰ মধ্যে জল সঞ্চয় করিয়া লইয়া যায়। কিন্তু খরতর উত্তপ্ত বায়ু প্র-ৰাহিত হইতে আরম্ভ হইলে সেই চৰ্মা কোৰস্তি জলও শুল্ক হইয়া কাৰ্যন কৰান একেবারে নিঃশেষিত হয় এবং ঐ শুষ্ক বায়ু কোন কোন সময় নরভুক্ত নির্মান নিশাচরের नात्र निवस्त रहता ७ के महिरास ला- পিত শোষণ করিছে থাকে। এক ক্ষ্ এছ কার বর্ণন করিয়াছেন, বে এই দ্ধান ভরম্বর বিপদ কালে আরবের ধনাতা ব-পিক দিগকে কথন কথন পাঁচ শত রক্ত মুদ্রাণ্য প্রদান করিয়া এক অঞ্জলি তল ক্ষয় করিতে হয়।

১৬-৫ খ্রীক্টাব্দে এক বার এক দল ববিক আপুকার অন্তর্গত তম্মুলু চটতে তাকিলেত নামক স্থানে গমন করিবার সময়
প্রান্তরস্থিত নিয়মিত বিজ্ঞাম স্থানে জল প্রাঞ্জ না হইয়া পিপাদায় কঠ শুক্ক চইয়া প্রাঞ্জত্যাগ করে। এই ঘটনার ছুই সহক্র মনুষা ও এক সহক্র অকীশত উপ্তের প্রাঞ্ নত হয়। মরু ভূমিতে মধ্যে মধ্যে এই
ক্রপ জ্বতিনা ঘটিয়া স্থানে স্থানে মন্তব্য ও

মরু দেশানীর্ণ আফ্রিকার বর্ণশঙ্গা প-থে বণিক দিগের এক একটি নিলন স্থান আছে৷ নানা দেশ হইতে বণিকের: নানা পথে আগমন করিয়া ঐ স্থানে মিলিত হয় এনং মিলিভ হুইয়া পুনর্কার সকলে একত্রে যাত্রা করে। যথন অধিক লোকে একত মিলিভ হয় তথ্য বৰিকের: নিঃশ**য়ে মরু** দেশের উপর দিয়া গমন করে এবং আ-ক্রেশে দফাভর অভিক্রম করিতে পারে। কোন কোন স্থানে উহাদিগতে **অন্ধ মাসের**-ও অধিক কাল যাপন করিয়া উট্ট্র ও মন্ত্র-থোর আমজ্ঃখ দূর করিতে হয়। তম্বন্ধু হইতে ফেক নামক স্থানে গমন ক**রিতে** हाति माम नश कितम लाला, किन्छ इंहात मध्य श्विकता हुई मान हुनुर्वतः मिन বস পর্যাটন করে এবং অবশিষ্ট ছুই মাস পঞ্চনশ দিবস বিজ্ঞাম করিয়া থাকে 🖂 🕬

মরু দেশীর পথের মধ্যে তির তির অধিকার আছে, বণিকেরা ধ্বন বে অধিকারে গিয়া উপনীত হয় তথন তত্রস্থ অধিকারী তাহাদিগের রক্ষার নিমিত কভিপর
রক্ষক সজে দের এ রক্ষক গণ তাহাদিগকে
আপন অধিকার পার করিয়া অপর ক্ষিক্র কারের নীয়ায় উপনীত করিয়া আগর ক্ষিক্র বলি কাহারও অধিকারে বনিকেরা নিকার কলে অপত্তত বা অপমানিত হয় তাহা হ-ইলে সেই অধিকার ভুক্ত সকল লোকেই তাহাতে অপমান বোধ করে এবং তাহার। সকলে একবাক্য হইয়া ঐ অত্যাচারের প্রতিফল প্রদান করিতে চেটা পায়।

সারব দেশীয় উক্ত প্রকার বাণিজ্য যাত্রি দিগের এই রূপ সংকার আছে, বাণিজা পথে গদন করিবার সময় কোন প্রকারে জোজন পানের অত্যাচার করা অবিধি, ঐ শ্বর কেই কোন প্রকার অত্যাচার করিলে তাহাকে ধর্মা ভ্রম্ট হইতে হয়। উহার। ঐ সময় কেবল মংকিঞ্ছি পিও থক্সর ও এক বিন্তু জল মাত্র পান করিয়া দিন যাপন करत १४ मामामा अकाह राम वात्र ह-রিয়া কাল হরণ করে। উহার। উক্ত সময় উৎক্লা ভোজন ও উৎকৃষ্ট বেশ ভূষা ব-ফ্রিন্ট প'কে। কথন কখন কোন ব্রণিক দলে কেবল কিঞিৎ যবার মাত্র ভক্ষণ ক-রিয়া দিনপাত করে। দিবাবসান হুইলে পণিক ও বণিকেরা এক স্কলে মিলিত হইয়া **অবস্থান করে এবং শিবির স্থাপন করিয়**। **শকলে একতে জগদীশরের উপাদ**া করে।

কোন কোন সময় প্রচণ্ড আয়ু দারা ম ৰুভূমির ৰালুকা সকল উড্ডীন হইয়া আতি ভরকর ঘটনার উৎপত্তি হয়। বায়ু স-**হকারে প্রভূত** বালুক। রাশি অনবরত উ-**ভ্ডীয়মান হইয়া চতুদ্দিক আচ্ছল ক**রিয়া रकरन, এবং ছুर्ভागा পृथिक গবের দৃষ্টি **পথ রুদ্ধা করে। এই সময় পা**থিক গণ চ-ভূদিক কেবল যোরতর অন্ধকারমণ ব্যব-লোকন করে এবং চতুর্দ্দিক হইতে যেন গাঢ় কৃষ্ণ বর্ণ প্রস্তরময় প্রশন্ত পর্বত ভারা বে-**छि**ङ हहेरङ थाका । ভाहाता ना **छ**ई मिरक দৃষ্টিপাতে করিয়াই আর কিছু দেখিতে পার, মা অবোভাগ সন্দর্শন করিলেই কোন পদার্থ অবলোকন করিতে সমর্থ হয় এবং ना वाम मक्ति १७ शुद्रः शकार मिटक हे काम बर्बन नाष्ट्रा भागा ममूस मदशा अवस्थ ৰাছু ও ৰটিকাদি উপস্থিত হইলে বেমন প্ৰতি আমাৰ ভৱল সকল উপিত হইয়া क्षान मारिक प्रनेटक अपि विभिद्ध प्रशास

धीयन पृत्तिः नन्मर्गन् क्रतांग्रेख**रे क्**ल এই नगरत्रक्थ मञ्जूष नम्भ भन्न स्वत्वन नर्वव পর্বত তুলা বালুকার তরঙ্গ দমস্ত আনেনা-লিভ হইয়া প্রতিপলকে নিরাজিত পথিক গণের জীবনাশাকে হরণ করিতে থা**তক**। এই নপে বালুকা রাশি অনবরত উড্ডীয়-মান হইয়া কথান কোন স্থানকে গভীর খাতে পরিণত করে এবং কথন কোন স্থানে বালুকার উচ্চ পর্যাত প্রস্তুত করে। এই অবস্থায় পথিক গণের আরে ষন্ত্রণার শেষ পাকেনা তাহারা চকু মুদ্রিত ও নিশ্বাস রুদ্ধ করিয়া কোন মতে জীবন ধারণ করি-য়া খাকে এবং আপনাদিগের অভিগমা প ণ দেখিতে না পাইয়া পদমতা বিকেপ করিতে পারেনা। কিন্তু এই সময় ভ: রবাহী উ**ট্র** গণের অসাধারণ কাহ্য **সক্ষ**র্শন করিলে সমূষা মাত্রকেই নিস্ময়াপর ও সুদ্ধ रकेट इ.स. উद्धे अन् এই **সম**য় যে **(क**ो-শংস বিপদ অভিক্রম করে ভাষা দেখিলে विश्व इंग्न. य नर्वत्य शुक्तम शहे कथ वि-পদের প্রতীকার উদ্দেশেই আরুর প্রভৃতি দেশে উদ্ভেব ফল্টি করিয়াছেন। উই ভিন্ন আর কোন জন্তই এই বিপদ হউতে উ-জার পাইতে পারেনা। এই সময় উটে-রা আপনাদিপের দাব শ্রীবা উত্তত করিয়া 😇 के मुख क्षेत्र। हत्य धवर व्यवितम शक्तमह স্থূত্র নেত্রপত্র থারা ১ জু আচ্চাদন করিয়: त्रोदश। अध्यभित्र अभिन अञ्चल क्लोनत्त উট্ট জাতির পদ রচনা করিয়াভেন যে তা-হারা অক্রেমে বালু ক্ষেত্রের উপর দিয়া চলিতে পারে,উট্ট জাতির কোমন ও কাবত পদের কৌশল গুলে তাহা বালু ভূমিতে প্রবিষ্ট হর না এবং ডাছারা আপনাদিগের দীর্ন পদ দূরে দূরে বিক্ষেপ করিয়া অপর পশ অপেক্ষা অতি সত্বরে মরু ভূমি উত্তীর্ণ হইতে পারে, স্কুতরাং ভাহারা অধিক वाष्ठ इस मा। य राम् पृत्रिक वशानि **অনা কোন পশু অতিকটে ও অভি বিল-**व किशक्त पांटेरङ भारत ना। छेड्ने काङि रम हे पूर्ण में बांलुका क्लाद्ध बद्धारण व्यक्ति पूर्व अवन क्षिएक नमर्च एव। क्रमा शून लिए निशाको असन अविकास सक् स्विटक

প্রিক্ত্রু গণের জন প্রান্তিরও উপান্ধ করিছা রাধিরাছেন, আক্রিবার মন্ধ্র দেশেপ্রক্রিক থান ঐ বুক্তিতে সম্রাঘাত ক্ররিকে অথবা উহার মধ্যে জোন হক্ষের পত্র ওপ্তন ক্র-রিলে এচুর নির্মান জন প্রাপ্ত হয় এবং ভাগা পান করিয়া শীতল হইয়া থাকে। গ্রের নারে ধ্রতা করিয়াছেন, ঐ পত্র মধ্যে ভার আর্ভান ক্রের থাকাতে কোন করে উহার অল্ভান ক্রের থাকাতে কোন করে এক বিস্ফ্রাত্র জল শহুহ ইতে পারে না। প্রিক্ত গণ ঐ প্রের অ্প্রতার ছিন্ন করিছেন ই তর্ম্বা হইতে অপূর্ব্য প্রিকৃত অল প্রাপ্ত হয়।

লেফটনেন্ট পটিংগর নামক এক জন সাহেব একদা ভারতবর্ষীয় এক লোভিত বর্ণ মরু ভূমি উভীর্ণ হইতে এক চমৎভার ঘ-টনা প্রতাক্ষ করিয়াছিলেন, ঐ মরু ফেরে পতিত হইয়া ভাঁচার বোধ হইয়াছিল বেন তিনি কোন লোহিত বর্ণ সাগরে গতিত ঙহায়। সভর্ করিতে**ছেন** এবং **কথ**ন ক-शन छ। हात एए किंक ए छ पृष्ठी समाग वालुक। রাশিতে ইফীকময় ভূতন প্রাকার ভ্রম হই ग्राष्ट्रिया । ये वालुकात क्ष क्ष क्ष क्या ग-कल कै। हात्र अदः कै। हात्र मन्द्रि लाएकत मुश्र, हकू, माना, कर्न श्रकृति ऋ।दन श्रादिक इउग्राट्ड मकरलित जीवन मःभन इरेमा-ছিল এবং সকলেই পিপাসায় কণ্ঠ শুষ ধ্বীয়া মৃত কম্প হ্বীয়াছিলেন। কিন্তু এ-মন অবস্থাতেও উক্ত নাহেবের ভারবাহী উ**ট্র দকল ঐ বালু ভূমিতে ভানু ও জঙ্গা** পাতিত করিয়া সমস্ত দ্ব্য ভারের সহিত আরোহি লিগকে পৃষ্ঠেতে ধারণ পূর্বক চ লিয়াছিল। এই মৰু কেৱকে উক্ত সাহে-নের পুনঃ পুনঃ সাগর বা বিস্তীর্ণ জলাশয় विनिया अ**म क्लेग्राहिन** ।

বায়ু বেগে মরু ভূমির বালুকারালি উ-চটান হইয়া কথন কথন নানা প্রকার ক্ত ব্রের উৎপত্তি হয়। উলিখিত প্রতিপ্রের নাহের ঐ বারুকানর ক্রের ক্রের্ডির বিদ্যাল क्यंन क्यंन ये मक्न समु এक अकात আশ্ৰ্যা ও অনিন্ধিট গতিতে নানা স্থানে পরিজ্ঞান করে। বু**দ নামক এক জন দা** নরু কেত্রে ঐ একার আকর্য্য জান্যমাণ স্তম্ম সন্দর্শন করিয়া আপনার **সদল বল** সকলে বিষয়াপন হইয়াছিলেন। তিনি এক মরু ভূমিতে উপনীত হইয়া দেখিলে-ন, বে কভক গুলি প্রকাণ্ডাকার স্তম্ভ এক বার প্রবল বেগে তাঁহার নিকটে ধারিত হুইয়া আসিতেছে **এবং কথন ভালার নি**-কট হইতে অতি দুরে গমন করিয়া এক কালে অদুষ্ট হইভেছে। কোন কোন ম-म्य भे नकल स्टब्स्स मधा एन हिंदा हहेगा চুই থণ্ডে বিভক্ত হুইতেছে এবং কৰন ক তাহারা দীর্ঘ কাল এক স্থলে স্থায়ী হুইয়া কাল যাপন করিতেছে।

নুস সাহেব এক দিন প্রাতে ঐ প্রকার কতিপর স্তর্জকে অধিমর ব্যবের ন্যার অ-বলোকন করিরাছিলেন। ঐ ভার সকল প্রাত্কালোধিত বিধাবরের মন্দ্রবর্তী হওরাতে তারাহিনের প্রত্যেক অনুষ্ঠা কিরণে গোহিত হইরাহিল এক ভারারা দর্শকদিনের চক্ষে স্তর্জার রক্ত কর্ম ক্ষিন্দ্র মন ভার নাম প্রকার ক্ষিন্দ্রের লোক হততেতন হইরাছিল এরই প্রশন্ন কালের সমাগম মনে করিরাছিল, অন্তর উহার কারণ অবগত হইয়া শাস্ত হইল।

পূর্বেই উল্লেখ করা গিরাছে, মধ্যাছ-কালে বর্থন দিবাকর অনুবরত প্রথর কিরুণ বর্ষণ করিতে থাকে তৎকালে কথন কথন প্রসারিত মরু কেতে পথিক গণের সাগর বা প্ৰেলক জলাশয় জন হয় আঁ মিখ্যা জল দুষ্টির নাম মরীচিকা। যাহারা মরীচিকার তত্ত্ব অবগত না থাকে, তাহারা কদাপি তা-হাকে মিখা। **জল বোধ করিতে পারে ন**া। যাহারা প্রশস্ত প্রশস্ত মরু ভূমিতে মরীচিকা অবলোকন করিয়াছে, তাহারা কহিয়াছে, যে প্রবিস্তীর্ণ জলাশয়ের সহিত মরীচিকার কিছু যাত্ৰ ভিন্নতা বে<u>খি হ</u>য় না। এ**ক**প জনপ্ৰতি প্ৰসিদ্ধ আছে, নিশ্বাঘ কালে ভূ-শার্ত মূগকুলও মরীচিকায় জল অম ক-রিয়া তংপ্রতি ধান্মান ইইয়া প্রাণ ত্যাগ যত মরীচিকার প্রতি ধাবমান হয় ততাই ঐ মিথা। জলাশয় তাহাদিগের নিকট হইতে অন্তরিত ইইতে থাকে এবং তাহার৷ <u>ক্রম</u>া-গত উদ্ধাসে ঐ মরীচিকাভিমুথে গমন করিরা উত্তরোক্তর কণ্ঠ শুক্ক হইয়া প্রাণ ত্যাগ করে। **অনেক অজ্ঞ পথিক**ও পি-পাসা শান্তির উদ্দেশে মনীচিকার প্রতি পাবিত হইয়া ঐ প্রকারে প্রাণ হারাইয়াছে। कत्राम (क्लीश अक कम माट्य मा मिनदत्र স্মিক্ট একবার মন্ত্রীচিকা সন্দর্শন করিয়া-ছিলেন, সমস্ত মরু ক্ষেত্রকে তাঁহার জলা-শয় বোধ হইয়াছিল এবং তৎপাশ্ব ও মধ্য-বন্ধী প্রাম ও নগর সকলকৈ তিনি সাগর বেটিত ও সাগরস্থিত দীপবং অবলোকন করিয়াছিলেন।

ক্লাৰ্ক সাহেব ব্যক্ত ক্লিব্লাছেন বৈ ওঁ।হার পরিজ্ঞকন কালে তিনি একদা আরবের নক ভূমিতে এক মরীচিকা রন্দর্শন
করিরা চমৎক্লত হইরাছিলেন। তিনি এ
নক ভূমি অভিজ্ঞান করিরা এক আন্দেশ্য
তেহিলেন, কিন্ত জাহার বোধ নইবাছিল,
বে তিনি কামে করে ক্লাক্ষ্যেক্স করি।

अभगेज एक्एउएक अवस्थि नहीं छेखीं गर्-रेप्रा **डी**शास्त्र भेत्र भारत[्]यारेट इस्टेव-क। कान मनी जला स्वान छ्टडीहरू রুক্ষ, পর্বাত ও গৃহাদির শ্রতিরূপ দেখিতে পাওয়া যায় ক্লাৰ্ক সাহেবও দেই ৰূপ উ-লিখিত ভাক্ত জলাশয়ে তত্তীরস্থ সকল প-দার্থের পরিষ্কার প্রতিৰূপ সন্দর্শন করি-য়াছিলেন, ঐ মরীচিকায় ঊাহার এমন গাঢ় ভ্ৰম স্বয়িয়াছিল, যে তিনি তাহাকে ষ্থাৰ্থ জল বোধ করিয়া আপন নেতাকে জিজ্ঞাসা করিলেন , যে আমরা কি উপার হারা এই সম্থাস্ নদী পার হছব। তঁটোর নেতা এই কথা ভাবণ করিয়া হাস্ত করিয়া কহিল উহানদী নহে, বালুকা ভূমি, আমরা এই कर्म উद्वे भूरके हे अविवाह छेहा উर्जीन হুইব, কিন্তু সাহেনকে একথা পরিহাস বোধ হইল। পরে যথন তাঁহার নেতা ভাঁহাকে পশ্চাৎ ভাগে নিরীক্ষণ করিতে কহিল, তথন তিনি দেখিলেন, যে ভাঁহারা যে স্থান উভীণ হইয়া আদিয়াছেন তাহা-ও ঐ প্রকার নদীর ন্যায় প্রতীয়মান ২ই-তেছে, তখন তিনি এই অভূত ঘটনার বিষয় চিন্তা করিয়া বিশায়াপল হুইলেন। भरी हिकास अहे करण अरनक मगत अरन-কের জল ভ্রম হইয়া থাকে এবং **অনেক** क्वारनके मन्नीहिका स्विधिक भाष्ट्रा माम्र। কোন কোন পণ্ডিত নির্দেশ করিয়াছেন, প্রথার সূর্য্য কিরণে বায়ু নমান্তিত জল কণা সকল আকুষ্ট ও ভাসমান হওয়াতে এक्रम मतीविकात उँ०५ छ ।

> মহাভারত_া। আদিপর্বা। গঃ অধ্যায়—সম্করণর

> > नक्डामाभाशाम ा

4.14

বৈশাসায়ৰ কহিলেন, রাজা ছবাত এই ৰংগ প্রতিক্ষত হুইয়া প্রস্থান করিলে শকুউলা বর্ধা কালে স্থানক সভান অভি-ভেলবী এক সুক্ত প্রস্তুর্গনিক। হে ক-ন্তেম্বা স্থানের বিশ্বী ব্যক্ত পরি-

भूर्व क्रेटल भूगाचा कर् ठारात कार कर्मानि मश्कात मकल गर्गाविधारन मन्त्रम क्रिएनन। চক্রান্ধিতকর মহাবল, রালকুমার দেব কু-मारद्रत नगात मञ्चरत वर्कमान रहेर्छ नाभि-্লন। সেই ব্লেক ছয় বংশর বয়ঃক্রম प्रमारक्ष वन इहेदल निःह,वााख,वताह,महिन अ গঞ্জ সকল আনর্ম করতঃ আজ্ঞাম সমিহিত রক্ষে রক্ষন করিয়া রাখিতেন এবং কোন মন্ত্রগঙ্গের উপর আরোহণ করিয়া বা কেনে সিংহকে দমন করিয়া জীড়া করিতেন, এ-নিমিত্তে আশ্রম নিবাদী লোক সকল জাঁ৷ চাকে সর্বাদমন বলিয়া আহ্বান করিত। ্সেট অবধি তাঁহার এক নাম সর্বদমন হয়। অনন্তর ঋষি রাজকুমারের এই ৰূপ অ-(नोकिक कर्ण (मिथेश अवः काँशांदक विक्रम, তেজ ও বল সম্পন্ন উপলক্ষি করিয়া ''ইছাঁর যৌব রাজেরে সময় উপস্থিত হ্ইয়াছে'' শা 🚜 কুদ্রলাকে ইং। বলিয়া শিবাদিগের প্রতি कारम्भ कविरयम रग मर्वायम्भ मन्याम धरे পুদের সহিত শকুরলাকে ভর্তু গৃহে লইয়া যাওঃ নারী গণের চিরকাল পিতৃ গুছে খালা বিবের নচে, ভাষাতে কীর্ত্তি, চরিত্র ও ণর্মা নটা হইবার সম্ভাবনা, অভএব শীয়ে इंटीटक उर्दू शूटक রाधियां प्याहेग। महा-তেজন্মী শিষা গণ তথাস্থা বলিয়া স্বীকার নরতঃ সপুদ্রা শকুরুলাকে স্থান্তো করিয়া গ-क्मास्त्र नगत्त प्रवाच श्रुद्ध याजा कतित्वन। অসর কুমার, ভুলা কমল লোচন পুত্রকে কোড়ে লইয়া শকুন্তলা রুন হ্ইতে গম্ন করতঃ ক্রমশঃ তুষান্ত রাজার গৃহে গিয়া উ-প্ৰিত হটলেন৷ শিষ্য গণ সপুতা শকু-তলাকে বাজার নিকট অর্পণ করতঃ আত্র-মোদেশে প্রস্থান করিলে, শকুন্তলা রাজাকে ব্যাবিধি প্রণাম ক্রিয়া কহিলেন, মহারা- এই পুত্রকে যৌব রাজ্যে অভিবিক্ত কৰ্মনঃ আপনি জামার গর্কে এই পুত্র উৎপদ্ন করিয়াছেন, অতএব হে প্রস্কাবোভ্য ! পূর্বের যে, প্রক্রিফার্ডিরেন,, তাহা भारतभाग करूत। श्रास् क्षु असित जा-काम सामात निरुष्ट नक्षम सब्दार सानान नारा व्यक्तिक र सरे प्राव्यान । व्यवस्थान । व्यवस्थान व्यक्तिक व्यक्तिक व्यक्तिक व्यक्तिक व्यक्तिक व्यक्तिक व ALAIN CONTRACTOR OF THE PARTY O

भवतंत्र ताका इवाक नकुरुवात करे निमन्न राका अवग क्रवंडा जानक विद्या क-রিয়া কহিলেন, ভুমি বাহা কহিলে আমার তাহার কিছুই অরণ হইছেছেনা, ভোষার সহিছ আমার যে কথন সাকাৎ চইয়াছিল এমনও কারণ হয় না, অভএব ভুমি এখান হইতে यां वा अधारन अवसान कड़, याहा देवहा इब्र काहा है कहा। हेहा ध्वर করিয়া বরারোহা তপস্থিনী শকুস্তলা লক্ষায় **नख दफ्रटन ऌरखद्र नाप्त**्रवाहन हरूया व्यद-স্থিতি করিতে লাগিলেন এবং ক্রোধে ভাষ বৰ্ণ নয়ন ও প্ৰকৃত্তিত ওষ্ঠ হইয়া কটাক षात्रः मश्न कष्रङः वक ककवात ताकारक रक महान अवलाकन क्रिएं लाभिलन। তথন স্বীয় ক্রে<u>টুধের</u> ভাব গোপন করিতে ই-চ্ছ। ক্রিয়া প্রব্র শোক দারা ভাহা প্রকাশিত হইবার উপক্রম ফইলেও তপোবলে তাহাকে আয়ত কৈরিয়া রাখিলেন, এই ৰূপে মুহুর্ত্ত-মাজ গ্রান করতঃ শোক চুঃথে অভিভূত ছ-ইয়া ক্রোধে রাজার প্রতি কটাফা করিয়া কহিলেন। মহারাজ্য ভুমি জানিয়। শু-নিয়াও: কি নিষিত্তে, এৰূপ : নিঃশক্ষ হইয়া লাগারণ লোকের ন্যায় কহিতেছ, যে আমি কিছুই জানি না, এম্বলে শত্য মিথা৷ তো মার অন্তঃকরণই জানিতেছেন, শতএব তং-সাফী সমিখানে কুমি সভা ব্যক্ত কর, অ-ভঃকরণাকে অবজ্ঞাকারিও মা। যে বাজি এক প্রকার জাসিয়া অন্য প্রকারে প্রকাশ করে নেই আত্মাশহারী সৌর কর্ক কোন্ পাপ स রুড হয়। ্রভুমি মনে করিতেছ যে -मामि । धवा । ध**३ कर्या :क्रिशक्टिः (क**र्या-নে না, বিজে মুনি বে অন্তর্মানী কোহা তুনি জান না, যিনি পাপ পুণ্য নামুদায়ের তেন্ত্র-मनी जाहात निक्षे जूमि शामान कतिरेव? পাপ কর্মা করিয়া ক্লাকে ামনে করে যে দাসার একর্ম বেংই লানিতে পারে নাই, কিন্ত দেবতারা ও ক্ষত্রানী শুরুব নে গ-क्यर के निरुष्ठ शास्त्रमा उचात्र स्था, ठक्क, वासु, कार्य, कर्व, मकी, सब्द, मोखरकत्व, बन, किया, क्यांकि, केन्द्रा लेखात एउ वर्षा हेरीता , र्गाप्तरभा भाषी ध्रमणकविषय (कर्म

याहात शतिकुके धाटकम, देववश्रक यम छा-श्र कुकुट नकण दिनान करतन, যে স্কুরাক্স। পুরুবের ক্ষেত্রজ্ঞ **অপরিভূক খা**-কেন,ষম সেই পাপকারী বাব্জির পাপ রবি করেন! যে ব্যক্তি আত্মার অপনান ক-রিরা যথার্থ বিষয় অনাথা ৰূপে প্রতিপা-দন করে, দেবতারা তাহার মঙ্গল বিধান করেন না এবং ভাহার আত্মান্ত ভাহার কা-া হন না। আমি পতিব্ৰতা, অভিসা-িরক। মনে করিয়া আমাকে অবজ্ঞা করিও ন তোমার সমাদর্ণীয়া ভাষ্যা আমি স্বয়ং আসিয়। উপস্থিত হুইয়াছি, কিন্তু তুমি থামাকে সমান করিতেছ ন। এই সভা নধ্যে ভূমি কি নিমিত্ত আমাকে সামান্যার নায় উপেকা করিতের? আমি কি শুনো ্রাদন করিতেছি? ভূমি কেন শুনিতেছ ন। আমি সেয়াত্রল করিতেছি, তুমি ছদি আমার বাকো উত্তর প্রদান ন। করে, ে গুৰাস্ত ! তাহা হইলে আদ্ধু তোমার ম-পুরু শতধা বিভিন্ন হইবে। পতি ভাষাার উদরে প্রতিক্ত হইয়া দে স্বাং পুত্র ৰূপে জ-আর তাহাতেই জামার জায়ার, ইহা পৌ-রাণিক কবিরা ব্যাখ্যা করেন। বথন পুরু तित सिरे पुछ जन शहा करत, ज्यंन सि, প্রতি ছারা তাহার পূর্ব মৃত পিতামহা-দিকে উদ্ধার করে। যে হেতু সন্থান পি-ভাকে পুলাম নরক হইতে উদ্ধার করে. মেই জন্য প্রং ক্রন্ধা ভাহাকে পুত্র বলি-या वार्था। कतियाद्या । त्यहे जामी विनि গৃহ কর্মে কুশলা, সেই ভাষা। বিনি পুত্ত-বতী, সেই ভাষ্য। যিনি প্ৰিপ্ৰাণ, সেই ভার্যা। বিনি পতিত্রতা। ভার্যা। পুরুষের অর্জ শরীর, ভার্য্যাই পুরুষের প্রধান স্থা; ভাষ্যা তিবর্গের মূল, ভাষ্যাই উদ্ধারের কারণ। ভার্যাবন্তই ক্রিয়াশালী, ভার্যা। वस्तरे भृशे, जार्यावसरे रुखे विख, जार्या-বস্তই সৌভাগাশালী। প্রিয়ম্বা ভার্যা নিঃসহায়ের স্থা স্থাপ, ধর্ম কার্য্যে পিতৃ স্বৰূপ, আৰু ব্যক্তির মাতৃ স্বৰূপ এবং ছ ৰ্গম পৰে পৰিকের বিআম শ্রুপ। যে ব্যক্তি महात त्वरे विश्वाम शाज, व्याज्य नातारे পরা গজি। যে ব্যক্তির বহু পরী বে প-

ক্ষপাতী *হইকেও*্ডাহার পর্বাকাতে যে ত্রী পতিব্রতা, সেই তাহার অস্থগামিনী হয়। পতি সড়ে যে স্ত্রীর পরবোক হয়, দে তথায় গিরা পতির প্রতীক্ষা করিয়া<mark>,</mark> থাকে, আর প্রথমে পতির পরলোক হইলে. সাধী **ত্রী ভা**ষার **অসুগামিনী হয়, অভ**এব *ে* রাজন্! যে হেতু ইছ লোকে 🧐 পরলোকে পতি ভাষ্যাকে প্রাপ্ত হয়, দেই নিমিত্তেই লোকে পাণিগ্ৰহণ বিহিত হইয়াছে। আত্মা দারা আলে: উপ্পন্ন হয় বলিয়া পণ্ডিতের: ভাষাকে পুত্ত শব্দে কহিয়াছেন, অতএব পু-জ্রের মাতা ভার্যাকে স্বয়ং মাতা বলিয়া জান: আনশ্রক। আদকে দ্বীয় মুখ প্রতিবি-ম্বের নাায় ভার্য্যাতে পুদ্র উৎপন্ন হয়, পুণ্য-हु । वाक्ति माकार सर्ग পा है ता समन जा-নন্দিত হন, পুত্ৰ জমিলে ভাহাকে দে-বিয়া সেই রূপ আহ্লাদ হয়। মনোতুঃখে দক্ষমানই হওক, আর ব্যাধি **ছারা আকো**্ **ग्रहे इंडेक, निमाचार्छ नालित सन श्रास्त्रिह** না।র স্থীর দারাতে লোকে আহ্বাদিত হয়। ন্ত্ৰী কৰ্ত্ব ভংগিত চইলেও রতি, ছীতি ও ধর্ম ভাহার আয়েক্ত দেখিরা অপ্রিয় तावण्ड क्रिटिक मा। ্বীলোক আ-মারে পুণা**জন্মকে**ল জানিবে, নতুৰা ক্লবি দিগেয়ত এনত শক্তি হয় না, যে জা ব্য-তীত পুত্র উৎপাদন করেন। পিতৃ প**ন্ধে** अगान कराउँ श्रवितीत धुनात लुकिल हरें। লেও পিতা কর্ত্ব পুষ্ট আলিমিত হয়. ইহু হইতে অধিক খার কি **হটতে পারে**। অতএব স্বযাগত সাভিলায এই পুতাকে ক্টাফে দর্শন করতঃ কি নিমিত্তে অপ মান করিতেছ: পিপীলিকারাও স্বীয় খণ্ড সকল হ'তি মড়ে রক্ষা করে,ভাহা নক্ট করে না,কিন্ত ভূমি ধর্মাত্ত **ক্ষ্টি**য়ান সন্থানকে এছণ করিতে **কেন স্বীকার করিতেছ**ন।? णिक महानतक **काशिक**न कंत्रित यापुर्व ম্পূৰ্ন **স্থান্ধ কৰে**, বস্ত্ৰ বা স্ত্ৰীগাত অথবা শীতল জল সংস্পাদেশিও তাদুশ সুখাসুভব रग्र सा। ध्यमन विश्वदनत मद्या जान्त्रन, চতুশানের মধ্যে গো, ও গুরুতর ব্যক্তির मरधा लिए। स्थार स्टाम, उत्सव म्लामीतान् शर्मादर्शन मार्क शुक्क नका दुशके, वाहे शिव

क अतिसम्म ! होई त दशक्षम दिन दर्श शति-अन् इक्ट्रेन क्। श्रीय देहाँ व कविदेशाविड मञ्चलीय मध्यति भश्याम करतन, व्याटकान ইনিউ তোমীর **শোকাপনোদন করি-**त्वमः १ (भीत्रत व्यर्ष ! भूत्व देशीत ভূমিঠ চইবার সম্পে আমার প্রতি আ-জ্ঞান বানী ২৯ নে এই কুমার যথাকালে ্রক শতু অ্বাংলিধ গ্রু করিবেন। স্নেই ব-শতঃ 1= শু সন্তানকে ক্রোড়ে করিয়া এ:-মাস্তর গ্রন্ম করিলে পর পিতা ভাহার মন্তক আন্তান করিয়া সামন্দিত হয়েন। সন্তা-নের জাত কর্মে ত্রাক্ষণেরা দেবতাদিগেরও এতি এই সকল মন্ত্র উচ্চারণ করিয়া থা-কেন, ভাগা গোমারও বিদিত থাকিতে भारत । १६ भूछ ! कृषि अञ्च इहेरक छैदेश्व ংইয়াছ, এদয় হ্টাতে উদ্ভ হ্টয়াছ, ভূমি আমার আছা পুর নান ধারণ করিয়াছ, তমি শত বৰ্ষ জীবিত হও। আদরে দী-বন ও অক্ষয় বংশ তোমারই অধীন, গত-এৰ ভূমি শত বৰ্ষ স্থাথ জীবিত থাক। ছে ताकन्! এই वालक टामात्र अस स्टेटट উৎপন্ন চইয়াছে, অতএব অমল সাধানৰ জ্বার আয়ু দর্শনের নায়ে এই দিতীয় সীয় মুখ সন্দর্শন কর। দেমন গাইপতা ইইতে আহবনীয় অগ্নি আনীত হয় ডক্ৰেপ ডোনা **১ইতেই উৎপন্ন এই পুতা, এক মাত্র ভূমি**ই तिथाकु इरेबाइ। (इ ताकन्! शूर्व कारन ত্মি সুগ্যায় গমন করতঃ মুগ কর্তৃক আ-কৃষ্ট হুইয়া পিতার আশ্রমে আমাকে প্রাপ্ত হইয়াছিলে, তথন আমি কুমারী ছিলাম। खे**र्यानी,**शृद्धिष्ठिः, मञ्जना, स्मनका, विभा-, ঘত:চী, অপুসর গণের **মধ্যে এই** ভষ্তান ভোষ। তালাদিগের মধ্যে এক। লোক বাসিনী মেনকা সুৰ্গ হইতে পৃথিৱী-তে আগমন করিয়া বিস্থামিত দারা স্বামা-কে উৎপন্ন করিয়াছেন: ভিনি **হিমাল**য় **अटब्ह जामारक धनन क**रिय नेख नेखेरियेन নাায় তথায় পরিত্যাগ করতঃ প্রভান ক-

न्मार्ग कृषे छेदशामन करून, शुक्के न्मार्ग क्-

ইতে শ্বৰতর স্পর্শ আর কিছুই নছে।

দর্শন প্রস্তা তোমা কর্তৃক আলিফিউ ইইয়া । রেন। প্রিয়ামপুরের ক্ষমান্তরে এড ক্রিক্স শুভ কর্ম করিরা ছিলাম, যে বালা কালে মাতা সামাকে পরিজ্ঞাগ করের এবং এ-ক্ষণে আপনিও প্রত্যাখ্যান করিচলন। বাহা হউক, আপনি আমাকে পরিজ্যাগ করিলে আমি না হয়, পিভূ গৃহে গ্ৰমন করিব, কিন্তু মহারাজ! এই বালক তোমারই আত্মল অতএব ই**হাকে পরিত্যাগ করিও না, ই**হার প্রতি প্রসর হও

বিজ্ঞাপন ৷

তবানীপুরস্থ শ্রীষুক্ত স্থামাপ্রসাদ চটে।-পাধ্যার নামক এক ব্যক্তি, বাল্য কালে ভ্রম বশতঃ খ্রীষ্টীয় ধর্মা অবলয়ন করিয়াছিলেন. এক্ষণে ভদ্ধবোধার কাম্পনিকতা প্রত্যক্ষ ক ति<u>या श्रेनक्वात्र हिन्छु इ</u>हेश द्वा**षाभर्या** व्यवन-মনের প্রার্থনার যে পত্র লিখিয়াছেন, তাহা नित्र अकिए इंहेन।

To the Editor of the TATTWANDDHINER PATRIKA. Calcuita.

Hitherto I was a follower of the religion Jesus Christ. My conversion into the larth did take place on the 25th of Merch 1855, when I was about 16 years of age in owner or its worthlessness to satisfy the religious cravings of mankind. I have also been convinced that its fundamental doctrines are not reconciliable with the rational dictates of reason and of moral justice, relusion that such a system of religion containing as it does, great many abourd theories such as the Trinity, the Resurrection and the Association, could not have come from God—the Immaterial and Common Father of the Universe. I therefore publicly renounce Christianity through the medium of your wide oirculated Journal. I beg you will be good enough to insert the above declaration in your next issue, and oblige.

Your's very truely, SHAMA PROSAD CHATTERJEA. Bhwanipore. The 1st April, 1857. }

🚅 🕸 उक्रताधिनी भद्रिका, क्रिकाक्षा मगरह रशाजानीकाचित ककारवाधिमी नेकात काकामत केके अधियात्म श्रकाणिक स्वा— वेद्याव मुका अक केवि > रेश्मीस इंदिराह सम्ब २०३६ व्यक्तिकार्थाकार



्कताबद्धिमध्युकाणीसाम्प्रकित्वनामीर्शन्तः गर्गः मृष्यः। इटस्यितिकार्शकाममस्यः निवरः । इस्त्रिक्षकामस्याविविधः मस्रदानिमस्यित्तम् कृपस्याक्षत्यमस्य । स्वाप्यान्तिकामस्य अस्यानिकामस्य । स्वापनिकामस्य । उस्ति अरिलियुक्त विभाविकामस्य । स्वापनिकामस्य ।

ट्डाव।

হে পূর্ব পরিশুন্ধ পরাৎপর পরমাত্মশু। ভোমার অপার কর্মণী প্রদানে আমরা এ ুকাদি ক্রমে খাদশ মাদ অতীত করিলা পুঞ্ নবার স্বায় এক বংসরে প্রবেশ করিতে-ছি। এই সম্বৎসর কাল মধ্যে ভূমি আম ু দিগের প্রতি যে সমস্ত করুলা বর্ষণ করিয়াছ, তাহা আমি কি প্রকারে বর্ণন করিব এবং কি উপায় স্বারাইনা মনেতে বারণ করিব। এক নিমেধের মধ্যে তুমি আমাদিরাের প্রতি (व मक्ल प्रसूथम प्रश्ना थकाल राज व्याप्त আমরা ভাছাই নির্দেশ এবং নির্পণ করি-তে পারি না, তথ্য সম্পূর্ণ এক বংসার বা-लात करूमात विषय कि अकारत याक अधिक। আমার মন্থ্যন ত্রেমার অক্লাধ করণা-সাগরে পতিত হয় তথ্য ভাহার পার প্রাপ্ত ना रहेश अक करित उन्ने श्राम हरेगा, बा क । कियान महान स्वाम मीमा नाई मह ৰূপ তাইৰ তুলনা দিবার আর স্বান্ত নাই। याम्बा वर्ष वर्ष करवा कामाबहे अभीग प्रकृति करूना प्रतिवास क्रिका क्रीतन ধারণ করিয়া ক্ষালিতেছি। জোনার প্রকর ভাণার এই ব্যক্তরা হইতে জীব সকল बिका काम बीदिक बाब बबेस जीवन भा

কে আলোক ও উভাপ এদান করিয়া সং ফির নঞ্জ সাধ্য করিতেছে, জোমার বায়ু আবহমান কাল প্রবাহিত হইয়া কবন আছ হইতেছে মা, ভোমার মেঘাবলী চির দিন বারি বর্মণ করিয়াও কথন নিঃশেষিত হইতে ছে না এবং ভোষার স্থাট এই, নক্ষত্রাদিও এত কাল খুলা পথে স্নামামাণ মুইয়া ক্ৰ কালের জন্য স্থ প্রথ পরিত্যাগ করিতে-ছেল। হে অচ্যতানন্দ অব্যন্ন স্বৰূপ। ভূমি বে কি অন্তঃত নৌশলে এই অপূর্যে বিশ্ব যন্ত্র রচনা করিয়াছ তালা কি বলিব , এমন यक्त ए पाक्या ग्रह पात (क्र मन्दर्भ ও কম্পানা করিতে পারে না। কোন যন্ত্ৰ নিৰ্মাণ ক্ষিলে বাবহার দারা তাহা ক্রমে দিনে দিনে ক্ষম্ম হইয়া যায় এবং ভাছাকে সংশোধন না ক্রিলে কালে-তে তাহা অকর্মণ্য হইয়া উঠে,কিন্ত তোমা-র অন্ত বিশ্ব গত্র নিরন্তর চালিত হইয়াও कथन कम इटेएउट्ड ना अवर द्वान काटनरे তাহার সংশোধন করিবার আরঞ্জক হইতে-ছে না। তুমি এ বিশক্তে প্রথমতঃ বেমন তে कचान काउना रेकि क्रिज़ाह, देश व्यक्ताशि तिहे क्ष गरणम् विद्यारक् क्षेत्र्राज नितन प्रिंदन हेरा नातक फेब्ब्लिड्डे काश रहेरछ বোষার কৌশন প্রভাবে পথিনীতে

নানা শ্রকার বিদ্যার প্রচার হইয় শামাজিক শোভারও উল্লিভ হইছেছে। এমন উর্জ্ স্থভান আশ্রুম্ম নাই। জগতের এই কপ ভেজাহিনী প্রকৃতি সন্দর্শন করিলে বোধ হয়, যে তেগোর সকরুণ ইচ্ছা জগতেরপে মৃতি-সভী হইছা নির্ভর প্রকাশ রহিয়াছে, এ কগ্র জন্ম গদার্থ হইয়াও ভোমার ইচ্ছার-সহায়েতে তেইনা বিশিষ্ট সজীক হইয়ার-হিল্লেছ যে যাজি বেকাও মধ্যে ভোমার ইচ্ছান প্রভাগ সন্দর্শন না করিল, ভাহার

ে তেমসিকু পর্য বধু ! যে ক্তি ে ে ্ অনুসংখ সৌনদর্যোগ অমৃতসয় ভাগে 🌣 ্টা হা হইল, কোনু ৰূপ ও কোনুম'-ধ্য ংগ্ৰেছ আকৰ্ষণ করিবে। যে ব্যক্তি ৯০,০ ভোগার রূপ স্থাদর্শন করে, সে কি প্ৰাপ্ত জ্বালা কোনমতে ই বিস্তৃত ক্টাতে পোৰা প্ৰবিদ্যান ভোমানেই আক্ৰম হ লা ১০০০ এবং কোমাকেই **প্রার্থনা** করে। ব্যানা : জ্যান চক্ষান্ত আন্তাহেন ভোমানের দে লৈতে যা পাল ভাছারাই ভাষায় প্র-उत्तर कृष्टिहा जना विषय भ्राप्त श्री श्रीपत् : েচ্ছাত্র অমৃত্যার অনুপ্র স্বর্পের এম্বি অ'কলনী শ্ৰন্তি, যে কত সময় ভাষার গহিত কার আনিস্পিত্রর অসার বিষয় মিশিত ५३% किय बिलाग शर्मा क्वीग्राहरू अवर कन्छ অন্ত বিষয় সভা বাপে গৃহীত হইয়াছে। যোদার অনুধা এশী শক্তি আপনা হইতে মন্ত্ৰ মনেৰ আছা ভক্তি ও প্ৰীতি আকৰ্ষণ ান হীন অবোধ লোকে কণ্ণিত াল্য াল্ড তোমার অন্বিতীয় প্রিয়তম ^{এই} কভিত আরোপ করিয়া কভ সময় প্রতিষ্ঠিত করে তার্থ কার কার্যার কার্যার করে কার্যার করে কার্যার করে কার্যার করে কার্যার করে কার্যার করে কার্যার বৈশেষকে জন্মজন্তর **প্রত্যয় করিয়া ভাছার** আন্তঃধন্য । প্ৰিল প্ৰাংক। **তে সৰ্ব্বান্তায় সৰ্ব্ব**-ভুজা (শুসার সাজ্ঞরাও **ভোমার সৌ**-লাপদ্বিহীন ক্ষীয়। আমারা এক নিমেরও শীবন ধারণ করিতে পারি না। **আমাদি**-ার দেহ যেমন সৃতিক: আভায় করিয়া অবস্থিত রহিয়াছে আমাদিণের আন্ত্রা সেই वन लगादक अवलक्षम क्षित्रा अवस्थि

কারতেছে। তুমি বাই আনামিগতে ক্রুপ কালের ক্রুপ পারত্যাগ কর, তারী হইকে কোবার বা আনামিগের খন, জন, যৌবন, বিদ্যা, বৃদ্ধি, অংকার কুর্থ, সন্সাদ, রাজা, জী থাকে। তুমি আনামিগকে কুরী করি-বার জন্য বিভিন্ন প্রকার ইচ্ছা প্রদান করি-রা বিভিন্ন প্রকার বিষয়ের কৃতি করিলে, এবং আনাদিগের নিকট বীশ্ন মহিমা বি-তার করিবার জনা এই জগৎ উৎপন্ন ক রিলে, কিন্তু আমরা এমনি মৃচ যে কেবল তোমার কৃতি বিষয়েতেই সনকে মগ্ন করি-রা রাবিলাম, কথন তাহা হইতে মনকে উথিত করিয়া তোনাতে সন্ধিবিট করি-লাম না।

যে ভাগাবান্ ব্যক্তি সৌভাগাক্রম ভোমার সারণ মনন ও সহ্বাদ জনিত স্থ-(थर याद्यान आश्व इंडेशाहर, माई चीर আলাকে কেবল ভোষাতে অপণ করিতে वास बहियाएए। भीवन निमाध कारल क्षरण স্থাৰ্থ কিন্তুণ সভাপ্ত পথি আৰু পথিক কোন দূরবাণী অধিরল শাখাপল্লব বিশিষ্ট বৃহৎ विदेशित ছারা প্রাপ্ত **इंडेट**ल यमन **স্থ**ी है। তোমার প্রেমানুরক্ত ভক্তরুক্ত পৃথিবীর প্রের মতাইপ মত্তা হইয়া বর্থন ভোমার শীতল আজ্ঞাল লাভ করে, তথন সেইকণ ভুগু হয়। আমরা পুথিবীর দাবদাহে দগ্র হৰীতা শীতল হইবার জনা কত স্থান প্রা-টন ও কত স্থান পরিজ্ঞান করি, কিন্তুযা-বং না ভোমাতে উপনীত ছই, ভাবৎ কোনা मरफरे रूपग्रदाश पृतं क्तिहा मण्युर्गकरण শীতল হইতে পারি ন[া] যে ব্যক্তি সভত তোমার আশ্রেষ্টের বাস করে, কোন তাপ আর ভাহাকে স্পর্শ করিতে পারে না।

দে প্রেমপূর্ণ প্রিয়তর ঈষর ! ভুমি
বেমন জানেতে অভাত শক্তিতে অনন্ত,
সেইরপ করুণা বর্ষণেও অবিঞ্জান্ত। তোমার তুলা এমন অন্ত কিথি স্থার সামর।
কোণায় প্রাপ্ত হইব, তেনিয়তে সকলেরি
সামানারণে ও বিশেষরণে অধিকার রহিয়াছে। ভূমি স্থামানিনের প্রভারকই
নিজন্ম ধর এবং বক্লেরই সামান্ত ধন।
স্থামি তোবাকে কোন শক্তে সভাবণ করি-

য়া বে কনের সুবিধানন করিব তার কর। করা আনায়। কুমি কাদার নরনের অপ্রন, কঠের হার, সিপালার জল এবং বিআনের কুল। আমি কবন তোমার বিশ্বনাণ ও অমৃত্যার মুখাংশু সদদর্শন করি তবন পৃথিবীর সুখ দুংখ সকলি বিশ্বত হই, এবং
ধ্বন ভোমার অনাস্থানিত প্রেম-রদের আস্থান্ত হই,তখন সকল তুফার শান্তি হয়।

अश्रद्धत्र महिमा।

न्यादर्शक्तिम् ।

প্রসংশন্ত্রিরের অতি চমৎকার ভাব। শ্রীর মধ্যে দর্শন প্রবাদি অপরাপর ইন্দ্রিরের ছিন্তান জন্য যেমন চন্দ্র, কর্ন, প্রভৃতি এক একটি নির্দ্ধিন্ট স্থান দেখিতে পাওয়া যার, প্রশন্তিরের সেকপ কোন বিশেষ একটি স্থান নাই, উহা শরীরের স্করেই ব্যাপিষা আছে। আপান নক্ষক কোন স্থলই স্পান্তির্যান ও

নীরবিধান বিদ্যা ব্যবসামী শণ্ডিত গণ নি-ৰূপা ক্রিয়াছেন, যে মস্তিষ্ক নিঃস্ত ধ্যনি সকল স্পূৰ্ণ জ্ঞানের কারণ ব্যালি বাতি-द्वारक न्यार्न ब्लारनव छेवशिक स्व ना; मही-রের মধ্যে যে স্থানে ধমনি না থাকে, সে স্থানে স্পর্ম জ্ঞান জন্মে লা। যে স্থানে অ-विक दमनि आहरू, भि उत्तर स्थान कारनेक আধিক্য হইয়া থাকে ও ঘেখানে ধন্নির ভাগ অপেই থাকে তথায় স্পর্শ জ্ঞানও ঘণ্প হয়। কিন্তু অন্ত্ৰত কৌশগকর। জগদীশ্বর যে কি প্রকার আন্তর্যা কৌশলে আমাদি-গের শরীরময় স্পর্শেদ্রিয় ব্যাপ্ত করি-बारहर, जारा किना बोरा दित कता वास ना, यानानित्यत शहाक दर्शत नथा श जारन এক গাছি কেল কৰা হইলেও আমরা জা-নিজে পারি এবং মন্তক্তিত কেলাগ্রেতে একটি মশিকা উপবেশন করিলেও তাহা उष्क्रनार मात्रामिट्रगत अवान chiba इत्। म्मारमञ्जूष भामाविद्यात नतीरतत त्रक्ता নৰ্বদা, ৰৰ্বমান থাকিয়া অতি সতক প্ৰহ্-जीव कार्या नामन कविष्ठद्य अवश् नामानि-क्षक नाना अक्षांत्र नाना अकारत नातथान ।

कतिहा तका कतिरक्टक, या ममन सामा-मिर्गत मर्भरनित्मम् ७ व्यवस्थितम् छवा ६वः অসাৰধান থাকে, উৎমাবেত স্পানেত্রির আমাদিপের কার্য্য সাধ্য করিতে ক্রুটি করে मा। स्यूथिकादन वर्धन मसुवादक उटेकः শ্বরে আহ্বান করিলেও জাঞ্ড করিতে পারা হায় না,ভংকাশেও ভাহার গাক্ত স্পূর্ণ করিয়া অনায়াদে নিদ্রা ভত্ত করা যায়। विटमवडः भागतः अव्य मर्भनामि हेळ्लि रहेरा य विषयात **मधान व्याश्च**ार्य रहे. न्थर्मित आयानिशतक (महे ममस विषय অষণত করে। শীতবাত অতেপাদি যে मकल स्का भवार्थ यामानित्यत हकू कर्नानि দারা অরুভূত না হয়, আমরা ভালা স্প-র্শেক্তিয় ধারা অনায়াদে ভ্যাত হইতে পারি। व्यामानिद्यतं मंत्रीदत्तः मर्कद्वरे स्पर्टनिस् য়ের দার মুক্ত রহিয়াছে, স্পৃত্য বিষয় যে দিকে বে কোন পথে আগমন করুক, তাহা অবশ্বই আমাদিগের জ্ঞান ভূমিতে উপ-बीठ हहेरवक।

दन्तर्गः निधान अधनीयत आमानिर्धत न्धर्यास्त्राद्य रथयन नाग विषयक छान লাভের পথ করিয়া স্বাচ্চি করিয়াছেন, সেই ৰূপ উহাকে আগ্ৰাদিগের অশেক প্রকার স্থ ভৌগেরও কারণ করিয়াছেন। বে ব্যক্তি কর্থন নিশাবশানে গাত্রোপান পুর্বেক কোন প্রদারিত প্রায়র বা প্রবিতীর্ণ নদী তীরে পরিভ্রমণ করিয়া স্থান্তিদা ও স্থানির্দাল প্রভাত সমীরণ সেবন করতঃ ংব্ প্লানি দুর করিয়াছে, কি নিশাঘ কালের দিন পরি-ণামে স্থ্যাসিত মহায় মাত্রত উপভোগ ক-রিয়া অঞ্চ দত্তাপ দূর করিয়াছে, অথবা প্র-চ**ও** গ্ৰীষ কালে উভাগাৰস্থায় ক**খন শী**তল कम्मनानि उपदायन धात्र कतिया स्वी ह ইরাছে, কি শীত সময়ে দিকাকরের মনন মন্দ রশ্মি সভ্যোগ করিয়া তৃপ্তা হইরাছে, त्न हे जानिशाद्य, त्य क्रम्ननानिधान विश्विन ज आमानिरशंत क्**ड**्रसूट्यंत क्रमा न्लाट्य-ক্রিয়ের ক্টি করিয়াছেন। স্পর্শেক্তিয় ভারা বে সামরা কর নমর কর প্রকার হবে তোগ ক্রিয়া থাকি, তার্ছা রান করিয়া শেব করা শ্ৰীৰ্য। বিশেষত্ব, সৰ্কাহ্যিত কৰ্ত্তা মনাভন

अक्र आमान्दिनंत स्मादनिक्रानंदर अकृषि स्मर्कात (कीमन अकान काममाद्रमा ्यामानिकात नतीद्वत त्य कंदिन क्लाटनिका त्व शतिगात्व एक मान् रहेटन मामाहित्तन कार्गा नाथन ७ छु थ निवातन इरें एक शास्त्र, ि जिन तारे एटन अरे बाग करियार जान शक्ति श्राना कतिशादक्तं। अत्मक मस्त्र थाप्तक बद्यारिक शव दिखा के किरोहर मा-রণা ও দঠিন কল্পন ময় পর্বভাদি অতিক্রম ক্রিয়া প্তায়াত করিতে হয়, প্রতরণ প্ मत्त्रा पाविक न्यानी महिल वाकिएन भारतेक थादाः क्या एडाम इहेतात मेखार्यमा, अजना ক্রারাধ্য পরীয়ের নক্ষাম মাংগাদে৷ পাদ: मूटन ध्यसित जात चंग्य अमान कतिशादश्य व्यवह इक्षेत्र वाता अर्जना मनज अर्कात न्युक उत्त अञ्चीका कविता क्विक्ट स्ट. **स्ट**. स्ट. হাত্তে স্পৰ্ম কৰি অংক থকে আৰম্ভ এজনা ব্যৱস্থা বিভে কডিপর স্থান্স স্থান আ-क्त वा नगति विनामान आहरू। निवास स्व मा-मामिशतक वशादवाधा कुलाई कुछिन अशान कति-भ क्रांशव डेर्भन क्रम क्रियारहर, डा-ंकाटक ज्यात बरागक नाके। ज्यामानिरणज ক্সফেন্ডিয় মাদ এখনকার কংগেছা। **আর** किश्विद (७ अर्थे। इंदेख, ७१६) इंदेश (क्रान প্রকাশ স্পর্শ স্থা ধর্মসূত হওয়া দুরে গা-कुक इंट्सामन कुद्दम भगाउँ भन भगा বোধ হইও, স্ভিক্ষন মহল ব্ৰাকেও অংক थात्रन कहा विश्वि हरेख जार प्रेरकृष्ट मन সমীরণকে অসমু অভিবাতবং অমুভব হ-্ইত। আমাদিণের শরীরের সর্বত্ত স্পূর্ণ শক্তি সমান তেজখিনী ইইলৈ কোন মডেই স্থানর প্রথা হট্ডাম না। স্বর স্রীর চ্-ू कृत नाम दिन्यम स्टेंटन विश्वया कि अ**रा**ज বজালি ধারণ করিতে সক্ষম হট্ড।

আমাদিনের দেহ প্তন হইবার পুরে
চক্তঃ শ্রোকাদি অপরাপর ই লিম্ন সকল একে
একে মগ্রহিত হইতে থাকে, কিব্রু আন্দর্যা,
স্পান্ধ ইলিয় সুত্যকাল প্রয়ার আনাদিনের
সল্পে থাকে, উহা করাপি আমাদিনকৈ আন্দর্ করে নাল ব্রাবিভাগ মথন সমুস্য করেতে
প্রার্থ করিতে বা চলেতে দ্রান করিতে
পারে বা শ্রাক্ত পারে বা শ্রাক্ত কা বাহনটো হ'ব স্থানিত পাৰে আনিবানে। বাহার আন আলী ক্ৰান্তিন কে আনিবান

नयाता करते. ध्यार ने প্ৰতিনিধি হয় ৷ কোৰ কোৰ न्त्रार्ग स्टब्स का सहस्य हुन, स्व त्या त्यान বস্তু স্পর্ণ করিয়া জাত্বার বর্ণ পর্যান্ত আনত रहेट गाउँ। वहेन बायक वेक्जन मी-ट्रिप चारक कतिशादकते, या व्याम बार्कि লাৰ ছার। বড়ের নীল পীত প্রভৃতি বর্ণ জানিতে পারিত। অন্যান্য সকল বর্ণ অ-পেকা তাহাকে ক্ৰম্বৰ অধিক বন্ধৰ ও ीनर्ग व्यक्षिक प्रश्न (वाथ रहेक अवर म এইহপ স্থাস-জ্ঞানের ভারত্যা অনুসারে সকল বর্ণই জানিতে পারিত। পণ্ডিতবর অপুত্ৰ দাহেত ব্যক্ত ক্রিয়াছেন, যে কোন अञ्च वानिकार ध्रमीन जोक्षी न्यान निक ছিল, যে নিজিউকালে রম্বকালয় ইইডে বস্ত্র আমিলে,যে সমুদায় বজের মধ্য হইতে আপনায় বস্তুলি চিনিয়া লইও। ঐ বস্ত্র সকল বে কণে ব্যবস্থিত থাস্কুক, উক্ত ফন্যা বদাপি আগন ৰস্ত্ৰ চিনিয়া লইতে আন্ত र्टेड ना। এक दाङ खन्न श्रीय खनामाना न्यादर्भ क्षियं वरण काम जिल्हा काम त्याय একাশ ফরিয়াছিল, অনেক দশ্ব পরীকা यावमाञ्जी लादक रुक् विभिन्ने इहेबाउ डेल অস্বের ঐ দোধ জানিতে পারে নাই অনস্তর উলিখিত অধ্যের নিকট হইতে ইহা অব-গত হইয়া বিলায়াপন হইল এবং ভাহাকে थे (मार कार हरेगत मुखान किलामा क-दिन। **पश्च करिन, एर आमारक वे अ**त्यत् धक हक समा हक आरमका दिएमर मीठन द्वाथ इल्बाट्ट **र स्तात है साह छा**व दनाय अगित्य शाहिशाहि । प्रक्रिक मान्य वक् सन ছ্যানিক অন্ধ প্তিত হোমে দেশীর সূত্র। तकन जिनीयक थाकिताल किन्न के सारा धेकरोत न्यामें कतिहा अध्य मान्त्रपी केंटन जर्मना र रेटर कृष्टिम 'ए महावित्र भ्रुका मक्त या हिता गरेताच्या द्वा देवास्त्राच्या हरू वा

AND THE PERSON OF THE BUTTERS MINES OF STORES छ रे गाकि अब प्रतिदंश प्रतिदंश की ग्रामप्त वा ब्लाकाबद्धक विकृष्ट अभिक्रि र-हेटलहे एक्क्लार झानिएक भावित, थे थ-কার স্থানে উপস্থিত ইউৰামাত্ৰ টাৰাদি-্গের পদতলে এক প্রকার আক্ষা স্পর্শ জ্ঞান অনুভূত হইত। ভাজর রস নামক नाटक्त किशादाहन, वि कान किन विधित १८४ इनिराद नमत्र क्विन म्मार्ट्सिक चाडा এত পূর্বে তৎপথ প্রচলিত শক্টাদির আ-গমন বার্ত্তী অবগত হয় যে তখন সর্কেন্ডিয় সম্পন্ন কোন ব্যক্তিও তাহা **জ্বানিতে** পা-রে না। বধিরেরা **অনেক সমীয় স্পার্শে**-ন্দ্রির স্বারা ভাবণ কার্য্য সমাধা করে। এই অপ প্ৰবাদ আছে যে কোন কাৰণ বশতঃ ভরাম দেশীর এক জন ভদ্র লোকের অক-भार हकूं, कर्ग अङ्खि नकन हेस्सियह भक्षे বইয়াছিল কেবল তাহার মুখ মণ্ডলের এক দিকে কিঞিৎ স্পাৰ্শ শক্তি বিদামান ছিল, কিন্তু আশ্ৰুষ্যা এই যে তাহাকে কোন বিষয় অবগত করিতে হইলে তাহার মুখের সেই नित्क भे विवस वर्गानिक कतिराहरे तम छ ।-কণাৎ তাহা বুঝিতে পারিত। তাহার প-রিবারের। ঐ প্রকার করিয়া তাহাকে সকল বিষয় **জ্ঞাত ক**রিত ১। **জ্ঞত**এব জগদীশ্বর যে ুখামাদিগের বিশেষ উপকারের জ্না স্প-র্শেক্তিরের স্থাট করিয়াছেন, তাহার আর नत्मह नाहै। न्यार्ट्सिय बाता अनाना अ-নেক জীব জন্তরও আলেম উপকার সিজ इस, इरम अकृष्टि व्यानक शकी गाहाता जल में बार हरे एक अभवाभित अनुके दल हरे एक জীবিকা সংগ্রহ করে, জাহাদিগের চঞ্চ অত্যে এপ্রকার আভর্যা স্থান শক্তি আছে,বে তা-হারা ঐ স্পর্ন শক্তির প্রনে অলক্ষিত ও अक्षकातमञ्ज्ञ जाटन अनाग्राटन आश्रनामिटनत (काक) रख कानिएक शाएक । co)कान ना-मक थक खाबात अची निविष्ठ चल्लकात्रमत बादन विकार काणित अकीत कुलाब महस्र हें निविष्य कार्या (देशन किंद्र आहात संबंधार नारत राजन करते, धानना करती-

ৰত ভাষার চক্ষতে এক অন্যার পত্ত পালা মাজি প্রধান ক্ষিয়াছেল, উক পদীর মধ্য মধ্যে কতক গুলি ছাক্ষা হাক্ষ্য আন্দর্য্য ধ্যনি দেখিতে পাওয়া বৃদ্ধি ।

जिन योग जामारिशदक न्नार्मित थ-मान ना कडिएजन, छाहा विहेटन बाबानिरगत आत आत अत्नक हेक्किए व विकास **र**ेंछ। जामता हकूः (जात विभिन्ने स्ट्रांज याद-कीवत मर्भनानि दिसद्ध काछ शाकिणाम, ष्यामता दगान मृश्व तखत्र है श्वत्र खतान माज করিতে পারিতাম না। পূবা পূবা প্রভাবে উলেখ करा शिवाटह, य आमता हुई है कू দারা যে কোন বস্তু নিরীকণ করি, তাহা বস্ততঃ এক হইয়াও আমাদিগের চঞ্চে ছই নেখায়, কিন্তু কেবল আশ্রুষ্যা, স্পর্টেমিয় আমাদিগের উক্ত ভ্রম দুর করে। বালক শাবং না **স্পর্টেরি**র চালনা করে তাবং কোন ৰূপেই ভাষার দৃষ্টি ভ্রম দূর হয় না। क्लान जवाका राख्नि यथन क्लान तर्भ पृष्टि শক্তি প্রাপ্ত হয়, তথন সে সমস্ত দৃশ্য বস্তুকে ু অতি বিপরীত ভাবে সন্দর্শন করে, সে তৎকালে কোন বস্তুরই প্রক্লুত আকার ও প্রকৃত অবস্থা দেখিতে পাম ন। তাহার বোধ হয় **যে সকল** বস্তু**ই** ভাহার অস্কের नत्त्र लिख रहेश तरियाहि बन्ध नकल व-স্তরই উর্চ্চ ভাগ নিম্নে ও অধে। ভাগ উপরে রহিয়া**ছে। অনন্তর সে বর্থন হস্ত ভা**র। বস্তু সকল স্পর্শ করিতে প্রবৃত্ত হয়, তথন তাহার উলিখিত ভ্রম রাশি পরিক্ত হইতে থাকে তথ্য সে প্রত্যেক ব্যন্ত প্রকৃত আ-কার, এইত সংখ্যা ও এক্রড স্থান অবগত হিয় এবং জনে এই কপে ভাহার নিভা অভ্যাস দারা এমনি একটি অপুর্ব্ধ স্বভাব इटेबा बाब, त्य त्य পत्रिगात्म त्यान दञ्ज নিরীকণ করিলে তাহা স্পর্শ নাকরিয়াও ঐ পূর্বে সংকার হেতু তাহার প্রক্লত জ্ঞান প্রাপ্ত रस। कारमण्डम नामक अक जन माहरूव কোন জন্মান্ধ ব্যক্তির চান্ধ রোগ জারোগ্য कतित्रा तिविद्शम, त्य ति अविक आध्रमणः त्य कान श्रमार्थ गर्मन समिता उदमपूराग्रदक त जानम् चन न्यूके त्वास् कतिन। এह

Partie Printer De la Printer d

ক্ষন্য অবস্থায় সমান বস্তু মাজিকৈ ভাষার প্রিয় নোধ হইয়াছিল এবং অসমান সিহার্থা প্রকল ভাষাকে ক্ষেশ দাবক বাধ হইব ও। শিশু সভান থেমন দৃষ্টা বস্তু সকলকে আজি পদার্শনা আমিন বা আগেন কর্ব কুরু হিয় অভ্যন্তর বিষয় বন্ধায়াই এভার যায়। স্পর্শোক্তির আরা যত দিয়ে গাই বিষয়ে এভার বিষয় বন্ধায়াই এভার যায়। স্পর্শোক্তির আরা যত দিয়ে গাই বিষয়ের প্রকৃতি দুরভারুজুত না দায় লাচাদিন মান্যবের এগতি ভ্রমণ্ড দূর হ্যানা।

স্পর্ণেতির বিশয়ে আর একটি অন্ত নলপার দেখিতে পাওয়া মানা **আনরা** শহু সাহতক শৰ্পৰ্শ করিয়া এক মনে করি, কিন্তু কি কৌণ**লে** দে স্পর্ণ রার। বস্তুর - 本 (NA) (MA) (MA) (MA) 全を関す まずに हिन। अवशिष्टा एम धन्तर निरु**रम** जा वानिकात महीरव स्थापनिविद्य अमान करिया-इहन, खाहात विश्वभाव कालिकम स्टेलिस অা**মাদিগকে** বিভাগ হ'ব ভাত হ'বতে হয়। করতলে ক্ল তর্ত্রাকার কোন পদ্ধি র:-ে, বিভা ভাষালে বৃদি **স্থাভাবিক ক্ৰপে** ভচ্চী '3 अनाबिका करें ठूड़े आम्कीन माता स् প্রাপাদায়ে, আনু এইজে ভারা একটি সভাই ्राप एवं, क्षित्र ए छुट्टे अध्युनी क कि जिन ক্ষিং ভাষান্তর করা যার অবান এক অসু-গীয় ইপর খন্য অঙ্গুলী রাখিয়ে ভন্দায়। অনতাপ বলে এ বস্তুকে মুরাণ বার ভাষা াৰ্থে এক নৱতে দুইটি বোধ হয়, অভ-এর বিরুজ্ধ দুক্তী ছাইতেছে যে আমাদিসের गर्दे । सम्बद्धिका अन्तर्भाषत् त्य वे**ल्लिस्ट स्व** ্ব'লে বৃত্ন করিবাছেন, ভাইার কিঞি-या ६ वर्गाची इमेरल हे जाशांकि**राप्त सर्थत** বানি ৮ ছাৰেয় উৎপত্তি হয়, জীহার নৌ-নগাই আনোদিলের স্কুথের **মুল, এবং তাঁ**-ার বরুণাই আমানিবে**গর স্কল সম্পদ্**

> বিজ্ঞানবান্ত। প্রেটিক। ।—ইউরোপের জোডির্কিণ্ড শণ্ডি

তের ব্রক্তির ক্রি লগেন বার প্রকাশ করিবারেন। তর্গার ১৮৯৩ গ্রিক্তির বিশ্বন প্রকর্তির নির্দেশ করিবারের। তথ্য বিশ্বন করিবারের। তথ্য বিশ্বন করিবারের করিবারের করিবারের করিবারের করিবারের করিবারের করিবারের করিবারের নাম উজ্বল্প নামক পরিকাশ করিবারের বিশ্বন বিশ্ব

भनार्थ विभा।

১।—ইউরোপের পদার্থবিৎ পণ্ডিতের। পরীক্ষা করিয়া দেখিয়াছেন, বে শুদ্ধ স্থাতারে অপেকা সমুম্রতীরে ও প্রশন্ত প্রদাস্থ নদ নদীর নিকটস্থ স্থানে অধিক রুক্তি হইরা থাকে, এবং তাঁছালা তাড়িতাও কারণ বালিয়া স্থির করিয়াছেন । বিশাসন বিদ্যান

১:- একজন রসায়ন-বিন্যাবিং পণ্ডিত বিরু করিরাজেন, যে ক্রান্স রাজ্যে চেজনট নামন হৈ এক প্রকার কল ভরে এই কল করিয়া সার প্রভৃতি নানা প্রকার কর্মোপ্রযোগী গদার্থ প্রাপ্ত হওরা ষাইতে পারে, এবং উহা বারা এপ্রকার পুর্টিকর ক্রান্ট প্রস্তুত হইতে পারে, যে তাহা ভক্ষণ করিয়া মনুষ্যাদি অনেক জীব করে জীবন ধরিও করিতে সমর্থ হয় ৫।

া — ইউরোপে দিন দিন রমায়ন বিদার এমনি প্রাকৃতার হইতেছে, যে উভ
বিদ্যার প্রভাবে ঐলুকালিক ব্যাপারবং
নানা প্রকার অসম্ভব কার্য্য সংশাহিত হইতোছে। ইংলণ্ডের কোন কোন মিউল্লকার কেবল এক নবলীতকে পরিণত করিয়া
ভক্ষারা নানা প্রকার করেয়ে আছুল উৎশন্ত করিতেছে, ভাষারা করেয়ে বার্তিক বিভাগ এমন স্কল মিউল্লিপ্রস্তাত করে ক্রিভাগ ভক্ষণ করিকে ভাষারা প্রস্তাত করে ক্রিভাগ

American fournal of Science 1995 Sees, No. 116 Charaber's Journal September 1996

in identific distory of Animals, vol. 188,

ভিন্ন কলের সাধাৰ সমূহত হয়। এক ব্যক্তি নিজ্যী কোন মংসানান্য বিশ্বতি হই-তে বাদালের তৈলের স্থাসন্ত্র্যক্ত প্রকার তৈল প্রস্তুক্ত করিমাছিল, উৎকৃত নারাকের তৈলের দহিত উক্ত করিমাছিল, উদ্বিশ তৈলের ভিন্নতা ছিল না, যাহারা ঐ ক্রমিন তৈলের আন্ত্রাণ গ্রহণ করিমাছিল, তাহারা তাহা-হুইন্টে অভেদ বাদানের তৈলের আণ প্রস্তুক্ত বাদানের তৈল প্রস্তুত হয়, তাহার নান প্র-বাদানের তৈল প্রস্তুত হয়। তাহার নান ইংবাজি ভাষার তারবেরেল বলির! উক্ত দুল্যাছে ৬।

सृडक्ष विषा। :

১ ।— ইংলন্ডের অন্তংগাতী কেন্টীদ নামক নগরের এক স্থানে এক অসাধারণ প্রতীর কুপ খনন করিয়াও কল প্রাপ্ত হওয়া বার নাই। খননকারির। নুনাধিক আট শত হস্ত মৃত্তিকা খনন করিয়াও বখন তমিন হইতে কিছুমাত্র জল প্রাপ্ত ইইল না, তখন তাহারা খনন কার্য্যে বিরক্ত ইইল। আনেকানেক ভূতত্বিং পণ্ডিত এই অসম্ভব ঘটনা প্রভাক করিয়া বিশ্বরাপ্তম ইইয়া-

২।—লগুন নগরের পারংগালী সকল
সকলা পরিকার রাগিবার জনা তথায় এক
প্রকার অন্ত কুপ খনন হইতে আরপ্ত
হইরাছে। সর্বাদা আবাশ্যক মত লল প্রাপ্ত
হইবার জনাই লোকে কুপ খনন করিয়া
থাকে, কিন্তু তাহার বিগরীত কর্মা নিজ্
হইবার জনা লগুন নগরের উল্ল প্রকার কুপ
নকল প্রস্ত হইতেছে। ঐ সরল কুপ
ভারা ভূজান্তর হইতে জলা উল্লিক না
হইরা উহার মধ্য নিজা লাগুন নগরের পারং
প্রান্তী ও অ্যান্য ছারের আগরিজ্ঞ
ভ্রেলী প্রশ্ন বিশ্বিকার নাল্য নাল্য
নিজা আল্রিকার জলীর প্রান্তিক।
নিজা বিশ্বিকার লাগ্যিক লাগ্যিক।

Afternry Grantie, Sth November, 1856.
Chamber's Journal, Angury 1856.
Chamber's Journal, Applematics, 1856.

ं।-जीमीठ नेपालक स्व शर्बा छन्। लब श्रीमक मान-मिन्न जिल्लामान चारह, উক্ত পৰ্যাত সহস। মুডিপায় কল্পিত ইও-ब्राह्ड डेङ मान मन्त्रिक पहिल मानव थ कांत्र शतिमादामि किशी मुन्तम हरेवात वा। यां इहेग्राह्मि। मान में सम्बद्ध (स नादर्भे ক্ষেত্রে আকাশস্থ নক্ষত্রের প্রতিবিশ্ব পৃতিত হুওয়াতে জোনভিব্বিং পণ্ডিতের। শরিকার कर्त्य नका में मकल मन्द्रभाग केरत व, উ**लि** थिएं পর্বত কম্পিত হওয়াতে ঐ পারদ কেন্দ্র এৰপ আন্দোলিত ইয়াছিল, যে ভালতে जात अविधि मात मेकरब्राई श्रान्ति मुके হয় নাই। অনত্তর ভূতত্ত্বিৎ পণ্ডিতের। विद्रश्य मञ्जग कविशा थे क्ष्णान क्रियाहरू প্রভীক্র, করিয়াছেন। উহোর। ঐ মন্দিরের নিক্ষে কোন কোন ছানে গভীর কুপ খনন করিয়া তৎসমুদায় ইফক-চুন প্রভৃতি দানা প্রকার পদার্থে পরিপূরিত করাতে উক্ত কম্পন ক্রিয়ার প্রতীকার ইইয়াছে ১।

निष्ण विमा।

১।— জ্বান্ধ রাজ্যে সৌরতাপ পরিমাণ করিবার জনা এক অন্ধুত মন্ত্র প্রস্তুত হই-বার প্রস্তাব হইরাছে। যে দিবন মত উ-ভাপ রন্ধি শইবে তারা ঐ যন্ত্রে স্কুস্পর্ট প্রজ্যাশ থাকিবে। ঐ যন্ত্রের উপর রৌদ্র পতিত হইলে পর আগনা-ম্ইতেই তারার ভাপ পরিমাণের চিহ্ন অন্তিত হইতে থান কিবে। মটিকা মল্লের নায়ে টারিবিত বস্তুত্র

হ।--ইংলজে দ্র্যাপান্তন। প্রস্তুত ছই বার এক অপুন্ধ দত দিখা। হইতেছে। উক্ত ব্যক্ত-সহকারে এক দিবনের মধ্যে ২০০ তুই শত যোড়া গাছকা প্রস্তুত হইবে, এবং তাই। বিসক্ষণ স্কুট্ম দু দীর্ঘকালা স্থানী হুইবে ২০।

্ । — ইংলগু প্রভৃতি ভাবে ধানা গোধূম প্রভৃতি সানা ছেন্দ্র করিবার এক অপূর্ব থক্ত প্রভৃত হই নাছে। উক্ত থক্ত ধার।
কর্মকেরা এক স্থান ভাইতে অনেক ক্রের
ক্রাক্তির ক্রিটিড সর্ব হয়, এবং উহার

Chrester's Josephal, August, 18/6.

দারা ক্ষাপ কালের মধ্যে কিন্তু ভূমির শাস্ত ছেম্ম করিতে পারা বার । উক্ত বজ সহকারে একনা এক বাজ্ঞি কামক নয় ঘণ্টার মধ্যে অভ্যান ২০ বিখা পরিসিত ভূ-

৪।—সমুদ্রের কটিকা ও অতিবাতাদি
ভিপত্তিক অন্তর্গ জাহাজের নক্ষণ্ট হিছিলা
অনেক লোহের প্রাণ সভী ও অনেকের বিশ্বন উপাত্ত ঘটরা থাকে। রিটার্ড রস্টন
নামক একজন সাহেব একদেশ এ সমস্ত ভিলাগের প্রতিভিন্না করণের এক প্রকার
ভপান ক্ষির ক্রিয়াজেন, তিনি এমনি এক
একার যক্ষ প্রস্তুত করিয়াজেন, যে তাহা
নালায়ের রজ্জাত সংক্র থাকিলে ক্যিন
কালে আর নক্ষর নক্ষ হত্বেন মা ১১।

বিপুরা ত্রান্সমাজে পঠিত স্তোত্ত্র।

1. 雪田門前 1993年間

অদ্য আমরা আর হে ব্ৰহ্মাণগাত্ত! এক ব্যাসর কাল জনা জীবন পথে অগ্রসর চইলাম অভ্ৰাব এত চুপলকে ভোমার স্ত-ান্ত্ৰ মহিমা সংগাড়ন জনিত বিমলানক উপভোগারে নামার মন নিজান্ত উৎয়ক হুট্রা উঠিয়ালে। কিন্তু উ**চ্চন্তিত** সংগ্রা-ঁকাজনী উর্দ্ধান্ত বামনের ন্যায় আমার এ रामना यनि जाडिगम छेशशमान्त्रम रहे। ভণাপি ভরমা যে জুদ্ধ পোষ্য শিশুর মুখ বিনিৰ্গত অস্ত্ৰিযুক্ত থাকা যেমন ভজ্জ-নত অননীত অপরিমীণ আহ্বাদ দারক হয়, ার্ড গার্লিডয়া **আমাদিনের অসম্পূর্ণস্ততি** বলত তোমা কর্ত্তক নিং**শন্দেহে উদ্ধেপে**, राहिएकी हा करेका **थादक**ा **्रक् मंत्रीमिटका** ! লোমাত কর ও ভা**মালাৎ গত রহী মধ্যে বে** करा परिवर्गानीय वा**र्थित स्ववाद्यानार क**ा ্রফাছি আছার কি অর্থ**ন করিব! স্থামানের** भगन समरह समात हुन्ति **ऋथ कर्त्र कक्क मरना** हर শোভাইবা দৰ্শত কৰিলাছে, **রসনা কিত সু**্ चार उभारमा भाग दी तहेवा चार श्राहिशह क्रियार्ड, नाभिकः व्यक्ति अक्रिक

- Literary Gazette, 22nd November, 1856, 22

THE AV PUR MINERAL CHES, WILL প্ৰাৰ কৰিয়াহৈ, কৰ্ কছবিধ প্ৰস্থানিক ম श्वत्रहरेना अन्य काल्याक, एनिस्मिन कट প্ৰকার শালী সুধইনা সভোগ ক্রিয়াছে, आमादमस् सदन अस्टिप्ट अस्ति छात सक-न उपि इरेगा। कडरेस विमलानम अ-मान कतिजादक्। यनि के के काम आर्थ्य य-कृत्वि सम्बोगरिय बासबात निश्वविक र-देशांच् जबर क्रमासन लोकांचि लिया काता অংশি অন্তৰ্জাত চ্ইয়াছে, কিন্তু হৈ মঞ্চ সাকর ' ভোষার অন্তব্দ্যায় ভাষারাও সভি হিতকে জ্বলি সদ্প্রদর নায় কত জতুলা ও অমূলা জ্ঞানোপদেশই প্রদান করিয়াছে 🖯 লোকে রোগ শোকাকান্ত হইয়া ভ্রম ও মে: হৃ বশ্তঃ ইন্দংদারকে কথন কথন কেবল ছাংখ্যম বিবেচনা করে বটে, কিন্তু শুমুন্ন ভাষাতেই আনার **ভোমার ম**-জল অভিজ্ঞায় প্রতীতি কবিয়া ভাষ্টের चाया गर्ग डेबटारका धाल रूप, रहक-রুণানিধান! আমাদের নিক্**ট আপাত**ভঃ প্রতীন্ত্রনান বিগদ সমূহ তে ভূমি স্লখেনে-শেই ণিধান করিয়াছ ভাহাতে আর কোন मत्म्यर नारे। ८२ जनमीम! मनुषा की व-्मतः यदिकारमः **भागर**त्रहरू विविध स्वध সভোগ করিয়া খাকে, কিন্ত হজ্ঞা ভব-দীয় প্রেয়ে নিময় হুইরা হুডফভো প্রকাশ रुद्ध अमन लाक किं दिहन, कमा-চিৎ কণস্থায়ী স্বস্প সুংখ ও বিমন্ত যদি উপস্থিত হয় তবৈ আমাদের ক্লুতন্ন রদনা ভোমার পরিভন্ধ নিজ্ঞার মহিমাতে ক-লক্ষায়োপ করিতে স্মানি উদ্ভিত হয়। नेवापि जास चात्र निवापरगत मोश्रिविष, द्वा ष्ठःथ निर्गातक काम कियान निकीत्रण करा। याद्य छटत मसुरा, कामिटक भारत स्व देन-প্ৰাৰ্থি আসরণ তিমি মত প্ৰকার বৈত্ৰিক ও আহুরিক অপুর্ব্ব বিমলানক ভেটে ব विशाहन उर कुल्यास काराक असे अनिका नाज ए भएजांची स्टेस्ट रहेमारह, विकास मादनव कादनव अश्वामकता १६ मा COR CO WALL CAS COMO MAN WANT CONTROL THE RELEASE WATER AND AND AND PROPERTY.

असूक्ड करेत्र बादका मिन् कांब का एव क्षकात स्ट्यानसामित पछि क्षकाक क्षमान।-वरनाकरमञ्जलिक मुक्किक ब्रिका अखः-করণে প্রতীতি করিতে পারে না, ছে বি-थनाथ! अख्वानाम विशृष्ट यानव श्रेने ७ जुजारा মাতৃ স্বেহাদি তোমার করণার অসংখ্য নি-দর্শন দর্শন করিয়াও ভবদীয় মঞ্ল সন্তাতে প্রতার স্থাপন করিতে সক্ষম হয় না। পরমা श्रम्। आयोग्पत अथन विषय ज्ञम किन किश्रित ? आंभरा कि कमाशि हैं है है इंटें উদান হট্য না? তোমার এতি ভিজি ও থাতি থাকিলে এবং নিয়ত জ্ঞানা**তালৈ** ক-বিলে, পরিণানে এ ভাত্তি ঘরশ্বাই সুরী ছিড াহ বর্ণসিকিলালা! पिन १ जायापनत आर्थनात भारतको ना कतिसा ্রত্যেক্সাতিতি জ আনাবিত ক্রের সামগ্রী অত্যাই বিধান করিয়া রাশিয়াছ তথাপি ভুগি লাভা, আলারা হুইছো। গুখাতার স্বভাব এট যে দানশাল বাজি নভুৰাতী-প্রতান করিলেও তাহার আশার নিকৃত্তি হয় লা, শতিএৰ পেই আশানে একটি ভিফা প্রার্থনা করিছেলি। कलाको । याचि यथन काम भारमातिक কোর বিপদ ভারা বিশ্বর ভিয়া জোন হান্ধানিক শ্বন্ধন বিয়োগ अभिड (मारु জারা **বিমুদ্দ হই তথ্নও গেন ভ্র**নী: মজল বৰূপে আমার কুচ বিশ্বাস খাডে: এবং সেই সমুদর ঘটনার সধ্যেও যেন তোমার কর্মণা দেবীপামান দর্শন ক্রিনা তোমার প্রেমে পুলকিত হটয়া জীবচনঃ সার্থকা সম্পাদন করিতে পারি, এই আমা-র কামনা।

তিপুরাস্থ শাখ। ব্রাহ্মসমাজের বক্ত হা।

এই শাখা আজ্বনাজ তুইবংসত্ত পর্যা ত অতি প্রক্রম ভাবে জীবিত বাক্রিয়া অদ্য বে তৃতীর নববর্ষে পদ প্রক্রেপ করিজেছে, ইহাতে আফাদের ব্যব্ধ প্রকার আক্রম ইহাতে আফাদের ব্যব্ধ প্রকার আক্রম ইহার বঞ্চার হুইতেকে ভাছা বর্ণন করিতে সমর্থ নতি বেশি ছঙ্গাকি এবস্থাকার আ-

माम जामत जात कर्षाक गढ्यात कति नाई। भविक यासि अहल जैनेन जारें में में स्टेश दकान ब्रह्मत समित्र हात्रात छेशदबम कत्र छः मन्त्र मन्त्र माक्र्ड मिन्द्र स्थलात अव्हा रबाव करत्र नाविक जन्नानिक मञ्जूष या थ-प्रश्र (तभवकी नमी छेखीर्ग स्ट्रेट भारतित्न তাহার মন যে প্রকার আনন্দ সলিলে ম্য হয়, শীতাৰ্ত্ত ৰাজি হৌতে বা উপযুক্ত বস্ত্ৰ आखि रग अक्त अर्थ (बाध करन धवः বছ দিবস পরে স্থাদেশের মুখনী ও ভক্তি ভালন পিতা মাতা এবং প্রেমাম্মার পুত্র पात्रात १८ म तम विभिन्नः । ठलामन् नम्मर्गन क्रिय़ा अष्ट्रकवन् त्य श्रकात् भानन्त्रश्रुतम भारित दश, अमा , अहे मार्था लाक्समास्मत বিত্তীয় সাসংস্থিক সভা উপস্তেই আন্ত निर्दर्शत भाग छक्तेले मिर्जाश जानमा जन्नान इट्रेट अध्यान दर क्षाप्तानियारन कृषा वरल এই ব্যাজ বজ্বিণ ভূষ্টনা অভিজ্ঞা ক রিয়া অন্যাপি বর্গমা**নী আ**ছেছ, ভাঁহাকে ম-নের সহিত্রবারেবার সমস্কার না করিলা কোন লোলারেট চি**ভ প্রসাদ লাভ করিতে** गमर्थ हरेगा। अहे नमाझ अध्यम नदनंत्र त्य প্রকার কুর্দানির পতিত হুইয়াতির ডাগাতে যে ইকা জীনিত থাকিয়া এই সক্ষাব্ৰ-कारिएशर क्यापि आधार वैतिहर केस् कः স্রিও জালা ছিলে মা, কিফা সভা ধর্মের কৈ अभिति गिष्ट ? नहें भयात उधादित বার ফল বিপকেলা যে সবল বড়বত্র रातिक किन, तम अक्स है क्षिककरण कोटन-র করণে এদে পতিত ইইখনেছ। য**দিও** करे कर मगक हो। योपाइन करे क-সংস্কারাণিটি দেশের কোন উ**পকা**র ছই-ৰার সভাবনা নাই, তথাচ ইহার **দারা** বে छेशका करेसा**र जानारे उानामिनात** অবিক বলিয়া খীকার করিতে হুইবে। যে কুসংকার পাশে এতনগরীয় ভদ্র জন भेग बन्न बारहर, डाहारड वह तमाझ ता এত দিন भगाष भौवित आहा. इहाई यामानिदर्गक शहम त्मेजादगात विवस कस्पानिशाम अपर निक:। ভূমি যে জা-गारितात छेनत अकुकल्या अकाम करतः

মাছ এবং আধিনা খারিবার পুরেই বাজাদিপের সকল কামনা পূর্ব করিয়াছ, তথাত
কামরা ভোষার নিকটি পুনুর প্রাথমি নি
করিয়া কার থাকিতে পারি না হে কক গামর! ভূমি দ্যা প্রকাশ করত এই কুসংস্থাতিই বা দেশকৈ এই সকল এম
নবং বুলে লার হুইতে উরার কর এবং
দ্যা ধর্ম ভোরা করিবার ক্ষমতা প্রকাশ কনতং ভারাবার তাল্লগণের সামস পূর্ব
কর

ে প্রদাস্ম্! তেমার করুণার বি-तम का कि कि कर्मन कहित! (उ.माह मनात করেন। ভাবে ভাবজ্ঞান বার রহিয়াছে। কুমি ইছোমাত এই নিশাল ব্ৰহাণ্ড বিচিত্ৰ কৌশ্ল দারা রুশেটিত ফরিয়া স্থাটি कृषि जग्नुकरूल अनाम श् ক্রিলাছ। काल स्वनःशा जीवात रुचि नविशा नर्त-২০০৭ ডাংগদিসকে দরার সহিত প্রতিপালন विदिश्यम । (क् कक्षेत्रीरियान अवस्थाः) ट्यामात कक्षा गणना कता काराह्य माना? ভূমি বিধিব উপায় দ্বারা পর্বাছ শিশুকে निवास स्वादात क्षत्राम स्वतिहरू, दुधि छ। इ.व कृषिक इरेगार गुर्स माकु खान ভদ্ধ ধ্ইবার নিরম সংস্থাপন করিছাছ चरः कृषिणे माकाम[्] स्ट्रा जनिसंदर्शेस মেহ প্রদান করতঃ কুত্রম সতৃশ অংশাগঞ শিশ ন ওলীকে প্রতিপালন করিতেছ। হে कतुन्नायत रिभाभागक। जुनि त्व क्वरत या माणित्यम छिल्दन निर्शेष्ट कहारा साञ्चि वर्षन हिल्डिए अपने नर्द , अहे जूम छटन स-तडीत बीर चाट्यः नेकेट्नत व्यक्ति जुनि निज्ञ सम्बन्धः कक्षना वर्षनः वैद्विष्ट् । कि गरम, कि शकी, कि महीस्थ, कि पाँउ ক্রেডম ক্টিড, যে কোন জীবের প্রতি আ-मतः त्याला कृष्टि केवर पास्त्र विषय आभग्न वित्मव पाश आस्त्राहना कृतिया स्व ভাষায়ই উপত ভোষার এমৰ অপার ক রুণার চিষ্ট সেখিতে লাই যে তদ্ম**ারে অতি** খনটোর জুরামার মনত ভোষার জেনী করে थाज रहा

गराञ्चल । ज्यानितंत्रः व्यक्तारं वदन्त्रः

मञ्चाक लाखान ।

कृषाच कहिएलन, नेकूछरन ! एकाबारक श्री के कि विद्यादिक के का कि का कि জ্ঞাভ নহি, অতত্ত্ব মিথাাবাদিনী ছুমি, ডো-মার বাকো কে বিশাস করিবে ? **ংজ**তি জ্বনা সুস্টাংমেনকা ডোমার জননী, সে তোমাকে ছিমালয় প্রতি নির্মালোর ন্যায় পরিষ্ঠাণ্ড করিয়াছিল, আর ভোমার পিতঃ বিশামিত্র প্রতি ক্ষমা, যিনি স্বয়ং ক্ষতিয় অথচ ব্ৰাহ্মণীয় প্ৰাপ্ত হইয়াও লোভে কা-মের ব**শহাল**ল হইরাছিলেন। যদি অপুসরার মধ্যে লোঠা, আর বিয়ামিত यनि महित्रिक्षित्र महिता क्षापान, कृद्य की-शानित्रशः कना हरेशा (कम जुमि कुनोगेद ন্যায় বাকা ব্যয় করিছেছ? বিশেষত আ-मात्र माकारक ८३ मक्न जवारका क्या কহিতে তোমার গজা বোধও হইতেছে না, অতএব হে দুকী ছাপ্সি ! ভুমি এথান হ-ইতে প্রস্থান কর: কোঁথায় বা ভোমার ঋষি ভোষ্ঠ বিশ্বামিতা, কোণাল বা সেই মেনকা অপ্ৰৱা, আৰু কোৰায় বা ভাগদী বেশ-ধারিণী জুনারিণী জুমি। তোমার এই পুত্ৰ বাৰা কাৰেই বৃহৎকাৰ এবং অতি वलवान (मिंदिङ्कि, खंडे बर करे बन्ध का-लिहे हैनि कि कां 9 भाग इत्कर साम इंस्ट হইলেন ে তোমার উৎপত্তি অতি নিক্লফ হইতে, যে হেতু জুমি কুল্টার ন্যায় বাক্য প্রয়োগ করিতেছ এবং কাম বাপাপদা ম-থেক্চারিণী মেনকা কর্ত্তক ক্রমি উৎপন্না हरेग्राष्ट्र। दे जोगिन। कृति साहा कहिएकह नकत्तरे जामात नहत्रका द्याप क्रवेटलहरू OCCUPATION AND STATE OF THE PLANTS कृषेत्र द्वानाह त्यक्षात् हेन्छ। तम श्रीक कहा। THE PERSON NAMED IN THE PERSON NAMED IN COLUMN TWO IS NOT THE PERSON NAMED IN COLUMN TO THE PERS WEIGHT COLUMN TO THE MER LIFE ON

एरनोडा हन, **अख्यत (ठायात क्या हरेटक** यामात स्थ कर उरहरी रहेग। दर त का अ कि नुविदीएक अर्था हैन कत, जामि অন্তরীকে নতামত করি, অতথ্য তোমা-**१७ जामारड ता श्राउन डाहा त्मक छ** লর্মপের ন্যায়। আর আলার **এত**াব **লেখ**় ्यामि हेन्द्र, यम, कुरवत् ७ उक्रस्तित १८६ নাভায়ত করি। মহারাজ! এছলে আমি ieक लोकिक क्षांत्रिक मङा कथा मुक्कास স্বৰূপ উপাপন করি, আপনি ভাহা শ্রবণী कतिया क्रफे रहेरद्वमा अवश्र आमि स्व रचन क्रिया कश्रिएडिइ अमन**७ मरन क्रिए**न না। বিৰূপ পুরুষ যতক্ষণ আদৰ্শে আপনার ঘুৰ্বজ্ঞান দেবেৰ, এতক্ষণ জাপ**নাকে অ**ন্য গ্রতে **র**প্রান্মনে করে, আরে **দেই** ব্যক্তি আপেনার বিক্**ত মুখনী** হিনে, তথ্য আপনার ও অন্যের মুখ্রীর ৰিভিন্তা জানিতে পারে। স্থনপদশ্রন ুয়েক্তি কুত্রণ গোককে "**স্কৃত**তা করিবে मा। যে ব্যক্তি অধিক বাক্য কহে ভাষাকে देवात्तः अनर्थ गानी वरमः। यमन भ्रकतः পুরীষ গ্রহণ করে, ভাহার ন্যার মূর্যা ক্র**জি** লৈকের গুভাগুড় মিজিত বাক্য জবণ ক-বিষা ভাষা হইতে অভত বাকাই এছণ করে, আর হংক্ষ যেমন জল হইতে করি াহণ করে ভক্ষণ প্রাক্ত ব্যক্তি মিঞ্জিভ ৰাক্য অৰণ করিয়া তাহা হইতে ঋণ-বছাকা এছণ করেন। যেমন সাধু বাজি অনোর অপবাদ অবণ করিয়া পরিতপ্ত रन, अमार्^ड चाङ्कि एउमनि आत्नात अ-नवान विद्या ऋषी १३। यमन नार् रांख्य माना लादकत नवर्षाना कतिया जुधा रम, पूर्व वाङि नक्कानत अनुमान कतिता **उक्तभ कृश्वि गां**ड करते। अरमायमभी गांधू तां कि स्टब बादकन ७ त्मावीसूननी पूर्व श्रुणी रहा, त्यदर्जु मूटर्वहा नाश्रुद्ध निमन इत्ता किल गाइ वाकि पूर्वकिक विका क तिन मा । त्य दानि चंद्र छन्न हरेगान नव्यत्यं श्रूवंतं दनिश्च। विका करतः, रनारक जीक सहित्य शिकालाई साथ एक एकेटक THE PARTY OF STREET DIS TRANSPORTED THE REPORT OF

क्रिय हर्ग, ज्यम क्रांजित्कता क्रांग क्रांचात्र म्बाद्धन । (य वाकि चन्न चन्न चून উৎপাদন করিখা ভাষাকে সমানর না করে, रमवजाता जाहारक क्रिक्स कर्दान गाँवर मि म**ेरि** त्वादि शम्म **कतिए** शक्ता ना পিতৃ গণ পুত্ৰকে কুল বংশের অতিষ্ঠা ও শ-का भटकात जाला बटन का का कत्रिशादक ন. অত্তর পুত্রকে গরিবালি করিবেক मा। मसु करिय़ाह्म, चन्द्री मसुष, ने জীত, বিষদ্ধিত ও খন্যক্ষেত্রকুত এই **नैाठ अकार भूज स्टेग्रा थाटक**ा मञ्जूरगोत् र्थिक कार्या मन्नामक ए बीडि विवर्धन बरेट ধর্মা প্লব স্থানাপ পুরু জন্ম এছণ করিয়া পিতৃ भगटल नज़क हेहेटल छन्नात करत। ८६ मुश শ্রেষ্ঠ ! ভূমি পুত্রকে, পরিত্যাগ করিও না, एक प्रिकीमण्ड । वाश्वादक व्यवस्थात्रः ও ধর্মকে প্রতিপালন কর। হে নরে-ন্দ্রণটভাব পরিত্যাপ্তর, শত কুপ খনন হইতে এক পুন্ধরিণী জ্রেষ্ঠ,শত পুন্ধরি गो रहेरण अक **बड़ानू** केल **रखर्छ, मंख बड़क** रहेट कर भूटांश्यानन त्यारे वयः नड पुक्त इहेटल अ**क नेटा (छर्छ।** अ**क निरंक**े नव्छ अधार्य राख्य अना भित्क धक मन्त्र লইয়া ভুলনা করিয়া দেখিলৈ সহজ্ঞ অশ্ব-মেধ স্ইতে এক সভাই আৰিক হয়। त्याकन्। मादकाशाक मञ्जूषात देवनाथात्रनः ও বৰ্বৰ ীৰ্থে অবগাংন, এসকলও সভ্যোৱ मधान र्ष कि मा भरमह इन । म-ত্যের সমান আর ধর্ম নাই, সভা হইতে উৎहुकें उ जात नार्रे जरा मिथा। हर्हेट ভীত্রতর পদার্থ ইং সংসারে আর কিছুই নাই। দে রাজন**্স**ভাই পরবৃদ্ধ সভা व्यक्तिकार देशहरू, घटनव मठा अविका অতিক্র করিওনা, সভা ভোমা কর্ত্ত 🕰 🔆 তিপালিত হউক ৷ বদি ভূমি অনুতা-क्रिशामी करेश पायामिटलड अकि आया ना का, जारा इरेटन आपि साशानिर असान করিব, ভোমার পাঁহিত আর দ্যোলাপত ক कि। ना । ६२ प्रयाह । दशकी वाकीवन नामात्र भूख रेमग्रहान हिमानावत्र कर् छू-वन वक्त वद्यास अरे नृविदीत्व अवस्रहे अधिनातन कतिर्द, प्राश्चेत्र मत्मर नारे।

दिकाम्याह्म कहिएमन, मकुखना जानी-क हेर कहिशा निवाय **हरेगामाज विश्व** क, शूरताहिए, सामार्था अ सिक्ष नेर्त न রিবেটিত ছ্ব্যন্তের প্রতি আকাশ্রাণী চণ্ডা। মতে। ভক্ত। প্রণ, পিতারই পুঞা জানিবে, স্কুত্রাং পিতৃ ইইতে ত্যালপুত্ৰ পিভারই হৰপ , অভএই ছ গুত্তকৈ প্রতিপালন কর, নকু-ভলার অলমান করিওনা। । হে নব্দের। উক্র শোণিতোপেন পুত্র পিতাকে বন ার্ডন গুইরেড উন্ধার করে । শবুস্কর। भटाचे दविद्योग्न व वृत्ति सहे पूज छैद-্যালন করিয়াছ। আগনার অফা হিপ্ত করি-লা প্রীলোক পুতাকে প্রায় করে, অক্তর কে দুবাৰ ! শকুৰদা গৰ্মাত এই পুৰুদ্ধে প্রতিপালে এর। জীব্য শক্তান পরিসাপ শ্ববিদ্ধা লো ইপিন্ত শ্বংলা উ্থা মকল জনক माक, काल ८४ के अभीवन स्वार्ष ' क वृष्ट् লামত এই বনায়া স্বীয় পুরুত্রর ভরণ পেন-াণ কর। বেহেছু ছোমায় এই সন্তান-্ক আনাত থাকোতে ভরণ কর কর্ত্ত ্টল অভ্নে ইইন নাম ভয়ত স্থীৰে। প্রেরটেও রক্ষা সুষ্টে এই স্ভরীক বাৰী ভাৰণ কৰিয়া সকলৈতে পুত্ৰেছিত ও अभाग पार्ट कहिल्लम्, जाग्रहा अहे हेम्ब-नानी धानन कतिराम जन्ह आर्मिष्ट हेन्एक आ-মারেই সভাম বলিয়া জানি, কিছা যদি क्षांत हेरादक अस्त कवि ठांस हरेला शास्त्र , जारक भरम्पष् करत ७४० श्रुष्टा १ कनही হয়, এজন্য প্রতীক্ষা করিতেছিল।ম। বৈশ-স্পায়ন করিলেন, হে ভারত! রাজা ছ-याच दिन नारका भूकारक त्याधन कतिहा স্ফটিতে ভাষ্তে এত্ণ করিলেন। খনওর ্যালা ঐতিপ্রকুল হগরে ভাষার পিতৃ कार्य। सकल यथादिशात्न मण्यम कतिया ाष्ट्रक फाडान कंत्रचः (वह भूतिक बाह्रि-अन्य क्रिक्न । एशन अभिन नक्ष प्रव के प्राप्त एवं कवित्र नाबिन। THE WELL STREETS WHEN THE चर करिया जाता शक्**डणीरक स्वाडः न** मामक शृक्षत भारतमा क्षेत्रमा करिएक्क (र

পেরি । লোকের অন্যাক বিশ্বনে আনি
ভাষার কাহিত সংবর্গ কার্মাইলার, কক্রম্য ভোষার জ্ঞানির নিমিকে আনি ক্রমা
ক্রমা এতক্রা বিচার করিলার। পাছে
লোকে ভোষাকে মনে করে বে জীবভাবে
ইনি রালার নিকটে আগতা এবং রালাও
ইহার সভানকে রাজ্যে অভিবিত্ত করিলোম। ওনিমিজেই আমি এত বিচার করিলাম। ওনি হৈ অত্যন্ত ক্রোপিতা হইয়া
ভাষার প্রতি জ্ঞার বাক্য প্রয়োগ করিয়াহ,
কে গোরনী বিশালাক্ষি। তাই। আমি অভি
কোল্য বাক্য জ্ঞান করিয়াছ।

ে ভারত : রাজা দ্বান্ত মহিনীকে ইফা ক-ছিয়া বস্ত্রান্ন পানাদি **ছারা তাঁহা**র **প**রিভো**ষ** জনাইলেন এবং শকুন্তলার সভানের লাম ভরত রাধিয়া তাঁহাকে ধৌৰলাজ্যে অতি বিজ্ঞ করিলেন: ভরত যুবরাজ হক্ষা অ্থরাপর মহীপ'লে স্কল্পে জয়া হার। ব্দ্রোপ্র 😻রিয়া সাধু বন্ধাচরণ কর্ত্ত कालिनाम् यमची इंदेलन, श्रद्धानाकाजिन क्षांबर इक्तवंची इहेशा दक्ष राजाकुलेल न तकः हे सन्त नाम एवक्पिएत नगान इगीय हरेरतम । जनसङ जिमान् मन् भवि कीशादकः स्थाविशादन तकः मकिनानिए अतिकलगामक व्यवस्थित एक व्यक्ति व ता है(लंग, या या उद्धारण अंत्रेष्ट) के नु अविद्या अरुद्ध शक्ष प्रक्रिया (प्रमा) (त**रे** छत्र হটতে এই ভারতী কাঁতি ও ভারত ,বলিয়া বিখাতে এই পদৰত কুল, উৎপন্ন हरेतारह। अहे छत्रछत्र बंदीन स्मा मशहरूकरी उन्तान मन्त्र अदिनकात्मक ताक एक वर्षी छ । भन्न इत । डीक्श निर्मात রিমের নাম, অভএব হে ভারত। উহি।দি-বোর দধ্যে মহাভাগ দেবতুলা সভা পাৰ্কা शतायन आधान धानारता नाम जानि के दिन

CE at emperited state, altered from a comprise the comprise of the compression of the com



াখনেতে বংগ্ৰামধান্তা সিধানাৰ ডিজানা দীজেনিল সাৰ্থামত্ত্ৰতে । তেন্তেনি ডাংজ্যানা নাজংশিকং তাজে ছিবৰগুলনে ক্ৰেৰা ছিতীয়ং । ১ জাংগ্ৰাপত জানিগজ্য সাৰ্বাজ্য সৰ্কাশ সমান্ত্ৰ ক্ৰাম্পুৰ্ন আহিত নিছি একাশ্যেষ্ট্ৰায়োপ্ৰসংগ্ৰাম্ব ক্ৰিকটামহিত্যকংগ্ৰা**ৰ্ডি**। শুল্পান্ত জানিগজ্য সাৰ্কাজ্য ক্ৰিকজান্ত্ৰ সাৰ্থামিক জন্তু পালনামৰ ।

কলিকাড়৷ ব্ৰাহ্মস্মাজের

र छन्।।

5. 7. 378 : 492 miles

केवर छेपारमा ममूमा कान्द्र स्टाद-भिद्धः प्रमुद्दाः आहि याद्यारः श्रीः अपिः পরম পুরুষের পরিচন প্রাপ্ত হইয়া এবং ক্রীগার পূজা করিয়া চরিতার্থ ইইটে পারে, কুপামন প্রমেশ্র করণা পূর্বক ভাছার অবারিত পথ গ্রন্থত করিয়া গ্রাখনাছেন। তিনি মঃনব জাতির প্রকৃতিব মুলেই উজ মহৎ কাপোরের বীজ বপন করিয়াছেন। তিনি মান্য জাতিকে আপন উপাদনার অধিকারী করিবার জনা ভাগাদিগকে এ-मनि এकि अशुक्त जुम्मा धानान कति॥-ছেন, যে যখন তাহানিগের সেই ভূফার উ দয় হর, তথনি তাহারা তাহার বিষয় অবে-ধণ করিতে বাপ্র হাইতে থাকে এবং যত কৰ পর্যান্ত সেই বিষয় প্রাপ্ত না হয়, ভাত ক্ষণ কোন ৰূপেই মলুষোর উক্তৃকার শাহি হয়নো৷ প্রচুর ঐশ্বয় দারাও উক্ত তৃফার নিহুতি হয় না, বিবিধ প্রকার শারীরিক ও দামাজিক স্থা ভেগ স্বারাও উদার শেষ रम्म मा अवश् नामा क्ष्यकात विकासमञ्जन ममारका-চন জারাও উলিথিত পিশাসার নিবারণ হই एक शास्त्र ना। एकवरा कशमीयत खार छेङ भिभागा निवादायत अक्रमाज छेवन।

ক্লা নিবুজি করিবার জনা মগুয়া যেমন অন্ন উপাক্ষন করিতে আপনা হইতে বাস্ত হয়, পিপাদা শান্তির নিমিত মানব বেৰূপ জলের জনা স্বতই লাসায়িত হয়, সেইকাপ ঈশ্বর লাভের তৃষ্ণা শাহির নিমিত্ত মন্ত্র্যা चालन अधे। देन भारेतात छन। मन्द्रना द्या-कृतिस इस्। देशत लाएउत सेण्ड्। मसुपा ছাতির স্কল প্রকার ইচ্ছে, ছইতে গুরুতর। उक्त इंफ्र bविडार्थना कड़िला मनुमा क्थेमरे নিবস্থ পাকিতে পারে না। শরীরী জীবের भएक (यमर कूप) १० के व ब्ल ट ६०॥ अ সন্তান, চেডেনবোন্ মনের পঞ্জে সেনন ক্লেক দয়ালি বৃত্তি ৰজিং ত চঙ্গা আপঞ্চ, মন্ত্ৰ মোর আহরে পঞ্চে স্বর্থর আরোধনরে ইচ্ছ ৰজ্ঞিত হত্যাত সেইবৃগ অস্কৃত্। ইং। শ थार्थ शहरे ।या, मकल १५८० ७ मक्त **(५८० म** द्रज छादन्त्र प्रसुधा क्षत्रकार्थ खन्ने वटबन আর্থনে ক্রেব লা, দেশতেরনে ও কাল তেনে স্থানের ভারতমগড়ের বে বিভিন্ন প্রকারম-মুখ্য বিভিন্নবেপ ভালার উপাদনা **করিয়া** शास्त्र । दक्ष जानम मुल्डा ८६ व डाहादक অনুচেত্ৰন প্ৰাধাৰ বা সচেত্ৰ মন্ত্ৰয়ালি জীবে আবিভুতি বিখাস করিয়া তদমুষায়ী আরো-ধনা সংবা; ক্ষেম্বা উ'হাকে কোন কম্পিড न्त्रीपि कि फिके सार्वास्ट मरन क्रियात्मर ব্ৰপে অৰ্চনা করে; কেই তাঁহাকে মনুন্যাহি ভীবৰপে অবতীৰ্প্ৰভাগ্ন করিয়া দেই সেই ক্ষিত অবতারের উপাসনা করিতেও প্রবৃত্ত হয় এবং কোন ব্যক্তি বা ভাঁহাকে মন্ত্ৰ্যের ন্যায় রাগ ছেব লোভ ক্ষোভ মায়া মোহাদি ভাবের অধীন কণ্পনা করি-য়া তদনুদারেই ভাঁছার অঞ্চনা করে, এবং কোন ভাগাবান্ পুরুষ স্থীয় সৌভাগা বশতঃ জগদীশবের প্রকৃত তত্ত্ব অবগত হইরা তাঁ-হাকে সঞ্চরাপী সঞ্চাত্রয় নিত্য নির্বিকার পূন ও পৃথিস্তান্ধ ৰূপে প্রস্তান্দ করিয়া কে-বল বিশুদ্ধ প্রীতি ও সচলা ভক্তি সহকারে কাঁহার আরাধনা করিয়া মানব জন্মকে প্র-ह करत । किन्द्र ए राक्ति ए करन छै।हात आतायना कक्रक मकत्मारे एवं तमहे अरुष्ट्री **ल्यात्र साकृतिङ इहेश छ इति अफ**ी क-ब्रिट्ड वाविष्ठ इष्ठ, जाहात यात मत्मर नाहै। মানবন্ধাতির দঙ্গে সঙ্গেই উক্ত পিপাসার श्रक्ति इहे शार्ष, अयः, मसूयाकू लाउ नहिष् নিত্যকালই উহা বর্তমান থাকিবে। কালেই মনুষা জাতিকে ঈশ্বর উপাসনা ৰজ্জিতি দেখা যায় ন', স্থিকাল হইতেই मञुष्ठा कोन ना कोन करण जैचदतत आही-ধনা করিয়া আসিতেছে। মন্ত্রন্য জাতি ষ্ধন যে প্রকার অবস্থা প্রাপ্ত ইইয়াছে, ত-খন সেই ৰূপেই স্বীয় আরাধ্য দেবের উপাদনা করিয়াছে। পৃথিবীর পূর্বে হভাত্ত পাঠ করিলে দেখা যায়, যে মানব জাতি যে 📗 সময় সমাজবন্ধ হইয়া কোনগ্রাম নগরাদি পত্তন করিয়া বাস করিতে শিক্ষা করে নাই, ষ্ৎকালে ভাহারা বিচ্ছিন ও বিক্ষিপ্ত অবস্থায় অর্থ্যে অর্থ্যে ভ্রমণ করিয়া কালহরণ করিত, তৎকালেও তাহারা সেই অরণ্য মধ্যে অপি-ন আপন প্রত্যর ও জ্ঞানান্তুসারে জগৎ ক-র্ত্তার উপাসনা করিতে নিযুক্ত ছিল, পরে যখন তাহরে৷ সামাজিক উন্নতি প্রাপ্ত হই-য়া একতা সমাজবন্ধ হইরা বাস করিতে আরম্ভ করিল ওনানা প্রকার শিশ্প কৌশন অবগত হইয়া অপূর্ব্ব গৃহ সন্দির ও অটা-লিকানি নির্মাণ করিতে আরম্ভ করিল, তথন ডাছার: প্রমার্থ সামনেরও বিশেব হান প্ৰস্তু করিয়া **তথায় অস্থী ব্যৱ**র জ্ব-क्रमा स्तिए नातिन। अम्बद्ध मध्य नामा विकात ज्ञाम जैकारम स्कूरकाम स्कूरिक्कि

किन ग रहेन, बदर वर्ष अवृत्ति शतिकन ছইল,তথন তাহারা তদমুখারী উৎকৃষ্ট ৰূপে उ পরিশুদ্ধ কপে পরমার্থ সাধনে তৎপর হুইল। অতএব জগদীশ্বরের উপাসনা বে মানব জাতির স্বভাব সিদ্ধ, তাহাতে আর कान गरमह नाहै। नकल प्रमा, नकल কাল ও সকল অবস্থা **হইতেই তাহার** প্রচুর প্রমাণ প্রাপ্ত হওরা যায়। কোন-কালেই মনুষ্য জাতির ইশ্বর বজ্জিত হইবার সম্ভাবনা নাই। মনুষ্য পূজো যে প্রকার অবস্থার কাল যাপন ক রিয়াছে,তথন দেইৰূপেই ঈশ্বরের আরাধ না করিয়াছে,এফণে যে ৰূপ অবস্থায় আছে তদস্ত্রপারে ভাঁহার উপাসনা করিতেছে এবং পরিণামে যেমন অবস্থায় অবস্থিত হইবে, সেইরপেই উ।হার অর্চনা করিবে। ঈশ্বরের আরাধনা মানবের প্রকৃতি **সিদ্ধ**, উহা মনুযোর অজ্ঞানতার কার্য্য নহে। ম-ন্মুযোর অবস্থা বিশেষে ঈশ্বর আরাধনার পদ্ধতি ভেদ হওয়াই সম্ভৱ কিন্তু কোন কালে উহা মনুষা সমাজ হইতে বিলুপ্ত হওয়া দন্ত ত নহে। যাবং মন্ত্রা জাতির প্র-ক্ষতির নলৈ না হইবে, ভাবৎ মনুবা মগুলী হইতে ঈশরের আরাধনাও তিরোহিত হইবেনা। **আ**মরা বিলক্ষণ দে**খিতেছি** ষে, জ্ঞানোল্লভি সহকারে ঘেমন মানব জ্ঞা তির সমোজিক ও শারীরিক প্রভৃতি অন্যা-ना विषयात अकात एक ७ उम्राज करेएउएक, দেইকপ উহার ঈশর উপাসনা বিষয়েরও পক্তি ভেদ ও উন্নতি সিক্তি হইয়া আসি-তেছে, অতএব জ্ঞানপরিপাক ছারা পরি-पारमञ्ज स्य मञ्जा जमास्य कश्रदीचस्त्रव छेशानमात क्वन क्शास्त्र रहेना प्रमान হইবে, তাহাতে ভার কিছুমকে সংখর

এইকংণ বে বৰ্জ নিৰ্দ্যাশালী জ্ঞানবান্ মনুযোৱ বৃদ্ধি নানা প্ৰকান প্ৰত্যক্ষনিদ্ধ বিজ্ঞান শান্তের ন্যালোচন ভাৱা
পরিভূত ক্ষানেছে বাঁছারা নানা প্রকার
বিন্যা চক্ষ্য করিয়া ক্ষানে ক্ষানিত কুনং ছার
নাশ করিতে বৃত্ত ক্ষানেতেন, প্রবং বাঁহার।
বুক্তীর বৃদ্ধি প্রভাগে বুক্তিন ক্ষানিক ধর্ম

শাজ্রের ভ্রমঞছি দকল ছেদন করিয়াছেন, ठाँहाता जात शूर्व उन ज्ञानाज मसूरा-দিগের ন্যায় অচেতন মৃৎ পাথাণাদিতে বা সচেতন মন্ত্যাদি জীব বিশেষে ঈশর त्वाभ कतिया नामामा शुष्त्र हम्मन ७ मूर्यानि উপহারে কেবল বাহ্ন কার্য।দারা ঈশরের আ রাধন: করিয়া কোন মতে প্রীত হয়েন না, অধনা প্রস্থানত অগ্নিকুণ্ডে ঘৃতাছতি প্রদা-ন করিয়াও ঈশর আরাধনার স্থপ লাভ ক্রেন না এবং কোন নির্দিষ্ট স্থানে গমন ক্রিড়া ক্ডিপয় নিয়মিত অমুষ্ঠান না করি লে যে জগলীশ্বরের আরোধনা সিদ্ধা হয় না, কি উপাদনা কালে কোন ব্যক্তি বিশেষের নামোচারণ না করিলে যে জগদীশর লে উ-পাদনা আফ্ করেন না,ইহাও তাঁহারা কোন ৰূপে প্ৰতায় করিতে পারেন না।কিন্ত ইহা বলিয়া কখন্ট্ একপ মনে করা উচিত নছে যে তাঁহাদিগের পকে ঈশ্বর উপাসনার व्यक्तित मन्त्रीर्ग स्हेशारक। क्रश्तीयरतत उना-স্নার জনা যদিও তঁহোর পূবেবালিখিত ৰূপ কোন প্ৰকার বাহাড়য়র অবলয়ন क्रिट्ड शास्त्रन ना वटि, किन्छ उथानि जा-হাদিগের জন্য অন্ত বাহ সকল দিকেই ঈশ্বর উপাসনার শত শত উপচার প্রস্তৃত রহিয়াছে। ভূলোকও দ্রলোক দেই অ-**ৰূপী পরনেশ্বরের ৰূপ প্রকাশ করিতেতে,** मञ्जूषम् विश्वमन्ति छ। हात्र छेशामनात मन्दित **হুই**য়া রহিয়াছে, প্রত্যেক প্রাক্রতিক কার্যা আচার্যোর কার্যা সমাধা করিতেছে, নির্মাল **প্রীতি পুঞ্জ ভাঁহা**র পূজার পুজা হইয়াছে, এবং আমাদিগের এই আত্মা কেবল এক মাত্র লৈবেদ্য স্থৰূপ হইায়াছে। যদি যৎসামান। পুত্তবিকা সন্দর্শন করিয়া পৌতলিকের भटन कें। हात्र हे के दिल्दात आविकान हे हे दिल পারে, তবে এই প্রতাক পরিদুশামান व्यवस्य वर्षः सम्पर्मन कतिशा कि स्वानित्ना-**क्रियाकारन क**शनीयरतत रूपग्र रख्या निठास माइव इस ना? प्यत्वाथ लाएक বৰি মৃৎপাৰাণনয় অচেতন পুজলিকায় **পুष्पाञ्चनि धामान क**दिया **ज्**श्व हहेट भारत, करव कानी मसूरा हिडनाश्चक न९-भूकर्गक अक्याक श्रीविः भूभावाता भूका

করিয়া কতদুর পর্যান্তই আনন্তি হই-**७ शास्त्रन? योग यथमामाना एनवमन्नित** मन्तर्गन कत्रित्व श्लीखनिक पिट्शत यहनत আশত্য জবে, তবে এই বিশ্বৰণ মহান্ মন্দি-त्र উপবেশন क**्रिल कि ज्ञानवान्** ला কের মন উশ্বর জারাধনা করিতে প্রশস্ত इस ना ? यमि जम श्रमाम विशिष्ठे मसूरा थ-ৰীত শাস্ত্ৰ সক্ষৰ্যন করিয়া লোকে ধৰ্মপথে গমন করিতে শক্ত হয়, তবে জ্ঞানিলোকের পক্ষে অভান্ত অপ্ৰয়ন্ত বিশুদ্ধ পুৰুষ বির্চিত এই বিশ্বশ্ব বিশাল এম পাঠ করিয়া ংশ্ম উপনেশ প্রাপ্ত হওয়া কি নিতান্ত সঞ্জত হ*ইতে পাবে* না? যদি অম্প বুদ্ধি মুঢ় *(लारक चर*ठठन शुर्खनिकारक मामाना ट्रेन-বেদ্য প্রদান কবিয়া তুল্জ হইতে পারে,তবে ज्हानराम् (लाटक कि । जगरा मध्यकारभव निक्छे जाशन याद्यः निद्वतन क्तिता निशा মনোগত ভৃপ্তি সাধন করিতে পারে না ?যে जानाना शुक्रन अहेब्दल कननी चरत्र चा-ज्ञाधना करिया थात्क. त्यरे **कारन त्य कन्न**वा-পুণ পুরুষ জ্ঞান মাজিক ই সংক্ত ব্যক্তি দিগের উপাদনা গুছুণ করিবার জন্য কত প্রকার উপচার প্রস্তুত করিয়া রাখিয়াছেন্ এবং সেই ব্যক্তিই বলিতে গাবে বে উল্লি-থিত **ৰূপে ঈশরের আরাধনা করিলে মন্ত্র**য়া কত হাথে স্থা হইছে পারে।

यिनि क्रणा कवित्रा आमानिशतक ४ वाहे **मगुम्य जन्मा ७**८० एकन करियार्यन, जिनि आभाषितात हित्रकारलंद मध्ये, हित काटलंड শরণাও চিরনিবের স্বস্থার আমরা ভাঁহা হ্ইতে উৎপন্ন হুইয়াছি, তাঁহাতে স্থিতি করিডেছি এবং অংশু ভাঁহাতেই অবস্থান করিব। আমর। কোন কালেই ভাঁহা হ**ইডে** স্বৰস্থাকিতে সক্ষম নৰ্চি, তিনি আমাদি-গের চিরাভায় ও নিত্যাবলয়ন, আমরা যথন সকল প্রকার জ্ঞান বাজ্জত ছিলাম, তথ্যত তিনি আমাদিগের ঈশর ওআরাধ্য ছিলেন এবং আমরা যখন নানা জ্ঞানে বু৷ৎপন্ন হইব, তথ্বও তিনি আমাদিগের উপাদ্য भेषत योक्टिवन। आभन्ना मीनভाटक व्यवस्थान कतिरम जिन मीमवकू मीननाथ अतः सामता योग माजारमात त्रामा करे, छथानि छिन शासका स्थापन विकास के के केर्राम । बाजारी भिन्न श्रेटन जिम यामाहितात स्माद्य भद्राम्द्रम्य अवर भाषता यर्श्ववानी रुक्ट्यान जिम आमामित्यत निताबुक्के शुक्रीता মন্ত্রী যদি জান বলে সাগর শু**ন্ধ** ও প্রত্ত পাত করিতে পারে, তথাপি তিনি তাহার क्रेबर धनः म यम चकी व वृक्ति कोलंदन बृहार्केटक मधा मकल खंकाल शक्किन করিতেও দমর্থ হয়, তথাপি তিনি তাহার আরাধ্য ও পূজনীয়। আমারা মর্ভ্য লোকে পাকিলেও তিনি আমাদিগের স্রেফী ও পাতা এবং আময়া চন্দ্রলোক বাদী হইলেও তিনিমাত তাতা ও রক্ষা কর্তা। মনুষ্য ভাতি যে কিছু মহত্ব প্রকাশ করুক, সে কে-বল একমাত্র ভাঁছারি গৌরব এবং সে যথন যে অবস্থায় অবস্থান করুক, তথ্যনই তিনি তাহার ঈশর ও উপাসা। আমরা তাঁহার আভিত ও উপাসক, ইহাই আ-মাদিগের প্রধান গৌরব। তিনি বে আ-मानिशेटक कल क्षकात स्थ (जारभेत व्यपि-ক)রী করিয়াছেন, ডাছার সংখ্যা করা ক-ঠিন, কিন্তু তন্মধ্যে তিনি যে আমাদিগকে তাঁহাকে জানিবার ও তাঁহাকে উপাসনা করিবার,অধিকার প্রদান করিয়াছেন, ইছাই আমাদিগের পরম স্থুখ ও প্রধান গৌবর। এ-স্থের সহিত কোন স্থােরই তুলনা হইতে পারে না, এবং এন্থথ কৌনকপে ও কোন কালে শেব হয় না। অতএব বাহাতে আম-রা এমন অপূর্ক অমৃত্যয় স্থাস্থাদনে ব-किंछ ना हरे मस्तना डोटोटि वज्नान स्थ्या डे हेल ।

ने परतत मिर्मा।

বসনে ক্রিয় ও আ বৈজি ।

জীবের সুগ বর্জনের নিমিতে লগনীক।

ক্র আরু কুইটা ওলনে ক্রিয়ে স্থাটি করিয়াচেন। কোন বস্তুর রস এইণ করা ও আগ গ্রহণ কর এ ছুইটি ইন্সিয়ের কার্যা। আ ইন্সেয়র গারা লভ, গানী, ক্রিয়া, ক্রিয়া, সমস্ভ ভীবই স্থা ভোগ ও শানীর নিন্দি করিয়া বাকে আনি বিক্যাপর্য্য কার্যা

- The wind of the college of the তীৰ নিৰ্মিক নিয়াৰ ভাৰত নাম বালা • नहीत - भारत करत, सामानिस्**क** जेनन त्कर प्रमदस्तिक जिल्ला आर्पाक्षक मानाम হওয়া নিতাৰ পাৰ্ভাৰী কোন ক্ৰিল কি প্রকার করিয়া ভোষা করেছে বন নোধ করে এবং আন্তের পদার্থের আন নত यमिश्र जाहा जानामि मसाम् बद्धा जाना রিত হয় নাই, কিছ বে লগত লভর আন लिस अ इसरनिस्त अकान मार्काक তৎ সমূদবের कारणाके कर्ननी**चर**त्रत क्लाक করণার নিদর্শন দুট হইয়াছে। ভোজ সংম্ঞার রস এহণের জন্য আনরা জিলা आल एरेग्राहि, किस वे अक किसाइडरे জগদীপরের কন্ত কৌশল প্রকাশ রহিরার্ডি করণাকর পরমেশ্র এই সমস্ত ারস্ত भारम ও শিরাসি ছারাই রসনার রচনা করিয়াছেন, কিন্ত ভাষাকে কে কি আক্ষার চমৎকার শক্তি প্রশাস করিয়াছেন জারা किह्ने वना यात्र मा। कर्रे जिल्ल कनाह প্রভৃতি কোন প্রকার রদকে আমরা বুলি শতবার স্পর্শ বা দর্শন করি, ভাষা হত্যুক কোন মতেই ভাষার জ্ঞান পাইডে পারি गा. किन्न **एक देन**्यामा **विद्यंत क्रमहरूब** স্পৰ্য হইবামান্ত আৰক্ষ ত্ৰকণাৰ কাই জাত হইতে দৰ্মধ হই 🕍 ওমৰায় টগায়ি ভাগে ধৰ্মানবয় কডকঙালি বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব দেবিতে পাওয়া যায়, আৰু নি ছায়া লাগ করিলেও ঐ বিষয় সকল বিলাদৰ আছুল্ল হয়, বিশেষত শলীলেতে আয়াৰি কোৰ ব্যাস उभाव व वर्गम यो निम्ह मनेक सम्बद्ध প্রকাশ পাইয়া উঠে, তৎকালে কিন্তু त्रकार्भ रहा। यो ध्यनियक्त किन्द्र अस्तिहरू त्र कारनत्र क्षांम कातूना अक्षांका अस् विषेत् । इत् । द्याः स्थानानिदेशकः । द्यानाः अन्तर मकत पूर्व भाषा े का किन्द्र में किन्द्र उन्ति जारत *नरश्चा सेत* निर्माण सम्बद्ध PATRIC STREETS AND A TOP OF THE PARTY OF THE WHO CHIA TRANSPORT TO SERVICE THE THE STREET STREET, ME CALL MAN SECTION AND SECTION THE PERSON NAMED IN COLUMN

The first the second

ৰিক্বত হইতে নাপারে, এই জনা করুণা-ময় প্রমেখর উহাদিগ্যকে এমনি এক জ-কার চমৎকার স্থান ছক দারা আবরণ कतिशाद्यान- १४ ज्यादिक तम । कोर्यक्ष **कान नामाज अ**रम ना, अथन तरमिन्दातन-ও কোন হানি জনিতে পারে না। রসন चामामिधात मुथ मध्य द्रम भद्रीकव र-ইয়া কালবাপন করিতেতে, আমরা জোন देख উদরন্থ केরি∢ার গুরের রসনাছার। **অ**এে ভাহার গুণের পরিচয় পাই, এবং পরিচয় পাইয়া অনায়াদে স্বেধান হইতে পারি। त्य तकान तम छेनत्र इन्हेल आगानित्यत শরীরের প্রতিসমূহ হানি উপজিত ২টাতে পারে, তাহা আমাদিগের জিল্লাগ্রে সংলগ্ন **ক্ট্রামাত্রই জানিতে পারি, এবং এর**প স্থানিতে পারিধা আমর। উপকারী ভ্রা मक्ल श्रद्ध ७ यह्नश्रकाही वस्न मक्लारक भ-রিত্রাগ করি। জগদাগর যদি আমাদি গকে এইৰূপ আৰুৰ্যা রম প্রীক্ষার উপাত্র প্রদান না করিতেন, তাহা হইলে যে আনা-দিগের কত প্রকার অনিষ্ট ঘটিত, ভাদ্ লিখিয়া শেষ করা যায় না; ভাষা বহুলো আমরা অবারাসে প্রাণ নাশক বিষ পর্যাত্ত গলাপঃকরণ করিয়া সূত্রা আদে পতিত 😜 ইতাম, আমরা ভোজন স্থে এক কালে ৰঞ্জিত হইডান। আমাদিগের মুখেতে জগদীশর যদি রসনা যোজন না করিতেন, **डाहा हड़ेरल** नाना श्रदात कल मुलानि छे-পাদের রদ মাধুর্ব্যের স্ক্রখানুভব কোগায় ধাঝিত ? কোন প্রকার স্কুর্য সামগ্রী আর আমাদিগকে স্থী করিতে পারিত না. এ-মন অনুপম ভোজন স্থখ আমাদিগের পক্তে বিফল হইত। অতএব যখন কোন প্রকার উপাদেয় দ্রবার আত্মাদ গ্রহণ করিয়া আ-ন**ন্দ জন্মে, তথন তজ্জনা সেই সুখ**দাতা জ-গ**দীখরকে সক্তত্ত** চিত্তে স্মরণ করিয়া **প্রীতি পূর্ব্বক নম**স্কার করা নিতান্ত উচিত। **রসেন্তিয় জিহ্বাকে যে স্থানে যোজনা** করি-**लै जामामित्रत कलांग इंट्रेट शास्त्र क**े পদীশ্বর ভাষাকে সেই স্থানেই যোজনা ক-तित्राद्यम धेरः य श्रकात गठन कतित्य गानर्वत मझन इत्र, त्मरे अकात कतिता नि-

র্মাণ করিয়াছেন। রুসেন্ডিয় জিল্ব। কেবল আমাদিগের রসানুভবের দ্বার নহে, উহা আমাদিগের বাগিন্দ্রিরেরও একটি প্রধান অজ: ফিল্লা ভিল্ল কথনই আমাদিণের नाता पर्डिशाना, जनना जननीयत छ হাকে আত্মহনা স্বেন্মল করিয়া নির্মান ক্রিরাছেন। আম্রা ইচ্ছা ক্রিলে আর্থ্য-क्य ड जिल्लादक मक्त किरक अवश्वन क-রিয়া দার প্রকার শক্ষ উচ্চারণ করিতে পারি। জিলা অসি শুনা ও এপ্রকার কো-মল নাহুট্রো জেনে মতেই তদ্যুর্! আমা-দিগের যাকা ক্তি হুইত না, এবং আ-মরা কোন মতেওঁ তাহাকে সকল দিকে মঞালন করিতে পারিতামনা। হার ! প-রনেথেরের কি আহর্যা কৌশল। তিনি এক একটি অসারজনা হারা আমাদিগের কত अत्याक्रमरे मिक्न क्रियाहरूम? ता तम्मा আম. দিয়ের রূপ জ্ঞান লাভের প্রধান কারণ, ভাষ্টে আবার আমাদিনের বাকু বজের প্রধান অ*দ* সহায়। মসুযোর মহৎ কল্যাণ সাধন ফরিতেছে। জগদীধর যে নিয়মে জিজ্যা রচনা করিয়াডেন, তাহার বিন্তু মা-যোর বৈলক্ষ্যা হইলেও এই দণ্ডেই অশেষ অন্থ উপস্থিত হয়, এই ক্ষণেই মনুষা বা-কা রহিত ইতর পথর নায়ে মুক হইয়া কাৰ যাপন করে।

গুকোই উল্লেখ করা নিয়ছে, যে গশু, পশুনী, কটি, গভঙ্গ প্রভৃতি কোন জীবল রশেক্তির নজিল নহে। যে সমত কুল্র কাটশরীরে জিবলর নার রস প্রকৃত্ব কটিশরীরে জিবলর নার রস প্রকৃত্ব কটিশরীরে জিবলর নার রস প্রকৃত্ব কটিল লাজা ভবের আলাদ লাল্য দেরে। অনেক প্রকার ক্ষুদ্ধ প্রকার ক্ষুদ্ধ পর কীটের পশ্চাহ ভাগে পুজ্জদেশে স্কর্তী সদৃশ এক প্রকার ক্ষুদ্ধ অবস্থব দেখিতে পান্তর্যা যার, তাহার যে দ্বরা ভক্ষণ করে, অপ্রে তাহারে আহ্বাদ জানিয়ালয়, পশ্চাহ ভাহা ভোজন যোগা বোধ হাইলে গ্রহণ করে, নতুবা ভাহা ভৎক্ষণাৎ পরিত্যাগ করে ।

^{*} Rogets animal and vegetable physiolog, Val 1f.

ः सामामिरशत्र खानकिया नमाधा रहेराज ক্ষা ক্রপদীখর আমাদিগকে ভার্ণেজিয় नामिका श्रमान कतिशास्त्रन, थे नामिकात व्यस्त्रक्षः সকল অবয়ব পরীকা করিয়া দেখিলে নিলফণ প্রভীতি হয়, যে এক জন व्यवज्ञान व्यवामि शुरूष विटमय टेन-পুণ্য সহকারে নাসিকার রচনা করিয়াছে-ম। পদার্থবিদ্যার অনুশীলন ছারা ইছা নিশ্চর হইয়াছে, যে আড্রেয় বস্তর যে স-মন্ত অতি হুকা ও অলকা প্রমাণু বায়ু সহকারে অনবরত উড্ডীয়মান হয়, সেই সমস্ত স্থাম পরমাণু আমাদিরের ত্র-**ন্দারম্বে প্রবিষ্ট হইলে আন্থাণ বোধের** উ-ৎপত্তি হয়, কিন্তু এতাদৃশ সূক্ষ্ম পদার্থ সকল অনুভূত হইবার জন্য পরমেশ্বর না-সিকাকে যেপ্রকার কৌশল সম্পন্ন করিয়া-**(छ्न, फाइ) छ।विद्य खवाक् इट्रांट इया।** নাদিকাতে অতি অন্তুত প্রকার অন্থি শিরা ধমনি ও মাংসপেশী সকল দেখিতে পাও-য়া যায়। আর্ণেব্রিয়নাসিকা বদি মন্তকের সহিত তুলা ৰূপ কঠিন অস্থি দ্বারা নির্মিত হইত, তাহা হইলে কোন মতেই তদ্ধারা আণ ক্রিয়া সভাগ হইত না, এজনা জগদী-শ্বর নাশিকাকে শাঞ্জ সদৃশ রক্ষায় এক প্রকার অপূর্বে আছি দ্বারা নির্মাণ করিয়া উহাকে আশ্চর্য্য নির্গলন ধরের ন্যায় করিয়। **क्तिशास्त्रिन, वांत्रु महकादत्र यथन औ यद्य** কোন প্রকার পদার্থের অনুসকল উপনীত হয়, তথন ভাষা জনায়াদে উচার মধ্য দিয়া গলিত হইয়া আমাদিগের জ্ঞান ভূমিতে উ-পস্থিত হইতে পারে। আণ এহণের জন্য नामात्रस् नर्यामा मुक्त थाका आवनाक, छ-उतार नामिका क्वितन कामन आरम बाता নির্মিত হইলেও আমাদিকের কার্যা নি-ৰ্বাহ হইত না, এইজনা নাৰাজে এক প্রকার অপূর্ব ধাতু দেখিতে পা**ও**য়া বায়। উহানামাংসের ন্যায় ক্রোমল না অস্থির ন্যায় কঠিন, উহার প্রবৃত্তি **অতি চমৎকার**। কলতঃ আমানিগের শরীর মধ্যে যে অঞ্চতে ष अक∷त कतिहा त्रहमा_ं क**हिंदण ः स्कान फ**न নিউ ঘটিতে না পারে, পরমেশ্বর সেইন্সকে - (यरे अन्त्रा क्रिजारे काना क्रिकालका

त्व थात्व याश्यव अद्भावन स्क्राह्म ल कृतन मारम निशादस्त अवर दि कृतन कित আৰম্ভক হইয়াছে, সে খালে অভিই ৰো-জনা করিরাছেন, ও বে ছবে এতছুভর ধাতু দারা কার্যা সিদ্ধ হওয়া কঠিন হইয়া-ছে, যে ছলে আবার মূতন ধাতুর ছটি করিয়াছেন। নাদিকাতে কতিপয় আক্রমা মাংসপেশী আছে, আমরা তদ্ধারা আ-বশ্যক মত নাসারকুকে সংকুচিত ও শৈ-থিলা করিতে পারি। **আমরা এককালে** আত্রেয় বস্তুর সমধিক অণুগ্রহণ করিতে পা-রিব বশিয়া জগদীখর নাদারক্ষের অঞ-ভাগকে প্রশস্ত করিয়া দিয়াছেন এবং পর-মাণু সকল সংহত হইয়া সতেকে ব্রহ্মর-ক্ষে প্রবিষ্ট হইবার জন্য উল্লিখিত রক্ষের মূল স্থানকে তিনি স্থীর্ণ করিয়াছেন।

এই প্রকার সহস্র সহস্র অনির্বচনীর কৌশল প্রভাবে আমরা নানাবিধ ভাগ স্থ সম্ভোগ করি এবং অপরাপর অনংখ্য প্র-কার উপকার প্রাপ্ত **হ**ই। ভ্রাণেক্সির যে আমানিগকে কত প্রকার স্থা প্রদান করে এবং আমাদিগের কত উপকার সাধনক-त्त्र, जाहा कि कहिय। आमत्रा वनस्र कातन যথন কোন স্থারম্য উপবনে প্রবেশ করিরা মলিকা মাথবিকা যুথিকা প্রভৃতি স্থগন্ধ কুস্তমের আজ্ঞাণ প্রাপ্ত হই, অথবা ঋতু বিশেষে যখন কোন মনোহর সরোবর তীরে উপনীত হইয়া প্রফুল শতদলের আনন্দ-কর সৌরভ অমুভব করি, তখন কি আর व्यामारमञ्जूष्यंत्र भीमा थारक ? श्रवाहिष्ठ পবন হিলোলে অফমাৎ কোন দুরবন্ধী কুস্থম লতিকার সৌরভ ভার প্রাঞ্জ হইয়া কোন্ ব্যক্তি না আনন্দ সাগরে নায় ব্য এবং কোন মুঢ় "হা কথনীশ! তোমান কি परा " এই নধুময় বাক্য উচ্চারণ ভা করে? व्यामानिरशंत जारने सिकात कृषि माधन वामा বন্ধাণ্ডের কত পদার্থই বে কত একার कार्या अञ्चल्लान करत, जारात निर्णत कारावे কঠিব। যের বায়ু ক্রিছে সুর্যান্তাক পক ৰাতু ও বংগর প্রছাতি বাকলে একা বর্তমান-महरूकिना बाजा शक्त जब्दात स्थानिक कटा 中华 有權 國際 可 生物学 医野 养殖剂

আমাদিশের আণ পথে আনিয়া দেয়। জগদীশ্ব থেমন আমাদিগকে স্থকৌশলময়
আাণেন্দ্রিয় প্রদান করিয়াছেন, সেই অপ
ভাষার স্থা সাধনের জন্য তিনি স্বতম্ন স্থতন্ত্র বাহ্য পদার্থকে নিযুক্ত রাথিয়াছেন।

नामिका विभाग नाना अभय नाना अकात स्रुशक शमार्थ धहन कतिता स्थामानिशदक क्रूची करत, भिष्टे क्रिय जासक अगर जासक প্রকার ভূর্যক্ষর দূষিত পদার্থ হইতে স-ভর্ক করিয়। আমাদিগের প্রাণ রক্ষা করি-রাধ্যকে। অনেক স্থানে অনেক প্রকার পদার্থ বিস্তুত হইয়া ভাতি স্থান্ন নাপে উ-ভিত্তে থাকে এবং তাহা মনুষ্য শরীরে প্র-বিষ্ট হুইয়া বিস্তর অণিক সাধন করে, কিন্তু জগদাশর আমাদিগকে উক্ত প্রকার বিপদ হইতে নিস্তার করিবার জন্য আশ্চর্য্য ড্রা-ণশক্তি প্রদান করিয়াছেন; কোন প্রকার বিষ ভুল্য বিক্লুত বন্ধ বায়ু সহকারে আমা-দিগের দেহে প্রবিষ্ট হইবার পুর্বের আম-রা তাহার গদ্ধ ছারা সতক হই, এবং যা-হাতে ঐ **অপ**কারী বস্তু আমাদিগের কোন অনিষ্ট সাধন করিতে না পারে, এমন উ-পাল অবৃশয়ন করি। জাণেল্ডিয় ছারা যে ম-মুখ্য জাতির কত উপকার জমে তাহা নি-র্দেশ করা কঠিন। এক জন গ্রন্থকার উল্লেখ করিয়াছেন যে নিথে। জাতিরা গল্প দ্বারা স্বজাতীয় ও বিজাতীয় লোককে চিনি-তে পারে *। অনেক অন্ধ ব্যক্তি চকুর্বিহী-ন হইরাও ভ্রাণ শক্তির প্রভাবে গ্রন্থর কার্য্য নির্বাহ করে। এক জন অন্ন কেনল গন্ধ ছারা বিচিত্র প্রকার বজের বণ ধলিতে পারিত†। ভ্রাণেভ্রির কোন কোন সময় রমে**জ্রিরেও সাহায্য করে। যে সমস্ত অ**-প্রকারী দ্রব্য আমাদিণের উদরস্থ হইলে শরীরের পঞ্চে হানি হইতে পারে, তাহা **मुभमत्या क्षतिके हहेवात शृत्व**हे जात्य-ল্রিয় ছারা পরিত্যক্ত হয়। প্রায় অপ-কারী সামগ্রীর ভাণেতেই ভাষা আহার ক্ষ্রিতে অক্লুচি জন্মে এবং যে সকল সামগ্রী জোজন ক্রিলে শরীর স্থন্থ থাকিতে পারে,

· Gold Smith's natural history Vol. 1st.

প্রায় তাহার আৰু গ্রহণ করিলেই খাইতে रेष्ट्। रहा। यनिष्ठ मधुरा स्वीठ वानक অত্যাচার করিয়া **ভাগেন্দ্রি**য়ের উক্ত **উপ**-কার লাভে বঞ্জিত হইয়াছে, কিন্তু শ্ৰিক্ত পশুর মধ্যে **অনেক পশু জাতি জাণ** শক্তির चाचरा चेर शीर थानाचान वाछिरा लहे। নে জন্তুর যে ত্রবা অর্থানা, মে জন্তু প্রায় তা-হার গদা পাহালেই জানিতে পারে। প্রশস্ত এন্ডের মধ্যে গো মহিবাদিকে কেবল **জাণ** দাবা সহস্র প্রকার উদ্ভিদের মধ্য হইতে আপন আপ্ত খালা কুবাদি বাছিয়াখা-होट (पर्या गाहा । भिट्ट गाञ्चानि माध्या-भी गण्डारण पुत्र इक्षेट यात्रन थाना প্রাণীর থকা পার এবং সেই রাক্ত সর্ভাষ করিল্লা শ্ববিদ্যা স্থাকারে করে। কোন কোন জম্বর ম্রাণ শব্দি এত তার যে তাহারা छेह। बाह्य अधियनीय कार्या मकल ममाधा করে। জুজুৰ জাতি কেবল এক গন্ধ মাত্র অলুভব করিয়া লোকারণা নগর নধ্যেও স্থীয় প্রভার পশ্চাৎ পশ্চাৎ গম্ম করে এবং কোন কারণে পথ নিস্মৃত হইলে গন্ধ আ লুতৰ দাৱা স্থীয় ৰাসস্থানে উপস্থিত হুইতে পারে *। উষ্ট্র জাতি প্রায় এক যোজন পথ হইতে জলের গ**ন্ধা** প্র'প্ত হইরা তদভি**মু**পে ক্রত বেগে চলিতে থাকে। ভার্ণেরিয়া অ নেকানেক জীব জন্তুর প্রাণ ধারণের প্রধান অবলয়ন। তাগারা জ্রাণে দ্রিয় ধারা অনেক कार्य। मन्या करत्।

প্রবিদ্যাপরায়ণ পণ্ডিতের। প্রীক্ষা
দার। স্থির করিয়াতেন, বে পরসেপর তুচর
কলচর ও প্রের এভুতি সকল প্রকার জীব
জন্তকেই জ্রাণেন্দ্রির প্রদান করিয়াতেন। মংস্থাদি জল জন্তরও বিলক্ষণ আণ শক্তি জ্ঞাস্থে, মংস্থাণ শুল জলানার কোন গল্প কর
নিংকেপ করিলে সেই স্থানে জনেন পল্
করিয়া করে। মংস্ত জাতিকে
কোন কোন গল্প প্রিয় ও কোন কোন গল্প
ক্রিয় বোধ করিতে দেখা যায়। যাহার।
বিদ্রুপ দারা মংস্ত থারণ করে, ভাহার। জলেতে মংস্ত প্রিয় কোন প্রকার গল্প নিক্ষেপ
করিয়া মংস্ত আকর্ষণ করে। হিন্দ এবং

[†] Abcrosombie's mental philosophy.

^{*} Roget's mirrol and regetable physiology Vol. 11.

দ্রগনাভির গম্বে শংশু জাতি অধিক আরুকী হয়। ভেক এবং জলগোধিকার আকৈন্দ্রী অভি আশ্বর্যান্তরে উংপদ্ধ হয়।
উহারী যত দিন জলে বাস করে, তত দিন
আগিশালি বর্জিত থাকে। অনস্থর স্থলেতে
বাস করিতে আরুয় করিলেই তাহারা অনেক বছর প্রাণ পাইতে আরুর করে।
অনেক করিই অতিশয় প্রথর দ্রাণ শক্তি
দেখিতে পাওরা ঘায়। হরর সাহেব ব্যক্ত করিয়াছেন, যে মর্ মঞ্চিকা প্রভৃতি অনেক কীট তাহাদিগের ক্ষুত্র শুভূতি অনেক কীট তাহাদিগের ক্ষুত্র শুভূতি করি কোন
কট্ট গল্প উপভিত করিলে ঐ সকল কীট
মতিশ্ব কাত্রভার চিক্ প্রকাশ করে।

যাতা তাইক পৃথিবী মধ্যে জগনীশর যে সকল জীব গস্তুকে আস্থাদন ও অন্ত্রোগশন্তি প্রদান করিয়াছেন, তথ্যয়ে মনুনাই আদ্রাধ প্রথ ভোগ করে। মনুনা জম্পের প্রকার সৌরভ প্রাপ্ত তর্মা সুখী তাতিছে এবং বিভিন্ন প্রকার উপাদের প্রবাভক্ষণ করিছা আনে নিত তইতেছে। দেশ বিশোন মনুষা জাতি উক্ত ইন্দ্রিয় দায় দারা মনুপন উগ্লের প্রাপ্ত ইত্তেছে। অত্বতে আস্থান্য প্রাপ্তান বিষয়ক সুথের জনা জগনিখনের নিকট মনুষা জাতিকৈই অবিক ক্লতেজ্ব হওয়া উচিত।

অধ্যা ৷

মন্তব্য বর্দ্ধ পদনী পরিত্যাগ করিয়া
অনুশ্যের অনুগত হইলে যে তাহাকে অশেষ
প্রকার ত্রুগ ভালী হইতে হয়, এবং তাহার
অনুশ্র জানার অনিউ ঘটে, তাহা প্রায়
বক্লেই স্থানার করিয়া থাকে, এবং ধর্মতভ্রিম মহামতি পুণ্ডিত গণ তাহা নানা প্রকার
র যুক্তি ও তক কেয়া প্রতিপন্ন করিয়া গিন্
বাহেন। যাহার বুদ্ধি রক্তি এককালে অভ্রিভি না হয় এবং ধর্ম প্রবৃত্তি একেবারে
বিরুক্ত কংলা না যায়, সেই স্থীকার করে,
যে তাপয় নেরা ভারা মন্তবার অসংখ্য
প্রকার হনিতি ভিন্ন কোন কপেই কর্মন
* Roget's upinal and vegetable physiology Vol. II.

ইউ জ্যে না। কিন্তু অধনকৈ বিষ কুক ইইতে যে সমন্ত গরলময় কল উৎপদ্ধ ইয়,
তল্পথে চুইটি ফল ছারা মানবজাতির ভয়কর অনর্থ উদ্ভাবিত হয়। ঐ চুইটি বিষময়
কল মানবজাতির মহন্তের পথে এককালে
কন্টক প্রদান করে এবং তাহাদিগের নিডা
নিপ্তনের কার্যুল হয়।

প্রথমতঃ কোন স্থাতে মনুষা শরীরে জ-ধর্ম প্রবিফ হইলে ক্রমে ঐ অধর্ম তাহার ধর্মা । ফুকে নট করিতে চেফ। করে এবং তাহাকে অন্তের ম্যায় আপন সঙ্গের সঙ্গী করিয়া স্থীয় অভিপ্রেড পর্থে লইয়া যায়। তাহাকে আর ধর্মপথের স্থারাশি ও অ-ধর্মাবজ্বের তঃথ সমূহ দেখিতে দেয় না। তাহাকে স্থীর অনির্বাচনীয় মোহিনী বিদ্যায় মোহিত করিয়া কেবল আপনার আজ্ঞা-বছ করিয়। রাখে। কোন শত্র যেমন কোন রাজ্য অধিকার করিয়া তথাকার সমস্ত দল বল আপন বশীভুত করে, অধর্মণ্ড সেইৰূপ মনুষ্য মন অধিকার করিয়া ক্রমে তাহার সকল সহায় ও সমস্ত সম্পদ আপনার অধী-ন করিয়া ফেলে। ধার্মিক লোকের বুদ্ধি যুক্তি এভৃতি যে সকল মানসিক রুক্তি ধ-র্মের অনুকৃল হইয়া কার্যা করে এবং ধর্মে-র শ্রীর্হন্ধির জন্য চেষ্টা পায়,অধার্মিক লো-কের মেই সমস্ত বুদ্ধি বৃত্তি অধর্মের পো-াক হইয়া কার্যা সাধন করিতে থাকে এবং অবর্ষ্কার উন্নতির জন্মই যত্ন করে। ইহা আমরা প্রত্যক্ষ দেখিতেছি, যে মনুষ্য ব-ধন কোন মোছ কশতঃ প্রথমতঃ অধর্মের সেবা করিতে উদাত হয়, ত**ংকালে তাহা**র অন্তরন্থিত ধর্মা প্রবৃত্তি ভাষাকে পুনঃ-পুনঃ नित्य करत, जनः ये निवात्र व्यवस्तिन क-রিয়া অধক্ষের দেবা করিতে ভাহাকৈ বি-শেষ আয়াগ করিতে হয়। সৈ বাজি কথনই সহজে অধর্মপরায়ণ হইতে পারে না, তা-हात मत्नामत्था अध्यासुशक निक्रके अवृष्टि-র সহিত উৎকৃষ্ট ধর্মা প্রবৃত্তির বিজ্ঞাতীয় যুদ্ধ উপস্থিত হয় 'এবং সে ব্যক্তি স্বনিত্ত কথঞ্জিৎ একবার অধনীমুন্তান করে কিন্তু তজন্য তাহার আত্ম প্রসাদ ক্ষ হওয়াতে বিজাতীয় স্নাদি উপস্থিত হয়।

কিন্তু অধর্মের কি অন্তুত শক্তি! वाङ्गि यमि धर्मात निरुष ना सनिश वात्रा-রু আপনার অভিলবিত অধর্মের সেবা করে, তাহা হইলে তাহার অন্তর্ভ ধর্ম প্রবৃত্তি ক্রমে ক্ষীণা ও মলিনা হইয়া যার, এবং তা-হার অপরাপর সকল মনো রুত্তিও ক্রমে গিয়া অধর্মের অনুগত হ*ইতে থাকে*। সৈ অবর্ণা-গ্রিতে যত আছতি প্রদান করে, ততই তা হার তেজ হৃদ্ধি হয়। তাহা আর কোন श्रकारत*े निर्द*ान ना **रुऐता उन्तर** উर्हात পূর্বেসঞ্চিত জ্ঞান ধর্মাদি ছুর্লভ রত্ন সকল ভক্ষীভূত করে। ভাহার স্বভাবের এত পরি-বর্ত্তন হয়, যে সে পূর্মের যে কুক্রিয়া অন্তু-ঠান করিতে মহা শক্ষিত হইত, তথন সা-হস পূৰ্বক ভাহ। সাধন করে, বা পাপে লিপ্ত হইলে প্রথমতঃ তাহার **অস্**ভব আ**ল** গ্লানি উপস্থিত হইত, পরে তজ্জনা আর তাহার কিছুমাত্র **মনীবেয়ভ জলে** না। সে অবলীলাক্রমে পাপ্ল কর্ম্ম অনুষ্ঠান করে এবং অক্লেশে অধর্মা ক্ষেত্রে বিচরণ করে। নে বাক্তি ক্রমে ক্রমে ধর্মের মূর্ত্তি এক কালে বিশাৃত হয়, এবং তাহার মানসস্থিত দ্রবল ধর্মামুচর সকল অধর্ম প্রভাবে পরা-ভুত হইয়া শক্ষিতভাবে কাল্যাপন করে, তাহারা আর তখন কিছুমত্রে বল প্রকাশ ক-রিতে পারে না। এ প্রকার মন্তব্যের মনেতে সময়ে সময়ে নানা প্রকার অথক্যাত্মগত কুতর্ক সকল আসিয়া উদর হয় এবং তাহা-রা **চুর্বেল ধর্মান্তু**চর দিগকে উপেকা ও উ-পহাস করে। তথন উহার মনে হয়, যে "হায়!'আমি এত দিন যে ধর্মাৰপ ভ্রম জালে বন্ধ থাকিয়া নানা জাতীয় স্থপ্তভাগে বিধি-্ড ছিলাম, এক্ষণে মাজিত বুদ্ধি প্রভাবে তাহা হইতে নিছতি পাইয়াছি, আর আ-मारक प्रांमर्थक धर्म त्यारम वक्त थीकिश इ**था कव्यक्टाल क**तिए हहेरव ना।'' म छ-খন জানিতত পারে না, যে অধর্মারপ ভয়ন্তর ব্যাধি জাহাকে আক্রমণ করিয়া সম্ভরে অন্তরে ভাইনে সমস্ত সৌভাগ্য নট করিতে-**ए अवर छाहात हित्र कन्यालात भरव कन्ये-**ক প্রদান করিতেছে ও জনে তাহাকে মহত্ত্ হইতে পরিচাত করিয়া অধোগাদী করি-

তেছে। তৎকালে সৈ ব্যক্তি আপনার বিপদকে সম্পদ ৰলিয়া মন্ত্রপুর্বীক আলিজন করে এবং আপনার নিতা নির্বাচনের কার রণকে উন্নতির সোপান ভাবিয়া আনিন্দিত হয়।

व्यथम् (य मनुषा महीदह श्रदमं कृतिश्र ক্রনে তাহার ধর্মজ্ঞানকে নন্ত করিয়া কেলে. লোক ন্যাজ হইতে ভাহার বিশ্বর উদাহরণ व्यक्ति इन्ड्या याह । य मन्त्रया मीर्घकान त्य কুক্রিয়া অনুষ্ঠান করে, ক্রমে বেই কুক্রিয়ার সহিত তাহার এমত আলুগাতা হয় এবং প্রীতি জন্মে, যে দে ব্যক্তি অরে ঐ কুকর্মকে कुरुर्भ विलाहे भटन करत मा। आह अव-क्षरकता अनक्षनारक अक अकात बुक्ति रही-भाग मत्न करत, भिशावानिता भिष्तप्रतनरक-उ कार्यगाकारतत विस्मय छेशास काविसा थादक धनः चटनक क्रमांच त्माकर्नी एक मञ्चा कृर्वन निरंशत धन माचन कत्रारक পুরুবার্থের কার্য্য জানে। যে সকল মদূ-बादक এक ममय পान मादित नान। श्र-কার নিন্দ। করিতে দেখা যায়, দীর্গকাল পান দোষে রত থাকাতে তাহারাই আ वात नमजा छत्त मनाभागतक नित्नीय कर्या বলিয়া প্রতিপন্ন করিতে নানা প্রকার কু তর্কবিস্থার করে। ভানেক প্রদার।সঞ্জ লম্পট পুরুষ, গরদার গমন করাকে দোয मूना मरक काया वित्रा (मर्थ। स्य मक्त পুরুষ লাম্পটা দোশে লিগু ইইবার পুরের উক্ত ক্রিয়াকে সহস্র প্রকারে নিন্দা করে. थे मात्य मृथिक इंग्रेवात शत छाहाताई আবার প্রদার গ্রন্থে প্রকৃতিসিদ্ধ নি-एक स्व कार्या विवत्। वार्या कतिश थाक । যাহার মুখে এক সময় অন্যায়াচরণের অ-শেষ প্রকার নিন্দা জ্রবণ করা যায়, সেই ব্যক্তি আনার দেই কুক্রিয়াকে অনিন্দিত कर्म विभा की उन करते। यह अभ त्य वाङि भी बंदगल (य दिनान भाभ कर्त्या सिंश्व থাকে, অভ্যান দারা ক্রমে সে ঐ প্রাপক্তি-য়াকে দূৰিত ও মলিন দেখিয়াও নিতা দহ-বাস হেতু ঐ পাশের মুর্স্তি তাহার পক্ষে প্রিয় বলিয়া প্রতীয়মান হয় এবং দে তাহা-क् निर्फाष निज्ञा अिंश्यम कतिवात कता

নামা প্রকার তর্ক বিস্তার ও বাগাড়মর করি-তে বাৰো। কিন্ত প্ৰচুতিস্থ লোকের ইহা क्षेत्रका विद्याना কৰিয়। দেখা উচিত যে ভিরামুখ্যন দারা কি কুকর্মের দোষ নফ হয়? কি কুকর্মি লোকের ধর্ম প্রবৃত্তি দ্বিন দিনে মলিন হওয়াতে তাহার নিকট ज्यथरमात (नाय व्यात (नाय विश्वा भेगा इत्र ? शाश भूमा आधु लात्क ऐश वित्वहमा क-রিয়া দেখিলে ক্ষরশ্রুই জানিতে পারিবে-ন, যে কোন দুর্গাল যুক্ত মলিন পদার্থের छुर्तक (माय नकी ना ट्टेट्ल अध्यन मीध-কাল সহবাস ফারা আর তাহার তুর্গকা असूकृष्ट इत्र ना, शाशामक अमाद् शुक्राय-বাও সেই ৰূপ দীৰ্ঘ কাল কোন কুকিয়া অনুষ্ঠান করিয়া আর পরিণানে তাহার দোষ দেখিতে পায় না।

 $\mathbb{A}^{2^{n-1}}$

অধর্ম রোগ ছইতে মনুষোর যত প্রকার অনিক উদ্ভব হল, তমধো এই দোব
অত্যন্ত ভ্রানক, ইহাতে করিয়া মনুষোর
এক কালে কলানের পথ রুদ্ধ হইয়া যায়
এবং ক্রমাগত অবংগতন হইতে থাকে।
শ্রীশ দেশীয় প্রাচীনাচার্যা আরিস্তোতাল
ব্যক্ত করিয়াছেন, কোন পাপপরায়ণ প্র্
রুষ যত দিন কুকর্মকে বিগহিত ও অকর্বায় বালিয় প্রাপ্তা পরে, তত দিন
পর্যান্ত তাহার পুর্বা পরে প্রত্যাবর্ত্তন হইবার সন্তাবনা থাকে, কিন্তু যথন সে আর
কুক্রিয়ার দোম রাশিকে দেখিতে না পায়,
তথন আর তাহার পাগ পথ হইতে প্রিভাব পাইবার উপার মাত্র থাকে না।

হিতীয়তঃ অধর্ম মন্ত্র্য শরীরে প্রবিষ্ট হইয়া কথন স্থির ভাবে থাকে না, নিরম্ভরই আপনার অধিকার বিস্তার করিতে থাকে। কুকর্ম কথন কোন শরীরে একানী কাল যাপন করে না। যে স্থলে একটি কু-ক্রিয়ার আবির্ভাব হয়, সেই স্থলে ক্রমে আর পাঁচটি আসিয়া উপস্থিত মন। কোন মন্ত্র্য যখন কোন প্রবৃদ্ধি বিশেষের অধীন হইয়া কোন একটি কুকর্মে রভ হয়, তথন ভাহার মন মনানা কুক্ম হইতে পৃথকু থাকিতে চেটা করে, কিন্তু পরিণামে প্র য়া তাহাকে আ**ক্রমণ করে। অনেক মনু**-ব্যকে এই ৰূপ প্ৰথমতঃ একটিমাত্ৰ দোম হেতু পরিণামে সর্ব্ধ প্রকার পাপের আধার হইতে দেখা যায়। পান দোষ অনেকের লাম্পটা দোষের কারণ হইয়াছে এবং ল-ম্পটতা হেতু **অনেকে**র চৌর্য্য দোষ জন্মি-য়াছে। অনেক ভদ্র সন্তান প্রথমতঃ আ-মোদপ্রিয় হইয়া মদাপান করিতে আরম্ভ करत, व्यनस्त्र भिट्रन मिट्रन थे পाना-সক্তির আধিক্য হওরাতে তাহার কামাদি অপর নিকৃষ্ট প্রবৃদ্ধি সকল উত্তেজিত ২ই-লা উঠে এবং দে ব্যক্তি তখন তাহাদিগকে নিরোধ করিতে না পারিয়া স্থতরাং চরি-তার্থ করিতেই বাধ্য হয়। যে পরদারাস-ক্তির প্রতি তাহার পূর্বের সাতিশর যুগা ছিল, উত্তেজিত নিকৃষ্ট প্রবৃত্তির নির্যাতন হেতৃ পরে সেই পাপের শরণাগত হ-ওয়াই তাহাকে প্রিয়•বোধ হয়, এবং তা-তার পাপাশরা আপনা,হইতে শিথিল হই-য়া ধায়। এদিকে তাগার মনোমধ্যে পাপ डेक्ट्रा क्षेत्रु उ इहेग्रा थात्क, श्वनित्क वाहित क्ट्रेंट नाना अकात मनाभाशी कूमःमधी **ाशांक नर्कता कुळाइंडि ध्वमान करता**। এই প্রকার নানা কারণে ক্রমে পাপ সাগরে সন্তরণ করিতে ভাহার সাহন রূদ্ধি হয়, এবং দে ব্যক্তি অনায়াদে এক পাপের *অনু*রো-ধে অন্য পাপকে আলিঙ্গন করে!

যে ব্যক্তি এইৰপ পানাসক্ত ও প্রদার্থাক্ত হয়, তাহার স্ত্য প্রভৃতি অপর ধর্মই বা কি প্রকারে রক্ষা পাইতে পারে? সেবাক্তি লোক সমাকে স্থীয় সম্ভুম রক্ষা করিবার জন্য অ্থবা আপনার পাপ ইক্ষা সম্পন্ম করিবার জন্য নার্না সময় নানা প্রকার ছলনা ও চাতুর্য্য করিতে বাধ্য হয় এবং ভিন্ন ভিন্ন অবহার ভিন্ন ভিন্ন প্রকার অন্ত্যাচার করিতে রত হয়। সে ব্যক্তি কোন সময় আপনার দোব গোপন করিবার জন্য কোন হাকে নানা প্রকার কিব্যাবাক্য বিভার করে এবং কোন সময় কোন আককে প্রকার করের এবং কোন সময় কোন আককে প্রকার করিবার মানবে তাহার সহিত অশেষ প্রকার বিধ্যা ব্যবহার করিতে রত হয়। সে ভবন স্থায় ব্যবহার করিতে রত হয়। সে ভবন

ভাহার মান সন্তুম কিছুই রক্ষা পায় না, স্থুতরাং আপনা হইতে বত্যকে পরিত্যাগ করে। ঐত্তপে কেহ কেহ নত্ত্তেই পাপ পদে আপনার সমস্ত সম্পত্তি অর্পণ করি-য়া এককালে নিস্ত হয় এবং প্রভু সদৃশ পাপ इंव्हाटक क्वथनान कवनार्थ वास नमस হইরা আপনার পরিচিত বন্ধু বাজ্তবের নি-ফুট পূর্ব্ব সন্তুম বিক্রে করিয়া নানা প্রকার প্রভারণা স্বার, নানা সময় অর্থ সংগ্রহ্ ষ-রিতে আরম্ভ করে। কেহবা অবিলয়েই হতসভূম ও হত গৌরব হইয়া কাহার নিক-ট আর কোন কপে অর্থানুকুলা প্রাপ্ত না হইয়া ভৌষার্তি বা দস্মার্তির দাস হইতে স্বীকার করে, এবং বারম্বার চৌর্যাও চা-ভুৰ্যা রুত্তি অমুষ্ঠান করাতে কোন স্থানে ধত হইয়া লোক সমাজে পদচ্যুত ওরাজ-দারে দণ্ড প্রাপ্ত হয় এই কপে কাহারও ২: প্রাণ পর্যান্ত নস্ট হয় , অতএব মনুব্য এক অধর্মে রত হইলে যে তত্ত্বলকে খার আর সকল অধর্ম আসিয়া তাছাকে আক্রমণ করে, এবং ক্রমে ক্রমে তাহার ধন প্রাণ স্থ্যাতি মান সমুম সকলই নফী হর ও তাহার ইহপরলোক সকল স্থুখেরই ,হানি হয়, ভাহাতে কিছু মাত্র সন্দেহ নাই। অংশ বিষয়ে মনুষ্যকে নিতাত সাবধান হওরা উচিত, কথন্যে কোন্ স্ত্রে মনুবা মনে পাপ বীজ প্রবিষ্ট হইয়া আনুরিত হইতে আরম্ভ করে, তাহা কিছু বলা যায় না। বেমন এক মাত্র পান দেবে হেতু শ্রেণীবন্ধ কপে আর আর অনেক দোব উপস্থিত হটুবার কথা উল্লেখ করা গেল, দেই ৰূপ অন্যান্য কুজিয়া হেভুও **জ**নে ক্রমে অনায়াদে পানাদি দোঘের উৎপত্তি र्रेट शादा। হয়তো কাহারও পান माच क्या शत्रात्र आरवत उक्त रह अवश কাহারও পরদার দোষ হেতু পান দোবও ব্দে। প্রত্যেক ছক্তিয়াই প্রত্যেকের প্ররো-চক ও প্ৰবৰ্ত্তক হইতে পারে, অত্তব কু-কর্মের মধ্যে কাহাকেও অধিকার করিতে দেওরা উচ্ড নহে।

বৃদ্ধি কোন সময় কোন কারণে মন অ-ধর্ম পথের পৃথিক হুইতে ইচ্ছা করে, তবে তৎক্ষণাৎ তাহাকে শত্রপুর্বক নিবারণ করা উচিত। প্রথম ধংকিঞিৎ মারাস করি তে জুটা করিলে পরিণামে মহা ক্ষানর্থের উৎপত্তি হয়। মনেতে একবার পাগাধিকার থিসুত হইলে পুরুষের আর নিতার নাই, পরিণামে পাপ হত্ত হইতে জাণ পাভয়া ক্ষান্থ প্রায় হইড়া উঠে।

ময়নন সিংহত বা**ক্ষসনাজের** প্রথম সায়ৎসরিক **স্ভ**া।

আহা! অদ্য অমানিগের কি স্থথের দিন; আদা এই সভারে জম দিন। বিগছ शीष **मारमत** এই २७८२ मितरम এই ममारकत स्वताल हया। यम এই म-ভার বয়ংক্রম এফ বর্ষ উভীণ মহয়া ভূতন वंष्मातः अवुख इष्ट्रेल। यामारमतः এकप আশা ছিল না যে, এই সর্বান্ডভকর সভা ধর্ম প্রকাশক পবিত্র সমাজ স্থায়ী হইবে কিন্তু সত্যের কি বিচিত্র শক্তি, কি অপূর্ক মহিমা, আহার দীমা কে বলিতে পারে। স্থুশোভন বিমল:কাশ কতগণ মেঘাবলীতে আচ্ছেন্ন থাকিতে পারে , মনুষ্ট্রমোই নিদ্রা হুইতে জাগ্রত হুইয়া কত ক্ষণ অপরিচ্ছর শ্যাায় অবস্থান করিতে পারে, প্রবাহিত সমুদ্র তরঞ্জ কতক্ষণ বল্লোকা বল্লনে স্থির রাখিতে পারা যায়, অগ্নি কণা ভুলা রাশিতে পাতিত হইলে কতকাণ প্রাথলিত না হইয়: থাকিতে পারে। তক্রপ নরুযোর স্বভা বসিদ্ধ মতা ধর্মের জ্যোতিঃ কৃতখন পা-লীক কল্পিড কুদংআরাদি ঘারা ভারত थाकिरव ? धनिकविनास्त्र हे এই ময়মন সিংহ্নগরে প্রস্থলিত অগ্নি শিথাবৎ ধর্ম শিখা প্রদীপ্ত হইয়া ধর্মা কির্ব উদ্মির্ণ ক্রিতে লাগিল। হে সভাস্থ সভা গণ! এই সভা ভঙ্গের কারণ কত জন কত মতাব-লছী হুইয়া কত অপবাদ, কত বিবাদ, কত য়াগ,কত বিভগু,কত উপসাহ প্রভৃতি কভন্প ভাব ভঙ্গি প্রকাশ না করিয়াছেন, তাহা ব-লিরা আর ক**ত মনের সুঃখ শের** করিব ? কেহ কেহু সংবাদ পত্রিকার স্বীয় গাত্রখালা মুদ্রিত **করি**য়াও **তৃপ্ত হয়েন নাই।** কেই

ক্ষেত্র পানা স্থানে ভ্রমণ করিয়া বিপক্ষ দিগের ক্রিয় হইবার বাসনায় কত মিথ্যা কণ্পনা,কত শ্বিধ্যা জম্পনা, কত কত বিষয়ের আলোচনা कतिशारहर, धदः मडा जरमत जना क-ভৰপ মন্ত্ৰাই করিয়াছেন, তথাপি " স-जारभव कंशरङ नाजुङ " अहे नाहरन পের্ম কান্তেণিক মহান পুরুষ! তোমার কুপাতেই বিপক্ষমুদয়কে বিপক্ই জ্ঞান করি নাই। এড়ানে জীযুক্ত ঈশানচন্দ্র শর্মা বিধাস ও শীবুক্ত তিপুরাশকর অপ্ত মহাশ্যু দয়কে আম্রা ধন্যবাদ না ক-বিয়া থাকিতে গাবিলাম না। হে শ্রোভা বর্গ! ইখাঁরাই এ সভার প্রবর্তক ও भः छ। भक् अवर है इंदिनत छिस्ना हिस् সভা একান পৰ্যায় ভীবিত আছে। কত জন সভ্য বিপ্রফলণের ভয়ে প্রায়নপ্রয়েণ ই-ইয়া বছদিবস প্রায় সভার অন্নুপত্তিত ছিলেন, কভ জন গোপনে এ সভার প্রতি উৎসাচ্মাত্র দিতেন, কিন্তু দেশস্থ জ্নগ-ণের ভয়ে প্রকাশ্য শভার নাম উচ্চারণেও ज्य भारत हरेटडन ।

তে সভাস্থগণ ৷ অধিক কি বলিণ, ব্রাহ্ম নলিয়া এ নগরের কোন ব্যক্তি-কে সম্বোধন করিলে তিনি ঐ শক্তে চো-রাপরাদ অপেফাও দুব্য বিবেচনায় তৎ-প্রতি রাণান্থিত • ২ইতেন। হায় ! এখন সেদিন কোথায় ? সে কথাই বা কোথায় ? যিনি সর্বাদেশ উল্লেখ করিতেন, তিনিই বা কোথায় ?

হে সর্ব্ব সনাতন বিশ্বপালক! তোমার ক্রপান অবলা এ সভার বছলন গমনাগমন করিতেটেন, এবং কত জন সভ্য হ্ইবার মানস একাশ করিতেছেন, ইহাতেই আ-মাদের দুঢ় বিশ্বাস হইতেছে যে এ সভা ভোমান ক্রপার চিরস্থানী হইবে! পুর্বের হুইজন মাত্র সভ্য জারা সভারম্ভ হয়, অধু-ন' দশ জন এসভার সভ্য হইয়াছেন। এবং সন্লোভ দুঢ় উৎসাহ সহকারে সভার কার্যা নির্বাহ করিতেছেন।

र अनम् छादनत् छे**०म शतम् कात्रन** !

ভোষার নিকট আমাদের এই প্রার্থনা যে আমাদের প্রীতি প্রবাহ যেন কেবল তোমানরই প্রতি উৎসারিত হুইতে থাকে এবং এ সভা যেন চিরস্থারিনী হুইয়া বহু জনের উপকারিণী হয়। আমাদের উৎসাহ স্রোত যেন এই কপই চির প্রবাহিত থাকে এবং আমাদের মনকে বিশুক্ত করিয়া স্কাল শুভকর কার্যোই স্মামাদিগকে নিযু-ক্তরাবে।

ওঁ একমেবাদ্বিতীয়ং।

বিজ্ঞাপন

আমাদিণের কার্যালরে লিথোগ্রেফি যন্ত্র ও মুজা যন্ত্রে নানা
প্রকার কর্মা হর ও পুস্তকাদি মুজিত করিবার জন্য নানা প্রকার
নুতন ইংরাজী ও বাঙ্গলা অক্ষর
প্রস্তত করা হইয়াছে! অতএব
সাধারণের প্রতি নিবেদন, ইংরাজী ও বাঙ্গলা পুস্তকাদি মুদ্রিত করিতে বাঁহার প্রয়োজন হয়
এবং লিথোগ্রেফিক কোন কার্যা
যাঁহার আব্শাক হয়, তিনি এথানে প্রেরণ করিলে নিয়মিত
নূল্যে ও নিয়মিত সময়ে অতি
উত্তম রূপে কর্মা প্রাপ্ত হইবেন।

এই এই অন্তাহানিনী পঞ্জিক।, জনিকাতা নগরে বেডিনিনিকাছিত অন্তাহানিনী স্থান কাইনাল্য কই-তে অতিযানে অকাশিত হয়।—ইইনি ছুলা এক টাজা ১ আমাত ইবিনার নাক্য ১৯১৮ জনিগতাব্য ১৯১৮

नकाकारतम मान १८१७ छव्दातिनी नठात काकि नका काति मारन वह गाविकात के अब दिना करता आब हरतते।



ব্ৰজনাএকমিদমগ্ৰজালীলান্য এতিকালীলান্তিদং সৰ্বান্তক্ষণ । তদেবনিতাং জ্ঞানননত 'দিবং ব্যক্ত ছিন্তন্য বহে কৰে বিভিন্ন । পৰ্বব্যাপিসৰ্ক নিয়ন্ত্ৰ সন্ধাল্যসৰ্ববিৎ সৰ্বালান্তনন্ত্ৰ বৃষ্ণা গ্ৰহণ কিন্তা কিন

জীবাত্মার সহিত পরমাত্মার সমস্ক।

বেষদ চক্ষুর সহিত ক্যোতির সম্বা আছে, কর্ণের সহিত শব্দের সমন্ধ আছে, এবং নাশিকার সহিত গল্পের সহস্থ আছে, সেইৰূপ জীৱাল্লার সহিতও প্রসাত্মার वक्षि जशूर्व मध्य जाहि। नर्वन नक्व लाक कर्जुक अहे अनिस्त्र नीय सका नवक অনুভূত হর্মা এবং অবস্থানুসারে অনেকে रेशत गड़ा क्षणीि कतिए मक्स्य इंट्सन ना; किन्छ এই अन्तर्भु ज जार्र्ग मनका विना-मान बाकार७३ जामता नेचरतत कानालू-ভব করিতে সমর্থ হই। আমরা কোন रखन्ने नुक्ष व्यवश्र महि। वामन मा कड़ शमार्थत्रहे चुकुश कानि, मा दकान दिजन श-नार्थबरे चन्न बनिए शाहि; भागता अह-তি সিম্ব সৰ্মানুসারে কেবল কভিপর গুণাব-लक्ष्म कतिया बद्धन शतिका शार्शक्षे 🖟 स्थमन কপের সহিত স্পরিক্রিয়ের নির্দিষ্ট সম্মান্ত-नात मुना नतादर्वत छन नमस्टिक अक मटन कारता जामता अल्डाक मुना बहुत नुवर् नका अध्यक्त काविएक मात्रि, (अस्त्रम भा-गामध्ये गामक प्रमासकारक सम्बोत्तरह **७न कार्नि व्यक्ति वर्षेत्रा अन्यवाद्य है।**शाह ्रमहरू स्वतित्व ः नाहि । पार पार्ट अस्ति अस्ति साम् नगर्यः

ছারা ভাহার পৃথক্ সত্ত্বা অমুভব করিতে म्बिश जगनीश्रातत श्रक्त नी জানিয়াও তাঁহার কতিপয় মহং খ্রুণ অব-লম্বন করিয়া ভাঁহার একটি পূথক সন্ত্র। প্র-তীতি করিতে সমর্থ হই। জীবাস্থার স-रिज अभिग्रदतत अहे श्रकाद व्यक्तिमीत অন্তুত সমক্ষ নিবন্ধ থাকাতেই সনুষ্ঞাতি, জগতের কারণ এক মাত্র জগদীশরের অ-ভিত্রে দৃঢ়তর বিখাস স্থাপন করিতে সমর্থ इप्ता मनुषा यथन सन्ति। सत्ति कान धन ব্যার গুণ স্মারণ করে, তথনি সেই গুণের আধার এক মাত্র ঈশ্বর পদার্থের অভিত্রে-ও প্রত্যন্ন করে, কেবল গুণমাত্র অনুভব ক-রিয়াই তাহার চিন্তার পর্যাপ্তি ও বুদ্ধির जुलि इस मा। यमि छानत পরিচর প্রাপ্ত হ-ইয়া সেই গুণের আধার বছর অভিত্রে প্রভায় স্থাপন করা মন্ত্রা জাতির স্ভাব निक ना रहेल, उाहा रहेला महत्य ध्वकात क्षमान काता मसुवारक जेन्द्र उद्यान व्यक्तान করিতে পারা যাইত ন। প্রত্যক্ষ, ব্যস্তুমিতি, উপমিতি আদি যে যে প্রকার প্রমাণস্থারা মা-नवका कि कर्शनीयदेश कान वाक करत, तम म-मळ श्रमान हे वार्थ इहेज। मसूना अस नक्ष्माता **উপ্রদেশ বারা** শব্দ প্রমাণেই **শ্রমীশরে**র পরিচয় প্রাপ্ত হউক স্বার স্থানীর বৃদ্ধি পরি-**हालम कतिया अरे जन्द बन जनत कार्यात** কারণ ৰূপেই ঈশুৱের লাম্বিচর লাভ করুক, मसुषा नकी अकार्द्र क्रांगीचटरत क्वन

তিপয় শুণের পরিচয় মাত্র প্রীপ্ত শুয়, কিন্ত জগদীশ্বরের অনুপম স্বরূপের দক্ষিত তাহার আতার এমনি একটি অপুর্ব্ধ সময় নিবন त्रशिहरू, या जे नगढ छन् ज्ञानि काक र-हेवाइ माम माम है जाहाद मान थे छन म-মুহের আধার ঈশ্বর প্লার্থের প্রভার ক্রি-তে থাকে। অতএব জীবান্ধার সহিত পর-मानात डेड क्रकात मनन मा शाकिता त्य মনুবাজাতি কোন ৰূপেই ঈশবের পূথক সত্ত্বা উপলব্ধি করিতে পারিত মা, তাহাতে আর সন্দেহ নাই। আনেজিয় বর্জিত ব্যক্তিকে যেমন সহস্ত প্রকার প্রমাণ ছারা ञ्चलका श्रेष्ट्रा यात्र ना, मर्नाटनिक्स्य বিহীন জনকে যেমন কোন প্রকারেই জ্যো-ভির জ্ঞান প্রদান করিতে পারা যায় না,সেই ৰূপ মনুষ্যজাতি উলিখিত ৰূপ সমন্ধ বিৰ্দ্ধ ত হইলেও তাছাকে কোন প্রকারে জগ-দীশবের পৃথক্ সত্ত্বা প্রতীতি করাইতে পার যায় না। আমরা যেমন শব্দ স্পর্শ ৰূপ রুষাদি গুণ দারা জড় পদার্থের পরিচয় शाहे, महेंबा एषि कार्यामि खेन हाता জগদীশ্বরের পরিচয় প্রাপ্ত হট, অভএব বাহা বিষয়ের অভিত্র আমাদিগের বৈমন প্রত্যক সিদ্ধা জগদীশরের পৃথক সন্ত্যাও তক্রপ প্রতায় গোচর। আমরা কোন ইঞ্জির বিশেষ ছার। জড় পদার্থের জ্ঞান লাভ ক-রিয়া তাহার অস্তিত্ব স্বীকার করি এবং কোন ইন্দ্রিয় হার৷ জগদীশবের গুণের প-রিচয় পাইয়া ঈশরের পূথক সন্ত্রা উপস্কি করি। এতন্ত্রর পদার্থ আমাদিণের নিক্ট সমভাবেই অনুভূত হয় এবং আমাদিসের প্ৰতায়ের মুলে এক ৰূপেই স্থান পায়, আম-রা যেমন একের অন্তিত্ব অতীকার করিতে नमर्थ इहे मा, त्महेक्श कार्यात शृक्क महा অসীকার না করিয়াও কান্ত থাকিতে পারি না

বিশ্বীক ও বিশ্ব কারণের গুণের পরিচয় পাইয়া যে উছার পূবক সন্থা উপলব্ধি
করা আমাদিগের শুকার সিদ্ধা গুছা সক্ষ্মী
ল প্রকার প্রমাণ দারা বিশ্বনার ক্রিক্তির
ইইতেছে, কিন্তু তাহার প্রমাণ বে শুকার
পর্যান্ত আমাদিগের বৃদ্ধি প্রমাণ ক্রেক্তির
প্রমান বিশ্বনা করিয়া স্থান ক্রিক্তির

विषयः विद्युक्तां विक्रिकतिया चार्मक नम्य भारतक कार्यक्र प्राप्त कांच हरेए रहा। देश नकल कार्यकात

লোক অগদী মানুর আৰু ক্সকার জ্ঞান লাভ করে না, কেছ তাঁহাকে অনির্মান কীয় ও অনির্দেশ্য বলিয়া আনে, কেছ-বা তাঁহাকে বিশেষ রূপে নির্মেশ করিছে চেটা পার। কিন্তু তাঁহার জ্ঞান লাভ বিষয়ে সকল মন্ত্রুবারই একটি সামান্য অধিকার আছে; যাহারা সেই অধিকারে উপনীত না হয়, ভাষারা সূল হন্দা মহে। প্ররুধ থাকে, আর ঘাহারা সেই অধিকার অভিক্রম ক্রিতে চায়, ভাষারা বিদ্যান্ত হর।

কোন সময় মন্ত্ৰ্য শ্বকীয় পরিমিত বুদ্ধি ছারা জগদী**খারের কোন বিবয়**ই আয়ত্ত ক-রিতে না পারিয়া জাঁহাকে অনির্বাচনীয় ও कानिएकिंगा विनिन्ना छेटलये करत । धरश (कान সময় ভাঁহাকে প্রতীতি করিয়া ভাঁহার অ-শীম ভাব আপন মনে ধারণ করিছে অভি-लायी रहेका काहात्क नीमांबक कतिए ণাকে। কণতঃ মনুষ্যজাতি ঈশরকে সর্ব क्षकारत शर्भ ७ अभीय बर्ग काविवात है অধিকারী। মনুবোর সহিত তাঁহার এই সম্বন্ধ যে নৈ যথম তীহাকে যে ভাবে অনু-ভব করিবে তথনি তাহাতে তাঁহাকে পূর্ণ দেখিবে ; মন্ত্রা শতবংসর সম্ভরণ করিলে-**ও তাঁহার কোন ভাবের** পার পাইবে না। ডিনি জানেতে পূৰ্ণ, শক্তিতে পূৰ্ণ অৰ্থাৎ আপনার স্বকীয় ভাবে সর্বদাই পরিপূর্ণ। जामता येथन कैश्राटक शूर्व कादन अकाक করি, তথ্যি আপন অসিকারে অবস্থিতি कतिशा शाकि, बात यथन केंग्सरक बामानि গেরপরিমিত বৃদ্ধি ছারা নীমা বিশিক্ত করিরা নিৰ্দেশ করিতে যাই, তথনি শীয় স্পানিকায় केश ब्यान वर्षे । जानका काराटक महमराज জানিতে পারি রটে, কিব বাকা ভারা কোন বংশই 'বিৰ্দেশ' কৰিতে শারি দী। ডিমি বে কিছপ ও কি প্রকার, কাছা কাers show on five more factor white अवर्ष रह है। जानहा क्रिकारक निष्ट क्रिकाह क्षांदि असम स्टि हिंदी कार्य दिस्त THE PERSON NAMED IN

बार । जामना जीवादक (थारम जाकन, महाद जानते ७ स्टब्ड हुन, यानत्म-্ত্ৰ হৈতু, ইত্যাদি নানা বাকে। বৰ্ণন করিয়া महत्र कृष्टि नामन कति, किन्छ है जापि বাকা বারা কি তাহার স্বলপের কিছুমাত बिटर्फ्न करा इसं? दिनापात्र मसुद्यात श-রিমিত প্রেম, স্মার কোবার তাঁহার অপরি-মিত অনিকাচনীয় ভাব! কোপায় জীবের मानत्नाहिष्ठ क्षेत्र स्रोही मग्न, जात द्वाथाय তাঁহার অপরিবর্তনীয় নিতা প্রকণ! কোন শব্দ ছারাই ভাঁহার অনিক্রচনীয় ঈশ্বর ভাব বাক্ত হইতে পারে না ৷ আমর৷ পরিমিত লোকে বাস করি, পরিয়িত পদার্থ প্রত্যক করি এবং পরিমিত মন ধারণ করি, স্কুতরাং আমরা যথন যে কোন শব্দ উচ্চারণ করি ও যে কোন ভাব কণ্পনা করিঃ তৎ সমুদায়ই পরিমিত পদার্থের উপযুক্ত ইয় এবং স্থতরাং তাহা কদাপি পূর্ণ পদার্থের যোগ্য হইতে भारत ना। जिनि ममुनाय शक्त भनार्थ हरू-एक व्यव क्षाप्ति विक्रिय नर्दन, व्यवस्थ-ও বিলক্ষণ, অতএব তিনি কিমপে ইতর শব্দের বাচ্য হইবেন। যখন জাঁহার কোন বিষয়ই স্ট পদার্থের সহিত সমান ছ্টুতে পারে না, তখন হাট পদার্থ বোধক শরি-নিত শব্দ ছারা তাঁহাকে কি **ৰূপে**ুবুৰান যাইবে; আমরা কেবল উপায়াভাবে জাঁহা-কে নানা শব্দে উল্লেখ করিয়া মনের তিখি সাধন করি। আমরা মধন তাঁহার নিরম <u>व्यक्तिभाषन क्रिया नाना स्थएकाव क्रि</u>, **एथम कैशिएक कुणामन छश्जिक मा दिनना** कान बर्भर कान्छ शाकिए भाति मा जबर **এইন ভাহার আভারে বাল করিয়া নির্ভর** সানন্দ সাগরে জাসিতের্থাকি, তথ্য ভাঁহা-क्रि थ्यममत्र शहस बक् बॉलएउ जाशमा हहे-**ि गांध रहे। भारेक्टन व्यवस्थास्त्राहत छ।**-राज नामान्त्रिकाची मामर्गन कतिया छ।रा-दि नाम अक्षेत्र केमादि क्षेत्रान कति, रागडः जिति मामानित्वक असम त्वान छेगावित हे त्याचा नरम । बहिला ने बहार त्यान नरम CHE THE STREET OF STREET AND MINISTER FAIR THE REAL PROPERTY AND A PERSON.

শান্ত করিতেছি, কিন্তু ইয় বারা তিনি যে
করী পদার্থ কিছুরই নত নছেন, ইহাই মাত্র
বুবান হয়, তাঁহার অবাপের কিছুমাত্র নির্দেশ
করা হয় না। কলতঃ আমাদিগের নন
যধন তাঁহার অস্তুপম সন্ত্রা প্রতীতি করে,
তথন দে কেবল তাঁহাকে নিতা ও পূর্ণ ভাব আমাদিগের আআ আর কোন পদার্থেই প্রদান
করিতে সমর্থ হয় না। মনুবার মন কেবল ঈশরের এই নিগান তন্ত্র মাত্র প্রাপ্ত হইয়াছে এবং এই তত্ত্বই ইশ্বর উপাধি সম্পূর্ণ করিয়াছে।

নিত্য ও পূর্ণ পরমেশ্বর গে কিৰূপ ও কি প্রকার, তাহা তিনিই জানেন, কিন্তু তাঁহার तिहे जनिर्द्धमा जसूत्रम चक्रात्रत महिङ জীবালার আর একটি আন্চর্য্য সহত্য দে-থিতে পাওরা যায়, স্বাটি মধ্যে সে সহক্ষের তুলনা দিবার স্থল নাই। সে সম্বন্ধ পিতা, মাতা, ভাতা, বন্ধু প্রভৃতি কাহারও স্বয়ন্ত্রের जुना नट्ट। य नमग्र राष्ट्रयात क्रमहाकाटण ভাঁদার অনিকচিনীয় স্বৰূপের উদয় হয়, ত-থনি তাহার মন হইতে একটি আভ্যা ভাবের ধারা উপিত হইতে থাকে। কিন্তু সে যে কিভাব ভাহাও আমরা বাক্য দারা বাক্ত করিছে পারি না। সে ভাব না ভক্তি বলিয়া গণ্য হইতে পারে, না গ্রীতি শব্দেরই বাট্য হইতে পারে। আমর। জগদীশ্বরে ডে ভাব সমর্পণ করি, সামান্যতঃ তাহাকে **ভক্তিও প্রীতি শব্দে কহিয়া থাকি, কিন্ত** বিবেচনা করিয়া দেখিলে বিলক্ষণ বোধ হুয়, বৈ পিতা মাতা প্রভৃতি শুরুলনকে ভক্তি করিবার সময় আমাদিগের মন হুইতে ৰে ভাৰ উপিত হয়, অথবা আমরা প্রণয়া-স্পাদ বন্ধু বৰ্গকে যে ভাবে প্ৰীতি করিয়া থাকি, জগদীশরকে কথন সে ভাবেভক্তি বা প্রীতি করি না, ঈশরের প্রতি আমাদিনের মান হইতে যে ভাব উপিত হয়, তাকা স্কুলার স্বতন্ত ভাব, তাহার সহিত পার্মির কোন कारतबरे कुलना स्टेस्ट भारत हा। ब्राह्म स उस के जिल्लिक का नाम सामग्री ता भारत देख कति, वेपन किया (म है) अमिकारकीन जार भारत रकाम नकारत है सबस करन मा। जन मैचित सार टार्ड शास्त्र सावर्तक स कार-

ঠাতা হইয়া রহিয়াছেশ। আমাশিলোর **নলে**শ-ু মধ্যে হয় সময় ভাঁহার অমৃত্যয় পুৰাপের छेक्स इत् उरक्रगार ज्यामानिकात् मन हरू-তে এক অনিবাচনীয় ভাবের ধারা উল্থিছ হইতে থাকে, কোন প্ৰতিবন্ধকেই উক্ত ভাবের গতি রুদ্ধ হয় না। বর্থন কোন পুণ্যবান্ পুরুষের মনোক্ষপ মার্জিত দর্পণে জনদী-শ্বরের বিশুদ্ধ তত্ত্ব প্রতিভাত হয়, তথ্ন তাহার অম্বংকরণকে পার্থিব হর্ষ শোকা-দি কোন ভাবই অধিকার করিছে, পারে না, তথ্য তাহার মন এক আক্ষা অমৃত-ময় ভাবে প্লাবিত হয়। কিন্তু জগদীশ্ব ব্যতীত অন্য কোন পরিমিত প্রার্থে গ্রন করে না, তাহাতে আর কিছুমাত সন্দেহ नाई। एनं एउएम ७ काम एउएम जरनक গোককে অনেক প্রকার অবাস্তব ধর্মের অমুগত হুইয়া নান প্রকার স্ফ ও ক-শ্পিত পদার্থকৈ ঈশ্বর জ্ঞানে জারাধনা कतिरक रमशा यात्र वर्षे, त्वर नाना थ-কার কৃতিপত দেব দেবীকে স্থার মহাাদা अमान करत, (कर्मसूया विष्यदक संध्य অবতার বোগ করিয়া তাহাকে ভাদুশ ভাবে সন্ত্র এবং কোন কোনবা-क्टिंक मुखिकामि कड़ भमार्थक्क स्भित জ্ঞানে আরাধনা করিতে দেখা যায়। কিন্তু ম্বুষা জাতির ইত্যাদি অভয়ন ও ভান ভারা জীবাভার ও পরমাভার প্রকৃতি সিদ্ধ मयस्मत विष्ट्रमाज अमार्था छेशनिक रश मा। মনুষ্যজাতি জগদীশরে বে ভাব প্রদান করে, কোন পরিমিত পদার্থে কখনই সে ভাব দিতে সমর্থ হয় না। সে যথন কম্পিত দেব দেবীয় প্রতিমা আদি কোন প্রকার প-तिगिए भनार्थिक जेश्वत गर्यााना अनाम करत, তথ্য তাহাকে সম্পূৰ্ণ ৰূপে ঐশীৰ্জি সং স্পন্ন ও ভাহাতে সেই পূর্ণ ও নিত্য পুরুষে-র আবিক্রে **কম্পেনা করিয়াই ভদুযোগ্য ম**-যালে প্ৰদান করিয়া থাকে; সে মতক্ষ্ম প-ইত্তি দেই পরিমিত পদা**র্থকে ভাতার স্বরূপ** অবস্থান সম্প্রীন করে, ততক্র বৈশ্ব ম-তেই ডাটাকে উপর ভারেগলারীয়া করি-ত शांत ना। पर्शाः काम शिकास यादर जाशन जातामा शृह्णिकारक असि-काति कड़श्रमार्थ मह श्रीवृत्तिक बाला स्मर्ट्स,

ভতকাৰ কৰ্মাই ভাষাতে ঈশবের সমূম नीम क्रिकेट क्षारत ना। धनस्य मुनेन त বাজি উক্ত শুদ্ধনিকাকে ক্ষিবিভিড্ন কর্ত্তা, এক মাত্র অন্তিতীয় নিতা ও পূর্ণ পুরু-বের আধার ক্ষমণ প্রভাস করে, তথনি তাহাকে ইম্মরের মর্যাদা প্রদান করে, শ-তএব বিলক্ষণ প্রতিপক্ষ হইতেছে, যে মনু-য্যকাতি জগদীখারের স্থাপ ডিয় কথনই जना कान भनादर्थ देखने वर्षमना अनान করিতে পারে না। পৌত্তলিকাদি ভামান্তক লোক দিগের পরিমিত পদার্থের উপাসনা দ্বারা কেবল মন্তব্যের ভ্রম ও অজ্ঞানই প্র-কাশ পায়, তদ্ধারা জীবাত্মার সহিত পর-মান্ধার সমক্ষের কিছুমাত্র অন্যথ: প্রতিপন্ন **इत ना। यहि दिनन मनुषा एकिका पंखरक** রজত জনে যন্ত্র পূর্বকে রক্ষা করে, তাক্ হছলৈ তাহার দে মনোগত যত্ন কৰন শুক্তি कारक चार्ट्स मां, रम यञ्ज ब्रकाट्य अख्रिहे সম্ভব হয়, অভএব সুঢ় লোকে যথন কোন পরিমিত পদার্থকে ঐশীশক্তি সম্পন্ন মনে করিরা মর্যালা করে, তথম সে মর্যালা সেই ঐশী শক্তিকেই সম্ভবে, তাহা কদাপি সে পরিমিত পদার্থকে সম্ভবে না৷ ইহা নিশ্চয় मडानेरा जननीचरतत चक्त जिम जात কোন পদাৰ্থই মনুষামন হইতে ঈশ্বর ম র্য্যাদা আকর্ষণ করিতে পারে না।

সংরক্ষিত শব



ित्र वालिक मृत्य केरोत केरोत प्र इरमेड क्या बात दिस्मीह रमायक बात क कार सक्कान क्या बादका । काम रव वित्र रमायक क्या कार्यका महाविकास कर-कर्म पालक वार्ष के कार्य कियोग करवन,

কোন নেশে বা লোকাৰরিত আন্দার জনের बार्ट्य नक्षणकुर्वाद्य द्यान छत्रमा मद्यादत अधिका वा रख राष्ट्रनाया विन्तालय स्थान, कि समुद्र अगाहिक हाजभन अलेक वर्रेश शांदक अवर दर्भाम दर्भाम दर्भीश ल्यादक वर्ष बर्ट्स अवन बर्टर्गत शृंगोरर वृति एवाकन क-बाह्या है है लोकावर जानीय वर्णत প্রতি স্বীয় স্বীয় শ্রদ্ধতি প্রীতি প্রকাশ করে-ন। কিন্তু এই বিষয়ে মিসর প্রভৃতি কডিপর প্রাচীন স্থানে অতি মাশ্র্য্য পদ্ধতি দেখিতে পাওয়া যায়। পুরাকালে মিদর দেশে কোন পরিবারের মধ্যে কোন বাজির মৃত্যু হইলে তৎ পরিবারত্ব লোকে ঐ মৃত ব্যক্তির দেহ शृक्षिक। मध्याख मसिविचे कतिक ना धनः চিতানলে দশ্ম করিয়াও ডম্মীভূত করিত না! ভাষারা ঐ মৃত ব্যক্তির চিরন্মরণের জন্য তাহার শব নট না করিয়া অতি যত্ন পূর্বক রকা করিত, এবং ভাহাদিগের কৌশলানু-সারে ঐ যত্ন রক্ষিত শব অতি দীর্ঘ কাল পর্য্যন্ত সমভাবে থাকিত। মিদর দেশীর शृक्षकांनीन लाटक य य अकात कोनल মৃত দেহ রক্ষা করিত, তাহাপরে ব্যক্ত **इहेरउट्ह**।

মিদর দৈলৈ কতক গুলি লোকে ঐ ব্রপ শব রক্ষা করিবার ব্যবসার করিত,অপরাপর সকল লোকে ভাছাদিগকৈ উপযুক্ত বেড়ন मित्रा भव भवीत तका कतिनात मकक अयु-ষ্ঠান সম্পন্ন করিয়া লইত। 🔌 বেতনভুক্ रायुनाही लादकता व्यथमण्ड अक व्यकात त्मिरमग्र पक्ष पात्रा नामा तत्र निश्राभित म-ওকের নমুগর সক্ষিক নিগত করিয়া ঐ মতি के चूना द्वान कामा क्षाचान नवा करा वाता श्रीपूर्व कविका समस्त्र छाहाता ०क क्षका-র প্রবার করি জীক্ষা আরু ছারা। ঐশবোদরের उचन नाम द्वाम कवित्रा सञ्जाम छरत्य नव्यक्ति गर्नार्थ वाद्वित कवित्रो (कांगल ७ वः भेके क्षेत्रीय दिस्स विस्ता करिया समाप्त बटन (बीड ७ नोब) क्य द्वारा जिक्क कर्तान-TO SET MISTER, PERMIT & ATA AN HA BERTHARM THE TAKE OF All the self-reflecting to a section

शिम जान विश्वकण तटन दननाई कतिया निक। धरे नकम चन्नु हादमेन भन्न, जाहान में नव त्नदर त्नादा माशाहरी क्रहेमान एग-দিবদ কাল সোরাতেই রক্ষা করিত। चैनकर ये निर्मिष्ठे अभग वडीड स्ट्रेस अत তাহার। উক্ত হুত শরীয়কে আর একরার ধৌত করিয়া লাক্ষা মূক্ষিত বজ্ঞে জড়িত করিয়া র:খিত। এই দকল ব্যাপার **দ্যাখা** रहेंदन शर भे मृत्र वांकित वक् वर्ण मिहे শব গৃহে লইয়া গিয়া মন্ত্রবোর আকারের নারি এক প্রকার কার্টের খোল প্রস্তুত করিয়া তন্মধ্যে তাহা রক্ষা করিত এবং তৎ-সমুদায় পুনর্কার আর এক ক'ঠ সম্পূট মধ্যে স্থাপন করিয়া মহা মর্যাদা পূঞ্জক কোন এক গৃহের ভিত্তিতে সংলগ্ন করিয়া রাখিয়া দিত। মিসর দেশীয় ধরাতা লোকে-ই এই প্রকার ব্যবহার করিত কিন্তু অসম্ল-ত্যাপন লোকে আর এপ্রকার বার্মাধ্য পদ্ধ-ভি অবলম্ব করিতে পারিভ না। তাহার। জন্য প্রকার উপায় অববয়ন করিয়া আপন আ-ৰীয় লে:কের মৃত শরীর রক্ষা করিত। ভা-হারা দেবদারু রুক্ষ নিংস্থত রস ছারা এক প্রকার গন্ধ দ্রব্য প্রস্তুত করিয়া ভাহা কোন যন্ত্র সহকারে ঐ শব শরীরের অভ্যন্তর ভাগে প্রবিষ্ট করিত,এবং উক্ত মৃত কার পুরেষাক্ত প্রকারে ছইমান দশ দিবস সোরাতে রাগি-রা দিত, অনন্ধর তাহাকে সোর। হইতে উজ্জোলন করিয়া দেই রল পূর্ণ স্থান সকল মুক্ত করিয়া দিত এবং তৎক্ষণাথ ঐ রম-**শহকারে তাহার** শবীরস্থ অস্তু ও মক্ষাদি रीमार्थ नकल वाहित हरेशा आतिछ। शु-র্বোলিখিত দেবদার প্রস্তুত গল রুসের তৈকে শবের অক্রাদি পরিয়া দ্রবীভূত হইয়া बाकिত এवः डाइ। পर्य शास इहेरनई এक কাৰে নিঃশেবিত হইয়া বহিপত হইয়া আমিত। সোরার তেজে ঐ শবের সমুদায় मार्न ७ कर रहेशा याहे ७, शतिगाटम दक्तन व्यक्ति वर्णानत्मम रहेश शांकिल अवह मृत्र वांक्षित वक्त वर्ग में अबि वर्गाविक्ष मव नदीव नरेश च व दाटम तथा कति । घाए।-ही कि नाकाना लाक, छाराहा आत व প্রসাস করের করা করিছে লারিত ন

ভাছাদিখের দান রক্ষার কোন সাজ্যুর হিন্দ না, অভি সংক্রেপ ও সামান্য কপেই রক্ষিত্র হুইত। এই প্রকার ইতর কাভির দান শরী-রের মধ্যে পুনঃ পুনঃ সভেল রক্ষ প্রবিভ করিল। কেনে ভাষার অন্তাদি নির্পত করা হুইত, পরে ফিছু কাল শোরাতে রাশিরা স্যাধ্য সম্পান করিলা কুইত।

যে সকল এন্থকার ও পরিব্রাক্ত নিসর দেৰের এই শব রক্ষা করিবার পদ্যতির ক-থা লিপি বন্ধ করিয়া বিরাছেন, ভারাদি-(शत मार्थ) जातित्वके अविवास जातिक कि-था विश्विद्याद्यम, किन्ने मुक्दवाति आस अक প্রকার মত দেখিতে পাওনা বার। যাহা চ্টক, কভিপয় গদ্ধ ক্রব্যের খণেই উক্ত ব্যাপার সম্পন্ন হইত, ইহাই সকলের মন্ত। উলিখিত ত্রণ শব রকার সকল কার্য্য সমা-থা ছইলে পর মিসর দেশীর লোকে ঐ শব লইয়া এমন এক প্রকার কাঠাধার মধ্যে রক্ষা করিত যে সে কাঠও দীর্ঘ **কালে ক**য় হইত না। টেনেরেফি নামক উপদ্বীপেও भव तका कतिवात **लक्कि मुखे हरेग्राटए।** যংকালে উক্ত উপনীপ এ*ল্*েন দেশীয় লোক কৰ্মক পরাজিত হয়, তথন এন্সেনীয় लादकता ये घीरशत ज्ञात्न ज्ञात्न अदनक রকিত শব দুটি করিয়াছিল। ঐ দ্বীপের क्ठक छनि धर्म योकक भी नव तंकात नमख পদ্ধতি অবগত ছিল, কিন্তু তাহারা কাহারও নিকট উহা প্রকাশ করিত না। এস্পেনীর লোক কর্ম্বলার কালে উক্ত দীপের वष्ट मरशाक लाक अक कारण व्यानकार्य করে, স্বভরাই এক্লেনীয়েয়াও সার উহার किहरे व्यवशं रहें क भारत नारे। टिएनविकि दीशक त्यारक विमासक नात নত্র ছার। শব শরীর রেইন না স্করিয়া হাল চর্ম ভারা জড়িত করিয়া রানিত, हैं। वित्नव करन काफ इन्जा निराक्त ।

মান্যবর একেন্ড। এবং গার্নিলেরে নামক প্রতিতের। বাজ করিরারেই বেশিক ক উপবাপের লোকেও গুল শরীর বিদ্ধাপু রাহ রক। করিত। উজ পরিত্যরাক বীরুণ বার্ম কালের এক শব শরীরে কোন ও রক্ত শর্মাক বর্মনার থাকিকে বৈশিক্ষ বিশেষ

ALTICACIO MIESO FANCEA, CA CATA কোন সংখ্যের প্রাচ্চতিক শক্তি অনুসারে ত-থার সহজেই মুড শহীর সীর্য কাল পর্যাত অধিকৃত ভাবে বৰ্ষীয়াৰ শাকিতে পারে ৷ বে স্থানে বারু সক্ষমা নীর্ম থাকে এবং বে স্থান অভিনাৰ হিন প্ৰধান বা উক্ত প্ৰধান रत, उपाय रेख रहरानि निकीय भगार्थ भीर्थ কলে বকা করিবার জানা কোন করিম প্র-ভিত্যা করিবারই খারক্সক হর ন।; ছানের **पट्या छेदा एक है। नगजाद्य याकिएक भारत।** হিম প্রধান স্থানে মধ্যে মধ্যে ভূষার অভ্যন্তরে অনেক প্রাচীন বুকাদি সরস ও স্বাভাবিক অবস্থায় দেখিতে পাঞ্জা যায়ন ভুবার मर्पा भरनक कीत करूत महीत । बीब काल পৰ্যান্ত টাট্কা থাকে। হিন প্ৰধান দেশে रायन रकान व्यकात निर्कीन शर्मार्थ रह कान शर्यास विकृष्ठ रहा या, प्राध्यक कवा স্বভাৰ স্থানেও মৃত জীব অন্তর শরীর সেই ৰূপ বছ দিনে খীয় প্ৰকৃত অবস্থাকে পরি-ত্যাস করে না। আফ্রিকাছ বিভীর্ণ মরু ক্ষেত্রের স্থানে স্থানে উল্লপ্ত বালুকা রাশির मत्या व्यक्तिक मञ्जातिक मुख्य नहीत वर्ष-কাল পৰ্যান্ত অস্থি চৰ্যানির সহিত বর্তমান পাক্তিতে দেখা যায়। অমূপ কারিয়া মধ্যে মধ্যে ঐ বাস কালুকার অভান্তরৈ প্রাচীন কালের न्य मकन अक्रिये मृष्ट (मट्ट्र गाह वर्ड-गान क्रिकेट भाग । अतिद्वतं अक पृति-তে কোন মৃত শরীর জোপিত করিলে দীর্ঘ कादण अर्थे या तथारुति ए देश मान दर्शन রাসান স্থান্ত্র বালুকা প্রুবির সভারের गरेख बर्दबंड शुर्वातः भव अवन गर्वायः-বের সহিত প্রস্তরীভূত হইতে দূর্তী হইয়াছে। বস্তুতঃ নিরবছিল শীক্ত রা নিরবছিল উপত। क्षाता दकात लक्षार्थः शिक्षः सक् सक् मा, शि-COLORS PRINT MAR FORTH PIRTY (4. THE PAPER & MAINTENANCE AND I PRAIS TON BOOM OF THE PERSON CALL THE STREET AT WEST AND STREET THE REPORT OF THE PERSON OF TH the tested spirit of the spirit

क्य कार्य, (य बत्रस प्रवाद व्यक्ति (यानत CHICAGO ES CARTAN ARTIN 11-ৰ্যান্ত মন্দ্ৰ। করিছে পারিত। : বিসর দেশে মে কোন সময় সময়ি শব রক্ষা করিবার नक्षकि क्षत्रकि । क्लिन अंतात एरेसा-CE. प्रशिष्ट कार्या सम्माचे करण निर्मय कहा मात्र हा क्योंनि अवि भूजी काल स्ट्रेंटर তথায় উক্ত পৰাতি প্রচলিত থাকিবার ও क्लीनन अनुबाहरीयात आमान व्याख र अग्रा বার। পুরারতে লিখিত আছে, যে পুরা-काटन गिमकः नियानी इंडेमटकत शिखात মুত্যু হইলে পির, তিনি আপুন পরিচাকর ও আগ্রীয় বর্গকে স্বীয় পিত দেহ ব্রহ্মা ক तिएक मार्टिंग कविरमन अवश्रकाशता छ।-राङ जार्जणाञ्चलारत स्मर् भन नहीत त्रका कतियात अञ्चल्हारम श्रद्धक इहेल। हेहारज विषक्ष (वाध स्ट्रेटक्ट्र), स्व मिमद्र वाटका অতি পূর্ব কাল হইতেই শব রক্ষা করি-বার পদ্ধতি প্রচলিত আছে। যাহা হউক. অনেকে অনুমান করিয়াছেন, মিদর দেশ सिकार कमा वीका सा इहेटल (कवल म মুখ্যের কৌশল প্রভাবে তথাকার পুর্বাকা-লীন লব সকল এড নীৰ্থকাল পৰ্য্যন্ত ক-খনই স্বিক্ত ভাবে বৰ্ডমান থাক্তিত ন। পুরাকালে মিনর ও তত্মিকটবর্দ্ধী ব্যানের অনেক_্লোক ক্সিম**্**দেশীয়**্**বণিক अ. अविक निरंगत्र निक्छे थे खेळात्र मध्यक्ति-**७ लाव निकास कतिया गर्भिक वर्ष धार्म क**-तिरु । उरकामवर्षी अभिकाश्म (लाटकंड वह থেকার সংক্ষার ছিল,যে বছকালের সংরক্ষিত नव बाब नामा समग्र नाना अकात उपकात मध्ये । जाराजा (व छेराज क्ष अकात जा-कर्मा क्षेत्र केल्यांना कवित्र हाराव मध्या नेता करिय । अक्रबार छात्राता ये भवारभ रावेशा नामा स्थापनक असम स्वता - रानहात र्गोडेका बाह्यांक्टांक व्यवस्था हिन, (न्युक् राव अभागामात्र चरतन करता केरता STATE THE WALL SERVICE निर्माण प्राप्तिक केश सामित्र गुर्वक का Mile Parlate A. A. Box Part

गाँख डेंग नक्त जांदर्ग ग्रेंबर्गत कड़िट्ड নাবস্থ। দিত। উহার প্রান্তি লোকের केर जा जाका जानिस उरकारन काम अवर रेपेनि निवानी अध्यक हेल्नी ल्लाटक छेशात क्रकिम यावसाध कतिएछ आ-রাম্ভ করিয়াছিল। উহারা অভিনৰ শারতে একপ পুরাতন ও রফিত শবের নায় ক্লান্ত-ম করিরা লোকের নিকট বছসূল্যে বিক্রয় कतिए। रेहिमिनिशात अरे अवश्वा का-ला आह्र देखेत्वार्थ मकन स्वादनत त्नादकहे পতিত হইতেন, কেহই ক্লিম শ্ৰ সহজে জানিতে পারিতেন ন।। অনন্তর পেরিয়দ্ मामक अक्षम পण्डि अहे विवदा এक स-চারু পুত্তক লিখিয়া লোকের উক্ত ভ্রম দূর कतिरमन, जिनि लिथिरमन, य मध्द्रिक उ পুরাতন শব ছারা কোন রোগেরই শাস্তি হয় गा,वाजूा छेश अवन बादा शाक्यनी विकृष হইয়া সন্দায়ি প্রভৃতি নানা প্রকার রোগেরই উৎপত্তি হয়। এই অন্থ প্রচারিত ও লোক मयादक थाए रहेल अत मिरन मिरन मर রক্ষিত শবের প্রতি আপুনা হইডেই লো क्ति आहत अल्भ हरेटड नाशिन **अवर मह**े **জেই উ**হার যথার্থ ও ক্রত্রিম ব্যবসায় উঠি-- রা গেল। কেবল বিসর ফেলের লোকে উহা কথন কথন কোন লোককে সামান্য সুলো বিক্রম করিতে লাগিল। মৃত ব্যক্তি-র শামীয় লোকে যে শব যত্নপূর্বে আপন व्यापन भूटर लहेना उपश्वि, जाहा कर्नारि विक्तील रुअप्राम्हर रहेटल शास्त्र ना। त्य नम्ख भव कारमण्ड कृतियां जुल्लामाथ वा राम्का आकृत अधिनिक्षि इहेश यहिल भव रिक्कावां तारे नक्य अस्पातिक आ <mark>চীন শব প্ৰবেষ</mark>ণ করিয়া লাইয়া ক্রেডাদি शहक विकास कविछ। छेरावा स्थिकार মধ্যে বে প্রকার স্থানে ও বে প্রকার করিয়া শ্ব প্ৰাপ্ত মুইত, তাহা অভি: অন্ত ৷ মি-ব্র দেশের একপ শব বিক্রেডারা কোন মি-क्तिके न्यानान वा नमापि क्लाब नामन कतिया ক্যাগত বালুকা খনন করিতে করিতে কোন दिनेन शादनत कुणिका महता अक भादीबाउ माथ गरेज। जागात मिलक त्य त्यहे मत्या मार्च भागांचात शक्य हरिशाह

এবং অবিকল মন্ত্রাক্ষার স্থাবি মিন্ত্রি
মধ্যে প্রাচীন শব সকল বর্থাবিহিত কলে
সংর্কিত আছে এবং ফোন কোন শব
কেবল খলনি কাঠ দোনী মধ্যে নিহিত
রলিয়াছে। কোন কোন শবাধার জেলা
ক ভাহারা নালাবিধ অলকারে অলক্ত ও
নানা বর্ধে বিচিত্র দেখিত এবং কোন ছোন
বির উপর লোফের গরিজ সকলও অহিত
কোতি। ফলতে ঐ সমস্ত ভূতল নিহিত
রক্ষিত শবে নানাবিধ পারিপাট্য দুই ইইত।
গোম সকল শবেরই জিলার নিমভালা
গে যংকিঞ্চিৎ স্বর্গ নিহিত থাকিত। আর
বের অদেক অসভা লোফের ঐ দামান্য স্থেন
র লোডে হানেক আক্ষর্যা শব শরীর ভিন্ন
ভিন্ন করিয়া নক্ষী করিত।

একাল প্র্যাদ যে দেশে যত প্রকার সংব্রিকের শ্র দৃষ্ট হইসাছে, তথ্যারে কান্স-রয়েজ্য এক্রায়ে এক আশহর। শব দুক্ত হই-দাজিল। এমত অগত শ্ব কেছ কথন দুষ্ঠি कर्तुम् अस्ति। अकारम कृषक कृषि कर्षन स-টিয়ের ক্ষত্রিতে প্রথমতঃ উহা প্রাপ্ত হয়, এ শ্ব-अ अक शामाह निर्माय कार्य द्वानी मर्या নিভিত ভিলা উহার কোন অব্যবহী নাট इत भार । केल भारतह इस श्रम होता कर्छ मन खुक्षाति भक्ता अ**असे नमान**्य हिंस, कवः छि-হার মন্তকের কেশ ও স্মান্সভার পর্যান্ত সক-লাই বার্থনান চিল, বিলেগ্ড: মিসর দেশীয় শালের নাায় উহার উদর হইতে আন্ত সকল तहिन्दु उ इब्र मारे, जारा त्यन कीति उ मन् त्यात अस्तत मात्र के नत्यत छेमर भर्या व-ৰ্মান ছিল। উক্ত শ্ৰেয় মহান্ আফুতি ও রক্ষার পরিপাটি পন্ধতি সন্দর্শন করিয়া লোকে উষ্ট কোন মহৎ লোকের শব জ্ঞান করিয়া ছিল, কিন্তু উহা যে কত কালেরও বোদ নিৰ্দ্ধিট বাজির শ্ব ভাষার কিছুই (तः) इत नाहे। दक्ह (क्ह **छहांदक दिनन** ্ব: ১ম ভূপতির শরীর মনে করিয়া ছিল, ্ত তত্ত্বক এমন **অস্ত সংর্থিক শব** কের কথন প্রত্যক্ত করে নাই, উহাকে দে-থিয়া মেন স্কুট্ এক দিবদৈয়ে মুড দৈই বোধ हरेश हिन जे भरतत **जरक रा नेक्स शक्** अवा हिल, कट भीष स्थारन । साहाइ ही-

আন নক বা নাই। বাহার। বা নাই কর্মা করির কর্মা নাই। করের করে নাই। পুরিবীর নথে যে কোল করে বাকেই যে প্রথমতা উত্তর বাকে বাকের বাকের করের বাকের বাকে

বিজ্ঞানবার্ত্ত। । জ্যোত্তিয

১া--দিবৰ্গ নিবাসী হেনদেন নামক জ্যোতিৰ্মিৎ পণ্ডিত উক্ত বিদ্যা मर्रकास अक भरू विषय निर्देश क রিসাছেন। তিনি ক্ষিরাছেন, যে অনেক জ্যোতির্বিৎ পণ্ডিত চন্দ্র লোকের দৃষ্ট ভাগকে উষ্টিদ, জল ও বায়ু খুনা नग-র্শন করিয়া অবধারিত করিয়াছেন, যে চক্রা লোকে কোন প্রকার জীব নাই। কিন্তু 62 लाक कान अकार कीव लाक नरह. ইহা কেবল উক্ত প্রমাণ ছারা কোন ব-পেই নিঃসংশয়ে প্রতিপন্ন করিছে পারা যায় না। আধুনিক পরীক্ষা ছার প্রকাশ পাইয়াছে, যে চন্দ্রের ভারকেন্ত্র উহার क्रिक मधा ভाগে नरह, मधा क्रांस हहेरछ क्षाय বিংশতি ক্রোশ দুরে অমুভূত হইয়াছে, वर्षार हत्स्त हुई छात्र नमान नटह, छहात नकल मिक् नमान रहेट्स अवश्र हेर्स छाई-दिल् कि न्या दार्य रहे । आवता চল্লের যে দিক্ দেখিতে পাই, দৈ দিক্ বেমন উন্নত উহার বিপত্তীত দিকু কৰন সে बन नरह, छण्डार वण्डूका विद्वत की-কৃতিফ খৰ্মত কখন এক প্ৰকাৰ বুৰুতে शारत मा; कटलात मुख्य कारण जान के पान क्षण्डि श्रमार्थ मुखे इस ना विवसा त्य छ-हात मिशक्त अल अ यातू भूमा हहेद्द, हेश क्थन है मञ्जद रश ना। छेशत दिलती उ जारभ वायामि भमार्थ विमामान थाका नि-তाल मस्त्, प्राच्याव চল্পের দৃষ্ঠ ভাগকে वाश् भूना (निश्रेश हम्म लाकटक धकनादत জীব খুনা মনে করা সম্পূর্ণ ৰূপে বিচার **शिक्ष इहेटड शा**दा मा "।

२ |- रेडे|नि (मनीय़ क्वक अन (का!-তির্বিৎ পণ্ডিত এই বর্ষে পৃথিবীর উপর এক ধুমকেতু পতিত হইবার আশকা করি-ब्राह्मित, किस अकर्प डाँगिरिशंत म আশঙ্কার সময় খতীত হওয়াতে বোধ হ-ইতেছে, যে ভূমগুল তাঁহাদিগের বিশ-ক্ষিত দুৰ্ঘটনা হইতে বক্ষা পাইয়াছে। উক্ত আশक। ममुलक इटेल ए शृथिवीत कि প্র্যান্ত অনুষ্ঠ উদ্ভাবিত হুইত, তাহা মনে করিলে ক্লংকম্প হয় [†]।

পদার্থ বিদা।।

১৷-- কাচ পাত্রে লিপি ও বর্ণাদি অ-স্থিত করিবার এক প্রকার উপায় প্রকাশ পাইয়াছে। ছই গণ্ড কাচকে নাইটি.ক এসিড নামক পদার্থে ডুবাইয়া রেসমের বস্ত্রস্বারামুছিয়াবিলক্ষণকণে শুফ্ করি-তে হয় এবং ঐ উভয় কাচ খণ্ডের মধ্যে কোন প্রকার লিপি রাখিয়া ভাছাদিগকে টীনের পাতে মোড়ক করিতে হয়। অন-ন্তর কাচের আবরণ খুলিয়া লিপি বাহির করিবার পর সেই কাচে শ্বাস প্রদান ক-तिल जाहात गाटक भी मिश्रित ममुमात वर्ग সম্পট্ বাক্ত হইয়। উঠে। পণ্ডিত গণ ব্রির করিয়াছেন, যে বৈদ্যাতিক শক্তি দ্বা রাই উলিখিত ব্যাপার সম্পন্ন হয় 🖫

२।- हेश अत्मदक्षे अवशंख आहि-म, व हुन बाहा जनकाती वात्नात लाव नके रत्र। किंक अकटन अकात बाता छेल माय नक रहेवाइ अक्षि अकान भारे-सारह।

Chamber's journal for January 1857.

৩।— পদার্থবিৎ প্রস্তিতের। পুর্বের স্থির করিয়াছিলেন, যে যে সময়ে বা-য়ুতে ওলন নামক প্লার্থের ভাগ অংশ হয়. তংকালে ওলাউঠা প্রড়ভি রোগের প্রান্ত-ৰ্ভাব ছইয়া খাকে। এক্ষণে উক্ত **মত আ**র-🛊 দুঢ়তর ৰূপে অবধারিত হইতেছে। পে-বিদ নগরের বিদ্যালয়ে এক ব্যক্তি ভাপন করিয়াছেন, যে জলের সহিত অকৃদি জন নামক বাষ্ঠা অধিক মিজ্ঞিত ক্রিলে সেই • জ্বল ছারা ওলাউঠা রোগের নিবারণ হয়। অক্সিজন দারা 13 37 4 मदर्भ ।

৪। এক্ষেত্র এবং তদ্নামক দালে বেরা বাক্ত করিয়াছেন, যে পরিপ্রত বায়ু-তে মাংসাদি আনিষ দ্রব্য বছদিন পর্য্যন্ত টাট্কা থাকে 📲

ে।— আশ্চর্যা বিষ ভক্ষণ। ব্যক্তি একটি পক্ষির মাংস আহার করিয়া বিষ দ্যিত হট্য়া প্রাণত্যাগ করে। পরে পরীক্ষা দ্বারা বিদিত হইল, যে সেই পক্ষী কোন বিষাক্ত বস্তু ভক্ষণ করিয়াছিল, কিন্তু আশ্চর্যা এই যে ঐ বিযাক্ত পক্ষীর কোন অনিউ না হইয়া পক্ষিভুক্ মরুয়োর প্রাণ नके हहेल [†]।

वस्यान विकास

১ ৷— করা**ন দে**শীয় একজন বিদ্যাবিৎ পণ্ডিত প্রকাশ করিয়াছেন,যে স মুদ্র জলেতে ৰূপার ভাগ আছে। সাগ্র জ লের যদি সমুদায় কঢ়াংশকে পুথক পুনক कता याथ, डाहा इहेटन जे कम १३) ज कि-ঞিং ৰূপাৰ ভাগত বাহিব হয় ।

২ :-- বুসার্ন বিদ্যা সম্বন্ধে এক অ পুর্ব্ব তত্ত্ব প্রকাশ পাইয়াছে। ইউরোপের প্রসিদ্ধ প্রসিদ্ধা রসায়নবিং পণ্ডিতের। প রীকা করিয়া পে গ্রাছেন যে মুখের মধ্য ভাগ কোন প্রকার রুসে আর্দ্র করিয়া লো-**হিত ব**ৰ্ণ উ**ন্ধ**প্ত লৌহ দ**ণ্ড লেহন করিলে**ও **जन्दाता जिस्ता किल्लगाब निक्र समा।** हे-পদ্উইচ নামক স্থানের এক প্রাসিদ্ধ সভা

[†] Literary Gazette 18th May 1857.

¹ Chamber's journal for January 1867.

[&]quot; Chamber's journal.

[†] Chamber's journal February 1857.

[‡] English Man.

त मर्द्धाता अगजेन मार्ट्स्टिक " अधिमम अब क्लोटह रूपाध कतिए सिवाहिक्न। मोट्स अथगटः अकृषि जनभून त्यानीएउ रूख कुराहेका ये जन त्लोटर रखार्शन कति-लान अवः अञ्जूलि छाता अञ्जय थानु छेटछा-लन कतिए। अनिरिन्धुत नाम प्रज्ञिक । पाष्ट्रेट नाशितन, थे भारत्व करियारहर, েব উক্ত প্রকার পদ্ধতি অবলম্বন করিয়া অ-গ্রিবৎ দ্রুব শীশকেতে হস্ত মগ্ন করিলেও কিছু माज क्षान क्षमा। यन व्यवता अस्मिमा এতত্ত্তয়ের মধ্যে কোন এক পদার্থ ব্যবহা-त कतिरमञ् উक्त अकात कार्या निर्विता म-স্পন্ন হইতে পারে। পূর্কাকালের অগ্নি পরীক্ষাদি যে দকল ছুছর কার্য্যের কথা শুনিতে পাওয়া যায় সে সকল তুঃসাধ্য कर्षाक शूर्वकानीन लात्क प्रालोकिक দৈৰ জিলা বলিয়া প্ৰতায় ঘাইত, তথ সমু-দয়ও যে এ প্রকার প্রাক্তিক কাষ্য কারণ স্থাতে যটিত, ডাহার আর কিছুমাত্র সন্দেহ নাই। পূর্বকালে সেপর নামক পারুস্য দে-শীয় প্রচৌন য়াজায় এক ব্যক্তি সভা পণ্ডিত क्षतमा धक आकर्षा खाँच गरीचा अमान क-রিয়া গারে কভিপা স্বল্যা সাগী প্রজাকে দেশ ্রাচলিত গ্র,টান ধর্মো আনয়ন করিরাছিলেন। তিনি প্রস্তাব করিয়াছিলেন, যে তোমরা আ মার অন্সেমায়িবৎ দ্ব ভাষ্ট্র করে. সামি যদি ভাহাতে আণ্ড না হই, তবে ভোমর: আমার বাকা আছে করিয়া স**কলে**ই পৈত্রিক ধর্মে প্রভাবের্ত্তন করিও। রা এই প্রস্তাবে স**ন্দ**ত হইয়া তাহার গা**তে** প্রায় নয়শের তথ্য তাম ঢালিয়া দিল, কিন্তু ভদ্ধার। তাহার কিছু মাত্র অনিষ্ট না হও-য়াতে উহারা সকলেই পুনর্ফার পরিত্যক্ত পুর্ক ধর্ম অবলয়ন করিল। এরপ প্রবাদ আছে, যে একদা শক্ষাচার্যাও লোহিত বর্ণ উক্ত লৌহ দুপ প্ৰবিষ্ট করিয়া জনেক জো-করে বিশ্বরা**শন করিয়াছিলেন। এতস্কিন্ন পু**-ক্ষকালে এদেশে শাৰল পত্নীকা **অভূতি অ**-দেক প্রকার অভিপত্নী**কা প্রচলিত থাকিবার** বিভর জনশ্রতি রহিয়াছে! যাহাহউক अकरन विलक्षन जाना याहरहरू, त्य में न-

কল ছাত্ৰী পৰীক্ষাদি কেবল প্ৰাকৃতিক কাৰ্য্য কাৰণ ছাত্ৰেই সম্পন্ন হইত।

कि अकार आकृष्टिक विश्वमाञ्चनादत त्व এতাদুশ আশ্বর্থী ব্যাপার সম্পন্ন হর, তাহা चित कर्ण निर्मिण रह गारे। कर कर অনুমান করিয়াছেন যে কোন উচ্চ পদার্থে वाज वसु मश्लेश रहेता, त्व वान्त खेखिङ হয়, সেই বাজ্পের সহিত ঐ উদ্ভাপ উদ্ভিন্ন যাওয়াতেই পূর্বোলিথিত ছুম্বর অগ্নি প-রীকাদি কার্যা **স্থাধা হয়। কার্কনিক** এসিড ও ইখর একতা মিজিত করিয়া কোন উক্ত ধাতুপাত্রাদিতে ব্লক্ষা করিলে তাহ কিছু মাত উত্তপ্ত হয় না, প্রত্যুতঃ তলুং-পন্ন ৰাষ্প দ্বারা উহার অন্তর্ভুত সমুদার উত্তাপ উড্ডীন হওরাতে উহা অভিনয় শীতল হইরা বরকের ন্যায় সংহত হয় এবং ভাহাতে জল প্রদান করিলে দে জলও जमनि उৎकाश रदक रहेश छटि। किছू দিন হইল দক্ষিণ সমুদ্রের কোন ছীপে এক ব্যক্তি অধিবৎ উত্তপ্ত ধাতু পাত্রে জল রাখিয়া বরক প্রস্তুত করাতে লোকে-র নিকট দেববৎ প্রতিপন্ন হইয়া ছিলেন। अकरन विवक्तन काना शाहेरड्राष्ट्र, त्य व्या-কৃতিক নিয়ম অবললয়ন করিয়া নকল ম-सूपाई डेङ क्षकात चार्क्या कार्या भणान ক্রিতে পারে 📲

তা—বিটপালঙ্ শাকের মূল বারা স্করা প্রস্তুত হইয়া থাকে। এক্ষণে এ শাক মূল এক প্রকার বস্ত্রেতে নিস্পীচন করিলে এক ঘণ্টার মধ্যেত ও গোলান রস উৎপন্ন হইতে পারে, ঐ রস পাক করিলে উৎকৃষ্ট শর্করা লয়ে। ঐ শাকের নিস্পীড়িত মূল সকল্প বার্থ যার না, উহার ঘারা গো, মেঘালির ভোলন কার্য্য নির্বাহ হয়। ইংলও প্রস্তৃতি স্থানে অনেক কৃষক ঐ শাকের চাস করিতেছে এবং উহা ঘারা সহৎসরের স্বাধ্যে বহু সংখ্যক গো, মেয়াদি শীবিকা, গাইজেছে ।

স-সামিরিকার অবংগাতী নিউ স্থানী নামক স্থানে, এক প্রকার মৃত্তিকা প্রকা-

^{*} Literary Gazotte 21st March 1857.

⁺ Chamber's journal.

শিত হইরাছে, ভাষতে এলুমিন্য নামক ধাতুর ভাগ অধিক নাছে, ব্যবসায়ী লোকে অভি অপ্সমাত্র পরিক্রম ও অপ্সমাত্র ব্যয় করিরা রথেক এলুমিন্য প্রাপ্ত হইতেছোঁ। প্রাণী বিদ্যা।

১।— এক জন অমণ কারী ব্যক্ত করি-রাছেন, বে তিনি আফ্রিকা খণ্ডে অমণ ক-রিতে গিয়া দেখিয়াছেন, যেতথাকার কোন কোন প্রান্তরে অস্ট্রিচ নামক পক্ষী ও মৃগ সমুহ ছুই তিন মাস জল পান না করিয়া-ও শাকিতে পারে ।

बिल्भ विमा।

১।— হিপ নামক এক ব্যক্তি পণ্ডিত হাড়িত বার্ডা বহের এক চমৎকার যন্ত্র প্রস্তুত করিয়াছেন। উক্ত যন্ত্রের বিশেষ গুণ এই যে উহা অনায়াদে সর্বক্র সঙ্গে করিয়া লইয়া যাওয়া শায়। বে কোন স্থানে ইক তাড়িত বার্ত্তাবহের তারে উক্ত যন্ত্র সংযোগ করিয়াদিলেই উহা ছারা অক্রেশে সম্বাদ প্রেরণ ও আনমন করায়াইতে পারে। উক্ত প্রকার যন্ত্র ছারা অনুনক উপকার দশিতেছে ।

২।— আয়ারলও দেশীর এক বিদ্যালয়ের অধ্যাপক মানাবর হেলাহেব,সম্প্রেতি দাগরের গভীরতা স্থির করিতে প্রবৃত্ত হ্র্যা দেবিরাছেন, যে আটলান্টিক নামক মহাসাগরের কোন কোন স্থানতা সার্দ্ধ তিন কোশেরও অধিক গভীর। দক্ষিণ হিমনাগরের কোন স্থান ৫ কোশেরও অধিক গভীর হইবেক।

া— কান্দ রাজা নিবাসী তেগু রং নামক এক বাজি প্রাসিজ শিপ্পকার জলমগ্ন হইবার এক আন্দর্যা বন্ধ প্রস্তুত করিয়াছেন, সমুদ্রাদির গভীর জলে মথ হইবার জনা এপর্যান্ত বত প্রকার বন্ধ প্রকাশ পাইয়াছে, তথ্যে উল্লিখিত যন্ত্র সর্কোংকৃত বলিয়া গণ্য ইইরাছে। প্রকশকার প্রচলিত জল ময় বন্ধ অবলয়ৰ করিয়া লোকে অতি গ

ভীর জলে ময় হইতে পারিত না । জল মধ্যে অধিক দূর অবতরণ করিতে হইলে যন্ত্ৰ স্থিত বামুভাৱে লোকের পীড়া বোধ **ং**ণ্ড এবং নিশাস রুজ হইয়া প্রাণভ্যাগ হইবার সম্ভাবনাও হইত। প্রচলিত যক্ত 📺 উদ্ধাংখ্যা লোকে ২৫/২৬ হাত জ-লের দীচে গমন করিতে পারিত। কিন্তু ভেওরণ সাংধ্রের বস্তু দারা মনুষ্য যত দুর ইচ্ছা, তাড্র প্রাস্ত জলের নিমে মন্ন হইতে পাৰে। এই দশ্ব তাজেতে নি**ৰ্দ্মি**ত এবং ইছার আকার প্রার বস্তের ছত্র সদুশ। ইহা স্বারা অবগাহনকারী ব্যক্তির মন্তক্ অব্যাধ কটি পর্যান্ত আরুত হয় এবং 🕏 হার মধ্যে উপ্রেসন খোগ্য প্রায় এক মন পরিমিত শীশক্ষময় উৎকৃষ্ট আসন আছে, উহাতে ঐ ব্যক্তি স্মুখেতে বৃদিতে পাঙ্কে এবং উহার ভারে ঐ यस সচ্ছদে জল মধো মগ্ন হয়। বিশেষতঃ ঐ শক্তেতে গটা পাৰ্চা নিৰ্দ্ধিত একটি দীৰ্ঘ নল সংলগ্ন আছে, ঐ নলের মধ্যভাগ জলম্ম ব্যক্তির মুখেতে যুক্ত থাকে এবং চুই আন্তৰলের উপরিভাগে পোত্র বা ভটম্ভিত বেকের হত্তে থাকে। উক্ত মল ছার। জল মগ্র কাক্তি অনায়ানে খাস প্রদাস কার্যা সমাধা করি-তে পারে এবং আবশাক হইলে ভট বা বা পোত স্থিত ব্যক্তিকে আপ্রনার মন্ত্রা **কথা জানাইতে পাবে।** ইংলও প্রভৃতি স্থা-নের প্রসিদ্ধ প্রসিদ্ধ শিশ্প নিপুণ পরিত গণ এই অভিনয় যায়ের বিভার উংকর্যত **राष्ट्रा कवितारहम, अवर भकालहे लुक्ट अ চলিত যন্ত্র ত্যাপ করিয়া** ইহা ব্যাহার ক বিতে উদাত হইয়াছেন 🤄

৪)— জুক্স রাজ্যে একণে এলুগিনস ধা তুর ধারা অনেক প্রনার তৈরস প্রস্তুত হ ইতেহে। উহা ধারা পান পাত্র, দ্বী ও জান্যান্য তৈরস নির্মিত হইতেহে। এলুমিন্ম নির্মিত ঐ সকল বাসন দেখিতে কপার মত্ত পরিক্ষার হইতেহে, অথন রূপা অপেকা ক্ল ক্লেকেরও অপশ বারে প্রস্তুত কুইতেহে।।

৫-নিউওয়াল নামক এক জন বি

^{*} Chamber's journal for January 1867.

[†] Literary Clarette.

¹ Chamber's journal.

^{*} Literary Gazette January 24th 1857.

[†] Liturary Gazetto.

শ্রুমান এক প্রকাপ্ত বাপার। মশ্রুম করিমত প্রবৃদ্ধ ক্রমান্তেন। আইলাণীক মহাসাগরের উপর দিয়া আমিরিকা হইতে ইউরোপ পর্যন্ত এক তাড়িত বার্তাবহে
তার চালিত হউবেক। নিউএয়াল সাহেব
ঐ তার প্রস্তুত করিতে ব্রতী হইয়

ভারের দৈর্ঘ্য প্রায় ৮০০ আট ক্রোশ হইবেক। এই মহত ব্যাপার সম্পন্ন হইলে সংসারের অনেক উপকার দশিবে।

ভা—আমিরিকায় এক আশ্রুমী দিক্
দর্শন যক্ত প্রস্তুত হইয়াছে, ঐ যক্ত ছারা
দিক্ নির্ণয় কাল নিজ্ঞপণ ও অন্যান্য অনেক
প্রকার পরিমাণাদি কার্য্য সম্পন্ন হয়। উক্ত
যক্ত জারা গ্রহণণের দূরতা পর্যান্ত পরিমাণ
করা যান। রাজিতে কোন্সময় চল্লো-।
দর হইবেক ও কথন্কোন্গ্রহ দৃশা হইবেক, ভাহাও ঐ যক্ত ছারা জানা ঘাইবে।

৭।—পোরো নামক এক জন সাহেব এক
চমৎকার দুরবীক্ষণ বস্ত্র প্রস্তুত করিয়াছেন।
উক্ত দূরবীক্ষণ একটি সামান্য দৃটি যক্তের
ন্যায় ক্ষ্তে, উহা সঙ্গে লইয়া অনায়াসে
সর্ব্বর বাওয় বায়। বিশেষতঃ উহা বায়া
বন্ধ্ দুরের পদার্থ নিকটস্থ গস্তুর ন্যার দৃষ্ট
হয়৽ !

বিজ্ঞাপন ৷

তত্ত্বোধিনী সভার সভাব। সভা ভিন্ন আন ধে কোন ব্যক্তি মাসিক আটআনা করিয়া সভায় প্রদান করিবেন, ভাঁহারা নির্মান্ত্রনারে সভার পুত্তকালয় স্থিত পুত্তক কণ পাইতে পারিবেন।

বিজ্ঞাপন !

আমাদিগের কার্যালয়ে লি-থোতােফিক যন্ত্র ও মুজা যন্তে নানা প্রকার কর্মা হয়, ও পুজ-নাদি মুজিত করিবার জন্য নান। প্রকার নুতন ইৎরাজী ও বাজ লা অক্স এন্তত করা ইয়াছে।
অত্তর লাষারণের প্রতি নিকে
দন, ইংরাজী ও বাদলা পুতকাদি মুজিত করিতে যাহার প্ররোজন হয় এবং লিখোতোকিক
কোন কার্য্য বাহার আবশ্যক
হয়, তিনি এখানে প্রেরণ করিলে নিয়মিত মুলো ও নিয়মিত
সময়ে অতি উত্তম কপে কর্ম
প্রাপ্ত হইবেন।

বিজ্ঞাপন। পুত্তক বিজয়।

বাবু শিবচন্দ্র দেব ক্লুত শিশু রাজা কৃষ্ণচন্দ্র রাহের জীবন চরিত যটচক্ৰ নিৰূপণ প্ৰভৃতি পুনৰ্ম দ্ৰিত … শান্তর ভাষ্য আমন্দগিরি টাকা স্থামি টাকা ও বাঞ্চল অমুবাদ সহিত ভগবদ্যীতার 🕰 थ्य क्यभाग ভিতীয় ক্ষধ্যায় তৃতীয় অধ্যায় চতুর্থ অধ্যার পঞ্চম অধ্যায় यष्ठे ज्यान मक्षम व्यथाप অক্স অধ্যায় मदम कथाति कार्याति ।।। मण्या काशास একাদশ অধ্যার প্রাক্ত ক্রিটার করে TIPM CHITA बद्यांक्न अथाति हैं . जे हैं ... । ॥ । CONTROL OF WAR I War at untilfellenlant, pfeipiel ance (बाक्मिटिकाचिक क्रिकेटबाबिनी मानाव क्रांब्रालय हैर-Co क्रांक्शिएन क्रांक्शिक इस :--- वेशिक हुना क्षत क्रीका



ধুক্ষরা একমিদর প্রত্যানী স্থান্য ক্ষমনী বিদিদং সর্জনিজ্ঞান । তিলেধনিজ্ঞান্ত নামনত্ত লিখে স্বত্যাধিকস্থান্ত নেধি স্প্রত্যাপিদ স্থানিজ্ঞান সর্জ্যালনে সর্জাবিং সর্জনাজিন জু ক্ষাপুর্ব নিজেতিমমিতি। এজন্য উট্যাবেশিকা নন্মাপার বিজ্ঞানিক ক্ষাত্তি জন্ম বিজ্ঞান তুমিনে জীবিজ্ঞান জিলাকার ক্ষাতি ক্ষাত্তি ক্ষাত্তি ক্ষাত্তি ক্ষাত্তি ক্ষাত্তি ক্ষাত্তি ক্ষাত্তি ক্ষাত্তি ক্ষাত্তি

ঈশ্বর জগতের আশ্র।

জগদীধর আমাদিগের অভায়। মরা সক্রেই ভাঁহার আঞ্চিত। আমাদিগের জ্ঞানের আজ্ঞার, প্রাণের জা-শ্রায়, শক্তির আশ্রেয় এবং ধন মান যশঃ পৌ-কৰ প্ৰভতি সকল मन्भामयङ कार्रा উচ্ নিশ্লে মতা যে আমরা তাঁহাকে অব-লয়ন করিয়া জীবন শার্ণ করিতেছি, কিন্তু আমরা যে কি কপে তাহার আশ্রয়ে বাস করিতেছি, এবং কি প্রকারে তাঁহাকে অ-বলস্ত্রন কার্য়। জীবন ধার্থ করিতেছি, ইহা সর্বদ। আমাদিগের সকলের বৃদ্ধি দ্বারা সমান মূপে অনুভূত হয় না। অতএব ইছা **বিশেষ রূপে** বিবেচনা করিয়া দেখা উচিত। এ বিষয় যত অধিক আন্দোলন করা বায়, ততই আমাদিগের বৃদ্ধিতে অ विक छेळा न इहेट थारक।

বৃদ্ধা গুড়র্গতঃ প্রত্যেক পদার্থকেই পরমেশ্বর এক এক প্রকার প্রকৃতি প্রদান করিয়াছেন। সকল পদার্থই স্বস্থ প্রকৃতিতে চিরকাল অবস্থিতি করিতেছে, কন্মিন্কালে কোন পদার্থ আপন প্রকৃতি পরি ত্যাল করে না। অগ্রির দাহিকা শক্তি, জলের শৈত্য শুল, চিরদিনই অগ্নিও জলের শইচর হইয়া রহিয়াছে, এবং বীজের উংপাদিকা শক্তি প্রস্থাই প্রকৃতি চির্ন

দিন উহাদিগের সঙ্গে সঞ্চে চলিয়া আসি-এইৰপ যে পদাৰ্থের যে প্ৰকার প্রকৃতি তাহা চির্দিনই উক্ত পদার্থের নিতা দকী *হইয়া রহিয়াছে*। পণ্ডিতগণ এই যাবতীয় পদার্থের প্রকৃতি সিদ্ধ কা-প্রণালীকে প্রাকৃতিক নিয়ম বলিয়া উক্ত করে। এই প্রাক্ষতিক নিয়মানুসারে বস্থারা শহাবতী হইতেছে, ব্রুগণ কল भानी श्रेटिए, छेष गुत्र शक्त ज प्रकल क স্থানে অবস্থান করিতেছ, তরাক্তি সমুদ্র গর্ডে নিশ্চল শৈল সমূহের সঞ্চার হইতেছে, नत हुए निक् मह्तादत हरेए जलात नामा পকল উল্বিত হইয়া আকাশে মেয়ের সঞ্চার করিতেছে, এবং পুনর্কার পেই গেঘা র 🄄 নবাস্ত্ৰেপে পরিণত হইরা চুকিছেবে পর্ তলে পতিত হইতেছে৷ সুট গুদালের প্রকৃতি অনুসারে বা সকল কাঠ্য স্পান হইতেছে, তং সমুদ্রই পারুতিক নিয়েম সিদ্ধা কার্যা, জাতএব বিলক্ষণ প্রতিপদ্ধা হাই-তেছে, যেখনি ক্ষকালের স্বনাও স্বাট্ট প্ দার্থের প্রকৃতির বৈলক্ষণা হয়, তাহা কটকে স্টির কিছুমাত্র শোভা থাকেনা, এবং আ-মাদিগের কোন সুখসজনতা রকা পার মাজ বিশুখল। ঘটে, তাহা ২ইলে পুলি বীতে আর একণকার মত শ্রাদি উৎপন্ন इस्ता, कीर करू मकर

জীবিক প্রাপ্ত হয় না, এবং কোন প্রকার প্রাকৃতিক কার্যা আর এক্ষণকার ন্যায় স্থানিয়মে সম্পন্ন হয় मा। তাহা হইলে সাগর শুদ্র হইতে পারে, পর্বত উৎপাটিত হই-তে পারে, ফুর্য্য তমসাক্ষ্ম হইতে পারে এবং ধর্ণী শ**ন্ত হীনাও হইতে পারে। তাহ**্র হইলে যে সংসারে কি ভয়ন্কর বিষম বিপ্লব উপস্থিত হয়, তাহা বাক্ত করা কঠিন। তাহা হুইলে এসংসার নিশ্চয় সংহার দশায় উ-পনীত হয়৷ অগ্নিখদি **স্বী**য় দাহিকা শক্তি ত্যাগ করে, জল যদি আপন সন্তাপ হারিণী শীতল শক্তি বিহীন হয়. বায়ু যদি প্রবাহিত হইতে অক্ষম হয় এবং বীজ বদি আপন উ-ৎপাদিকা শক্তি হইতে পরিত্যক্ত হয়, তাহা হইলে কি আর কোনকপে এসংসার রক্ষা পাইতে পারে? কিন্তু যথন ইহা প্রত্যক্ষ দৃষ্ট হইতেছে, যে জগদীশ্বর যে পদার্থকে যে প্রকার প্রকৃতি প্রদান করি-য়াছেন, তৎ তৎ পদার্থে সেই সেই প্রকৃতি বিদাসান খাক:তেই ব্রহ্মাণ্ডের সকল কা র্যা শুঝ্রা রক্ষা পাইতেছে, তথন নিঃসংশ-য়ে প্রতিপন ইইতেছে, বেএ বিশ্ব ভাঁহারই শবিণকে স্বাঞ্জন কৰিয়া জীৱিত ৱহিয়াছে। তিনি যে প্রার্থকে যে প্রকার শক্তি সম্পন্ন করিয়াজেন, সে পদার্থ সেই শক্তি অনুসা-রেই জগৎকার্য্য সম্পন্ন করিতেছে, অত-এব পদার্থ মাত্রের শক্তিকে তাঁহার শক্তি ভিন্ন আরু কি বলা যাইতে পারে? তাঁ-হারই শক্তিকে আত্রয় করিয়া চন্দ্র সূর্যা াহ নক্ষত্ৰ ও ধ্মকেতু দকল বিনাব-লয়নে শুনোতে স্থিত রহিয়াছে, তাঁহা-রই প্রভাবে প্রভাকর এতাদৃশ প্রভাব শালী সুইয়াছে এবং তাঁহারই শক্তি অব-গম্বন করিয়া রহদাকার গ্রেছ সকল যথানি-রমে অনবরত শুনা পরে পরিজ্ঞমণ করিতে-্ছ, তাঁহারই বলে অভিবাত বলিষ্ঠ হইয়া-্ড, এবং ভাঁহারই ইচ্ছায় উচ্চ শিশ্বর অ-^{তল ভোলী} এক স্থানে স্থিত রহিয়াছে। **উ**-পিন্ন সাগর তরজেও তাঁহার বল প্রকাশ গাইতেছে জৰু কটোর ব**জু নির্ছোধেও কে-**বল তাঁছার শক্তি বাক্ত হইতে**ছে। ভাঁছার-**ই শক্তি প্রভাবে বীঙ্গ অন্তরিত ইইতেছে,

তরু সকল কলমুখ হইতেছে এবং বধানিয়মে পৃথিবী শব্দ পূর্ণা হইতেছে: আমরা ভাঁহার শক্তি আআর করিয়া প্রোণ বায়ু প্রাপ্ত হই-তেছি, পদত্রকে শর্মনা গড়ায়াত করিতেছি. এবং বাক্য: উচ্চারণ করিয়া মনের ভাব ব্যক্ত করিতৈছি। তাঁহার মহীরদী শক্তিই এ বিখের প্রাণ স্বৰূপ, কেবল ভাঁহারই শ-জিকে আতার করিয়া ব্রহ্মাণ্ড এইৰূপে বর্ত্তমান রহিয়াছে। কুদ্রতম কীট হইতে অতিকার মাডক পর্যান্ত, সামানা দুর্বাদল হইতে উচ্চতর পর্বতে পর্যাস্ত এবং অণু প্র-বাণ রেণ্ কণা হইতে মহদায়তন সূর্য্য মণ্ডল পর্য্যান্ত, সকলই ভাঁহার শক্তির আ-গ্রিত। অজ্ঞানী লোকে পদার্থ বিশেষে তাঁহার আবির্ভাব কম্পনা করিয়া বৃদ্ধিকে বিভ্রাপ্ত করে. কিন্তু কলতঃ তিনি সকল পদাৰ্থেই সমান ৰূপে আবিস্কৃতি রহিয়াছেন. যখন স্থাবর জন্ম কটি পতক্রাদি সকল প্ मार्थहे डाँहात हेन्द्र। श्रकाम कतिएए. इ. তথন পদার্থ মাত্রেই তিনি সম্পূর্ণ প্রকট রহিয়াছেন, অচেতন জড় পদার্থ ভাঁহারই আবিভাবে সচেতন জীবের নায় কার্য্য ক জননী যেমন স্বীয় সমান রিতে**ছে**। কে যত্রপূর্বক কোন্ডেডে রক্ষা করে, বিশ্ব-পিতা জগদীশ্বরও সেইৰূপ আমাদিগকে আপন জোড়েরকা করিয়াছেন, আমরা তাঁচার সকরুণ আতার চ্যুত হইলে নিমে-যার্দ্ধওজীবন ধারণ করিতে পারি না, আ-মরা কেন, এই প্রকাণ্ড ব্রহ্মাণ্ডের এক কণা মাত্রও রক্ষা পায় না। তাঁহার শক্তিই জগ-তের জীবন, ভাঁহার অনুপম জ্ঞানই বিষের কারণ এবং তাঁহার করুণাই ইহার भवन (मोन्हर्या)। ऋषै भनादर्थत अखर्वाञ् দৈই এক মাত্র অনাদি পুরুষের শক্তিতে পরিপূর্ণ রহিয়াছে, এব্রহ্মাও তাঁহার মহী-য়সী ইচ্ছার প্রতিশ্বপ মাত্র। কি দুর্বা-দলাগ্র স্থিত উজ্জ্বল শিশির বিন্দু, কি উন্নত তরঙ্গ বিনিষ্ট প্রশিক্ত সমুদ্র জল, কি স্থায় কিরণ বিভাসিত সামান্য রেণু কণা, কি সমুন্নত শিখর শোভিত অচল জেণী, কি স্থান্ধ কুশুম মণ্ডিত মনোহর পুলা কানন, কি চন্দ্ৰ হৰ্মা এহাদি পূৰ্ণ অসীম আকাশ

मछल, कि निकृत विराती विरक्त कूटलत मध्-র সঙ্গীত, কি উজ্জুল অগ্নিমাসা তুলা বিছা-তের কঠোর ইনি, সকলই সেই এক মাত্র জগদীশবের শক্তির আজিত। সাধু ব্যক্তি যে সময় কোন প্রকার স্বাভাবিক ঘটনা স-मार्भन करतन, उৎकारन जिनि जनार्या अग-দীশুরের সাক্ষাৎ আবির্ভাব প্রতাক্ষ করিয়া মহানদেদ পুলকিত হয়েন: জগদীখর বে কেবল এই সমস্ত বাহ্য বিষয়েরই আহ্রায় এমন নছে, তিনি আমাদিগের আয়ারও আশ্রর, আমাদিগের আত্মাও তাঁহাকে আ-শ্রম করিয়া রহিয়াছে। তিনি মনুষ্য মনে যে প্রকার শক্তি প্রদান করিয়াছেন, সেই শক্তির वाखरसङ् मसूरपात ममुनास मानगिक वााणात দম্পন্ন হউতেছে, নন্ন্য যেমন ভাঁহার মহিমা প্রভাবে বাহ্য বিষয় হইতে আপনার জীব-নাবলয়ন প্রাপ্ত হইতেছে, সেই প্রকার তাঁ হার প্রদত্ত মানসিক শক্তি অবলয়ন করিয়া অসংখ্য প্রকার জ্ঞান কার্য্য সম্পন্ন করিতেছে। মন যদি ক্ষণকাল মাত্র তাঁহার প্রদক্ত শক্তি পরিচাত হয়, তাহা হইলে তাহার আর কি-ছুমাত্র ক্ষরতা থাকে না। অচেতন জড় প্লার্থ যেমন এক মাত্র ভাঁহার শক্তি প্রভাবে নানা প্রকার কার্য্য করিতেছে, সচেতন জী-বাস্বাও দেই প্রকার তাঁহারই করুণা প্র-नामार चकौत्र अस्त्राजन नाधरम नमर्थ हरू-তেছে। জগদীশর বেমন স্বীয় শক্তি দ্বারা জ-ড়েতে আবিভূতি আছেন, সেই প্রকার সমু-দার চে**তন পদার্থে**ও প্রকটিত রহিরাছেন। পূর্বতন জাচার্য্যেরা এই ৰূপে ভাঁহাকে সমস্ত পদার্থে বিদামান দেখিয়া, তমদি তিন্ত্র তমদোহন্তরোষ্ং তমোন বেদ বস্ত তমঃ শরীরং ইত্যাদি,, মহা বাকো ভাঁহার क्रिशाह्ब, कन्छः जिनि मक्न সমভাবে প্রকাশ পাইতেছেন. **िनि कान** अमार्थ वित्मत्वत निक्छे छत्र-**७ नटह**न **धवर काम श**र्मार्थ रहेए मृत्रु नदहन । হিনি সকল বস্তুতে সমান ৰূপে প্ৰকাশিত রহিয়া-ट्टन, जामता सथिन छ। हात्क पृत मदम कति, তথনি ভাঁহাকে দূরত্ব করিয়া দেখি এবং বর্থনি তাঁহাকে নিকট ভাবি তথনিই আপ-

নার সমিকটে দেখিতে পাই। তিনি কুপা করিরা আমাদিগকে তাঁহার সকরুণ কেল-ড়ে ভান দিয়া রাখিয়াছেন, আমরা কেবল জমেতে অকা হইয়া আপনাদিগকে তাঁ হইতে দূর মনে করি।

·দ্বিতিত্ব

দৰ্শন প্ৰবৰ্ণ স্পূৰ্ণনাদি যে কএকটি দ্বা-নেক্রিছ ছার। মনুধ্য বাহা বিষয়ের ছলান লাভ করে, তৎসমুদায় ক্রন্তিয়েরই আছি জন্ম। ব্যক্তি বিশেষ হইতে কথন দৰ্শ-নেলিয় বিষয়ক ভ্রান্তির উদাহরণ পাওয়: যায় এবং কোন সময় ব্যক্তি বিশেষে বিল-কণ প্রতি ভ্রমও দুউ হয়। কোন সময় দুগু পদার্থের অবর্তনানেও চক্ষেতে নানা প্র কার ৰূপ দেখিতে পাওয়া যায়, কথনতা শক ব্যতিরেকেও কর্ণেতে ঘণ্টার র্বাদির ন্যাস নান। প্রকার শব্দ শুনা যায় এবং কোন কোন সময় স্পর্শেন্দ্রিয়ের বাতিক্রম হেতু উষ্ণ প-দাৰ্থকৈ শীতল্ভ হিম ভ্ৰৱাকে উক্ষ ৰোগ এই ৰূপে শুখন যে ইন্দ্রিয় দার: অবস্তুতে বস্তু বোধ বা এক প্রকার পদাধ কে অন্য প্রদার ব্যাধ হয়, তথনি সেই উ ন্দ্রিরে ভ্রান্তি বলা দায়। এই দনস্ত ভ্রা **ন্তির মধ্যে চক্ষু বিষ**রক ভা(শিরই নাম দুলি **বিভ্রম এবং সকল** প্রভাৱ জ্ঞানর অপেফ पिक जिम्हे ज्यिक विकास कर

নাৰ, সময় নাগা কাগাৰ নালা প্ৰকাশ দৃটি বিজ্ঞান উচ্চাতি হয় কিন্তু ভ্ৰমাণ পশ্চিত গৰা যে কেঞ্চ প্ৰকাশ প্ৰথান প্ৰধান দৃটি বিভামেন বিশান উল্লেখ ক্ৰিয়াছেন, প্ৰশাতে ভাজাই উভি হন্তিছে।

> (— দার্ক কাল কেনে বন্ধর উপর দ্বির-ভাবে চক্ষ্যাধিক কাল হাই তে নেরোভে।ল-ন পুক্তে অন্য কোন দিলে দুটিপাত ক্রিনে নেরা ক্ষেত্রে ঐ পূধ্য দুটি পদার্থের প্রতি

[•] জ্যন্তার ফল্ডানর ব্যাক্তিনিটানের বে এক কর্ণজ্ঞত স্থান্ত্রিক এন বিল্লাচন ইয়াজিল, বে উপা পদাপতে এই হার শীতন এবার কটাত এক গাঁচল বস্তু উঞ্চ জ্ঞান হবি : Abgrecomble - টালোৱা philosoph,

ভা **প্রকাশ পায়। জ্যোৎসারাত্তিতে অ**র বিকক্ষণ অপেনার ছায়ার প্রতি হিরভারে চকু রাখিয়া যদি আকাণের দিকে দুটি কুরা যায়, তাহা হ**ইলে শুনোতে** এক মনুবৈা-র আকার দেখিতে পাওয়াধায়। ভা-কুর ডারউইন এ বিষয়ের অনেক আকর্ম্য निमर्भन अमर्भन कतिहार्छन । अक्मा छिलि-িতে ডাক্সর একগানি পীতবর্ণের কাগ**জের** উপর নীল মধী ছারা বড় বড় অক্ষরে এক-টি শব্দ লিখিয়া দীর্ঘকাল ভাহার প্রতি দৃষ্টি করিয়া রহিলেন, অনন্তর চক্ষু মুদ্রিত করি-লেও ঐ লেখাটি পুনর্বার তাঁহা কর্তৃক পীতবৰ্গে দৃষ্ট হইল এবং তিনি চক্উমীলন করিলে পরেও কিন্তু দুরে এফ ভিত্তির উপর উক্ত লেখাটি পাত বর্ণক্ষরে দেখি তে পাইলেন, আর এক বাজি এক চিত্তময় কমারী ও একটি ডিত্রিড লিণ্ড বালকের প্রতি নার্থকাল দৃষ্টিপাত করিয়া মন্তকোত্তোলন প্রবাক অন্যদিকে বেমন নেত্র নিকেপ করি-লেন, অমনি কিয়দ্বে পুর্কের ন্যার ভবি-कत এक्ष कुमातीत क्वारण कक राजक म्बर्मन कतिशा दिनाशामस हमेरलट । व ज्यदाख्य मञ्चम मृखि छुड़े मिनिए अर्थाय তি হার ভেবে গ্রেথ বিধাকিত বুলিক। প্রঞ নিজ প্ৰিড মানু পাইছেক নিউটন নি-<u>র্দেশ কলিয়াছেন, যে ভিন্ন বামনেত্র মুদ্রিত</u> कतिशा यांच किल्लिए याालक काल पणिन চকু স্থানে উপর ছিল করিয়া রাখিতেন, ভাষা ইইলো ভাষ্যে দক্ষিণ চক্ষুতে বেমন मकल्किटक दकति खुर्गावित्र पुरी इहेछ, स्मर् শুপু বেন্ম শ্বেত ক্ষেত্রে তাঁহার বাম চকু প্তিত হইলেও তন্ধার। এক **স্থারে আ**-ভাল হাবলোকিত হইল। তিনি এই **আশ্ৰ্যা** মারা সূহী। সন্দর্শন কর। এমনি আয়ন্ত ও অ-লাসু ক্রিয়াভিলেন। বে তিনি **যথন বে স্থ**ান খনে কারতেন, ভগনি সেই **স্থানে সুর্যোর** _{্রাসার} কেলিডে পাইতের। তিনি যথন নি-প্রি স্থান্ত প্রায়ে শ্রুম **করিয়া থাকিতেন,** বর্ষনত উচ্চার দৃ**র্ফি পথে ঐ কম্পিত সূর্য্যা** মুক্তে আসিয়া উদয় হইত। ভাতের কে-রিরার নাম্ক এক ব্যক্তি ক**হিয়াছেন, বৈ** ভাৰার মতুদ্দশ কর্ম ব্রাহ**ক্রেয়ের সময় ভিনি**

দিবা ভাগে যে কোন প্রকার প্রিয় দর্শন দ-শন করিতেন, বুজনীতে কোন স্বন্ধকার গৃহ মধ্যে সেই সম্ভ রূপ ভাঁছার চল্ফেতে দুট হইত

২৷-- কোন কোন প্রকার দৃষ্টি বিভামে त्कनल मर्कासिक्षक्र खास इत्र, मत्नत कि-कृगाञ्चन करम ना। (काम भूमा स्थात চক্তে নানা প্রকার বস্তুর আকার দেখিতে পাওয়া যায়, किन्छ मেই मकल वञ्चाल मानत প্রকার হয় না। গ্রন্থাদি মুধোত প্রকার ঘটনার অনেক উদাহরণ প্রাপ্ত হওয়া ষায়। এক ব্যক্তি চক্ষু উদ্মীলন করিলে আপনার মুখ দেখিতে পাইত। ইহার মধ্যে বিশেষ আশ্চর্য্য এই যে ঐ ৰূপে সে আপ নাকে কথন রুদ্ধ, কথন যুবা ও কথন অতি বালকের ন্যায় অবলোকন করিত। কেনে কোন সময় এই ব্যক্তি কেবল কভিপয় স্ত্ৰী ও পুরুষের মন্তকের **আ**কার দেখিত। ইহার যথনি ইচ্ছা হইত, তথনি এব্যক্তি ঐ প্রকার নানাবিধ মায়া মুর্জি আপন দুর্ক্তি পণে আনয়ন করিতে পারিত। রক্ষের এমণি দৃষ্টি বিভাম হইয়াছিল, যে নে যখন আলার করিতে বসিত, তথনি আ-প্ৰার চতুর্দিকে বছসংখ্যক লোক দেখিত।

ভাত্তর ডিউরর এক চমৎকার দৃটি বিজ্ঞ মের কথা উল্লেখ করিয়াছেন। এক অন্ধা স্ত্রীলোক যে সময় পথে গমন করিত, তথন তাহার ৰোধ হইত যে একটি প্রাচীনা জী-লোক এক প্রকার রক্তবন্ধে পরিধান পূর্বেক ভাষার অলে অত্যে চ**লিভেছে, কিছ**ুজী व्यक्त छो ए मनग व्यापन भूतीमस्या काम করিত ডংকালে ভাষার ঐ প্রকার ভ্রম জন্ম-তনা। ইউরোপীয় এক বা**ক্তি ভদ্রলোকের** এমনি দৃষ্টি ভাষ ক্ষমিয়াছিল, যে তিনি পৰি मर्था (कान मञ्जूषाहरू मन्दर्भन कतिहरू তাহা বথাৰ্থ সন্তুষ্য কি জাহার দৃষ্টি জম हेश स्टाप निषय कतित्व शातित्वन मा, এই क्षत्र जिति क्षाप्त मसूर्य महारक रूख দার স্পূর্ণ পূর্বক পরীকা করিয়া সংগর দূর ক্রিতেন।

^{*} Abereromine . Mental philosophy.

⁺ Abercrombie's Montal philosophy.

্ত।— কথ্ন কথন খ্ৰপ্ন হৈছুও বিভ্রমের উৎপত্তি হয়। কোন কোন ম-মুধ্যের কাকনিদ্রাবং এমনি এক প্রকার নিলা হয়, যে ভাহারা বদিরা দাঁড়াইয়াও পথে গমন করিতে করিতে নিদা যায়। ঐৰপ কুল্ম নিদ্রাকালে তাহারা বে সকল স্বপ্না-वत्नाकन करत, जरममुम्सरक चर्च छ्वान ना করিয়া মথার্থ বোধ করে, কারণ তাহার: ঐনিদ্রার অনুভব করিতে পারে ন।। তাহাদি-গের এমনি জ্ঞান হয় যেন তাহার। জাগ্রতই আছে, স্বতরাং ঐ নিজাবস্থার স্বপ্নও তা-হাদিগের নিকট স্বৰূপ 'বলিয়া প্রভীত হ'ও-য়াকিছু অসম্ভৱ হুইতে পারেনা। এক ভদ্রলোকের ভবনে একটি কন্যা থাকিত, ঐকনা। অকসাং এক দিন এক ভয়ন্তর প্রতিরূপ স্বপ্লাবলোকন করিয়া কছিল,যে আমার সমাথে এক বিকটাকার ভূত দ-গ্রামান রহিয়াছে ৭ অপর এক বাঞি নিদ্রাবস্থায় এক ভয়ন্তর বানর স্বপ্ন দেখিয়া চমংকুত হুট্য়া ইতস্তঃ অবলোকন করি-তে করিতে আপন সন্ধান স্থা দৃষ্ট বানরের ন্যায় অবিকল এক মূর্ত্তি দেখিতে পাইল। বাস্তবিক তাহা কিছুই নছে †।

৪ :-- যে বিষয় গাঢ় ৰূপে মনেতে তি-ন্ত। করা যায়, কোন কোন সময় তাইতি প্রত্যক্ষর সক্ষাধে উদয় হইয়া থাকে। 🗳 চিস্তিত বিষয়ের প্রতি এমন জম জন্মায়, যে ভাহাকে কোন মতেই অবাস্তম বলিয়া বোধ হয় না। এক ব্যক্তির একটি প্রিয় 'বন্ধুর মৃত্যু হইলে পর সে সমস্ত দিন ঐ মৃত বন্ধুর আরুতি প্রকৃতির বিষয় দৃঢ়তর কণ্ণে চিন্তা করিয়া সন্ধ্যার পর ভোজন পানাদি সমাপন করিয়া আপনার বাটার সলিকট একটি প্রাস্তরে বায়ু সেবন করিতে যাত্রা করিল,কিয়ন্দুর গমন করিয়া দেখে যে তা-হার সেই প্রিয়বন্ধু তাহার পুরোভাগে অ-নতিদুরে দণ্ডান্নমান রহিয়াছে। সে ব্যক্তি আপন লক্ষ্যুথে ঐ মৃত বন্ধুকে বভারমান मिथिश विकासभन्न इहेल, जनस्त रेश्याप **गरन পূর্বক সেই মা**য়া মূর্ত্তির দিকে স্থিত নেত্র করিয়া ক্রমে ভাছার নিকটপু হইয়।
দেখিল, যে সেই জনপেক্ষিত অন্ধুত আ
কার সূনোতে লীন হইল "। এক ব্যক্তির
জীবিয়োগ হইলে পর সেস্কলৈ। মনোমধের
আগন প্রিয়তমার রূপ গুণাদির বিষয় জলেলানা করিত। এক দিবস বজনীতে
সে ব্যক্তি আপন গৃহেতে বসিয়া আছে,
এমত সময় দেখিল যে ভাছার সেই মৃত
পত্নী গৃহের ক্রটে মুক্ত করিয়া ভাছার স্ব্রুপে আসিয়া দণ্ডানমান হইল, এবং ভাছাকে আপনার সমস্ভ কুশল বুভাত্ত অব্যাহ করিয়া এক সঙ্গে বেড়াইতে অনুবোধ করিয়া এক সঙ্গে বেড়াইতে অনুবোধ করিল "।

স্থবিখ্যাত ইতিহাস লেখক মার ওয়া লটর একট ব্যক্ত করিয়াছেন, যে এ:-शाष्ट्र सामिक खेरकर्थ। रहेडू अक वाङि কতিপয় **সামান্য বস্তুকে মনুষ্য ব্যেধ ক**রি-য়া বিস্ময়াপ্র হইয়াছিলেন: প্রশিক্ষ কাব্যকারের মৃত্যু হুইলে পর ভা হার একজন আন্নীয় অতিশয় শোকার্ত্ত इटेशाहित्यन। এक मिन दबनीएठ ज শোক মুগ্ধ ব্যক্তি উলিথিত মৃতক্ৰির ব-চিত কোন একটি প্রস্তাব পাঠ করত 🕏 লেখকের লিপি নৈপুণা, রসাল শব্দ বিনাস ও অনুপম ভাব মাধুৱী প্রভৃতি নানা প্রক 🤉 **সংখ্য আলোচন। ক্রিয়া মুক্ত হ্**লেন এবং উহার সাপাদ মন্তক দমত অব্যৱ চিন্তা করিছে লগ্রন্থেম: 都可不得 出产 ৰূপ চিন্তা করিয়া তিনি ই এনক পাটে 😘 রুত হইয়। গুহের বহিগ্মন করিবার বানান সম্মাধ্য একটি এনও হ'ল উপন্তি ইই **टलामी । ये शुक्र**भाषा (त्याम । त्याम नामासक **अ अधार्मा निर्धा भन्त भन्त एक्ट्रान्धि श**िष्ठ **হইতে ছিল!** এ মুস্পুট *ইন্*লু কিরেণে? মা**ভাতে** ঐ ব্যক্তির বোপ হইল,যে ফার্নাচিত দুৱে তংহার শেই মৃত বকু স্পায়মান ৫ हिशाराहा । अहे अमानव दलानात मन्दर्भाव তংগ্র চিত্রের কিছুমার বিকলতা না হ ইয়া মে তৎক্ষণাৎ উহায় তথ্যানুস্থানে ত্ত্তর হুইল। কিন্তু পরিণামে বিলক্ষ পরীক্ষা করিয়া দেখিল যে ঐ গুহস্বারের ব

^{*} Chamber's Information for the people.

[†] Abercrombie.

[&]quot; Abercrombes.

বনিকালি ক্তক্তলী সামারা পদার্থে তা-হার উক্ত প্রকার মন্ত্রা অম হইরাহিলা

क - कान कान मनम् मामकक्ष বিশেষতঃ অন্ধিকেপ কেবন জন্যও দৃক্তি বি-ভ্ৰম উপস্থিত হুইয়া **ৰাকে। প্ৰনিদ্ধ ভাৱে**ন্ত **এগোরি একদা জাহার কোন আত্মীর স্ত্রী-**লোকের গীড়ার সমাদ গুলিয়া ভদ্ধাবধা-রণ করণার্থে সমুদ্র পথে যাতা করিয়াছি-्लन। ये जावनाटक (मधियां श्रेष्ट्रानम्म कवि-বার সময় তিনি সমুদ্র পথের কটি পরিহার প্রত্যাশার অহিফেণ ঘটিত কিঞিৎ ঔষধ भिर्म शुर्किक जाशन निर्मिष्ठे द्वारमधान করিয়াছিলেন, এমন সময় দেখিলেন, যে ঐ পীড়িতা স্থালোক তাঁহার মেত্র পথে আ-সিয়া উপনীত কইয়াছে। ঐ অবস্থায় তিনি এমন স্বস্পেন্ট ৰূপে এ স্ত্ৰীলোকের আকার অবলোকন করিলেন, যে তাছার নিকটস্থ হই লা সাক্ষাতেও দ্বিমি কথন তা-হাকে এ প্রহার পরিস্কার করিয়া দেখেন নাই"। সার এক ব্যক্তিও ঐকপ অছি-কেং ঘটিত ঔষধ সেন্ন করিয়া। দুটি ভ্রমে স্রাপ্তইয়াছিল। ইতিসধাে বিশেষ এই থে এ বাড়ি বখন চম্মুনিমীশ্রন করিত তথানি ননা একার মায়'মুডি পেথিতে পাইত কিন্ত চকু উন্নীলন করিলে ভাগার দুটি পথে আর কিছুই গাকিত না 🔭

কা—শারীরিক রোগ, বিশেষতং মন্তিক্কের পীড়া জনাও কোন কোন বাজির দৃষ্টি বিজম কমো। বর্থন মন্তুষ্যের শরীর কোনু রোগে ক্ষাক্রান্ত পাকে, অথবা বে সময় ম-লুফা দেহে কোন নুতন রোগ আসিয়া উ-পজিত হছা, তৎকালে তাছার মনোমধ্যে দে কোন বিজয় বিশেষ রূপে জাগ্রত হয়, সেই বিষয় প্রত্যাক্ষর তাহার দৃষ্টি পথে প্রতিয়া উপস্থিত হুইয়া থাকে। যদিও নুক্ষা হ্রজ মন্তুষ্যাতে এই রূপ কার্য্য লোক স্থাক দুক্ত হল না; কিন্তু দৈছিক লোক হেই মহালোক দৃটিল্লম উপস্থিত হু-ইবার প্রক্রে উল্লেখ্য প্রাপ্ত করিয়াছেন যে এক প্রতিষ্য অপন্যার রোগ ছিল। যে বাৰর ঐ ব্যক্তির উক্ত রোগ উপস্থিত হটক, তৎকালে শে দৈবিত বে একটি প্রাচীনা ত্রীলোক রক্তবত্র পরিষান পূর্বক ভাষার নিকটবর্তিনী হইতেছে এবং ভাষার মন্তরে

আযাত করিতেছে। নে ব্যক্তি বেশন এইৰূপ ব্যাপাৰ অবলোকৰ করিত অন্ধনি অচৈতন্য হইয়া পড়িত 🔭 কোন ব্যক্তি উপযুত্তির কিছু দিন দৃতিবিজ্ঞানে ভ্রান্ত হ ইড, সে কখন কোন কোন জীবিত মন্ত্ৰ ব্যের মুর্ত্তিও সম্মর্শন করিত এবং কথন বা নান প্রকার মৃত মনুষ্যের ,আকারও দেখিতে পাইত। অনস্থর স্থাবিজ্ঞ চিকিং-সকেরা এই রোগের কারণ স্থির করিয়া তাহার কিঞিৎ রক্ত মোক্ষণ করিয়াদিলে পর অচিরেই ঐ রোগের প্রভীকার হইল*! অপর একটি স্রীলোক এক অন্ধকার গৃহ मध्य आविण कतिश (मधिल, व मृजुात क-ম্পিত আকারের মাায় স্ববিকল এক অস্থি-ময় প্রতিরূপ একটি রাণ হতে করিয়া ঐ গৃহের এক কোণে দক্ষাম্মনান রহিয়াছে, এবং ভারার বিলক্ষণ অনুভব হইল মে ঐ অস্থিম্য বিকট মূর্তি স্বীয় কর্ণত উলভ বাণ করে। ভা**হার বাম পাথে এক ভার**তব অগোত করিল। যে রঙ্গনীতে ঐ স্ত্রীলোক ाई श्रकात हुर्घोना अन्हर्गन कतिन, (महे রালিতেই তাহার অতিশার তার হইল এবং ঐ আহত নামদিক্ বিলক্ষণ স্ফীত হইয়া উঠিল। ইহাতে তত্ত্ববিৎ পণ্ডিতের। এই স্থির করিলেন, যে এ ছার ও পাশ্রেদনা হেতৃই ঐ প্রীলোকের উক্ত প্রকার দৃষ্টিবি 🗠 जम छेपव्हिंड इंडेशाहिल। ये द्वीरलास्कृत-শারীরিক রোগ ও মানসিক কম্পনা শক্তি উভর মি প্রত হইয়া উক্ত প্রকার দৃষ্টিশ্রম উৎপন্ন হইয়াছিল । শারীরিক ও মানসিক রোগে আক্রান্ত হইলে যে মনুষ্য নানা वकात जवान्द्रव आकान्न मिथिए शाह, গ্রন্থাদি হইতে ভাষার বিস্তর প্রমাণপ্রাপ্ত হ-ওয়া যায় এবং লোক সমাজ হইতেও তদিব-गुरु बातक खेमाहबून भाउता साहेट भारत। যে সমস্ত সাংঘাতিক রোগী **স্বী**য় স্বীয় প্রভা-য়ামুসারে সর্বাদা কল্পিড ব্যাও ব্যাদুতের

^{*} Aber rembie.

মূর্ত্তি টিন্তা করে; ভাষার মধ্যে আছু জনে-কেই আসমকালে যম ও যমদূতের কণ্ণিত মূর্ত্তি দেখিতে পায়।

৭—অনতিব্যক্ত চন্দ্ৰালোক ও বাক্ষ পূৰ্ণ ৰাষ্ট্ৰ ইত্যাদি ভৌডিক পদাৰ্থ হইতে-ও অনেকের দৃষ্টি বিভাম উপস্থিত হয়। व्यवनामि अन मूना ऋदिन व्यन टिक्ट्र मिन कित्रण अरमक्त्रहे अरमक मगग्न मसुवा कुम হ্ইয়া থাকে। যে সকল লোকের ভূত প্রেতাদি কম্পিত জীবের অস্তিত্বে প্রত্যর আছে, ভাহার মধ্যে অনেকেই অনেক স-ময় শশি শোভিত রক্ষনীতে অরণ্যাদি বিজন স্থানে ভুত সদর্শন করিয়া ভীত হুইয়া থা-কেন, কিন্তু পরিণামে পরীকা ছারা প্রকাশ পায় যে কোন রক্ষক্ষাদি পদার্থ বিশে-বে পতিত জ্যোৎসায় মৃত্বা ভাৰ হ্ওয়াতে ভাঁহাদিণের উক্ত প্রকার অমুগক ভয় উ-ৎপন্ন হইয়াছিল। হিবট সাহেব ব্যক্ত ক-রিয়াছেন, যে একদা এক জ্যোভন্ন রাত্রি-তে এক দল পোতারোহী লোকে সমুদ্র জলে কোন মৃত মনুযোৱ মূর্ত্তি সন্দর্শন ক রিয়া মহাবিশ্বয়াপল হইয়াছিলেন। **অন্ত**র পরীকা **দারা প্রকাশ পাইল বে চন্দ্রালো**-ক হেন্দু কোন জল মগ্ল পোতের ভগাব-শিকী দারু খণ্ডে তাহাদিগের উক্ত প্রকার ভ্ৰন হইয়াছিল "। এক প্ৰবিতের নিকট একদা কোন এক ব্যক্তি শূনা পথে কতক-গুলি শস্ত্রপাণি সৈনোর মৃত্তি সন্দর্শন ক-রিয়া চমংক্ত হইয়াছিল। পরে অন্বেধণ দারা ব্যক্ত **হইল, যে এ পর্যাত স**রিহিত স্থাৰ বাষ্পা ক্ষেত্ৰে কতিপয় লুকায়িত বি ভোষী সেনার আকার প্রতিকলিত হওয়া-তে তাহার উক্ত প্রকার ভ্রম জনিয়াছিল[†]। তিল তিল সময় এই ৰূপ ভিন্ন ডিল কারণে বিভিন্ন প্রকার দৃটি বিজ্ঞানর উৎপত্তি হয়, প**ণ্ডিত দিগের অনুস্কান ছার**। যদিও তৎ ममुनारमञ्जलाया कात्र व्यवधातिक रत नारे, उथालि अनुमन्नान पाता मृति जरमत रा कि हू उच्च निकातिक इरेग्राह्म, তন্তারাই সংসারের অনেক উপকার দশি-

য়াছে এবং **অনেকের অনেক প্র**কার কুষ*্* কার দূর *হইয়াছে।*

মহাভারত।

प्राम्भकाः

१३ प्रशास--महाराज

বৈশ্ল্পাহন কহিলেন, হে অন্থ' দক্ষ প্র-জাপতি, বৈবস্থত মন্ত্রত, কুরু, পূরু, আজমীদ,যত্ন,ও কৌরন এবং ভরত,ইহাঁদি-গের ধন্য যশস্ত আয়ুয়া বংশ-বিস্তার আনি তোমার নিকট কীর্তন করিব। এতদ্বংশী-য় সকলেই মহর্ষিদিগের ন্যায় নহাতেজন্ত্রী ছি**লেন। প্রচেতার দশ পুত্র, ত**ঁহোর[।] নাধু ও পুণা প্লোক: পূর্বে মহামুভাব বলবান্ দক ল তাঁহাদিগের মুখ বিনির্গত বাঁহ্ন দ্বরে৷ मर्फ रुर्गेग्राहिल। (मर्ने थाटहरून शर्वत পুত্র দক্ষ প্রজাপতি এবং দক্ষ হইতে **এই প্রজা मकवा উৎপন্ন হয়, হে পুরু**য শ্ৰেষ্ট! এই নিমিভেই ভাঁহাকে পিতা নহ বলে। প্রাচেত্স গণের পুত্র দক্ষ মুনি বীরিণীর গর্ভে আছা ভুলা শংসিত ত্রত সহস্র সন্তান উৎপাদন করেন। নার্জ स्वासि रमहे महत्व नक मन्त्राम शनदा प्रान् ত্তম শংখ্যক্তান ৰূপ মোক নৰ্ম অভ্যাস क्राम। (५ कम्यूमक्तः। जमकृतः अङ्कारिः স্ফুদ্ধ প্রজাপতি প্রদাশলী কলা উ: পাদন করির: ভালরে দশটা ঘশ্রাক্তি লাগে 🔻 👘 কণ্ডপকে, ও সচোইশটা চলকে প্রদায় করেন। কন্সপের অন্যোদদ পারীর মধ্য প্রধানী সাজায়নী ইলার গারে ঘাদ্রাকা निकः। विश्वमध्य इसः, २८५ कै। इः इट्टेंड वीयाः मन्भातः हेन्द्रःमि (मन्डां **७ विवन्ना**स्**डाता**सः বিৰস্থান, চইটেড ধর্মান্ত্রা বৈষস্থাত মন্ত্র এবল छ।इ।त असूक यम छेरलम इन। शीमान् মতু হই তে জাকা কজিলাদি মানবৰংশ উৎপদ্ম হয়, এজনা ভালারা মানব বলিয় প্রথিত হইষাছে। ভাষাদিনের মধ্যে ইং হরে। সাজে,পাঞ্জাৰ অভ্যান করিলেন, काँश दार्थ जानाव । त्वस, वृष्यु, सतिबास, सा ভাগ, रेकाकू, काबघ, नर्धाक, **रेना, शुर**ङ, **क्वर नाडाधाविक, मजूद क्रहे एम मेखा**न

^{*} Abererombie.

[†] Chamber's Information for the people.

ক্ষত্রিয় পর্ম প্রায়ণ হইলেন। ইছ্লোকে মন্তর আরও পঞ্চাশটী পুত্র ছিলেন, তাঁহা-রা প্রস্থার বিঞাহে বিন্**ষ্ট জন, ইহা আ**-মর। গুনিয়াছি। ইলা হ**ইতে বিদান্ পুরুর**-🛪 উৎপন্হন, কিন্তুইলা তাঁহার পিতা ৺ মাত। উভয় ছিলেন, ইহাও তাণ্ড হইয়া-ছে। মহাদশাঃ পুৰুৱবা স্বয়ং মানব হ-ইয়াও **সমুদ্রাকৃত এয়োদশ হীপের** অভি-প্তি হ্ইয়া অ্মানৰ পূৰ্ণে স্কৃষ্ণি আরুত থাকিতেন। তিনি বীর্য্যোমত্ত বিপ্র বর্গের সহিত যুদ্ধ করতং আভ্রুফ ত্রাহ্মণ দিলেরও রত্ন সকল হরণ করেন। হে রাজন! অন্তর এক জেকে হইতে সন্ধ্রুমার আসিয়া উছোকে অসুদ্র যজে দীক্ষিত করেন, কিন্তু তিনি তাং-রু নিকট প্রতিগ্রহ করেন নাই: পরে कुञ्च भव्यक्तिभरवत अख्यिष्टार भग विभक्ष হন। লোভান্তিত নরাধিপ প্ররুবার এই कर्भ वसमार मध्या भर्याच निल्ध सा। निभिन्ने छर्नमीत महिल युक्तार्थ यथावर जि-গ'বিচিত অগ্নি গ**ন্ধাবলো**ক ইইডে আন্যান कटरम । केनात छग श्रुक : बाह्न,श्रीमाम, ध-সংবল্ধ, দুঢ়ায়ু, বসায়ু, এবং শতায়ু, আর प्रेमिश है। इस असा अवागी आई आतु ब्हेर्ड स्थ्त, द्रक नन्धा, ताकिका. এव॰ आन्हरमत कम इशः हर पृथिवी প্রি আয়ুর পুঞ্সতাপরাক্র ধীমান্ নহ্য সংশার সহিত রাজা শাসন করেন: তিনি পিতৃ, দেবতা, ঋষি, বাসাণ, গন্ধ🐔 ভিরণ রাক্ষম, ক্ষতিয়, ও বৈপ্স, সকলকেই স্মান- প্রতিপালন করিতেন। তিনি দস্কা-্রান্ত্র শাসন করিয়া ভাছাদিগের দারা ঋষি-দিগকে কর প্রকান ও পশুজাতির ন্যায় তাঁ-লাদিশকে পুর্তে বহন করাইতেন। তিনি তেজ, ত্রপ্রা, বিক্রম ও বল ছারা দেবতাদিগকেও व्यापन कतिया क्षमिनगढक **हेस्टर** प्लाय ্ৰাহ তেন। তিনি যতি, যয়।তি, সংযাতি, মায়াকি অমৃতি এবং ধ্রুব, এই ছার প্রিয়-বর্গে সম্বাধা উৎপাদন, করেন। তা**হার** লতে। যতি যোগ*া*মুষ্ঠান করতং মুনি -**বইয়**: ব্ৰক্ত প্ৰাঞ্জন। সভা-প্রা**ক্তম স্**যাতি

वर यक जम्हीन धवर महाना अवल रहेता অত্যন্ত ভক্তির সহিত পিতৃ দেবার্কনা ক-রতঃ অপরাব্ধিত চিত্তে প্রকাবর্গের প্রতি অমুগ্রহ করিতেন।

হে মহারাজ! দেবয়ানি ও শব্দিঠা উভয়ের গর্টে যবাতির যে সকল সন্থান ভাঁহার। **সকলেই মহাধ্যুর্ক**র ও হুণ সম্পন্ন ছিলেন। তন্মধ্যে দেবধানি ইইতে যন্ত তুর্বাহ্য, এবং শর্মিষ্ঠার গর্মে ছফ্রু, অনুও পুরু উৎপন্ন হন। সেই যযাতি রাজা ক্রমাগত **বছকাল ধর্মতঃ প্রে**জা পালন করতঃ শেষাবস্থায় বিৰূপকারিণী ঘোরা জর। দার: আক্রান্ত হইরা পুত্রদিগকে স ষোধন করিয়া কহিলেন। হে পুত্রগণ আমি কামচারী হইয়া থৌবন সহকারে যুব-তী গণের সহিত বিহার ফরিতে উচ্ছা করি, ভেমির। ভদ্বিয়ে সহায়তা কর। শুনিয়া ভাঁহার জোঠপুদ্র দৈবয়ানেয় যদ্র কহিলেন, মহারাজ ৷ আমাদিগের যৌবন ঘার: আপনার কি**রণে** সহায়তা করিব. তাহা আজ্ঞা কৰুন : য্যাতি কহিলেন, তুমি আমার জরা এছণ কর, আমি তোমার যেঁ৷ বন লইয়া বিষয় সম্ভোগ করি: আমি দীয় সতা যভঃ করিবার সময়ে উপনা ঋষির শাপে কামার্থ পরিছীন হউয়া তদবধি ত পিড আছি, অতএব তোমাদিথের মধ্যে এ-কজন আমার শ্রীর লইয়া রাজ্য শাসন ক-রুক, আমি ভাহার অভিনৰ কলেবর এা≉ণ পূর্বক যুবা হইয়া কাম সভ্যোগ করি ৷ যতু এড়তি চারি জন ভারার **জর**্ঞ**হণ ক**রি-লেন না, পরে ভাঁহার কনিষ্ঠ পুক্র সভা বি-ক্রমপূরু কহিলেন, হেরাজন্! আপনি আমার যৌৰন **সম্পন্ন ক্ষডিন্ব শরীর লইয়া** বিচরণ করুন, এবং আমি আপনার আ-জ্ঞায় জরা <u>গ্রহণ পূব্বক রাজ্যে ক্ষ্</u>বস্থিতি করি। ইহা **গুনিয়া রাজ্যি য**য়াতি **তপোব**লে মহাত্ম পুরুকে জরা প্রদান করতঃ পৌরব वरम हाता खोवन आश्र हरेरनन अक शृह्र যয়তি বয়ংসহকারে রাজ্য করিতে লাগিলেন। व्यवस्त्र मार्नुल नम विक्रम नुभरक्षक यथा-ভি অপরাঞ্চিত চিত্তে উভয় পত্নীর সহিত সামাকে অভিষিত হইলা পৃথিৱী পালন ও । দীর্ঘকাল বিহার করিয়া বর্ষসহ আছে পুন-

व्यात देवक ब्रद्धत बदन विश्वाचीत गरिल त-मन क्रिडिं कार्रेड करितन । सरायना বৰাতি ভব্দ কামভোগে নির্তিশন তৃপ্তি आश्व मा इहेश मदन मदन अहे (भौतानिक রাধা আলোচনা করিতে লাগিলেন। কামা বস্তুর উপভোগ ছারা কামনা কখন নির্ভ হয় না, প্রভূতি ঘৃত প্রাপ্ত বহিংর ন্যায় ক্রমশঃ বর্দ্ধান ইইডে থাকে। বছরত্ন সম্প্রা ুপুৰিবী, হিরণা, পশু ও বনিতাগণ, এ সমু-দায় এক ব্যক্তির ভাগো সম্ভবেনা, ইহা ভা-বিয়া শান্তি আত্রায় করিবেক। যুখন লো-কে মনোবাক কর্ম দারা কোন ভূতের উ-क्ता कथन भाभाष्ट्रव ना कर्तन, उधनहै তिनि उषा मण्या इन । यथन होने काही हैहै-তেও ভয় না পান, এবং ইহাঁ হইতেও কেছ की जा हैया, जैतर स्थन है है। इ की न कामना वी दिव ना शिंदिक, उनमह हान उन आश इन। (६ नृग! खुकामजूश नहीतिक रेगाँउ हैश आलाइना शूर्कक মন ও বুদ্ধি ছারা কামনা হাস করিয়া পুন-र्वात शृक्षाक धोवन निया उँहा इन्ट्रेंड জরা গ্রহণ করতঃ তাহাকে রাজ্যে অভিবেক্ कतिश कहिटलम, ८३ शुक्र ! তোমाকে नई-शाहे वामि शूखवान, ज़ीनह समिति वरन ধর সন্তান, অতএব তোমার সন্তাতর পৌ-त्व वश्म बीनेश शाकि इंदेर्द।

বৈশ্পারন কহিলেন, হে নৃপ্তেষ্ঠ ! অনত্তর মহাতপা ঘ্যাতি পুরুকে রাজ্য প্রদান করিয়া ভৃগু তুকে নিয়া ঘোরতর তপশু।
করতঃ দারা ঘুয়ের সহিত ঘুখাকালে অনশনে কাল্যশ্ম প্রাপ্ত হুইয়া স্থান গমন,
করিলেন।

अयदबाशामना

বে জ্যোতির্ময় দিবাকরের উদয় দারা
এই ক্রমন্ত্রন ডমহিনীর আজ্যাদন হ
ইতে বিষ্টুক্ত হইয়া প্রকাশিত হয়, সেই
সর্বা প্রকাশান্তক কর্মের কর্মা এক অভিতীয় ও অচিত্রনীয় পুরুবের
সন্ত্র ভগাবলায়নী ইক্ষা মাত্রে এক সময়ে
এই স্থানর ক্রম বিশিক্ট বিশ্ব সংসার ভং

সদবস্থা হইতে উদ্ভাবিত হইয়া সন্তাৰ প্ৰাপ্ত **হইয়াছে, অদ্যাপি তাঁহার মহতী ই**জ্ঞার **অধীনে স্থিতি পাইতেছে, এবং সেই** ই-চ্ছার বিরাম হইলে কালেতে হয়তো সমু-দায় পদার্থ নিরু**ত্তি প্রাপ্তি ছার৷ "ম**ডেড টা-হাতেই বিজ্ঞান করিবে। তিনি জ্ঞানেলে **অভ্ৰান্ত, শক্তিতে অনন্ত, স্বীয় কর**ণ ব্যার বিতরণে অনিশ্রান্ত এবং স্বভাবে পূর্ণ হয়েন। ন্যায় বস্তুত ভাঁহারই নিরপেক্ষতার ভিল একনাম বিশেষ, তজাপ ভাঁছার প্রেমে স্ম হইয়া পুলকাব্রুপাত করা ও তাঁহার আ क्ठावर् थाकिशा लाक्याका निर्कार् कराद्यः **धर्मा बलागारा। गिनि जगाना छ। भि**छ।, अद्यमा छ। বিধাতা, পাপপুণোর স্থবিচারকর্ত্তা, একাবি পতি রাজা, পরম জ্ঞানদাতা গুরু এবং অ-**ন্তের পরাগতি হয়েন** ; যিনি বিশেষ আনু-**ৰুম্পা প্ৰকাশ স্থারা আমাদিগকে বু**দ্ধিত্তপ মহাবল, ভাঁহাকে জানিবার সামর্থ পান র্যা**ন্ত প্রদান ক**রিয়া এ পৃথিবীতে সর্ফেণ ত্তম প্রধান ও গৌরবান্বিত করিয়াছেন, আমাদিগের কি কর্তব্য নছে যে সর্কো:-পায়ে উল্লিখিত মহদ্গৌরবকে রক্ষা করিয়া (मर्टे शत्रमाद्यादक मक्तास्थकत्रपत महिन्छ। নিষ্কাম ভক্তি মত্তে নিয়ত অর্চনা করি: थीहात अमीमार जामता परमग्विय अया **চিত স্থা সুখী হইয়াছি**, কত অভাবনীয বিপদ হইতে উত্তীৰ্ণ হইয়াছি, অসংখ্য **कृष्वित्रकार विवत्यत्रत् अन्ताननाञ्च, क**्रिसिक, যাঁহার শরণ প্রভাবে অভিযান স্থুট মোহকে পরাভূত করিয়া পুরত্ব 🗆 २-**হস্তু প্রকাশ ক**রিয়াছি, ভীহার প্রতি মনের স্বাভাবিক ক্রডজতা স্বীকার পূর্ধক নমস্কার করা কি আমাদিগের অত্যন্ত উচিত নহে? বিদেৰতঃ ৰথন আমাদিগের আদান্ড শ-कल क्या छै।इत व्यतार्थ हेक्त अतीन, তিনি মনে করিলে আমাদিগকে বর্তমান অবস্থাপেকায় অধিকতর ভয়ধ্ব ছুরবস্থায় রাখিতে পারিতেন কিন্তু তাহা না করিয়া বরং আমাদিগের মনে ইহাপেক্ষার উত্ত-রো**ত্তর উৎ**কৃষ্টতর অব**স্থা প্রাপণে**র দূ*ু* আশা বন্ধ করিয়া দিয়াছেন ; এবং তিনি ইহকালের অক্তর আনক্ষের উংগ্রন্থ ও প্রতের অপার লাভির আলয়, তথ্ন কেই নর্মনিয়ন্ত। প্রমেশবের প্রতি আলয়, প্র করা এবং সকল বিধয়ে তাঁলার পরি-পূর্ণ ক্রান অন্ত লাভি এবং উদারকরণার । চপরে গশ্চাড়ক একান্তিক ভাবে নির্মন্তর। ততুপ্রেকদিগের পক্ষে সর্বাদা উচিত। ম্বা, গ্রমেশর যে কিছু করিতেছেন তালা আমরা কুল বুলিতে সমাক্ বোধগমা ক-রিতে সমর্থ না হইলেও তালা বিশেষ ম-দানান্দেশেই হইতেছে, অভএব ।
চতে তালাতে সম্ভূতী থাকা আমানিপের

केथत आयामिटलत निकासन. ्रिन कार्यक्र**ं निषम् रख नट्न** ; डीहात নহিত আমাদিগের প্রত্যাকের চিরসম্বর্ষা নিবদ্ধ রহিয়াছে, স্ব্রেলং তাঁলাতে আমা-দিগের সকলেরই সমান অধিকার আছে। किन्द्र, यथेन मामाना वस्ता आखित निभिट्ड একাগ্র ইড়া ও যত্র সপেখন করে, তথ্য भिर्दे मन्द्रारभक्ता भवन एक व स्र स्टाना অদিকারীর আস্তরিক ইচ্ছা ও বন্ধ বিরহে হি কথন মূলত কছতে পারে? যে নার্ বাকি ভাগেকে প্রাঞ্জ হট্যাছে,ভাঁহার ঐশ-বের দীনা কোথনে ? সে ঐখ্যা মুক্রা जल्ला काक शननीत्र नट्य, जाशी स्थिमी बीमी মহত্ত্ব বিবেক সন্দোৰ দয়। ক্ষম। প্রভৃতিতে मंडड পूर्व इत। এडानुन भेषवाताम् भू-রুষ সেধন অতিমাত্র বায় করিতেও আ**-**লস্য ও কার্পণ্য পরতন্ত্র হয়েন না। তিনি জানেন যে তাঁহার সমুদার কর্ত্ব্য কর্মের মাধা ভ্রাত্বর্গের সহিত সেই পরম ধন ন্মাংশে উপভোগ করা সকল হইছে প্রাম করিব। কর্ম । প্রমেশ্বর কেবল একমাত্র নিভাপদার্থ, তিনি সমুদায় কভোর পরন নিধান। এই নিষিত্তে পূর্বা পূর্ব নিক বাদিরা ভাষাকে **সংপদে ব্যক্ত করি**-গা গিয়াছেন। বা**তবিকও প্রকৃত বিচারে** ভাষার ন্যায় সং স্বর্থাৎ সত্য বস্তু অপতে আর কিছুই নাই; তিনি সভা বলি-बाहे एनी। कार्या अहे जगर मरणाह ন্যায় প্ৰকাশ পাইছেছে। জীহার কোন-क्ष नारे, नठारे छाहात असूश्वक्त, आन

केरिक साम्बरी शक्त करूना केलाई मान्त-रत (गांछ। अवर अब्दे विश्व छरीश विशास ছারা মার। সভারৰ ছায়া স্বাপ কাবং **সংসারকে যে মন্ত্রা মোহের রিজম্বর্তী** বুলিতে নিমুগ্ধ হইরা সভা বোধ করত পর-মেশরেতে আছা শুনা শাকে ভাহার কেবল विज्ञनामाज नात रहा, नत्मह बाहे। किन्छ বে ব্যক্তি সভা অৰপ প্রমেশ্বরেভে বি-খাস রাখিয়াছে , প্রীতি এবং আশা ত্বাপন করিয়াছে তাহার সে:বিশ্বাস ক-দাচ বঞ্চিত হয় না, গ্ৰীতি অপাত্ৰীকৃত হয় না এবং আশাও কলখুন্য হয় না। হে সভাস্ত্রপ প্রজাপতির প্রিয়তম পুছের।! একবার নিরীক্ষণ করিয়া দেখ , তোমাদিগের পরমারাধা বিশ্বপিতার পূ-জার্থে সুখময় বসন্থ সময়ে কিবল আ'রো-**खन इंहेट्टिइ। मिथे मम्छ श्र**कृति **प**न्जि নব মনোহর শোভায় জ্সজ্জিত: হইয়া कानन छेलान मक्तरक नग्न वक्षनकृत শাামল প্রভা পটল দ্বারা বিকীর্ণ করিতে-ছে ৷ তরু গুণাুলতা প্রভৃতি নবপ্রস্থতীর भाग नवीन मन शुष्ट्री कल खाताबन्छ हरेश নির্মাজাকে বারয়ার প্রণাম করিতেছে, यथवा जाहात निर्देशनार्थ खेळ कुरूम क-লাদি ধারণ করিতেছে। আহা ! কিবা র-मनीस विधित्वतान् विद्रांकिए कुन्नमकुल विश्व পতির অর্চনা নিমিত্ত অবিরত স্থামধ মধু-ক্ষরণ ও চমথকার সৌগদ্ধ বছ্য করিতেছে এবং তছপরি উক্ত মধুপানাসক্ত মন্ত মধুকর গণ আপনাদিগের ভাবি শীত কালের সমু-लन रुडू मकतन्त्र मक्षत्र कतिरू निर्वस्त বাত রহিয়াছে। অতএব আমাদিনেরও উচিত যে এতদ कार्य योजन दमक अङ् হইতেই স্থাগামী কালৰূপী ছুরছ হেম্ভ कारनत जना श्रीछिषिम किषिष किषिष भन्ने प्रकार मध् नक्षत कति । कातन छ-धम जना नकन दसहै नाई इहेरन. क्वित धर्म के मान समाह अन्तराह जन त्रहिद्व । भाश ! विश्वनत्त्रत् अपि-कारमञ्जू बमा बद्धमुठी कि वर्श्व रहि-काखनल विख् के स्रेपाद किया चा-कर्षा समा समा शबदन क्षेत्रकाराच्या मनाइ नहीं-

রণ চতুর্বিক্ইইতে মনোহর দৌরভ বিভার ৰারা বন্ধরের আমোদিত করিতেছে। এ राक खूबमा कामम निवानी अभरशा विश्व मल मानद रहिशामात विख्यातिकाति याच मन्-র বুর আলাপন ভারা বিশ্বাধিপকে হুদ্র নিঃ-সূত আনন্দের গান প্রবণ করা ইতেছে, এবং শ্ব তির সহিত সেই আশ্চর্যা চিত্রকরের চিত্রকৃত শ্বশ্ব বিবিধ বর্ণের পতত্র প্রসারণ করিয়া গগন মগুলে আক্রীড়ন করিতেছে। ঐ দেখ মর্র মর্রীগণ মনের প্রকুলত।র श्रीय करनवरतंत्र लावना काछि कलाभ नम्-র্শনে বিমোহিত হইয়া চমৎকৃত ভাবে ভাঁহার য়াজসভার শোভা সম্পাদন করত কি সৌন্দ-াার সহিত নৃত্য করিতেছে; এবং নানা রাগ রঞ্জিত রত্নাবলীর দ্যাতি বিনিন্দিত খাভাযুক্ত মনোহর পুচ্ছ বিস্তার করত জাঁ-হার রুত কারিকরী ভাঁহাকে**ই দর্শন করাই**-তেছে। এই প্রকারে বিশ্বরা**জ্যেশ**র ভরুণ বসত কালের স্কুত অনন্ত মহিমা প্রকাশ ভারা তদীয় প্রেমাসক্ত ধর্মালা পর্ম জ্রানি ঋবিদিগাঁকৈ আমস্ত্রিত করিয়া তাহা দর্শন করাইতেছেন, এবং আপনিও তাহার অ-বিষ্ঠাতীৰূপে বরণীয় হইয়া চরাচরের পুজা গ্ৰহণ কৰিতেছেন। অতএৰ আ**ইন** আ यता ७ तकन मङ्गाज्यर्भ खेला रहेश (पर्कार्भ যন্দিরে বিশ্বময়কে শ্রবিষ্ঠান করিয়া ভক্তি বিধানে আরাধনা করি। যদিও তিনি বিভু-ৰূপে সর্বাত্র বর্তমান রহিয়াছেন, তথাচ হী-রক মুক্তা প্রভৃতি বছমুল্য রত্নজড়িত স্বর্নের মন্দির অপেকাকত স্ভাবাদী সংযতে দ্রিয় नवल आकादान् नाध् राक्तित मानभठीर्ध ह তাঁহার বিরাজ করিবার অতি উত্তম পবিত্র প্রিয়তম স্থান। অতএব চিত্তকেত্রকে সর-লতার দলিলে প্রফালন এবং স্ত্রাবহার খারা প্রিত্র করত ভছুপরি ধর্মারূপ মন্দির প্ৰতিষ্ঠা পূৰ্বক আন্ধার আসনে সেই বিশ্ব-প্রজাপতিকে আহ্বান করিয়া সকলে সমা-थिरवारण निष्ण निष्ण शान ७ भूका कत, व कृषार्थ हहेरद्

বে ব্যক্তির সভোতে প্রীতি আছে, প্র-তরাং সভাকে জানিতে যথেক ঔৎস্থকার সহিত চেক্টা আছে, ভাষার মিধ্যাতে ছ্রা-

সক্তি থাকেনা এবং সে কপটভার বেশও ধা রণ করে না! **তাঁহার বিশে**ঘ প্রতীতি হই য়াছে যে জনং কর্তার কৌশন সভিপ্রায় নিয়মাদি ব্যাসাধা আবগত হ্ইতে আঞ **হাতিশয় প্রকাশ না করিয়া শুন্ধা** উদ্যা পুরি পরিছেদ শোভা ইতর ইন্দ্রিয়ে সেবং এবং লৌকিক ঐশর্যা চিন্তায় বাস্ত ও উম্মন্ত থাক ইআদি মনুবা সমের তাংপর্যা হইলে ভা मुग लग्न विस्थित का का मानक मा इंडेश. তাহা নির্তিশয় অকিধিগৎকর হয়। মনুন, जिंदिते केश भए बद्ध क्षणाभाकता जनसुर् कण्य वर्षे, किन्न मसुरैयात जाता शहरता কার্যা হওয়া সাভিশ্য বেদের বিষয় অবশ্য **বলিতে হইবে।** তদ্ৰগ জিহার ইহাও নিশ্চি ত বোধ হইবাছে,যে মনুযালিগের যে জ্লান **टकाालिखारा मात्राचा मीलाटकाटकरा सार्** ७.-পরিষ্কৃত ও অনতিদূরবাাপী, এজনা প্রারেণ क्टर्यात अञ्चा काला मन छेडक ल न। इस्टा তাহা অতি সহজেই বারয়ার সৌহের বুলী-ভূত হয়। দেই মোহ হইতে সর্কানর্থের মুঃ। স্থার্থ গরতা জন্মিয়া থাকে: এবং তদ্ধারা ক্রমেতে লোভ, অত্যাকাক্ষা, ছলনা, প্রতা রণা, বাপটা, ছেম, মাৎসর্মা, তেলব, জিংসা ইত্যাদি শত্ৰদল উপস্থিত হইয়া মনুব্যেয় निकानत कात्र इत्र धारा सूरीमत्र मध्यात উদ্যানকে বিষময় বিষম জঞ্জাল পূর্ণ মহা রণ্যে পরিণত করে। যে ব্যক্তি সত্যের পথে विष्ठत्र करत, अ त्रश्मात क्रेश्वरत्र कानिशः তায়তে স্বাৰ্থভাৰ ও প্ৰদক্তি ত্যাণ পুৰুক **আজ্ঞানুবতী ভূতো**র নাপ প্রভূর ার্থ সাধনে শ্বতঃপর্তঃ ওৎপর ধাকে: বাংকি মতা ধর্মে অতলা নিঠা ব্যক্তে, সে ঈশ্বরের গ্র থেই ভ্রমণ করে, ঈশ্বরের জ্ঞানেতেট বিকশিত হয়, ঈশ্রের বলেই বলবান शास्क अवर जेग्बरतत कर्जनामुख शास्त्र है নিরন্তর আনন্দিত থাকে। ভাষার দুট क्षात्र इहेब्राह्म, त्य खारन तम. व्यापनाम আত্মাকে সমর্পণ করিয়াছে, বাঁহার ম ক্ল স্বৰূপে নিতান্ত নিৰ্ভন্ন করিয়াছে, সেখা-त्म. स्मादहत अञाव मार्चे, क्राध्यत कन्मन मार्चे এবংমৃত্যুরও অধিকার নাই, অতএব সে অার কিছুতেই ভয় প্রাপ্ত হয় না। তাঁহার কে-

বল এতাবআত প্রার্থনা, হে স্থ প্রকাশি পর নালন্। নোহরত পাপ হইতে রক্ষা করিয়া এবং জুর্মতি হইতে বিরত রাখিয়া তোমার নালা ক্রেটিড হইতে বিরত রাখিয়া তোমার নালা জ্যোতি হার। আমাদিগের জ্ঞান প্র-টিপ উদ্দীপন কর, তোমার মুখ প্রজালার এই অজ্ঞানমরী তোমনী নিশাকে প্রভালার করে, তোমার বলেতে আমাদিগকে বালার কর, থে প্রতিজ্ঞার সহিত তোমার মহতী আহল অনায়াদে বহন ক্রিয়া । রপার নিউরে গমন করিতে পারি, এবা এই শিবসপূর্ণ বিষয় রম হাইতে মুক্ত করিয়া আবিরত শান্তি রম পার্নে আমারা অনুতের প্রিয়পুর হাইয়া অচিরাৎ অনুতকে লাভ করিছা ক্রার্থ হাইয়া অচিরাৎ অনুতকে

বিজ্ঞাপন

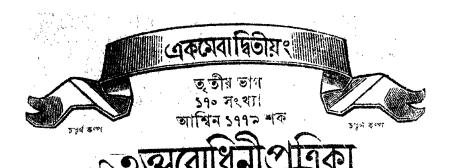
ভ্রন্তভার সহিত স্থীকার করিতেছি খে, জিয়ুজ বাবু শিবচন্দ্র দেব সহাম্য স্থানীত পশ্চপালন ' নামক এভের এক খণ্ড ব্যবহার কমিরাচেনঃ

বিজ্ঞাপন

বিকেন পুৰ	<u>ক</u>				भूल
অমরার্থ দীহি		••••			>
'भ, गुश्रासम	•••	• • •		****	H
ন্ত্ৰত ভিধান			•••.	•••	٥
公所 多颗5万	न बाद	गुत्र करें	বনচরিত	•••	He
্ৰিরাগ্য শভ র	,				110
सक्तार्थ शृत्रह	ভূ ১৩	म्: श्री		*14	le
(4)	>8	ŝ		. ***	. 10
বস্তু বিস _া র	•-•		***		ا إ
ভত্ত্ববেগেনী	দভা র	বকু	51		· lo

राष्ट्रका जानाव नराव उत्तावकात 👵 😘
तरक् उ भारताथकातक
शर्मार्थ विष्टा 🥱 👵 🔭
वर्गमानाः
रे तानी जावात काडि अकृष्टि ।
रेश्त्राकी कामात खाक्रान्टमदिष ।॰
বেদাৰিক ডাক্টি ন্ৰ ৰিভিকেটেড ্ 120
ব্ৰহানগীত পুস্তক ৷
পৌত্তলিক প্ৰবোধ 📈
राक्रमा ভाषाय कट्यांशनिषद 🚜
রৃত্তি সহিত ঐ নাগর অক্ষরে ॥॰
द इत्यं के काकरद १०
夏9年 1000
आश्चा विषया ८०
बहेक्टिश्वद्याचाम
ेवे जानवीस अ
ঐ আত্মতত্ত্ব বিদ্যা সহিত ভাল্নীৰা ১৮
আনাকসা সিকিকসা 👑 🗸
এবিজমেন্ট আমার 👵 🖰
भिष्ठदगर्वाव
কৌতুক তরঙ্গিনী ১৮/০
मदमाङ्गी " े >।॰
সারাবলি ··· >
চাহার দরবেশ গণ
বাহ্যবস্তুর সহিত মানব প্রকৃতির সহন্ধ বি-
চারপ্রথম ভাগ; ১
এ বিতীয় ভাগ ১
চাৰুপাঠ প্ৰথম ও দ্বিতীয় ভাগ ৬৬

হত্তে এই ভত্তুবাধিনী পত্তিকা, কলিকাতা নগতের যোডানীকোত্তিক উত্তবাধিনী সভাত কার্যান্য কট তে প্রতিবাসে প্রকাশিত হয়। ইতার মুখ্য এক টাকা ভাজ প্রবিশ্ব সভাব ১৯১৪ কলিগভাষ্ট ১৯৫৮



. ও ক্ষরা একনিন মঞ্জাসী মান্য একিকনা সীজানিদং সর্কামস্থাক্ত । তাদেবনিত্যং জ্ঞানমনতং শিষ্য বাছে নির্বাহন বাদেব হি তীয়ে । ১ জাবঃ পিলস্কানিকজু সর্কাল্য সর্কানিকস্কানিক ক্ষান্তিমজু বৃশ্পু বন্ধজীতিন্দিতি এক সাত লৈকে পালন যা পার্ত্তিকীন দিব ক্ষান্ত গ্রহণতি । তালি ক্ প্রীতিক্ষায়া জিমকার্য্য সাধানক তলু পালন মেন্ত্র।

ঈশ্বরের মহিম।

জ্যোতিঃ অতি অন্তুত পদাৰ্থ। যদিও আনরা উহার সমস্ত নিগ্ তত্ত্ব অবগত रुवेटक পाति नावे. उथापि भिनार्थ विनात অনুশীলন দারা উহার বিকৃতি ও গতি প্র-ভৃতির বিবয় যে কিছু প্রকাশ পাইয়াছে, जन्नादा **हे जगमी या**द्य दिखत महिमा वाक স্থির করিয়াছেন, যে স্থর্যাদি জ্যোতিয়ান্ পদাৰ্থ হইতে ঘখন তদীয় আলোক নিৰ্গত হয়, তথ্ন উহা অতি সত্তর বেগে সরল ভাবে शमन करत, उँहा मार्किष्ठित्रल कारले सर्था श्राप्त विशिक दिनाम यहिए भारत । हेश সকলেই প্রত্যক্ষ করিয়াছেন, যে একটি मामाना दील निश्चा बाता कछ पृत लया छ আলোকময় হয় । কলতঃ আমরা আলো-কের সত্ত্র বেগ মনেতে ধারণ করিতে পারি না। স্থা হইতে তদীয় আলোক এত ক্রতবেগে ভূমগুলে পতিত হয়, বে পর-रमयत क्याजिएक दिर्भव कोमन धकान ना कतिरण छेहात (बर्गा जूमधनक ममछ पर्नार्थके पूर्व इड्डू याक्ट, किन्त किया জগৰীশবের আভাষ্য মহিমা! তিনি করণা

পূর্বেক জ্যোতির পরমাণু সকলকে এড স্থান করিয়াছেন, যে উহার উলিখিত ৰূপ সত্তর গতি ছারা ভূমগুলের কোন প্রকার व्यक्तिके উछ। दिए ना श्रेष्ठा विश्व कला। १ हे উৎপন্ন হয়। উহার সম্বর গতি ছারা পৃথিবীস্থ কোন প্রকার কঠিন পদার্থ চ-র্ণ ছওয়া দুরে থাকুক, আমাদিগের চক্তঃ প্রভৃতি কোমল পদার্থপ্রকিছুমাত্র আইত হয় না। দিবাভাগে আনাদিগের চক্ষে অনবরত সুর্যালোক পতিত হয়, কিন্তু জগ দীশ্বরের কৌশল প্রভাবে সামর্ অনালান্য ঐ আলোকের অভিন্তনীয় সমূর বেগুধা রণ করিতে পারি। আলোদের প্রভ*েত* আ্যাদিগের নেত্রের কিছুমাত রেণ ৮৮-য়া দুরে থাকুক, আমরা একবার স্থান-তেও পারি না যে অংমাদিগের নেত্র ক্ষেত্রে कान अकात भाग ज्यान इट्रेट्डा ११-রম করুণাকর পরমেশ্বর আলোকের কণা দকল স্থান্ধ ও বিস্তুত করাতে স্থান্টির আরও এक महर जमज्ञल निताक्र व हरेता है। हेह। जातिकहे अजाक कतिसारहर, ख একবিন্দু আতদী কাচে দে কএকটি सूर्याः রশ্মি পতিত হয়, তাহা একতা সংহত হই-লে ভদীর তেজে কাষ্ঠাদি দাহ্যবস্তু সকল नहरका है मधा हा, किन्छ शृथिती ह नाना १ দার্থে পলার্কের সধ্যে দিবাকর সংস্ত সহত্র कित्रण क्या दर्भण क्तिएडएइन, अध्य उन्हाता

^{*} A drop of tallow expended in the wick of a farthing candle shall send forth rays sufficient to fill a hemisphere of a mile dismeter. P. N. Th.

কোন পদার্থই দক্ষ হইতেছে না। হা। জগদীশ্ব, ভূমি যদি করণ করিয়া লোটিং
পদার্থকে এ প্রকার স্ক্রেডম সংগ্রিশিই ও স্থানিক বিস্তৃত না করিছে, তাহা হইলে কি আমরা নিমেষ মাত্রও স্থা কিরণ সহা করিছে পারিতাম, তাহা হইলে আমরা স্থা কিরণে কোন্ কালে চুর্ণও ভ্রমী-ভূত হুংলা বাইতাম। যে সমস্ত ভ্রম্কর ভ্রমার ভিতিক পদার্থ ছারা আমাদিশের এশেষ প্রকার অনিই ঘটিবার স্থাবনা, েলারু সক্লময় বাবস্থানুসারে ভ্র্মারিও ভ্রাদ্যিরের অনেই বিধ উপকার দ্যিভিছ।

জ্যাতির পরমার পরস্পর পরস্পরকে
বিক্লেপ করে, কখনই কেই কাহারও বহিত
যুক্ত হয় মা, স্কুতরাং আলোকের কিছুমান
স্কুলন্ত অনুভূত হয় না। জ্যোতির স্কুলন্ব থাকিলে পৃথিবীর সকল গদার্থই উহার
ভারে প্রনীডিত হইত।

ইহা সকলেরি বিদিত আছে, যে জ্যো-िले कामानियात नर्गन कार्यात श्रमान কারণ। পৃথিনীতে আলোক থাকাতেই আ-ন্ত্র স্থান্ত পদার্থ সকল দেখিতে পাই। প্রমেশ্বর ভোলতির স্থিত দুর্শানে ক্রিয়ের শতি অংশ্যর্থ) সময় নিবন্ধ করিয়া দিয়া-জেন, িনি যদি জগতে জ্যোতির স্থাটি না করিতেল, তাহা লটনো আমাদিগের দর্শনে-स्प्रिय विकल **२३**७ ८०१ नर्ग**ा**स्य राष्ट्र না হইলেও ভোৱাতির স্টিনির্থক হইত। य पर्शन किया जागानिरगत खामलारजत ख স্থ ভাগের প্রধান হেত্,পৃথিবীতে আলো-কর অভাব হইলে, সেদর্শন ক্রিয়ারও অভাব হইত। পৃথিনী আলোক শূন্য **তম**-**সাজ্য হইলে যে আনাদিগকে কিপ্রান্ত** ছুংথভোগ করিতে হইত,তাহা নয়ন বিহীন অন্ধ ব্যক্তিই বিলক্ষণ অবগত আছে। আ-गदा निश्वतारका विविद्यवर्गत शमार्थ मनन-শ্ন করিয়া নেত্রগঞ্জন করিতেছি। আমরা ক্রম ক্রাক্ত শক্তকেত্রের মনোহর হরিৎ र्व नन्मर्भन वर्विष्ठा छवी इहेरडहि, क्यन ভূতন ক্রমরের প্রগাড় শ্রামন বর্ণ অবলো-कन कतिया विषय वित्नाम अनाहर छहि, কোন সময় বিভীৰ্ণ সাগরের নীলোক ল मनिन गाएँ सर्वानाकम कतिया जुश्च हरे তেছি, কখন বা বিপিনবিহারী বিচিত্র প্র-कात तिश्वमद्भाव आकर्षा भौकर्षा निती অণ করিয়া আনন্দ্রনাজ ক্ররিতেছি। আমর। कथन महत्रावस नामि स्वयं रेमीवहत्त्र ीन यां व वर्षा क्ये क्रिशा शुनकि ह-रेटिक जर कथन क्विक्स स्ताहित কান্তি নেত্রগোচর করিয়া বিশেষ ভৃত্তি লাভ করিতেছি, কিন্তু কেবল এক জ্যোতিঃ প্লার্গ প্রভাবে এই সমুদায় সুচারু বর্ণের উৎপত্তি হইতেতে এবং আমর। নানা সময় নানা প্রকার নেত্র**স্থ লাভ করি**ভেছি<u>৷</u> পৃথিবীতে আলোক না থাকিলে যেমন আ মরা কোন পদার্থই দেখিতে পাইতাম ন: **নেইকণ আলোক অভাবে কোন একা**ড় বর্ণেরই উৎপত্তি হইত না। সুমাহ **ইতে বে কিরণ পতিত হয়, তাহা সামান**েও এক বর্ণের দেখার, কিন্তু বস্তুতঃ এক नदङ, ভাহাতে সাতটি বি-ভিন্ন প্রকার বর্ণ বিদামান আছে, প্রদার্গ বিদ্যাবিৎ পণ্ডিভেরা এক প্রকার ক্রিফোণ ও ত্রিভুক বিশিষ্ট স্থলকাচ দারা পরীকা ক तिसा (मथिसार्ट्स), त्य सूर्या कित्रत्न त्य করেক প্রকার বর্ণ আছে, তাহা ঐ কাতে পृथक हरेशा পতिত हम। প্রতোক হয় भमार्थ य य छाइँछि यसूमादा ये सूर्या कि রণায়ভূত এক এক প্রকার বর্ণ হইতে এক এক প্রকার বর্ণ প্রাপ্ত হয়। স্থাতি মধ্যে কীট পতঙ্গ পশু পদ্দী প্রভৃতি **যত প্রকা**র পদার্থ আছে, সকলেই আপন আপন খ-ভাষানুসারে আলোক হুইতে এক এক প্রকার বর্ণ পাইয়া থাকে, অতএব বিলক্ষণ প্রতিপন্ন হইতেছে, যে জনদীশার জনতে এক জ্যোতির স্থা করিয়া আমাদিগ-কে বিচিত্র প্রকার বর্ণ সক্ষর্পন স্থাথে সুখী করিয়াছেন। কোন পণ্ডিত বাক্ত করিয়াছেন 🕇 , যদি একবার ছির্টিছে व्यात्नात्कतं त्रवना रेमशुषा छाविता दर्गणा যায়, তাহা হইলে বিশারাপন হইতে হয়। কাহার সাধ্য যে এক মাত্র জ্যোতিঃ পদার্থ

^{*} Paley's Natural theology.

[†] A friend of Dr. Paley.

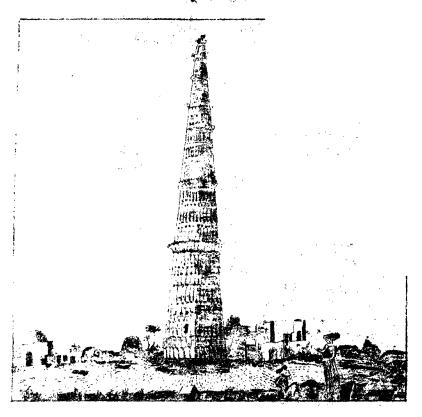
হইতে ভূমগুলছ যাবতীয় বর্ণের উৎপত্তি করিতে পারে। বিশেষতঃ সাতটি পৃথুক্ পৃথক্ বর্ণের যোগে আলোকের উৎপত্তি হইয়াছে, কিন্তু উহার সংযোগ ও মিশুণের তাৎপর্যাঅমুসারে আসর। কুর্যাদি জ্যোতিয়াল্ পদার্থ হইতে চির দিনই নির্মাল পরিষ্কৃত আলোক প্রাপ্ত হইতেছি।

আলোক হেতু বিবিধ প্রকার ফল সম্খা-मि आयोग्यक इस धवर नाना काठीप পত্র পুজাদির দৌগরি ক্ষযে। জ্যোতি বিবহীন স্থানে বীজ অমুরিত হওয়াই कित, यहिए कान कीमाल वीकार अन-রিত করিতে পারা যায়। তথাপি ভত্তৎপন্ন বুক্ষ ফিলতা স্বজাতীয় বৰ্ণ প্ৰাঞ্চনা হইয়া নিক্স ও বিবৰ্ণ হয় এবং কোন পুষ্পে কি करन छेलयुक्ट क्रम बारनाक ना नातिरन তাছারা যথা মন্তব সৌরভ ও স্থাদ বিশিষ্ট হয় না " আধুনিক পদার্থ বিদ্যা দারা প্রকাশ পাইয়াছে,যে কোন প্রকার উদ্ভিদের উৎপ-ত্তি স্থিতি নিমিত্ত ও কল পুষ্প বিশিষ্ট হই-বাব জনা যেমন কিয়ৎ পরিমাণ উদ্ভাপের আবশ্যক হয়,সেইৰূপ সম্ভবমত আলোকে-রও প্রয়েকন হ্টয়া থাকে। আলোক-ভিন্ন কেবল উত্তাপ দারা প্রায় কোন প্র-कात উদ্ভिष्टे स्ट्रांक काल करम ना अवर প্ৰায় কোন উদ্ভিদই প্ৰকৃত ৰূপে কুসুমিত ও ফলশালী হয় না। আলোক যেমন জগদী-শ্বরের উল্ভিদ রাজ্যের নানা প্রকার কল্যাণ সাধন করিভেছে, সেইৰূপ আলোক হইতে বহু প্রকার জীব বছুবিধ উপকার প্রাপ্ত হ-रेट्डिक, बार्लाकाजारव कीव नतीव करम विवर्ग ও विक्रुष्ठ रुहेशा शाम, बादनाक गतूराकां जित्र मानाइत्र औरक ७ छक्त करत । मसूब। वांत्र त्रीर्वकान आत्नाक मूना অন্ধকার ময় স্থানে বাস করে তাহা হইলে कत्म कत्म जाहात जीत चात्मक हाम हरा।

আমরা উদ্ভাপ বিশিষ্ট সূর্যা কিবণ হইতে যে উপকার প্রাপ্ত হইতেছি, তাহা সংক্রেপে কীর্ত্তন করিরা কোনমতে কান্ত ইইতে পারা বার না। ইহা সক্ষতোভাবে হির হইরাছে যে ব্রক্ষাণ্ডে উদ্ভাপ না থা- কিলে ব্রহ্বাণ্ডস্থ স্থল জল যাবতীর পদার্থ পায়াণ পিণ্ডবৎ একত সংহত ও কঠিনত ইয়া থাকিত। ভূম হলের মৃতিকা রাণি পাৰাণ সদৃশ কঠিন হুইড এবং প্ৰশস্ত প্ৰ শত সমুদ্র সকলও ভুযার ছীপবং পতিত ধাকিত। কি ভূলোন কি ভূলোক প্রস্না-**ওের বত দুর প্রান্ত অবগত হুইতে পার**: नियाद्य, जाराव मख्यक्षे मकल अमार्थंड আকর্ষণ শক্তি দুট্ট হইয়াছে, প্রত্যেক প **দার্থ**ই অপেনার নিকটতর ও আপ্নার অপেক্ষা কুদ্রতার পদার্থকে আকর্ষণ তে পারে, স্কুতরাং বিশ্বক্ষেত্রের পর্বাত্র কে-ৰল এক আকৰ্ষণ শক্তির প্রভাৱে থাকিলে ত-দন্তর্গত বস্থ সকল এক স্থানে আক্রমী চ ইয়া পাষাণ পিণ্ডবৎ হইয়া থাকিত, সন্সেচ নাই। ব্রহ্মাঞের বর্তমান অবস্থার জনা जे चाकर्सनी শক্তির কোন প্রতিবিধান কৰ্ত্তা থাকা নিতান্ত আবিশ্বাস, উত্তাপে ঐ আকর্ষণের প্রতি-বিধায়িনী শক্তি দেখিতে পাই , কিন্তু উত্তাপ কোন পদার্থকে সংহত ও কাহার সহিত সংযুক্ত হইতে দেয় না, উহা সকল কঠিন পদার্থের পরমাণু সকল পৃথক করিয়া তরলাবস্থায় পরিণত করে এবং তরল পদার্থকে বাজা করিয়া থাকে। জগদীখর উত্তাপের সৃষ্টি করাতে আমরা সংসার মধ্যে সলিলাদি ত **तम পদার্থ প্রাপ্ত হই**র। জীবন ধারণ করি তেছি এবং বাষ্প্র খার। নানা প্রকার মহ **কার্যা সম্পন্ন করিতেরি। উত্ত**াপ প্রা **আমর। ধাবতীর ভূপক্রিল। ও রসংলন আ** পার সম্পন্ন করিয়া আপনানিপের স্থপ সং धन ७ मध्यात्वत् 🗐 नयर्फन कृतिर एष्टि धर উদ্ভাপ দারে৷ বিবিধ একার কল শতাঃ৷ **সুপ্**কৃ **হইতেছে।** অতথ্য উদ্ধাপ বিশি ষ্ট স্থর্য্য কিরণাদি ভার। আনবা যে সকল ব্লাশি রাশি উগকার প্রাপ্ত ক্রতেছি, তাং। বর্ণন করিয়া শেষ করা অসাধ্য। যিনি ক্রপা क्रिया उन्नाख मध्य अहे यदम्य मञ्जाकत **জ্যোতির স্থাট করিয়াছেন, সেই জ্যোতি**ন জ্বোতি পরম জ্যোতিকে সক্তজ চিত্ত প্রাণিপাত করি:

^{*}Furgu's Natural Theology.

কুতব্মিনার।



হিন্দু জাতির পূর্বকীর্তি।

ভারতবর্গীয় প্রাচীন চিন্দু রাজারা যে
সমস্থ অপুর্ব্ধ অট্টালিকামরী সুলোভিতা
রাজপুরী, চূর্ল জা পরিথা পরিবেন্টিত তুর্গম
চর্ম, অতুচ্চে গগন স্পর্ম প্রায় মহোক্ত ক্ষম
গগ, নামা বিধ রক্ষ শ্রেণী গোভিত সুদুর
নামি বি সর্ব্দ শ্রেণী গোভিত সুদুর
নামি বি সর্ব্দ শ্রেণী গোভিত সুদুর
নামি ব সর্ব্দ শ্রেণী ও প্রেশক দীর্ঘিকা এড়ত অভূত কবি প্রকাশ করিয়াছিলেন,
কালেতে করিয়া প্রায় তাহার ক্ষিকাংশই
গণ ও পুর্গ্রহইয়া গিয়াছে। বিশেষতঃ ভান্
রহবর্ষ বারষার ব্যন হত্তে পতিত হুওয়া-

তে এবং দীর্ব কাল ঘবনাবীনে বাম করাতে তদীর প্রাচীন হিন্দু রাজানিহগর অসামান্য কীকি চিক্ত সকল বিধিমতে বিক্রিকিত হইরাছে। নির্দর ব্যবন সন্থানেরা জারতবর্ষ অধিকার করিরা বিন্দুনাম বিলুগু
করিবার উর্কেলে কোরা বতে অভ্যাচার
করিতে লার অপেকা রাবে নাই। হিন্দু
দিগের অলেব যতু সম্পান বিবিধ প্রকার
আন পর্য গ্রন্থ সকল রালি রাবি করিরা
কর্ম করিরাকে, অপুরু সালুরা অন্টালিকা
নকল ভয় ও চুল করিরা করানাৎ করিয়াহে, বজ্ববার ও বজু সাল্যা উৎক্রা দেব
মন্তির সকল সানামতে বিক্রত ও স্থাত-

রিভ করিয়া আপনাদিগের মনোমত মন্ জিল আকারে পরিণত করিয়াছে। তুর্গ সকল তুর্গত্যাপন্ন করিয়াছে, নগর সকল লুপ্তন ক-বিয়াছে, রাজপথ রুজ করিয়াছে এবং নানা প্রকার দারুময়, পাষাণ্ময়, সৃগ্ময় ও চিতাম্য অপুর্ব্ধ দেব প্রতিমুর্ত্তি সকল ছিন্ন ভিন্ন ক-রিয়াছে, তথাপি এই সকল অত্যাচারের পর অবশিক যে কিছু হিন্দু কীৰ্ত্তি অদ্যাপি ভা রতবর্ষের স্থানে স্থানে বিদ্যমান আছে, ত খ্যাধ্যও অনেক উৎকৃষ্ট ভাগ ধাৰ্বনিক নামে ও ঘবন কীর্ত্তি বলিয়া পরিচিত হইয়া রহি-রাছে। এই প্রস্তাবের শিরোদেশে যে উ-চ্চতর মনোহর প্রাসাদের প্রতিমূর্ত্তি প্রদ-র্শিত হইল, উহা বস্তুতঃ হিন্দুকীর্ত্তি, কিন্তু अकर्प अरमरम छेह। यदनमिरश्रत निर्मिष्ड दिन्या প্রসিদ্ধ क्षेत्राट्ड। यवटनता উভাকে কুতবন্দিন বাদসাহের জয়ন্তন্ত বলিয়া প-রিচয় দেয়, এই জনাইংরাজ জ্ঞাতি উহা-কে কৃতব মিনার* বলিয়া উল্লেখ করেন। স্তম্ভাকার ঐ উন্নত প্রাসাদ দেখিতে অতি अञ्चल, (लप्रेंद्रनके तुके मारहव शतिमान क विशा त्रिवाहिन य छेङ आनाम धाय ১৬১ হস্ত উচ্চ, এবং বিলক্ষণ প্রশস্ত । উহরি উপফীয় বা অধোভাপের পরিদি ৬০ হজের ম্যান নহে এবং উপরিভাগেরও পরিধি প্রায় २० इटलुत् भूगन हडेटव्क मा 🕛 अडे अ-কাণ্ড স্তম্ভাকার প্রাসাদের মূল হইতে শি-খর প্র্যুম্ভ সমান গঠন নহে, উহা ক্রমে উদ্ধেসকু হইয়া উঠিয়াছে এবং বিভিন্ন প্রকারে নির্মিত হইয়াছে। ঐ স্তম্ভ মুল হ-ইভে একশত বিংশতি হস্ত উৰ্দ্ধ পৰ্যান্ত ক-সরময় লোহিড প্রস্তুর দ্বারা নির্দ্ধিত এবং চতুর্দ্দিকে সপ্তাবিংশতি খোদিত রেখায় স্থ-ন্দর ৰূপে রচিত, ভদুর্চ্ছে শিখর দেশ পর্যান্ত উৎক্লট খেত প্রস্তর দারা গো-লাকারে নির্দিত। উপষ্টম হইতে শি-খর দেশ পর্যান্ত চারি স্থানে চারিটি अपृष्ण वाताला जाटह। अधम वाताल ७० হস্তের উপর, দিডীয় ৯৪ হস্তের कृबीत ३२० इत्यत खनत वनः P 20 4

বারাপ্তা প্রায় ১৩৫ হন্তের উপর শোভা পা ইতেছে। প্রত্যেক বারাভারই চতুর্দিকে রেল বেন্টন করা আছে এবং প্রতাকে-তেই অভাণর হইতে গমন করিবার পথ আছে। উলিখিত বারাতা চতুট্য প্রাসাদ বহিন্যিংস্ত দৃচ্তর প্রস্তর থাণ্ডে স্থিত আছে কিন্তু ভাহা স্থাপন করিবার কৌশল অভি **७४८**कात्र । ইজ্ছা করিলে *रमारकत भारता चारनाक अक कार्रम* थे বারাগুয়ে গমন কবিরা অনায়াদে ভক্তভঃ ভ্রমণ করিতে পারে: **अभिार्** क মূল হইতে উৰ্দেশ প্ৰ্যান্ত এক উৎকৃষ্ট চক্রকার আবর্ত্তমশীল শোপান খাছে, ঐ শোপান দিয়া প্রায় উহার চুড়া প্রয়স্ত আ ताह्य कता बाब धवर भाषात्मत महरा অাসিবার বায় ও আলোক আছে, ঐ পথ দিয়াই বারাপ্তাতে মাইতে পারা যায়: এই স্তয়ের বহিভাগের চা-রিদিকে আরবিক জক্ষরে যবন জাতির ধর্ম পুস্তক কোরাণের বছতর বচন লিখিত আছে 📲 ফলতঃ ইহার বর্তমান অবস্থ! সনদর্শন করিলে সহসা ইহাকে মোসলমান দিগের কীর্ত্তি বলিয়াই বোধ হয়, কিন্ত ইংলণ্ডীয় এক ব্যক্তি স্থবিচক্ষণ পণ্ডিত বভ্তর প্রবল প্রমাণ ও যুক্তি দার। এই হ: **শাদকে হিম্মুজাতির নির্দ্মিত বলিয়া প্রতি**-পথ করিয়াছেন। নিরপেক্ষ নিচার ভারলখন করিলে কোন ব্যক্তিই তাঁহার প্রথাবাদি **অঞান্ত করিতে পাবেন** না, তিনি লে দক্র প্রমাণাদি প্রয়োগ করিয়াছেন ভাষ্ট প্র **শ্বাতে সংক্ষেপে উক্ত হইতেছে**।

ভারতবর্বের মধ্যে মুসলমান জাতি থে সমস্ত অট্টালিক। ও স্তম্ভাদি নিদ্মাণ করি-য়াছে, তাহার কিছুতেই হিল্ফুদিগের কেন চিহ্ন দেখিতে পাওয়া যায় না,কিন্তুকুত্রমি-নারের স্থানে স্থানে প্রস্তর উপর অদা। পি অনেক দেবনাগর অক্ষর বিদ্যান আছে। মুসলমান জাতি হিল্ফুদিগকে এত ঘূর্ণা করে এবং হিল্ফু জাতির প্রতি উহাদিগের এমত প্রপাঢ় স্বেষ দেখিতে পাওয়া যায়, যে উ হারা কোন বিশ্বেই ক্লিফুদিগের অক্সকর।

[·] fanta mails the war estated to

[†] Asiatic research vol. 4th

Asiatic research vol. 4th.

ক্রেনা। সভএব উল্লিখিড প্রাসাদ সু-বল্লান দিবের নিশ্তিত হইলে তাহাতে দে-বনাগর অর্থাং সংস্কৃত অকর বর্তমান থাকা কেনে মতেই সঙ্গত হইতে পারে না। य-খুন মুদলমান দিগের কোন অটালিকা क्ष रहत्त्वामिएक दिन्छ काठित **रमयमानता**मि প্রফার দেখা যার না, তথন দেবনাগরাক্ষর বক্ত প্রস্তুর নিশ্মিত কুত্রমিনারকে কি প্রকারে সংশয় রহিত হ্**ইয়া যুগলমান জা**-তির কার্ত্তি বলা ঘাইতে পারে। হয় উপরোক্ত ক্ত**ের দর্বারই** দংস্কৃত বর্ণ লিখিত ছিল, পারে তাহার অধিকাংশই মু-বলমানের), উল্ভোলন করিয়া ফেলিয়া দি-লাছে, আৰু ঘাছা উল্ভোলন ক্ৰিতে পারে माडे खबरा (य मकत नाम जिल्ला रा <u> जिरोहेश क्लिल जुन उत्हत श्री हत,</u>

খমনি পূর্ব লিখিত সংকৃত আকরে লেভ কৃত্য পিয়াছে। মুসলমানের কভৰনিনাৱের উপরি ভাগ ভগ্ন করি-প্রধান্তর দার। পুনর্নিশ্মিত করিয়া ভ-জুপরি আর্বিক অক্ষর দারা কোরাণের পদ বিন্তু করিয়াছে ইছা নিতান্ত অন্তুমের কথা নহে ইহার অনেক স্পাট প্রমাণ প্রাপ্ত ২৩খা গিয়াড়ে 🔻 এফাণে ঐ ভারের **বহি**-ভানে লোহিত বৰ্ণ প্ৰান্তর দেখা যায় এৰং অন্তর্জালে প্ষর বর্ণ প্রতার দৃষ্ট হয়, কিন্ত বিশিক বিশিক্ট শিশে নিপুণ ব্যক্তি পরী-ক: করিয়া দেখিয়াছেন, যে কুতবনিনারের বহির্জাগে যে প্রস্তর আছে, তদপেক্ষা অ-ভঙাগোর ধ্যর বর্ণ প্রস্তর অধিক দৃচ এবং অধিক আৰু স্থায়ী ৷ অভএব বিলক্ষণ श्रानिम्म स्ट्रेडिड **एव पुनलमारम**त्रा वे মত্তকে ঘরদ কীত্তি প্র**তিপম করণো**-্দশে উহার রেহিছানের ধ্যর বর্ণ প্রস্তর **डे**ंटा जन क्रिश তৎপরিষর্ভে লোহিত বৰ্ণ প্ৰস্তৱ বিনাম্য করিয়া ড-

করিয়াছে ৷ কারণ সকল কা**লে ও সকল**দেশেই এই পদ্ধতি দেখিতে পা**ওয়া বা**য় বে লোকে বলি বিভিন্ন প্রকার উপকরণ বারা কোন নউালিকাদি বিশ্বাণ করে, ভাষা হুইলে তথ্যধ্য যে বস্তু দীর্থকাল স্থায়ী

ব্চন

সকল

रहेदव अवर बाहा जिनका पृष्ठ, उचाहाई व-হির্দাণ নির্দাণকরে এবং তরপেকা কর मीत डेनक्रनरक्रे अकुडारन दिवास करत. कुवाशि रकान भिष्ण कात्रक अहे छेर क्रके পদ্যতির অন্যথা আচরণ ক্রব্রিতে দেখা যায় ন**া ভারতবর্ষে সুসন্মান**ুদিগের যত अम्रोनिकाणि **जात्ह, डाहाट्ड अहे शक्**डि দুক্ত হয়। মুসলমানের। যে পূর্ববতম হিচ্ছ পরিচয় দিবার অভিলাবে বছতের হিন্দু মঠাদি এই⁾ ৰূপে ৰূপান্তরিত ও ভয় করিয়া তদুগরি আপনাদিলের অভিনত মসজিদানি নানা প্রকার গঠন নির্মাণ ক রিয়াছে, কেবল কুতবমিনার একমাত্র তা-হার নিদর্শন ছল নহে, ভারতবর্ষের নানা স্থানে তাহার আরেও বহুতর নিদর্শন বিদ্যা-মান আছে। ছাদান্ত গ্ৰন রাজারা বারাণ্নী-র বিস্তর দেবালয় এই ক্রপে নট ও ক্রপান্ড রিত করিয়া আপনাদিগের ছেম পূর্ণ নিষ্ঠার স্বভাব প্রকা**শ করিয়াছে "। অন্ত**এব ধ্যনদি-গের **বেব পূর্ণ চুর্বর ক্ত স্থভাব দারা বিশক্ষ** প্রমাণ হইতেছে,যে উহারা হিন্দু দিনোর পূ বৈবালিখিত প্রাচীন ফীর্তিকে বিক্লত করি: য়াই কুডৰমিনার নামে পরিচয় দিয়াছে :

ছিতীরতঃ **কুতবমিনারে** যে প্রকার ভা-व**ंकि ७ १४ के ८५थ। यात्र हिन्छुन्छान भ**रका কুত্রাপি আর কোন বৰন মন্দিরে সে ৰূপ দেখিতে পাওয়া বায় না। কুত্বমিনারের অতি সমিকটে সমস্থাদিন বাদদাহের ক্লুত একটি অপরিসমাপ্ত প্রাসাদ আছে দিলী अरहरम *क* हे जन अने अपिक चारह, स न-মস্তুদ্দিন সাহ কোন কারণ বশতঃ ঐ আ-রক স্তর্জাকার প্রাসাদ স্মাপ্ত করিতে পারেন নাই। यादा হউক थे यदन कर्डा সহিত যদি কোন বুদ্ধিমান লোকে কুছব-• सब्दम्यः विद्युपद्वत् भूक्तं अस समिद्वतः व्यक्तिनाः में छद त-हिया धनक्रिम विन्द्रीन करब अवर के साल विक्रमध्यक महेल मणे क्रिया कृष्टे खंडाकारत नहिन्छ करते, अवस्थि वातान-मीत बाहर बाह्य कूछ कूछ दिशासय यहन कर्जूक हुना छ রিত ত্রীয়া হওনী হুইয়া যায়।পুরাজন বিশ্লীতে ছিল্ল নিগের अस केंद्रके मानवित्र दिश किरदाक्रभाव के मिलताक का भन भूती प्रत्या **महिन्छि** कहिया खनाएम श्रांड करन । Excursion in India by a field officer of the corps of Bengal

মিনারের তুলনা করিয়া দেখেন, তাহা इंड्रेट्स बात छिनि हेशक हिन्द्वकी-র্ত্তি বলিয়া অঙ্গীকার করিতে কণমাত্রও বিলয় করিতে পারেন না। এতছভয় ত্ত-দ্ৰের মধ্যে একটিকে ধৰন নির্মিত বলিয়া শ্বীকার করিলে অপরকে আর কোনমতেই যবনদিগের কীর্ত্তি বলিতে পারা বায় না, इंश्वामित्रात मध्य को नाम । आकातामि कान विषयात्रहे विन्छू माख भावृष्य नाहे। কুতব্যনার যে সকল উপকরণ দারা ও যে প্রকার কৌশলে নির্মিত সমস্থলিন সা-হের তত্তে তাহার কিছুই দু**র্ক** হয় না। কুতবমিনারে যে সকল রুহৎ রুহৎ প্রস্তর খণ্ড ও যে প্রকার সন্ধি সংযোজক উপকরণ দেখিতে পাওয়া যায়, উহার নিকটস্থ দিতীয় ন্তভে সেপ্রকার এক খণ্ড বুহৎ প্রস্তর বা এক বিন্দু উপকরণ দৃষ্ট হয় না এবং े... उष्ठ य कर्ष कुछ कुछ श्रस्त वात নিশ্মিত এবং উহার সন্ধি স্থানে যেমন রাশি রাশি চুর্নাদি উপকরণ লিগু আছে, কুতৰ-मिनात तमक्ष कि हूहे नाहे, बड़े छेड़ा आ मामाक जूनना कतिया प्रिश्ति जात्राम সকলেরি প্রতীতি হইতে পারে, যে কুডব-মিনার কোন ৰূপে খবন দিগের নির্দ্ধিত নছে। বিশেষতঃ কুত্রবিদারে যে প্রকার আশ্বর্যা কৌশলময় শোপান ভারতবর্ষের মধ্যে কোন ঘরন মন্দিরে নে প্রকার শোপান নাই।

তৃতীরতঃ ধবনের। বে কৃতবমিনারকে বনামে পরিচিত করিবার জনা উহার বহি দেশের প্রস্তর দকল উজোলন করিয়া তহু পরিবর্তে জন্য প্রস্তর বিন্যুত্ত করিয়া তছুপরি আরবি জক্ষর লিখিয়াছে , তাহার আরও এক প্রমাণ প্রাপ্ত হওয়া দিরাছে। উক্ত ভয়ের বহির্ভাগ অন্যাপি মুড়ন প্রায় রহিয়াছে এবং বহির্ভাগের লিখিত আরবি জক্ষর সকল কিছুমাত্র অপনীত হয় নাই, কিন্তু জন্তভাগের আকার জনেক পুরাতন হইয়াছে এবং তত্তত্ত্ব দেবনাগর জক্ষরান্তি জনেক অপনীত হইয়া দিরাছে, একাণে ইয়া বিবেচনা করিয়া দিরা আবক্ষর যে ভরের জন্তবাহু ছই

ভাগ এক কালের নির্মিত হইলে অবঞ্জ অথ্যে উহার বহিভাগই বাত রুটি ও রোলা দির ছারা ক্ষর ও জীন হইত, অন্তর্গ নে রৌদ রুটিআদি কোন উৎপাত উপছিত হইবার সম্ভাবনা নাই, স্তরাং অন্তর্গা কথনই অথ্যে জীর্ণ হইত লা। অত্যান কু তব্যিনারের বহিভাগে আরবি অক্ষর ছার কোরাণের বচন সমূহ লিখিত আছে ব লিয়াই উহাকে কোন ক্রমে নিঃসংশ্রে ব্যব কীর্ত্তি বলিতে পারা বায় না।

केन्ट्रबंडः दिशन शाहीन् विस्तरप्तत भागः সত্য নির্দ্ধারণ স্থালে সাধারণ অনুক্রতি সর্ব্ব जरे व्यवन व्यमान दनिक् शर्। इतः व्यक्तरम अन्यानि विनक्षम कनवाठि चारक ,যে পৃথ রাজা স্বীয় কনারে প্রত্যেহিণ 🐰 टिशामग्र ७ यमुना मर्भन खना व्ये छेकछत थाः नाप निर्माण करवन। न्नीरमन नारहर अ প্রণীত এক গ্রন্থ মধ্যে লিখিয়াছেন, নে তিনি নিন্ধীনগরে উক্ত প্রকার জনশ্রুতি শ্রু-বণ করিয়া অনেক অনুসন্ধান করাতে তত্ত 🔻 मसारहेत धकलन धवान कर्माहादि 🍪 **হাকে** অবগত করিল, যে " অমিরা চিরকা-**ল এইৰূপ শুনিয়া আদিতেছি, কু**ভব্মিনায় कान श्रवंजन हिन्छू ताजात की हि। हैन। কালে অরুণোদয় দর্শন ও হিন্দুদিরোর গ विज नहीं राष्ट्रनात कव सनस्थन कना 👊 🚉 नाम अञ्चल इस । " यथन विक्री इ म्यादीन अधान कर्याहाती भगास में नाभ खरतान প্রমাণ প্রদর্শন করিল, তথ্য উক্ত জন্তণতি কেও নিভান্ত অমূলক বলিয়া ভাটান্ত কয়:

शक्षमण्डः देव ज्ञास्य कूण्यमिमात विभागमा जारहः. উक दान त्य भूत्यकारण हिन्छूनिर्णात्र निवास कृषि ए हिन्छ ताजानिर्णत ताज्यानी निल्म, जाहारण जात रकाम सरम्म ह गाहे। थे द्वारम कूण्यमिमात जिल्ल जात । थे द्वारम कूण्यमिमात जिल्ल जात । इस्कृतिरात ज्ञासमा कृष्टिक्क आत । कृण्यमिमात्रत एकुर्तिराक्क आत । इस्कृतिरात उग्र थानानि वितास कृष्टिक्क वितास । कृष्टिक्क वितास ।

^{*} Ramble do in India by L. C. W. H. Sher.

্রপুর্বা লৌহ সম্ভ আছে। পুরা**কালে হ** खिनानगटन एव वाक नात्म धक साका देशि পরিতেন, তাঁহার সঞ্চিত **নিতু প্রদেশীয়** াজ্বিক জাতির বিস্তর **সংগ্রাম হয়, পরি** শেষে তিনি বাহ্মিক দিগকে পরাজয় করিয়া স্ব'ড় জয় স্বড় স্বরূপ ঐ লৌহ স্ত**ন্ত মিন্দ্রাণ** न्दरक्षण : देवकव **धर्मावनकी भन जाका त्य** ্তিকক্ৰিপের টোরাক্সাধ্ইতে স্থীয় রাজ্য ্রক্ট করেন এবং ভাহাদিগকে বার্যার যদে পরাজয় করিয়া ছিলেন, ভাহা তাঁ। ার রুত উক্তে সৌহ স্তয়ের উপার সং-কৈ ভাৰায় অদাপি লিখিত আছে।+ धरे लोह स्टब्र व्यत्नक शास आ-লার চিক্ন দেখিতে পাল্ডয়া যায়, এবং ই-হার কোন কোন ভান কামানের পোলার ্ডকে ক্ষত বইয়াও গিয়াছে, ইয়াতে বি-াজণ ব্যের কয় যে জুরুভি **খবনে**রা এই া হ স্বস্থকৈও ভয় ও নিংশেষিত কবিবার ্ট্টা পাইরাছিল কিন্তু **ইহা সমধিক দ**ঢ় अस्त्रवं आरङ्ग विद्याः हेशाकः छन्न कतिः र पादा नहीं। यह उन्हार्क ७ विन-জন বেলে হয়, যে জুতসমিনার পুরের **হি**-न्युमिरभड़ की जि. हिल, शरह ध्वन कर्डुक ৰূপান্তবিত হইয়াছে:

বছাতঃ যবনের। কুতবিমিনারকে কুতব দিন বাদসাহের কুত বলিয়া পরিচয় দের। কিন্তু কুতবিদিন দিল্লীর সিংহাসনে পাঁচ বংসরের অধিক রাজা করেন নাই, তিনি ২০৫ খ্রীকাতে দিল্লীর সিংহাসনে অধিকঢ় হয়েন এবং ২২১০ শকে ভাঁছার লোকান্তর

কার্মান এবং হং ২০ শক্তি ভারা লাক্ষর বিষয়ে বিশ্ব কর্মান কর্মান

Exercision in India by a field officer of the

প্রতি হয়, স্বতর্গ এই পাঁচ বংশরের মধ্যে তাহার ছারা কুত্রমিনার সদৃশ ওড় নির্মিত হওরা কোন কপে সক্ত হইতে পারে না

মহাভারত।

ष्मामिश्दर्भ।

१७ काशास महत्रभक्त ।

জনমেজয় কহিলেন, হে তপোধন!
দক্ষ প্রজাপতি হইতে বংশ গণনাম বিনি
দশম হলেন, সেই ব্যাভি রাজা পরম
দুল্ভা শুক্র তন্ত্রা দেবয়ানীকে কি
প্রকারে লাভ করিয়াছিলেন, আমি তাহা
বিতারিত রপে শুনিতে রাসনা করি, ও
ব্যাভি রাজার বংশ সকল আরুপূর্বিক
শুনিতে বাঞা করি, আপনি পৃথক রূপে
বণন করন।

देवें भागायन कहिएनन, देख नम अछाप শালী নভবের পুত্র যযাতি রাজাকে পুর্বের শুক্র ও রুষপর্ববা যে ৰূপে বরণ করিয়াছি লেন, এবং তি**নি যেকপে দেবয়ানীকে লাভ** করিয়াছিলেন, হে জনমেজয় : তৎসমুদায় আমি তোমার নিকট বি**ভারিত ক্রপে ব**র্ণন করি। পূর্বকালে এই জলোকা রাজ্য লইয়া একদা দেবতা ও অস্থর দিগের পর-স্পর ঘোর সংগ্রাম উপস্থিত হয়, তৎকালে দেবতারা জয় লাভার্থে রুহস্পতিকে বক্তা-মুষ্ঠানে পৌরোহিত্য কর্ম্মে ব্রতীকরেন, এবং অসুধের: শুক্রাচার্যাকে উক্ত কর্মে বরণ করেন। তথন বৃহস্পতি ও গুক্ত উভয়েই পরস্পর অত্যন্ত স্পর্মা করিছে লাগিলেন। शरत डेक बृद्ध (मवडात्रा व वक्त मेन-वटक वध करतम, अध्यामाचा विशाहितन ভাষামিগকে পুनकी विक कहिया सन करेर তাহায়। উপিত হইয়া পুৰস্কাল এরর জানি-গের সহিত পুক্ত করিতে জারক করে। कि सञ्चात्रका त्य मकन त्रविष्ठात्क कुत्क विमान करत, खनावरी व्यक्ति मात की रामिशास्त्र श्रमकीतिण क्षितिण शास्त्रमं ना (सहस्रु दीवीबाम अकाठाकी त्व दिला काता " Asiatic research vol. Wh

नुनर्भोदिक करतन, दूरम्मिक रमहे महीव-नी विका जानिस्टन मा। शस्त्र स्वरणाता विकासाम्ब ७ अक छता छिवध रहेता हर-স্পতির ভোষ্ঠ পুত্র কচের নিকটে রিয়া कहिलास, ८१ कर ! जूमि आमानिराज अक মহুখ উপকার ক্র, অমিড তেজন্বী শুক্রাচা-र्या त मझीयनी विका जात्मन, जूबि जाश म-বুর হরণ করিয়া আন। আমরা তন্দারা দৈত্য গণকৈ পরাজয় করিলে তুমি আমাদিগের এक चरनी इंडेरन। तुष्पर्यात निकटि শুক্রকে দেখিতে পাইবে, তিনি দানব গণকে রক্ষা করিতেছেন, দেবত। দিগের সাহায্য করেন না। ভূমি বালক, ভূমিই डाँहाর आताधनात ममर्थ इट्टेंद । जन-रानी (महे महाचात कना।, काहादक जा-রাধনা করিতে ভোমা বাতীত আর কেছই সমর্থ इट्ट्रिनः। भील, দাক্ষিণ্য, মাধ্র্য্য-काहात ও मन्ना, এই मकल मन्धन बात ्मबयानी शतिङ्के हरेलारे जुमि निकत ्म हे विमा। श्रीख इहेरव। जनस्त्र हरू-স্পতি স্তুত কচ তথাস্থ বলিয়া স্বীকার ক-রত দেবতাগণ কর্ত্তক সমাদৃত হইরা রুষ-शक् ममीर्भ शमन कतिरामन। रह तासन्! দেব প্রেরিত কচ সত্বর গিয়া অস্থরেন্দ্র রুষপর্ব্বার সমীপে শুক্রকে 🐙 বিয়া কহি-লেন, আমি আঙ্গিরস শ্ববির পৌজ, সাক্ষাৎ বুহস্পতির পুত্র, আমার নাম কচ, আমা-কে শিব্যু ৰূপে গ্ৰহণ কৰুন, আমি আপ-नाटक स्थार श्रीकात्र कतिनाम, आश्रनात नि কটে ব্রহ্মচর্য্য আচরণ করিব, আমাকে স-হক্ত বৎসর ব্রহ্মচর্য্য আচরণে অনুমতি ক-कर्न। अक कहिलान, हर कर। कामात নকল হউক, আমি ভোমার প্রার্থনা গ্রহণ করিলাম, ভোমার পিত। বুহস্পতি অতি পুজনীয় অভত্তৰ আমি তোমাকে সমাদর পুৰুক বন্ধচৰ। ব্ৰভ উপজেশ করি। বৈশ-ग्गांत्रन करिएमक् एर **जावर** कर, कुश পুত্ৰ উপৰা পুক্ত কৰ্তৃক আছিল ব্ৰাড় धार्य कतिर्तन अवर बहुबाक उत्कत वि-য়নিত কালে উপায়ালের ও কেবরানীর আ-রাশমা করিছে লাগিলেন। নিত্য নিত্য उजातन भारतमा क्या र्कानी उनामा

ছারা দেবধানীর পরিভোষ জনাইলেন। হে ভারত! তিনি পুষ্পা কলাদি প্রদান ও সংস্থাব প্রদর্শন ছারা প্রাপ্ত যৌবনা দেব-**যানীকে সম্ভক্ত করাতে দেবয়ানীও** গান বাদ্যালাপ দারা নিয়ম ব্রতচারী কচের পরিচার্য্যা করিতে লাগিলেন ৷ এই ৰূপ ব্রত আচরণ করিতে **করিতে** পাঁচ শুড বৎপর অতীত হইল। অনম্বর দানবেরা ইহা বুঝিতে পারিলা একদা নিজহুন 🜉ন একাকী আঢার্য্যের গোরকণ ব্রতে নির্যুক্ত কচ**কে দেখি**য়া বৃহস্পতির প্রতি ভেষ বশতং সঞ্জীবনী বিদ্যারকার নিমিত্তে ক্রো**র্টে**। হাকে বধ করিল এবং তাঁহার শরীর খণ্ড বাও করিয়া বনা শূগাল কুজুর গণকে ভক্ষণ করিতেছিল। হে ভারত! তখন গে। সকল অরক্ষিত হইয়া স্থীয় নিবেশনে আসিয়া উপ-স্থিত হ**ইলে দে**বধানী কচ বাজীত তাহাদি-গ্লকে দেখিয়া পিতার নিকটে গিয়া কহিলেন. হে তাত! হে প্রভো! আপনার অগ্নিহোত্তে আছতি প্ৰদক্ত হইল এবং সূৰ্য্যও অন্তগত হইলেন, আর গো সকলও অরক্ষিত হইরা আগমন করিল, এপনও কচকে দেখিতে ছিনা, অতএব নিশ্চই বোধ হইতেছে, তিনি আহত বা মৃত হইরাছেন। আমি সভ্য কহিতেছি, কচ বাতীত কথনই প্রাণ ধারণ করিব না। শুক্র কহিলেন, এখনই তিনি আনিবেন, আমি মুত কচকে জীবিত क्रिन, हैश विनिश्च मञ्जीवनी विना श्राट्यांग कत्रज्ञः कारक आस्तान कतिराजन । क्र विमाविद्या मुगील कुकुड भागत महीत করত আসিয়া উপস্থিত চুইলে দেৰবানী কহিলেন, তোমার এত বিলয় **क्रम इन्ज ? ंक**ठ উन्जत कतिरालन, रह जा-বিনি! আমি আগমন কালে সমিৎ কুশা কৃতিভারে পরিআন্ত হইরা গোগণের সহি-ত এক বটরুক্ষ ছারা আশ্রন্ন করিলাম, এম ত কালে **অস্তরে**রা আমাকে দেখিয়া জি-জ্ঞাসা করিল, কে ভূমি? আমি কহিল।ম, রুহস্পতির পুজ,আমার নাম কচ। ইহা বলি-বামাত্র ভাহারা আমাকে বধ করত আমার শরীর খণ্ড খণ্ড করিয়া শূর্গাল কুরুর গণ্ডক सक्त क्रिटिंग दिसा स्ट्रेंग भूटर भूमन क्रिन। হে ভৱে ! একণে মহান্তা ভাগৰ কৰ্তৃক বি-দ্যাবলে আহুত হইবামাত্ত কোন প্ৰকারে জীবন প্ৰাপ্তি পূৰ্বক তোমার নিকট আগমন করিলাম।

অনস্তর একদা পুষ্পাহরণার্থ কচ দে-বাঘানী কর্ত্তক প্রেরিভ হইয়া বনে পমন क्टतन, धवर **अञ्चरत**्र (मि**रिशा छै। हा**त्र শ্রীর চুর্ণ করিয়া এককালে সমুদ্র জলে মি-🍞 করিয়া দেয়, পরে দেববানী কচকে ন[ি]দেখিতে পাইয়া পিতার নিকট নিবেদন করেন, শুক্রও বিদ্যা দারা ভাহরাম ক-রাতে কচ পুনর্বার আগমন পূর্বাক দেব-यानीत मिक्टे यथान्य मध्य द्वजान नि-বেদন করেন। ভূতীয়বার অস্থরের। কচ-टक हुन कतिया मक्ष कत्र शक्तानार्यात পানীর স্কুরায় মিজিভ করিয়া দেয় এবং দেব্যামী পুনর্বার পিডার নিকটে গিয়া কহেন, পিতঃ! আমি পুষ্পাহরণার্থ কচকে প্রেরণ করিয়াছিলাম, কিন্তু এবারও উাহার আগমন দেখিতেছিনা, অতএব তিনি মৃতী বা আহত হ্ট্রা থাকিবেন, আমি সভ্য ক-হিতেছি কড়বাতীত জীবন ত্যাগ **করিব**। শুক্র কহিলেন, হে পুলি ! বৃহস্পতির সন্তান কচ এবার প্রেভগতি **প্রাপ্ত হ্ইয়াছেন, আমি** বারমার বিদ্যাবলে জীবিত করি, আর অস্ত-রেরা পুনর্কার ভাঁছাকে নন্ট করে, অভএব আর আমি কি করিব। হে দেব্যানি! ভুমি শোক করিও না, তোমার সদৃশ ব্যক্তি[্]ম-ব্রোর প্রতি এরপ শোক করে না, বেহেডু ব্ৰেহ্মণ, ইন্দ্ৰ সহিত দেবতাগণ, অফীবস্থা, অস্থিনী কুমার, ও অস্থর গণ, ইইারা সক-লেই তোমার প্রভাবকে নমকার করেন। কা অশকা জীবিত হ্ইয়াছেন **বেছেতু জী**-বিত হইলেই অমনি অ**স্তরেরা আদিরাঃপু**-ু নবার তাঁহাকে বধ করে। দেবরানী ক্রাই-ार, इक्कार **अविता श्रामिश शिकामर,** এবং তপোনিধি বৃহস্পতি বাঁহার পিতা, িনি প্ৰবির পুজ, ও পৌল **ভাঁহার প্রতি** काडे व स्थाक श्रुद्धक क्षणन**्कतिन** ন'া তি' বন্দারী, তিনি তপোধন জরং সকল কন্মের পারদশী, প্রভারে আমিও णनाक्रादत (महे करहत भर्ष शमन कतित, বিশালারন করিলেন, আনতার আত্যন্ত বিরা ।
বৈশালারন করিলেন, আনতার মহর্ষি তাল দেববানী কর্তৃক উল্লেখিত ত্রী ক্রোধি কচকে আহ্বার তিতি ছেব করিতেছে,বার্রার আমার শিবাকে বিনাশ করিতেছে। বােধ হয় ভয়ানক আহ্বারা বাজাণ পুনা করিবার নান্দে আমার প্রতি বাভিচার করিতেছে। এখনিই এই পাপের অন্ত হইবে, ব্রন্ধহতা। জনিত পাপ ইন্তকেও দল করিতে সমর্থ হয়। ইহা শুনিয়া বিদ্যা দ্বারা সমাতৃত কচ শুকুর ভরে জঠর হইতে অপেপ উত্তর প্রদান করিলেন।

विमालायन कहितान, श्रीत कठत हहेए কচের বাক্য ভাষণ করিয়া শুক্র কহিলেন,ছে বিপ্র! ভূমি কি প্রকারে আমার উদরে গিয়া অবস্থিতি করিতেছ্ বল। কচ কহি-লেন, ভোমার প্রসাদে স্মৃতি আমাকে ক খন পরিত্যাগ করে না, যে যে ঘটনা হইয়: পিরাছে, আমার দকলই স্থরণ হইতেছে, 'নার আমার তপভারও কয় হয় নাই, তা-হাতেই আমি এই মোর ক্লেশ সহা করিতে পারিতেছি : **অস্থরেরা আমাকে বধ কর**তঃ দক্ষ ও চুর্ণ করিয়া তোমার পানীয় স্থরাতে মি**খ্রিত করিলা, দিয়াছিল। হে বিপ্র** ! আ:-পৰি বৰ্তমানে আছুরী মারা কি প্রকারে ব্রাক্ষী মায়াকে অভিক্রম করিতে अक किर्दान, भितायामि एव বংসে ! অদ্য কি প্রকারে ভোমার প্রিয়ক্।-হা সাধন করিব বল। এক্সণে আমার প্রাণ বিয়োগ ব্যতীত কচের প্রাণ রক্ষা হয় না ৷ যথন কচ আমার উদরক চইয়াছেন,তথন আমার কুক্ষি বিশ্রণ ব্যতীত কি প্রকারে জিনি বহিগত চইবেন। দেবযানী কহিলেন, এ-करग अधि कण्य छुट्डि स्थाक आमारक দশ্ধ করিতে বাগ্রিল , কচের লাশ আর আ পনার বধ। কচের বিশারে জ্লামার কল্যাণ नारे अबर भागमात्र छन्याटक कि क्रकाटत है वा जीवन भारत कतित । क्षेत्र करिएनन, ्रहरूका कि निस्तत्व कर ! **ंदर्श्य द**नव যানী তোমাকে পরম ভক্ত বলিয়া স্বীকার करता अरुवा कृषि निक वन सबक कर

क्री इंस कृषि एकामाटक चना वह मधी-वनी विना मान कतिए रहेन। जाना ৰাতীত অন্য আর কোন বাক্তি আনার উ-मत हरेएक कीवन आखि मुर्सक वहिर्शक হইতে পারে না, অভএব ভোষাকে বিদ্যা প্রদান করি। হে তাত! আমার নিকটে বিদ্যা প্ৰাপ্তি পূৰ্বক পুত্ৰভাবে নিক্ষান্ত হ-ইয়া পরে বিদ্যাবলৈ আমাকে পুনজীবিত করিবে, এই ধর্ম প্রতিপালন করিও। বৈ-मालायन कहिलान, अनखत कर विमानितन ক্ষণমাত্রে গুরু কুকি ভেদ করিয়া পৌর্ণমা-<u> নীর চন্দের নাায় নিষ্কান্ত হইয়া</u> পতিত ব্রহ্ম তেলোরাশি মৃত শুক্রাচার্যাকে দে-থিয়া দিন্ধ বিদ্যাদারা তাঁহাকে পুনর্জীবিত করত উঠাইয়া অভিবাদন পূর্বাক কহিলেন, হে গুরো! আপনার ন্যায় যিনি শ্রোত্রন্তরে অমৃত শিঞ্ন করেন,ভাঁহাকেই আমি পিতা ও মাতা বলিয়া জানি, অভ এব সেই গুরুর ক্রত উপকাব সার্গ করিয়া কেই যেন তাঁ-হার জোহাচরণ না করে। অনুত্রম স ্তার দাতা, সকল নিধির নিধি, অর্চনীয় अकृतक रत्र लक्षविषा बाक्ति चाषत मा করে, সে তুরাত্মা ইছ লোকে অপ্রতিষ্ঠ হ-ইয়া **পরত পাপ লোকে গমন করে। বৈ**-শম্পায়ন কহিলেন, ৰিদান্মহামুভাব শুক্র, স্থ্রাপান দারা বঞ্চিত হইয়া সংজ্ঞানাশ হ-ওয়াতে, এবং পূর্বের স্থরাপানে মুগ্ধ ও তৎসহ অভিৰূপ কচকে উদরস্থ করাতে স-ক্রোধে গাত্রোপান করতঃ বিপ্রগণের হিত সাধনেচ্ছার সুরাপান প্রতি সঞ্জাতকোধে কহিলেন, অদ্য স্থাধি ইহলোকে যে কোন ব্রাহ্মণ মোহ বশত স্কুরাপান করিবে,সে অ ধর্মী, ব্রন্ধহা ও ইহু পরত্র অতি গহিত হ-हेरव। नर्कालारक ष्मामि এই विश्व धर्म-র সীমা স্থাপন করিলাম, সকল লোক ও माध् बाचाननन हेहा धारन करून। মহামুভাব তপোনিধি উপনা ইহা বলিয়া रेमन निष्कृ नुक्ति मासदश्वरक आस्तान कति-स कहिरतन, जारत पूर्व मानवशन! आमात जुना अजाव महाचा क्यान निक कह मछी-वनी विका झाल रहेगा आकात निक्छ वान कतिरंबन, बेबिनाज बनिन्ना आर्थव वित्र उर्देश দানবের। বিস্ময়াবিউ চিত্তে স্থ স্থ নিবেশ নে গমন করিল এবং কচ পূর্ণ সহস্তে বংসর তং সমীপে ধাকিরা ষথাবঞ্জ অনুভর। প্রাণ্ডি পূর্বাক ত্রিদশালয় গমনে মানস করিলেন।

হিতৈষিণী সভার বিতীয় সংসংসরিক

আরম্বালীন প্রতিস্থোদ।

হে করুণা নিধ:না ভোমাব করুণার কথা কি কহিব। কোখার বা আবের করিব, कि अकारत है ता रमय कतिन। यह निमाल বিশ্ব মধ্যে যে কোন দিকে নেবপাত করি **সেই দিকেই ভোমা**র কর্ণার ব্যাপার জাজ্জ লামান দেখিতে পাই। আমাদিগের অন্তরে 🚂 দি একৰার দৃষ্টিপাত করি তবে ধর্ম প্রকৃতি নামে তোমার করুণার কি এক ष्यशूर्व উৎम पर्यन कति, এই উৎम-वाहि কি মধুর কি ভৃত্তিকর কতইবা স্নিদ্ধ কর। হে পরমাত্মন্! এই ধর্ম প্রবৃত্তি ৰূপ তো-মার করুণার উৎস প্রদান পূর্বকে আমা-দিগকে কি পর্যান্ত গোরবশালী করিয়াছ, কতই বা স্থাবে অধিকারী করিয়াছ, এই প্রবৃত্তি চরিতার্থ হেতু আমর। এই হিতৈ ষিণী সভা সংস্থাপন ক্রিয়াছি, ইহার প্রতি যেন আমাদিগের অবিচলিত শ্রন্ধা ও যত্র থাকে। হে প্রভো! তোমার প্রসাদে নামা প্রকার বিস্ন অভিজেস যে আমরা পুর্বাক সভার কার্য: এপর্যান্ত নম:খা করিয়া আসিতেছি তক্ষন্য আমরা সরুতক্ত লনরো প্রীতি পূর্বেক নমস্কার করিতেছি, ভূমি তাই: গ্রহণ কর! হে প্রমেশ্র : অদ্য আমর: ষে জনা একত্রিত হইবাছি তাহা তোমার **লেহ পূর্ণ প্রফ্লকর মুখ দর্শননা করি**য়া कि काल जाकरण ममाधा कार्रिक, श्रार्ट्या । এক নিমেধের নিমিত্তে তোমার উৎসাহ **अनम आमन्दरत उपन यर्दशावम ना कति** লে যধন সকল তমসাবৃত হইয়া যায়—সক-লই নীরস বোধ হয়, তথন তোমাকে হ্ল-महाकारण विज्ञासमान ना . (पश्चिम्रा) कि श्र কারে আমরা অদ্যকার এই গুরুতর কার্যা অকাতরে প্রকৃত্তিতি সম্পাদন করিব।

হে হলমেশ্র: তোমার মুখ চন্দ্রিমা সন্দশনি না করিলে ইক কপে আমাদিগের উৎলাহ রুদ্ধি হইবে, কি কপেই বা আমাদিগের
ইর্ঘানলছন করিব,কেমমেই বা আমাদিগের
রুদ্ধির স্থিরতা থাকিবেক। অতএব হে
পিতং ' তোমাকে যেন আমরা প্রত্যেক
বাক্যে, প্রত্যেক নিশাসে,
আমাদিগের অন্তর মধ্যে সাক্ষাইকার করিজে কুলিয়া না যাই, তুমি যে সর্বাত্ত বিদ্যানা আছ, তুমি যে এই সভার সভাপতি কগে উপবেশন করিয়াছ, তাহা যেন
আমারা কোন মতে বিশ্বত না হই, হে সভাপতে ' এই আমাদিগের প্রার্থনা।

मल। जङ्गानीम रस्रातः।

(र श्नप्रभटि ! कि ध्यकाद्भु (य ष्या-মাদিনের এই সভার গুরুতর কীর্য্য আ-মরা সমাধ করিক, তাহা ভাবিয়া অত্যন্ত ব্যাকুলিত হইসাছে, যখন বছ আয়াস ও বর বারীত একটি সামান। কুসংস্কার বি-নক হর না, তখন জুই চারি ব্যক্তির উ-भारत कि अकारत आभामिरतंत्र आकृतन উলেদিদের বাল্যাবস্থায় দৃঢ়তর বন্ধমূল ন'না বিধ কুসংকার ও কুঅভ্যাস পরিভ্যার कदिर्दर, कि श्रकारत है वा नीर्चकान श्रम्मण জনসমাজের বিবিধ প্রকার কুপ্রথা দূরীকৃত হইবে, কেমনেই বা বছ বিষয়ক যোরতর ज्ञानाञ्चकात्र नक्षे **२२**८४, ७ **घटम**र अ-কার জ্ঞান জ্যোতিঃ লোক সমাত্রে প্রকাশ পাইবে, কি ৰূপেইবা রিপুদিগকে লোকে দামঞ্জক্তৰূপে পরিচালন করিবে। হে পিছেঃ! बाबामित्त्रत धनमाली, विमातान् ७ जाव्य-র্মাবলগী ভাতৃগণ, বাঁহাদিগের সহায়তা ও সম্পত্তির উপর এ সভার কার্যা সমাধা হ-ইবার ভার বিশেষরূপে নির্ভর করে, তাঁ-হারা আপনার প্রদন্ধ বিশুদ্ধ স্থাপ্রদায়িনী লগা প্রকৃত্তি ও দরা বৃত্তি সাধনে বে**ৰুণ** বি-মুখ ভাহা স্মরণ করিরা আরে বাাকুলিভ रहेट्डि । किह विश्वय अर्जान-मान वर्जान गमल कामहे वात इक्तिप्राट्स, दक्त वा इ-ा अहमान श्रदमादत आबुः त्राव कतिएक

CEA, ट्रेंब ट्रेंक्ट या यात्राम्बलाज यहण्त कुगः कात भारम वक हरेशा भारत जीशन का-शन यजीव कर्जना कर्ज माधान नहास हुन दरेटण्डमा हिंद अटला ! जेलिलाह এত**क्रल व्यक्तिकत्र व्यवस्थात्यातः उ व्यवस्** লার শ্যা হইতে গাটোপান পূর্মক ভাহা-हा यन व्यालना निरंत्रंत्र नर्ट्यालति कर्चना কৰ্মে শীঘ্ৰ সচেষ্ট হয়েন, ইহাই আখাদি-श्व अकास रेम्हा-रेरारे जामामिरतंत्र या-ন্তরিক প্রার্থনা। **হে করুণাকর পরমেশ**া আমর অদ্যথে **সকল বিষয়ের আলোচনা** করিলাম ভাষা যেন আমাদিগের স্মরণ পথ **হইতে তিরোহিত না হয়, ভাহাতে যেন** আমাদিপের আসা ওয়ন্ত্র থাকে, ভাছাসা-धन कना य दान क्रम स्ट्रेंद जाहा यन क्रिम (वांध मा क**ति ; क्विस्ट वां क**तिव, তোসার প্রিয় কার্য্য সাধনে ধদি ক্লেশ বেংধ করিব, ভবে আর কি কার্য্য সাধনে আন-मिन कहेव हैं। इ.क्ष**ा**का विकास व्यव-স্থায় থাকি, প্ৰতি নিয়ত ধেন ধৰ্ম প্ৰবৃত্তি সাধনে ভোমার পীযুষময় প্রীতিরস পান कर्तरा आमामिरशंत केका शास्क, जागता যেন এই পরম পরিশুদ্ধা পবিত্র আনন্দ উ-भरভारिश कानमरू **अवरङ्गा ना केशा** । ए বিশ্বপালক জগৎপর্তে । এই আমাদিগের প্রার্থনা—এই আমাদিগের যাচ্ঞাা

বিজ্ঞাপন

বসভাষান্ত্ৰাদক সমাজের বিজের পুত্ক এ সভার কার্যালারে বিজেরার্থ প্রস্তুত আছে ভাহার মূলা নিরূপণ। হৃহৎকথা—প্রথম ভাগ চল্মকিবারা ও অপুর্ব্ধ রাজবল্প বিষয়ক প্রভাব

মৎসারারী বিষয়ক প্রভাব

श्राह्म करे प्रचुरवासिनी निक्रिता, विक्रवाण, मणाव त्यांचानीस्कारिक प्रचारतीयी नेकांत कीशाना एक एक आक्रियान बालाविक काल केशाना प्रचार विक्राहित भूगावित नुरुवाल



্ত। বাএকমিদমগ্রাক্ষানীয়ান্য হক্ষিকাদীত দিনং সর্কমপ্তক্ষ । তদেশনিত্যং জ্ঞানমনস্ত শিবং ক্তর্জন্নিবেগ্রান্তনে নাশিতীয় সক্তব্যাপিসর্কানিয়ন্ত, সর্বাভায়নকাবি সক্ষণান্তিনজ্ঞ ৰম্পুর্ণমঞ্জিতমাতি একস্যত ইন্যাবোপাদনযাক্ষ্যে হতিবলৈ চিকক ভানজ্ঞ বিঃ তদ্মিন্ জীতিগুস্য জিমকাদ্যনাধন ক তদু পাসন্দের।

ধর্মা শিক।।

পাঠাবস্থায় বালক গণকে যেমন অপরা-পর বিষয়ের শিক্ষা প্রদান করা আবিশ্রক, দেইৰূপ ধৰ্ম বিষয়েরও শিক্ষা দেওয়া নি-তান্ত কণ্ডবা। শিক্ষা বাতিরেকে মনুষা কোন বিষয়েরই প্রকৃত জ্ঞান লাভ করিতে चारतकत अक्ष अम जाहर, যে মলুবীের ধর্মজ্ঞান নিতান্ত উপদেশ সা-ণেক্ষ নহে, উহা প্রায় প্রত্যেকেরি প্রকৃতি ও প্রবৃত্তি অনুসারে আপনা হইতে উৎ-পদ হয়,শৈশবাবস্থায় মনুব্যকে অন্যান্য বি-বয়ক উপদেশ প্রদান না করিলে সে যেমন তাহাতে সম্পৰ্ণৰূপ অনভিজ্ঞ থাকে, ধৰ্মা বিষয়ে সেৰূপ থাকে না। কিন্তু আমরা প্রত্যক্ষ দেখিতেছি, যে শিক্ষার অভাবে অ ष्मक विमावान् मसूषा छेश्क्रके काल धर्मात মর্শ্ম অবগত হইতে পারেন নাই। শিকার যে কি পর্যান্ত শক্তি তাহা বর্ণনের অভীত, मसुरगात अकुछि आलाएन। कविरण विल-কণ প্ৰতীত হয়, বে মনুব্য যে বিষয়ক শিক্ষা লাভ করে, তাহাতেই ভাহার বিশেষ ব্রাৎপত্তি জয়ে। স্থার অপরাপর জ্ঞান শিক্ষার সহিত বালক अंगरक धर्म भिक्का द्यमान ना कतिता ए नकन विवेश उप्रक्रत अनिक्री उरुव देश, जाहा विष्टल बास्य करा। स्थाधा नत्र, जात्नक अतिक अवसात कारा किंद्र किंद्र असे गुरश বিভার ক্রমে ব্যক্ত করিয়াছেন'। বিন্দু উপদেশে মনুষ্য থখন কোন বিষয়ক জান নই লাভ করিতে পারে না এবং কোন বি-ষয়েই সুসম্পন্ন হইতে পারে না, তথন উপদেশ বাতিরেকে যে মানব জাতি নি-গৃঢ় ধর্মা তত্ত্বের মর্মাবিধারণে সক্ষম হইবে ভাহার সম্ভাবনা কি? অনেকের নিক্চ হইতে এ প্রকার আপত্তি প্রবণ করা যায়ে যে, পাঠাবস্থায় বালক যখন অনান্য প্র কার জ্ঞান শিক্ষা করে তথকালে ভাহাকে পরমার্থ তত্ত্বের উপদেশ করিলে ভাহা কে ন কার্য্যেরই হয় না, কিন্তু ইহা সুস্পান্ট প্রভা ত হয়, যে বালক গণকে সাবধান গুলো-ধর্মা উপদেশ করিতে পারিলে ভাহা বিশেষ্
কলদায়ক হইয়া ধাকে।

পঠদ্দশার বালকের মন বখন নানা প্র
কার উপদেশ ও শিক্ষা ছারা নানা বিষয়ে
সংকারাপম হুইতে আরম্ম করে, শিক্ষা
কাথ যদি তংকালে কোন সময় নিদ্দিন্
করিয়া তাহাদিগকে প্রমার্থ জ্ঞানের উপদেশ করেন, তাহা হুইলে সেই সকল বর্দ্মের
পদেশ তাহাদিগের হৃদয়ে বদ্ধমূল হুইয়
বসে এবং তাহা বালকহৃদয়ে এমন দুটাছুত
হুইয়া যায়, যে ক্মিন্ কালে সে সমস্থ উ
পদিষ্ট বর্দ্মতন্ত্ব তাহাদিগের মন হুইতে জ

^{*} Dick. Abererombee. Horn. &:

পনীত হয় না এবং তাহা ক্রমে অভ্যন্ত ইইয়া বিশেষ বিক্রমণালী হইতে থাকে। ঐ
সক্রল ধর্ম শাসন তাহাদিপের মনে বিনা
আয়াদে স্বতই উদয় হয় এবং তাহারা স্বনায়াদে ঐ সমস্ত ধর্মা প্রতিপালন জানিত
স্বে স্থা হইতে পারে।

বালক গণকে যেমন অশেষ প্রকার বি-জ্ঞান শাস্ত্রের শিক্ষা প্রদান করা আবশুক, দেই ৰূপ তংসম্ভিলাহারে বিজ্ঞানবান্ অ-নাদি পুরুষেরও জ্ঞান প্রদান করা উচিত। বিদ্যুভটাসী বালকগণ যে সময় জ্যোতি-বিষয়া শিক্ষা করতে সূর্যা, চন্দ্র, এছ, নক্ষ-ক্রাদি আকাশস্থ অগণ্য পদার্থের স্থিতি গতি ও শারুতির বিষয় অবগত হইতে আরম্ভ করে, শিক্ষকগণ ধদি সেই সময় তাহা प्रिशतक ओ मकल भहान् अनार्थंद्र स्रु**क्टि** क**र्ड**ी এবং উহাদিগের স্থিতি গতি ও আরুতির বিধান কভা অগদীশবের পরিচয় প্রদান করেন, তাহা হইলে বালক গণ অনায়াসে স্থারের জ্ঞান শাক্তিও কর্মণার বিষ**য় জ্ঞাত এটাডে সমর্থ হয়: জেনাভিকিল। শিক্ষা** করণ কালে ছ'ত্র লগ যথন জানিতে পারে ा अने धदान जगनन मधुपाग जीव जरू রুক্ষ, প্রবৃত্নদ্ননী, হদ, সমুদ্র ও বায় বাম্পাদির সহিত অনবরত শুলা পথে জ-মণ করিয়া তিনশত পঞ্ঘতি দিন ছয় খণ্টায় একবার সুয়াকে প্রদক্ষিণ করিতেছে এবং সূৰ্য্য হ'ত প্ৰায় নয় কোটি পঞ্চাশৎ লক্ষ ক্রোশ দুরে থাকিয়। ঐ স্থর্যোর আলোক ৬ উত্তাপ প্রাপ্ত হউতেছে, স্থ্যা পৃথিবীকে অহ্নিশ আকর্ষণ করিতেছে অথচ পৃথি ক্র স্থান অনি**ব্র**চনীয় শক্তি **সহকারে স্থা**য় চটতে সভত্ত দুরে স্থিতি করি**তেছে**, এবং যে সময় বালক গণ জ্যোতি**খের অ**-না'না তিন্তু সকল অবগত হয়, শিক্ষক যদি দেই সময় তাহাদিগকে বিশেষ ৰূপে অব-গত করেন যে জুর্য্য হইতে পৃথিবী যত-দুরে স্থিতি করিয়া যে নিয়**মে ভাছাকে প্র**-দক্ষিণ করিতেছে এবং স্থ্যা পৃথিধীকে যে নিয়মে আকর্ষণ করিতেছেও যে পরিমা-ণে আলোক ও উত্তাপ প্রদান করিতেছে. ভাষার কিঞ্চিনাত্র বাতিক্রম ঘটিলে স্থির

সংহার দশা উপস্থিত হয়, কিন্তু জর্মীশ্বরের কৰুণা প্ৰসাধাৎ তাহা কৰিন্দ্ কালে ঘটিতে পারে না, তাহা হইলে ছাত্রের মনে সহজেই जनमैत्रदात करूपात छम्य रम् এवः च्छा है মন হইতে ঈশ্বরের প্রতি ভক্তির ধারা উ-থিত ইইতে **খাকে। শারীর বিধান ও শা**-রীর স্থান বিদ্যা শিক্ষার সময় ছাত্রকে কে-বল শ্রাবের কৌশল মাত্র উপদেশ না ক-রিয়া তাং সমুদায় কৌশলের কর্ত্তা জগদী-শ্বরের জ্ঞান শক্তি ও করুণার পরিচয় প্রদান করিলে অবশ্হই ছাতের মনে ঈশরের মহান্ ভাব সকল আবিভূত হইতে থাকে। কোন শिक्कक यथन ऋषे भागार्थं अन्दर्शां वि-যোগ ও তাহাদিগের পরস্পর সম্বন্ধ সাদ্ভ ও বৈলক্ষণ্যাদি বিষয়ক তত্ত্ব প্রদর্শন করিয়া ছাত্র গণকে রসায়ন বিদ্যার জ্ঞান প্রদান করেন, তংকালে যদি তিনি রসায়ন বিদ্যা সম্বন্ধীয় উল্লিখিত প্রকার নিয়মাদি জনিত কল্যাণের প্রসঞ্জ করিয়া প্রমেশ্বরের গুণ গান করেন, তাহা হইলে তৎক্ষণাৎ ছাত্র-দিগের কৃদ্য়ে উৎকৃষ্ট প্রমার্থ রস সঞ্চা-ারত হইতে আরম্ভ করে। এই 🚁পে 🙉 -ত্যেক পদার্থের তত্ত্ব অবগত হইষীর সময় বালক গণ যদি ঐ পদার্থের স্থান্ট কর্তা ও (कोमदलत कार्यन अधिमारतत ज्वान मङ्गित উপদেশ পায়, তাহা হইলে তাহারা অনা-য়াদে ঈশরের প্রেম রাজ্যে প্রবেশ করিতে সমর্থ হয় এবং অভ্যাস দ্বারা ক্রমে তাহা-দিগের প্রমার্থ রসে অধিকার জ্ঞো।

আমাদিগের মনের এই ৰূপ ধর্ম, যে
আমরা যদি উপযুগপরি কোন ছুই বিষয়
প্রবণ দর্শন বা স্পর্শ করি, তাহা ছইলে
পুনর্বার ঐ প্রুত দৃষ্ট বা স্পৃষ্ট বিষরের
মধ্যে একের প্রত্যক্ষ ছারা অপর বিষয়ও
আপনা হইতে মনো মধ্যে উদয় হয়। আন্
মরা প্রত্যেক শীত ঋতুতে ক্রমাগত যে সকল পূজা শোভা সন্দর্শন বা ফলের রস
আস্থাদন করি, শীতকাল উপস্থিত হইলে
ঐ কল পূজাদি স্থতই আমাদিগের মনে
আবিয়া উদর হয়, অথবা অন্য কোন সময়
ঐ পূজা কি কল প্রত্যক্ষ করিলেও শীতকান
লের স্থানেক ভাব সারে উদর হয়তে শীতকান

অংমরা যদি ক্রমাগত কোন মনুব্রের কোন क्यान विद्यास वा उसवका विद्यास जन्मर्गन করি, ভাষা হইলে ঐ ব্যক্তিকে অন্য কোন शारम कि व्यमा कान व्यवहात श्रमस्वात সন্দর্শন করিলেও উহার পূর্ব্ব ,স্থান ও পূ-व्यावन्द्रा व्यामानिरंशत भरन व्यानिसा छेनस হইতে থাকে , অশ্বা পূৰ্কোক্ত স্কান বি-শেষ ও অবস্থ। বিশেষ প্রত্যক্ষ করিলেও তৎক্ষণাৎ ঐ সনুষ্যকে স্মরণ হয়, আমর! একবার যদি কোন সাগর তীরে কোন दाक्तिक मन्दर्भन कति, डाठा क्रहेरण श्वन-खात के वाक्तित मम्मर्गन बाता जागामिरशत দাগর তীর স্মরণ হয়, অথবা আমরা পুন-কার কোন সময় সেই সমুদ্র ভীরে উপ-নীত হ্ইলে, ঐ মনুষাকেও স্মরণ করি অর্থাৎ অব্যবহিত পূর্ব্বাপর কোন ছুই বি-ষয় একবার আমাদিলের মনে অভাত হ-ইয়া গেলে ভয়াধ্যে এক বিষয়ের প্রভাক দ্বা বিষয়াস্ত্রেরও স্থারণ হওয়া আমাদি-ণের স্থার। অতথ্য বিদ্যা শিক্ষার অ-বস্থায় যে সকল পদার্থ তত্ত্ব অবগত হইতে হয়, ছাত্র গণকে দেই সকল তত্ত্ব বিষয়ক জ্ঞান উপদেশ করিবার সময় জ্ঞানবান্ আ-চাৰ্যা যদি ঐ প্ৰত্যেক পদাৰ্শ তত্ত্ব উপলক্ষ করিয়া ছাত্রদিগকে জগদীশ্বরের ড্রান শক্তি ও করুণার শিক্ষা প্রদান করেন, ভাষা হই-লে তাহাদিগের এমনি একটি অপূর্বে অভ্যা-দ জনিয়া যায়, যে তাছারা যে সময় জোা-তিব রসয়েন প্রভৃতি কোন প্রকার বিজ্ঞান শান্ত্রের সমালোচন। করে তথনি তদস্তর্গত পদার্থ তত্ত্বের মধ্যে জগদীশ্বরের অপার ক-রুণা অনস্ক শক্তিও অসীম জ্ঞান প্রতাক্ষ ক-রিয়া তাঁহার প্রতি ভক্তিও কৃতজ্ঞতারসে আর্দ্র। জগদীশ্বরের করুণা প্রতাক্ষ না করিয়া ভাহারা ব্রহ্মাণ্ডান্তর্গত কোন কৌশ-लित्रहे आर्लाहमा कतिएक शास्त्र मा। मसू-ষা অভাবের দাস, যে বিষয় অভাস করে, তাহারই বসীভূত হয়, অভ্যাদ ব্যতিরেকে মানব কোনী বিষয়েতেই সিদ্ধ হইতে পারে না। অভাস দারা অতি कृश्मीया विषय समाधा रहेगा छटे ववर क-हिन विषय अस्त रतः मधारमत व कड-

দুর পর্যান্ত শক্তি তাহা বলিয়া শেব করা যায় না। অভাগিভাবে মনুবের প্রকৃতি পর্যন্ত প্রছন থাকে এবং অভ্যাস প্রভাবে মানব এক সময় প্রক্রতিকে অতিক্রম করি তেও সমর্থ হয়।মনুষ্য বালাবিকা হইতে যদি ক্রমাগত ধর্মাশিকা প্রাপ্তাহ্য এবং ধ-র্মালোচনা অভানে করে, তলে হইলে ভা-হার ধর্মোতে যাদৃশ অন্ধা ও অনুরাগ করে অনভ্যাদে ও লশিকায় কখনই তাদৃশ শ্ৰদ্ধ: ও অফুরাগ উংশন্ন হইতে পারে না। বি-(मच्छः वालक क्मण तमाम ३६/१९७वः ; বালাবিস্থার উপদেশ সকল মনেতে যেমন গাঢ় ৰূপে অকিত হয়, যৌবনাদির শিকা कथन (मक्तर्भ इस ना, जोना मश्करंत क्लान क्राया में मन इंट्रेंट नी खे भूत इस मा, मसुया বালক কালে যে দকল বিষয় শিক্ষা করে এবং যে সমস্ত উপদেশ প্রাপ্ত হয়, তাহা মনো মধ্যে এমন বহু মূল হ্ইয়া বদে, যে প্রাপ্ত বয়দে তাহা সহস্র প্রকার উপায় ছারাও উন্লিত করা সহজ হয় না। অত-এব বলোবস্থায় মনুদ্যকে অপরাপর জ্ঞান শিক্ষা প্রদান করিবার সময় অংশে অংশে ধর্মোপদেশ করা যে নিভান্ত কর্ত্তরা ভাহা তে আরে সম্দেদ্নাই। জ্ঞান শিকার সংস বালক গণকে ক্রমে ক্রমে ধর্ম্ম শিক্ষা প্রদান করিলে যে কি পর্যাত উপকার দর্শে, তক্ষ বর্ণনের অতীত :

ইতা ষ্থাৰ্থ বিটে যে প্ৰধান স্থাৰ বালন গণ ধন্মের নিপূচ উন্থ সকল স্থাক কথে বোধ গমা করিতে পালে মা, কিছু অংশ ব্যক্ত যুবা দিগকে বিভিত বিধানে ধর্মো। পদেশ করিলে, তাহা কদাপি বিজল হয় মা। শিক্ষাবস্থাৰ বালকের মনে অমান্ত জ্ঞানের বীজ ধ্যমন অপ্পে অপে বপন করিতে হয়, ধর্ম বীজও সেইকপ ক্রমেতে বপন করিলে তাহা অবশ্যই অশ্বুরিত হয়, কি জ্ঞান কি ধর্ম এক কালে কোন বিষয়েরই শিথর দেশে আরোহণ করিতে পারা বায় না, সকলেরই শেপান আছে, যত্ত পূর্ধক তাহা, অবল্যন না করিলে মনুযা ক্থানই কোন বিষয়ের চুড়াক্ত হইতে সংক্রিক তাহা, অবল্যন না করিলে মনুযা ক্থানই কোন বিষয়ের চুড়াক্ত হইতে সংক্রিক তাহা, আবল্যন না করিলে মনুযা ক্থানই কোন বিষয়ের চুড়াক্ত হইতে সংক্রিক তাহা আবল্যন না করিলে মনুযা ক্থানই কোন বিষয়ের চুড়াক্ত হইতে সংক্রিক তাহা আগ্রুমান বিষয়ের চুড়াক্ত ক্রিক তাহা আক্রিক এক

কালে গন্মের নিগ্ত তত্ত্ব সকল উপদেশ না কবিয়া ক্রমে ক্রমে তাহার মনে ধর্মের ভাব প্রতিউ করেন, ভাষা হইলে শিষা ক-খন তাহা এচণ ও ধারণ করিতে অকম হয় ন', শক্তির অতীত হইলেই তাহা লোকের অসাধা হয়। বালক যদি স্থীয় ধীশক্তির প-রিমাণানুষায়ী বর্লোপদেশ প্রাপ্ত হয়, তাহা ক্সক্রে ভারশাই ত।ফা অধিকার করিতে পারে। ধর্ম মুখন শিক্ষণীয় বিষয়, তথ্য যে উহার আর্যের তল নাই এমন কখনই হ-ইতে পারে না; অভএব ঐ আরম্ভলে ধর্ম শিক্ষার সূত্রপাত করিলে অবশুই তাহা स्नुनिक इडेस छेट्ट (क्वल धर्म (क्न ? বিহিত বিধানে শিক্ষা প্রদান করিতে না পা-विद्या (काम विषय् हे भक्त इस मा। सिकात मार्गा चारतक मध्य करनक अला धर्माः প্রেশ বিফল হয়। ধর্ম অতি মধুর প্রাথতি কিন্ত কেবল ধর্মোর নাম অবংগ লোকে কখন ধশ্বের মন্ম অবগত হইতে পারে না ; কোন ব্যক্তিকে উহার তাৎপর্যাবগত করা-ীতে হটলে বিশেষ করিয়া উহার পরিচয় দেশয় উচিত। জগদীশ্বকে ভক্তি করা উচিত, পিতা মাতাকে প্রদা করা কর্তব্য ও শ্বাদা ন্যার সভা অবলয়ন করিয়া কার্য। করা বিংবর, ইত্যাদি স্থা উপদেশ স্থার: বালকের ধনিও না ধর্মেতে মতি হয়, কিন্তু ভাগার ধাশকৈ অনুষায়ী শ্রীতি ও डें प्राप्तक केपारतत थन की र्डन. পিতা মাভার ক্ষেছ বর্ণন ও নারে ম-ভোর গুণ ব্যাখ্যা করিলে অবশাই ধর্মেতে অ:ভ: হয়: যে ব্যক্তি সহস্রবার **ঈশ্বরের** নাম শ্রবণ ক্রিলে ভাঁহাতে ভক্তি করিতে রত হয় না, সেই ন্যাক্তির নিকট একবার বুলি বিশেষ কবিয়া প্রমেশুরের মহিমা ্টার্ডন করা যায় তাহ। হ**ইলে তৎক্ষণাৎ তা**-থার মনে ভঞ্জি রুসের সঞ্চার হই**তে থাকে**, দলেও নাই। অতএব শিক্ষক গণকৈ সর্বাদা এইবাপ সাবধান হইয়া **ধর্মোপদেশ করা** উচিত যে, উপদিস্ট বাক্তি ভাঁছার উপদেশ বোধগমা করিতে পারিয়া ভাহার ফল লাভে অধিকারী হইতে সমর্থ হয় 🔊

THE STATE OF THE S

আম্মোৎকর বিধান।

হে জীব! আর কেন? মানব নামের যথার্থ গৌরব বিস্মৃত হইয়া আর কৃতকাল অনবধান শয়নে শয়ান ও **তঃস্থা স্থা**নী স্বেজ্ পিশাটীর কৃষ্ক নিজার আক্ষম থা-কিবে? আপন উদার শ্বরূপ ও গরীয়সী প্রকৃতির প্রতি অব্যেক্তা করিয়া আরু ক-তকাল বালা লীলায় **প্রণয় বন্ধন** করিবে। একবার স্থির চিত্তে চিস্থা করিয়া দেখ, বিশ্ব পিতা প্রমেশ্বর তোমাকে কিৰপে গুক্তব ভার বহনে সমর্থ করিয়া এই ধরাধামের নিবাসী করিয়াছেন। জ্ঞান নয়নে নিরীকণ করিলে অবশ্যই দেখিতে পাইবে, এই বি-শাল জগতীতলে এমন মন্তব্য নাই, যাহার চিত্তক্ষেত্রে মহত্তের বীজ নিহিত হয় নাই ও উত্তরোক্তর উৎকর্ষ লাভে कांत्र नारे । अमग्राश्वमिनी कुप पृष्टि हात! আমরা মনুষাকে কুদ্র বলিয়া মনে করি বটে, কিন্তু ভাহা নছে: বিবেচনা করিয়া দেখিলে, যে কোন অবস্থায় পতিত হউকন কেন্মর্যা মাত্রই মহন্ত লাভের অধিকারী! যে কোন দেশে উৎপন্ন ও যেরপ ছউকনা কেন, মন্দা অব্থাই সন্ধোর সমূচিত উ मात सक्त शाहरत मत्मह कि ? বিবিধ আড়মুর বিষয়ে আমর। প্রস্পুর বিস্তর বিভিন্ন ৰূপে প্রভীয়মান হই বটে. কিন্তু সামাদিগের প্রকৃতিগত তেজাময় প্রভাপুঞ্জে সমুদার প্রভেদই বিলীন হইয়া যায়। বৃদ্ধি, বিবেক, প্রীতি, তত্ত্বজিজ্ঞাদা, শোভানুভাবকভা, অনুচিকীর্ঘা, নির্শাৎসা প্রভৃতি বছবিধ মনোরত্তি সমুদায় আমা-দিগের যথার্থ গৌরব বিধায়িনী সাধারণ সম্পত্তি। আমরা চির-প্রথিত অতি বিগ-হিত ভ্রমবশতঃ সাধারণ কোন বস্তুর প্রতি যেরপ অবজ্ঞা প্রদর্শন করিয়া থাকি এই সমস্ত মহামূল্য সম্পত্তির প্রতিও সেই রূপ করি, কিন্তু বাছ পদার্থের ন্যার আত্মগত সাধারণ বস্তু সকলও সমধিক সুলাবান্। শিশ্প বিদ্যা সম্ভ ত অশেষ বিধ চিছ র-श्चन উপকরণ ছাত্রী ধনী খণের আলয় স-कम बाद्यासमा क विकित बदन विकर FOR ALCOHOLIST TOR, THE THREE PARTY

18

বিকাশী আছাকর যেরপ আলোক সমূত আলোক দালা সহকারে প্রতিদিন সম্প্র নভোমপ্তল উদ্ধানিত করিয়া থাকেন, এবং কি সরিৎসাগরে, কি ভূখরকন্দরে, কি धामानिरशंत मन्निरत नर्यखरे नम्डारत বিতরণ করেন, তাছার সহিত তুলনা করি-লে ঐ সমস্ত ক্লুত্রিম আলোক অবশ্বই প্র-ভাষীন বোধ হইবে সন্দেহ নাই। ৰূপ কিয়ৎ সংখ্যক লোকে যে কোন অসা-ধারণ ক্ষমতা সম্পন্ন হত্ত্যার লোক সমাজে প্রাসিদ্ধি ও খ্যাতি লাভ করেন, প্রভা বি-বেক প্রভৃতি মনুষা জাতির সাধারণচিত্ত ব্রত্তি সমুদায়ের সহিত তুলনা করিয়া দে-বিলে তাহাও নিঃসদেহ অতি সামান্য বোধ হর। অধিক কি , মনুব্যের সংধারণ প্রক্ল-তির সহিত কোন পার্থিব বস্তর তুলনা ক-রাই অনুচিত ; যেহেতু উহার **সাদৃত্য থা**-রণ করে এমন পদার্থই অপ্রাসন্ধা 'চিন্তা বা কণ্পনাতেও তাফা আবিভূতি হইবার নহে। মানব প্রকৃতি সাক্ষাৎ ঐশী শক্তির প্রতিক্রতি। যিনি আত্মার বিশুদ্ধ ঐশী শক্তি দমুদ্রে অধিকারে সমর্থ হইয়াছেন, তিনিই মহা পুরুষ। যে কোন **স্থানে** অবস্থিতি ক-রুননা কেন, তিনিই সার্থক জন্মা—ডিনিই ধন্য। তাঁহাকে চীবরমাত্র পরিধানই প্রদান কর, বা ভূগর্ত্ত নির্মিত কারাগারেই নিরুদ্ধ কর, অথবা লৌহ শৃষ্ণালে সংযত করিয়া দা-সর্ত্তিতেই নিযুক্ত করিয়া রাখ, ছুতেই তাঁহার মহত্ত্তের অপলাপে সমর্থ **হইবে না। তিনি গৃহ হইতে বহিষ্কৃত হ**-रेटन असमाकी शतम शूक्ष उहारक यभीत्र शनिक ভदरम ज्ञान मान कतिरवन। क्लिन मम्ब बरानगतीय ताबत्राच विश्वन ঐশর্যের আড়মর বিস্তার করিতে না পা-রিলেও ছিনি পবিত্র চিন্তা, অক্তিম স্নেহ ও স্থান ক্রমানুষ্ঠান দ্বারা যেরপ মহা-মুভাবতা ও মান্ধার অঞ্জ্ঞ শোভা সম্বতি বিস্তার করিতে খাকেন ভাহা আর কুত্রা-শি অন্তভ্ত হইবার নহে। বিচিত্র পাষাণ वित्रिक्ति, सञ्चलाञ्चलि निक्य मिल्फ, लक्क लक মরম্য ক্র্যা ক্রেয় ভাহার সহাজাংশের একাংগও চুক্ত হইবে না। স্বানৰ প্রকৃতির

य माधात्र ममृक्षि, अञ्चल किटन ভादाःहे উল্লেখ করা গেল; কিন্তু ব্যক্তি বিশেষে छेश मार्क्किङ ७ वर्ष्किङ स्ट्रेटन ए। करः पुत ম**হত্ব** ও গৌংবের প্রস্থৃতি **হইয়া থাকে** ত্তিষ্টো মনোনিবেশ ক্রিলে বিকায় রুষে নিম্প্র হইতে হয়। তাহা বি-শেষ পর্যাংলোচনা কান্ত্রিয়া দেখিলে অবস্থাই ইহা প্রতীত ইইতে পারে যে, চিত্তের উৎ-কৰ্ম দাধন বিষয়ে কুজাপি বিশেষ নাই। कि छेक्ट.कि भीष्ठ,कि उन्तम,कि व्यथम ; कीत নের সর্ব্য প্রকার বড়েই সমভাবে উহা স ম্পন্ন হওয়া সম্ভব: যথাৰ্থ মহীয়ান ব্যক্তি সর্বাত্রই দুইট হইতে পারেন। কোন্স-বস্থা বিশেষে যে মহত্ত্বের প্রচুর উৎপত্তি হইয়া থাকে তাহা নির্দেশ কর। সহজ নংহ। বল বা বিদ্যাতেই কিছু মন্তুষ্যের ফ্লার্থ মহত্ব প্রকাশ পার না। বাহিকে প্রভুজা কি ক্লতিবা**হুলোতেই যে উহা বিদ্যমান** খা-কে এমনও মছে। লোক সমাজে মহয় স্থচক কোন সাধ্য করিতে না পারিলেও কি কেহ মহাত্মা বলিয়া গণ্য হইতে পারে না? পৃথিবী মধ্যে আকর সন্তুত অপরিশোধিত রত্ন নিচয়ের ন্যায় যে ক'ত কত বরিষ্ঠ ম হীয়ান্ব্যক্তি প্রভাশুনা থাকার ম্পরিজ্ঞাত হইবা রহিয়াছেন তাহা কে বলিতে পারে ব বস্তুতঃ **স্থভাবের সমৃদ্ধি** ও গৌর্য কেবল আত্মার পবিত্র শক্তির উপরেই সম্পূর্ণ কপে নির্ভর করে। বিশুদ্ধ ভাবনা, স্থবিমল कींडि, अ धन्म भीति ऋक मगुमताई भटत्य মহনীয় নিকেতন। অনুসন্থান করিলে **ছ**ী-বনের অতিহীনাবস্থাতেও তাহা চুম্পুাপা হ্য়না। একাপ সচরাচর প্রভাক করা যা-ইতে পারে, যে বাজি বন্ধনশীল পরিবারের ভরণ পোষণ নিকাহ জনা বিত্রত হওয়ায় যৎসামান্য কোন ব্যবসায় অংলয়কে কথ-ঞিং দিনপাত করিয়া থাকে নেও এক জন

বিদ্যাবান্ অপেক্ষাও সম্থিক পরিছার ৰূপে বস্তু তত্ত্ব এইণে সমর্থ ইয়, অথিকতর তীক্ষ্ণা গহকারে সদস্থিবেচনা
করিতে পারে এবং অতি ছবহ ব্যাপারে ও
অধিক প্রভাগেশনমতিত্ব প্রদর্শন করিতে সমর্থ ইয়। যে ব্যক্তি প্রিক্তাতে সমুদায় ভ্র-

ওল মধ্যে পরিভ্রমণ করিয়া অন্থেষ দেশবা-দী সামৰ গণের রীতি নীতি চরিত্রাদি দর্শ-নে মহতী অভিজ্ঞতা লাভ করিয়াছেন এবং ভিন্ন ভিন্ন প্রদেশের ভিন্ন ভিন্ন ব্যবহার गकल मःकलम शृक्षक लाक ममारक विलक्ष প্রতিপন্ন চইয়াছেন,মানৰ প্রকৃতি পরিজ্ঞান বিষয়ে ভাঁহার অপেক্ষাও পটুতর **অনুভ**ব প্রকাশ করিতে পারে এবং সমধিক বিজ্ঞ-তা সংকারে লোকের বিভিন্ন চরিত্র ও স-দসৎ অভিপ্রায় বোধ গম্য করিতে সমর্থ হয় এমন বিস্তর লোক দুফ হইতে পারে। চিম্ন শক্তিই যে বৃদ্ধিবৃত্তি বিষয়ক মহত্তের এক মাত্র পরিমাপিকা ভাষাতে আর সন্দে-হমাতে নাই ৷ সেই ৰূপ গণাঁঞার্ভিনিবয়ান শে মহন্ত, যাহা মনুষাত্রের সার্ংশ ও চরম উদ্দেশ্য, যাহা প্রম পুরুষার্থ লাভের দে-দীপামান প্ৰমাণ স্বৰণ, তাহার প্রিমাণে ५ (कटल विरुक्त श्रुडावरे कात्रः। मश्मात মণে ভিটিই সাধু পুরুষ তিনিই যথার্থ ম-হত্ত লাভে সমর্থ ইইয়াছেন, যিনি অপরি-বর্তনীয় সংকল্প সহকারে শুদ্ধ সংপক্ষ भाव जनवम् कतिस यान्कीवन नासभादर्भ বিচয়ণ পুরুক কালছরণ করেন, বিনি অসম শীর্ম বিস্তার পুরন্ধের বাহ্যিক ও আস্তরিক রিপুর্গের গর্মমণ চিত্তরগ্পন প্রলোভন সকল সূদ্র প্রাহত ক্রিয়া থাকেন, যিনি জীবনের ভারনিবছ অভিমাত্র তুর্বহুছই-লেও হৃষ্ট ও অবিচলিত চিত্তে বহন করিতে পারেন, যিনি নিয়তি প্রদর্শিত ভীষণ বিভী-বিকা ও করাল ভারুটী ভঙ্গিমাতেও নিতান্ত নির্দ্ধ এবং তুরন্থ বাত্যাপাতেও একান্ত প্রশাস্থ ভাবে নিশ্চিম্ব রহেন, ধাহার সতেঃ, ধর্মোও ঈশ্বরে স্থানিশ্বলা বিশ্বাস ও আত্মার্পণ কথনই অপনীত হইবার নহে! লোক সমকে মহা আড়মর করিয়া মহজ্ বাঞ্জক কতপ্তালা **লক্**ণ প্রদর্শন ক্রাকেই कि सर्व नता? उत्र अमन्य वेश्वरिक्षांनी लाक मक्त रा मगर की किंकन किना क-লাপ দার সর্বাত্ত মহাত্মা বিলয়া বিশ্বায়ত হয়েন, তদ্ধির মহত্ত্ব লাভের কি আরু উপা-त माहे? युक्ति ७ विस्व**रकत**्नाहास्या আছুরিক ছুর্দান্ত বিশ্ববর্গের যে একান্ত বুলী

कर्त जाहा है महरतुत यशार्थ लेक्ना स-নাতি ও ধর্ম প্রবৃত্তি সমুদারের মধুর্মর প-तामार्थ यमुक्तिहात ७ आधासूनकर्मा স্বাভাবিক চুর্দ্ধর্য বাসনার যে উচ্ছেদ সাধন তাহাই মহত্ত্বের যথার্থ লক্ষণ। নাার ও পর্নোর **অনু**রোধে, চি**রদেবিত ক্লয়ের** প্রম আশা নিবন্ধন অভিমাত প্রেমাস্পদ বস্তু সকলেরও যে চুক্তর বিসর্জ্বন তাছাই মৃহত্ত্বের যথার্থ লক্ষণ। নিতান্ত হতাশ, এ-কান্তক্লিক, লোক সমাজে অবধীরিত ও প-द्विष्टाङ इडेरल७ ध**र्मात अपुर्शाम य कि**-ছুতেই প্রান্তমুখ না হওয়া, প্রত্যুত হৃদয়-ধামে সাত্তনা, নিরুদ্বেগ, আশা, ও আনন্দের আবাহন কর। তাহাই মহত্তের ষণার্থ লক্ষণ। এরপ মহত্র কি বাহিরে প্রকটিত হইবার विवयः। এक्रश्न भइङ्ग कि श्रम वा धेश्वर्रश्चात व्यालका तारथ। कमाठ नरहा कि विमा-বানুকি অনক্ষর, কি বিখাতে কি সংরুত, कि धनी कि मतिज अञानुन महाज नाए मकटलब्र हे अधिकात चाट्य। अनुम मर-ব্রের সহিত বাহা আড়য়রের কিছুমাত্র সম্ভৱ নাই! এই বর্তমান কালে কোন বিশুদ্ধ চরিত মহান্মার হৃদয় রাজ্যে যে কি অনিকাচনীয় মহান সংকলপ সকল সংক লিত হইতেছে, কি অনিক্ষেত্ত গরিষ্ঠ শৌ ৰ্যাজনিত সমুজ্জুল ক। যাজাত নিম্পন হই তেছে মহতী উদারতা বশতঃ কত কত প্রীতি ভালন বিষয় সকলও বিস্তিভ ত হই তেছে, তাহা কে জানিতে পারে! আমরা স্বপ্নেও তাহার কিছুমাত্র অনুভব করিতে পারি না৷ অতএব পদম্মাদা বা ধন্দ-ম্পত্তি থাকিলেই যে মহজু লাভের **অ**ধি कात रह, देश कमाठ मञ्जाविक मदेश। वतः বিবেচনা করিয়া দেখিলে মধ্যবিত্ত লোকদি-त्त्रत मध्या हे व्यक्षिकाश्टल के जिल्लिक महत्त्वत উৎপত্তি इंडग्री ने उत्त । अनेवान् प्रार्थका नावात्र (जाक (ज्यानी बद्धारे व क्र क्ष रीयारान बाङ जनामाना शुक्रमकात नर-कारत याकाजरत ७ अनुक हिएक प्रसियर বিষম যাত্রণা পুঞ্জ মছ করতঃ অকুত্রিন নতা, चक्नो क्रमा ७ दिएक वर्ष श्राप्त १३ का क्रमांकर द्वर गांवी गवका क्रिया प्राटक

ন, ভাষা কাহারও অবিদিত নাই। অতএব ৰখন অই দেখা যাইতেছে, যে মধাবিত্ত লোকদিপেরই নহত্ত পাইবার অধিক ম-ভারনা, তখন তাদৃশ অসুলা রত্ত্ব লাভ বি যারে কি কণমাত্রও অবহেলা করা উচিত ?

হে মানববর্গ! র্থা আমোদ প্রমোদে নিরস্তর নিময় হইয়া মথার্থ স্থার্থ সাধনে কেন পরাঙ মুথ হও। ছির চিত্তে একবার প্রণিধান করিয়া দেখ, মহত্ত্ব লাভ করিতে আমাদের অনোর উপাসনা আবস্থাক হয় না। তাহা আপনাদিগেরই বিলক্ষণ আরত্তে রহিয়াছে। আত্মার উৎকর্ম সাধনই মহত্ত্ব লাভের এক প্রধান কারণ। অতএব যে উপায় ছারা তাহা সম্পন্ন হইতে পারে সর্ব্ব প্রয়হে প্রথমে তাহার সন্ধান করাই বিধেয়।

केश्वदतत गरिगा।

বাধাতখাতে।থান বাদধাক্ষতিভাঃ সমাভাঃ।

পৃথিবীস্থ যাবতীয় জীব জন্তুকে জগদীর যথোপযুক্ত ৰূপে প্রয়োজন বিধান করিয়া
নিত্যকাল প্রতিপালন করিতেছেন। তিনি
স্বীয় সন্তান গণকে পরম স্থাথ রক্ষা করিবার
নিমিত্ত স্থল বিশেষে করুলা বিশেষ প্রকাশ
করিয়া আপনার সকরুণ স্বভাবের মাহাত্মা
প্রকাশ করেন। জীবের কল্যাণ সাধনার্থে
তিনি এক এক স্থলে এপ্রকার অন্ধৃত করুণা
প্রকাশ করিয়াছেন, যে তাহা স্মরণ হইনে
শরীর লোমাঞ্চিত হইয়া উঠে।

স্মেক স্মীপে লাপলও নামক স্থানবাদী মনুষা দিনের জীবন ধারণ ও জীবিকা
নির্বাহের হুজান্ত অবগত হুইলে, বোধ
করি নিতান্ত মুদ্ মনুষোর ক্লমেও জগদীপরের দয় মুর্জিমতী হুইরা বিরাজ করিতে
বাকে। উক্ত স্থানের যে প্রকার অবস্থা তাহাতে বে দেখান কোন প্রকারে মনুষোর
বাস যোগা হুইতে পারে ইছা সহসা কাহারও মনে উদ্ধান ইছিতে পারে না। স্থানের
স্মীপ্রতী লাপ্লও প্রভৃতি কতিপ্র স্থান
মুবার মণ্ডিত হির্মারি শ্রেণী ঘারা পরি
বিতি এবং হিম্লিরি শ্রেণী ঘারা পরি

ভূমি পরিদেবিত। ঐ সকল স্থানে নথো মধ্যে এত প্রভূত ভূমার পতিত হইয়া রা-শীক্ত হইয়া থাকে যে প্লুচণ্ড গ্রীপ্ন কানের স্থােডাপেও তাহা দ্বীভূত হয় না ! বি-শেষতঃ অন্যান্য দেশাপেকা উক্ত স্থানে আর যে এক যোর ভয়ানক অবস্থা উপ ख्डि हरेशा थात्क, डाहा न्यात्र व हरेतन हि তের বিষম বৈকল। উপস্থিত হয়। লাপ লভের কোন কোন স্থানে ঋতু বিশেষে গ্রেয় তিন মাস স্থেটোর উদয় হয় না এবং ঋতু বিশেষে দিবাকর উপযুপেরি তিন মাস স্ব কীয় কিরণ বর্ষণ করিতে থাকে*। লাপ ল**ও স্বভাবত হিম** প্রধান স্থান, বিশেষতঃ শীতকালে তথায় ক্রমাগত তিন মাস স্থা-ৰ্ষোদয় না হওয়াতে যে প্ৰয়ন্ত হিমাধিকা হয় তাহা কিঞিৎ মনোধোগ করিলেই অ नाग्राम नकल्वत्र चमुख्य रहेर्ड शादा ভ্রমণকারি ব্যক্তিরা বর্ণন করিয়াছেন শীত কালে কোন কোন সময় লাপলত্তে এমনি হিমের প্রাবল। হয় যে তত্ত্বসমুদ্য নদীর জল সংহত হইয়া যায় এবং কুত্রচিৎ তুষা-রবং কঠিন হইয়াও উঠে। श्रहत पात রুক থাকিলেও তম্মধ্যস্থিত স্থরাদি তর্ল भनार्थ नकन क्रिया धात्र जनः यिन कः কালের জন্য দার মুক্ত রাখা যায়, তাহা হ **ইলে গৃহ মধ্যস্থিত বাষ্পা** পৰ্য্যন্ত তুৰাৰ ৰূপে পরিণত হইতে আরম্ভ করে। **অন্যান্য স্থানে যেমন বিবিগ প্রকার** ভোজন रयांगा कन मेखानि कत्य छेङ द्वारस 🙉 প্রকার জন্মে না : তথাপি আর আর ঋততে ষদিও কিছু উৎপন্ন হয় শীত কালে আর किছू हे उँ९११ पिछ इस मा। किंश्व कर्नी-श्वरतत कि मान्धर्यः कब्रगः, এই স্থানকেও তিনি শ্বকীয় অনুপম কৌশলে নমুব্যের বাং যোগ্য করিরাছেন, লাপলগুস্থ লোকে স্থীয় निवाम ভূমিকে अर्थ मनुग वर्गन करतः। তাহারা জগদীশ্বর প্রসাদাং স্বড়ন্দে সকর काटन जाপनापिरभंत भग्नुमग्र अरक्षाकशीय ব্যাপার সম্পন্ন করিয়া সম্ভোষ পূর্বেক কাল इत्भ करत्।

^{*} Ree's Cyclopædia Fol. 20 pt. 1. † The natives believe this country to be atterestrial paradise. Encyclopædia Britanica F

লাপলতের যে প্রকার অবস্থা ডারাভে অন্যান্য সময়াপেকা শীতকালেই তক্তম *लाटकत याधिक क्ष*त्रवका इ**हेवात मञ्जा**यना, কিন্ত রূপানিধান বিশ্বপিতা তত্ত্বস্থ লোকের তংখা প্রিকারের জন্য এমনি সকল উপায় বিধান করিয়া রাখিয়াছেন, যে তদবলয়নে লাপ্সপ্রামী লোকে অক্লেশে সমস্ত শীত ঋত যাগন করে। ীতকালে যেমন উক্ত স্থানে লীর্থকাল স্থায়ের উদয় হয় না, তেমনি আর এক প্রকার বিশেষ আলোক দারা ভথাকরে অনেক অম্বকার দূর ও লোকের কর্মানিইছে ইইয়া থাকে। যে বিশেষ আ-লোক ছারা লাপলগুরাসী লোকে সুর্বাহীন শীতকালে আপনাদিগের সাংসারিক সকল কার্যা সম্পন্ন করে,পৃথিনীর কেন্দ্র ভিন্ন আয় কুত্রাপি উক্ত প্রকার মালোক দেখিতে পা-ওয়া যায় না, ইহাডে বিলক্ষণ প্রতীতি হ ग्रेंट्स्ट, य कित्मुद्र निक्रेवर्टी श्राप्त ही-ধকাল ভাষোর বিরহ্ হয় এই নিমিত্ত জ-পদীশ্ব তথায় আলোক বিশেষের স্থটি ক-রিয়া রাখিয়াছেন। সুখা বিরুহ কালে লা-পলগুলাগী লোকে শুনা ছইতে যে আলোক প্রাপ্ত इस, जाकति नाम उभोहीन उक्का । ই উনিটান উল্ফানেক পদার্থ এবং কি কারণে যে উহার উৎপত্তি হয়, তাহা व्यक्तानि (काम शिख्ड हैं िश्मश्यात जित করিতে পারেম নাই, কিন্তু উক্ত মন্তত আলোক দারা লাপলন্তীয় লোকে অক্লেশে मालगानिरशंद मकल कर्षा निर्देशक करत। ঐ আলোক দারা লাপলগু বাসী লোকে দর্বত্র গভায়াত করিতে পারে, অঙ্লেশে गुल्याकि कार्या अप्लाझ कटत, अवर नन नमी ও সাগার জালে মথস্তানি ধারণ করিতেও নুমুখ দ্যু, উহা ছারা উহারা বৃদ্ধন ভোকন প্ৰয়ন উপৰেনাদি গৃহ কাৰ্যা সমস্তও অ-

• সোন কোন পথিত ঐ উচ্চাকে ইবলুডিক ব্যাপার পিনা ক্রেডিক করিবাকেন তারারা করেন, যে এখন বে চানে বারু প্রস্না চম্য, ত্রুকাকে সেই ছানে ঐ প্রস্না বা দ্রুক মধ্য নিয় বিশ্বাদালোক স্ফুরিক হওয়াতে উক্ত প্রদান কার চিলানে উৎপত্তি হয়। মাত মালেই লাগেলত মেলে ঐ উচ্চা প্রকাশ পায় কারণ পাতি করেতে তারা বারু ক্যাপ্রস্কার হয়। উক্ত পত্তিতেরা বিশ্বামন্তি না ক্তাব্যে যান্ধ্র বিশেষ ভাষা উন্নাচীন উচ্ছাম্বানি সাক্ষাক্ত প্রস্কার বারা উন্নাচীন উচ্ছাম্বানি সাক্ষাক্ত স্বান্ধ্র বারা উন্নাচীন উচ্ছাম্বানি সাক্ষাক্ত স্বান্ধ্র বারা উন্নাচীন উচ্ছাম্বানি সাক্ষাক্ত স্বান্ধ্র বারা উন্নাচীন উচ্ছাম্বানি সাক্ষাক্তির সাক্ষাক্ত স্বান্ধ্র বারা উন্নাচীন উচ্ছাম্বানি সাক্ষাক্ত স্বান্ধ্র বার্মাক সাক্ষাক্ত স্বান্ধ্র স্কান্ধ্র বার্মাক সাক্ষাক্ত স্বান্ধ্য স্কান্ধ্য স্কান্ধ্য স্কান্ধ্য বার্মাক সাক্ষাক্ত স্বান্ধ্য বার্মাক্ত স্বান্ধ্য বার্মাক্য বার্মাক্ত স্বান্ধ্য বার নান্নাংশ সমাধা করে। ইয়া অকবার আনাদিণের বিবেচনা করিয়া বেখা আছি বৈ কোন করেয়া কেনা আছি বৈ কোন করণামর পুরুষ লাপলও বালী জোন কর ছংখ হরণের জন্য এমন আছর্মা উন্দিরীন উল্ফার হালি বিশেষে খুন্য প্রেথ স্থার প্রিবর্তে আলোক বিশেষের উৎ পত্তি হইরাছে? জনদীখর যদি স্থামের দানিত স্থানে উদীচীন উল্ফার হালি না করিতেন, তাহা হইলে লাপলও বাসীলোকে কি প্রকারে জীবন ধারণ করিত?

नाशनए এक क्षकात मृत्र करम, ये मृत्र হইতে লাপণগুস্থ লোকে যে সকল উপ কার প্রাপ্ত হয়, ভাহার প্রতি মনোনিবেশ করিলে বোধ হয় যে, জ্বাদীশ্বর কেবল উক্ত স্থান বাসী মনুষ্য গণের ছুঃখ দুর ক-রিবার উদ্দেশেই তথায় এ প্রকার পশুর করিয়াছেন। একেড লাপ**লও দেশে স্ভাবতই** ভোজন যোগঃ ফল সুলানির ভাগ অপ্পই জন্মায়, তাছাতে আবার শীতকালে কিছুমাত উৎপদ্ম হয় না শীত ঋতুতে,লাপলও বাসী লোকে কেবল উল্লিথিত মুগ অবলয়ন করিয়াই কীবন ধা-রণ করিয়া থাকে। ঐ সময় তাহারা কে বল উচার তৃত্ধ পান ও মাংস ভক্ষণ করি-য়া প্রাণরকা করে; অপর কোন দ্রব্য থাই তে পার না। শীতকালে যে তাহার। কে-বল উক্ত পশু দ্বারা আপনাদিণের ভোজন কাৰ্য্য নিৰ্বাহ করে এমত নহৈ, উহা স্বারা তাহাদিনের আরও বিস্তর **উপকার সর্দো**। ঐ মুগের চর্মা দ্বারা ভাষারা উৎকট শীভ নিৰারকানুযায়ী গাতোবরণ প্রস্তুত করিয়া অজে ধারণ করে, উহার চর্মপাছকা নির্মাণ করিয়া অক্লেশে ভুবারারত স্থানের উপর দিয়া সর্বাত্র গভায়াত করে এবং উক্ত পশুকে তত্ত্বস্থ এক প্রকার শক্ট বিশেষে (बाकना कतिका चनाशांद्रम दुवान महान् অভিক্রম করিয়া এক দিবুদের মধ্যে কছ-एत भगा छ श्रमन कतिहाउ में सर्थ रहा। जम्म-कादी त्यादक मिथिमादहर, य नीजकारण नाभगत द्वरमे त्व क्षकाह हिवाबिका एउ. ভাষাতে ভল্লন্থ লোকে উলিখিত মুখ চৰ্ম

वाद्या काळाच्यानम सा कविरत क्यानगरण्डे कीतम सका क क्रिएंड शास्त्र ना। ये एन हन्त्र অভাবভঃ এমৰ ভুল ও লোমনয় যে উহা ব্যবহার করিলে লাগলওছ লোকের আর कान क्रिने बादक ना, नीउ अधान ज्ञारन বিশেষ উপকারী। উক্ত মৃগ চর্মা নিমিত পাছুকরি এমনি তণ বে তাহা পরেতে ধা-রণ করিয়া লাপলও বাদী লোকে এক দি-स्तित्र गर्धा ७० क्लिम शर्थ भगनाभगव केत्रि-তে পারে । ঐ মৃগ চর্ম নির্মিত পাছকার লোমের দিক বহির্ভাগে থাকাতে পাছকা-ধারী বাজির পদতলে কিছুমাত্র হিম প্র-বেশ করিতে পারে না, স্কুজরাং তাহা ধা-রণ করিয়া স্বক্ষ্টেশ ভূষার ময় স্থান ভ্রমণ িকরা যায়। কোন ভার পূর্ণ শকটে ঐ মৃগ र्पाजना कतिरल छेरा जनातारम श्रुक्छत ভারের সহিত ঐ শকট লইয়া প্রতিদিন প্ৰায় শত ক্ৰোশ পৰ্যান্ত বাইতে পারে। উক্ত মূগের এমনি আশ্চর্য্য শক্তি যে কঠিন ভুবারমর হিমার্ত স্থানে বছ দুর গমন করিতে কিছুমাত প্রান্ত হয় না। লাপলঞ্ मिना कारक थे मृश (शक्किक नकरके छ-बन्ध नानाविध भवा अवा भतिभूर्व कतिशा নরওয়ে প্রভৃতি দুরদূর ছানে বাণিজ্ঞা ক-রিতে ধার। জগদীশবের কি চমৎকার ম-হিম তিনি হিমার্ত লাপলও দেশে এমনি আশ্র্যা পশুর সৃষ্টি করিয়াছেন যে, তন্ত্রা-রা তথাকার লোকের জীবন ধারণ ও উল্ তি বৰ্মনোপযুক্ত সকল কাৰ্যা সম্পন্ন হয়। লাপলও দেশে উক্ত প্রকার মূগ না থাকি-লে কোনমতে তথাকার লোকের জীবন বা-त्र १रेड मा এवः উङ প্रकात मृत जिल्ल ও তথাকার আর কোন পশু থাকিতে পা-রিতনা। শীত প্রধান লাপলও দেশে বাস করিতে হইবে বলিয়া জগদীখন উক্ত মৃ-গের বমুদার গাত্রথমনি স্কুল চর্মা ও অবিরল লোম ছারা ভারত করিয়াছেন বে তথ্য দিয়া ঐ শত শরীরে কিছুমাত্র হিম প্রবেশ করিতে পারে না। বিশেষতঃ আরও আ-क्टबाब विषय अहे स्य नीएकाटमत आत-(इ व नाम नाम नाम करन कामनः * Encyclopedia Britanica Fol. IX.

রুদ্ধি হইতে থাকে। উক্ত পশুর আহারের জনা শীতকালে লাগলণ্ডের তুবার ক্ষেত্রে এক প্রকার শৈবাল উৎপন্ন হয়, মুগরণ ত-খন কেবল ঐ শৈবাল ভক্ষণ করিয়া জীবন ধারণ করিয়া থাকে এবং **ভদ্মারা স্থ**ননর ৰূপে ভাহাদিগের শরীর রক্ষা হয়। সে শৈবাল ভক্ষণ করিয়া মূগা কুল জীবন ধারণ করে, উক্ত শৈবাল দারা লাপলও বার্মী लारकब्रंथ विख्डा डेशकात मर्स्म । जे रिम বাল তাহাদিগের শীত নিবারণের কার্য্য সাধন করে এবং অনেক প্রকার ঔষধেও লাগে। হা জগদীশ! ভূমি দেশ ভেদে ও কাল ভেদে কত প্রকার বস্তু রচনা করিয়া কর প্রকার করণাই প্রকাশ করিয়াছে। তুমি শীত প্রধান স্থানে তথাকার উপযুক্ত বি-यस रुखि कतिसा चुकीस महिमाटक महीतान् করিয়াছ এবং উক্ত দেশের আবস্থাক মত **দমন্ত প্রয়োজন বিধান করি**রা তত্রস্থ প্রা-স্বাপুঞ্জ পালন করিতেছ। ভোমার করুণার বিবয় আমরা কভারীর্তন করিব, তোমার অপার মহিমা সাগরে মন নিমাম হুইলে তাহার আর উত্থান শক্তি থাকে না।

> ত্রিপুর। ব্রাহ্মসমাজের । তৃতীয় দাধংসরিক সভা।

> > के व्यक्ति १९१८ के देख

আদ্য এই তিপুরা তাজারমাজের তৃতীয় দাম্বংসরিক সভা, ইহা আমানের মার্ডীর আফ্লাদের বাপোর, অতএব হে রাজারণ বৈ বিশ্ব বিদাশন মহিমানর মহেমনের মার্কির নানাবিধ বিশ্ব সভেও এই সূপ্ত কর ব্যাপারে প্রবৃদ্ধ হইতেছি, তাঁহার মাহিমা প্রতিপাদক কতিপয় বিষয় উল্লেখ করিয়া আমরা তাঁহাকে মমন্কার করি।

এই লগতীতলে স্কুল, স্কুল, কুল,
বৃহৎ চেতনাচেতন যথন বে বিষয়ে আ
নরা দৃষ্টিকোপ করি, ভারতেই জগনিমন্তার অদীম জ্ঞান, প্রভুত দরা এবং আ
চিন্তা শক্তি সন্দর্শন করিয়া পাকি:
এক বন্ধর সহিত বৃষ্কুর মিপ্রিত হইলে
বে তছ্ডর বস্তু স্থা কপ গুণ পরিহার

कतिया मुख्य खनामि धात्र करता. देश म-करनारे थात ब्लाफ चारहून। इतिका हुन मः रंगारन रंग भावत वर्ग अवः भीत भीड नर्दंगार्श (य হরিৎ বর্ণ গ্রহণ করে, ইছা অনেকেই প্রতাক করিয়াছেন, কিন্তু কি আক্র্যা জগদীশ্বরের জ্ঞান ও শক্তি! নিজ্ঞ ক্রোর ভাগের তারতম্যানুসারে তত্তং যোগধীন নিষ্পন্ন সামগ্রীর অতি বিচিন বিপরীত গুণ সমুস্তব হয়। ত্সিজন ও নৈতজন নামক বাষ্পা বিশেষের मानाजित्तक मः स्थान विधान बाह्य श्रेष्ट বিধ দ্রবোর উৎপত্তি হয়। তথাখো নাইত্রিক্ এসিড, নৈত্রস এসিড, নাইত্রিক অকসাইড নামক পদার্থ তার অতি প্রথর প্রাণ নাশক গুণ ধারণ করে অর্থাং উহা জিহ্বাস্পর্শ ^{সাৰ} পঞ্ৰ পাইতে হয় কিন্তু তাহারই আবার প্রকার ভেদ অর্থাৎ সামানা বায়ু হারা আমাদের জীবন ক্রিয়া সমাধা হয়, ম্যাতীত আমরা এক মুহু**র্তও প্রাণ্ধার**ণ করিতে পারিনা। পদার্থের সংযোজন গুণ भावा सममन्त्र व्याणकी व्यालीकिक बााला-त मन्त्रानिक रहा, जाहा खत्र कतिस्व মন আর দেই অগাধ জ্ঞান সমুদ্র পরমে-শ্রের জনে ক্রিয়ার ইয়ন্তা করিতে না পারিরা অবাক্ ও তক হইরা থাকে। সল-ফিটরিক এবিড অর্থাৎ ভারক ও এগনিয়া মিশ্রিত হুইলে ভাহাতে কিঞ্চিণ চুণ গ্রক্ষেপ করিলে উলিখিত এমনিয়া হইতে দ্রাবক বি-যুক্ত হইয়া চুর্ণের সহিত সংশ্লিফ হয় এবং সেই সংযুক্ত দ্ৰব্যে সোডা নামক লবণ বি-भित्त निरक्षण कतिदन के छात्रक आवात हु-ণকে পরিত্যাগ করিয়া পুথক হয়, তাহাতে পুনরায় পোটাস নামক কার বিশেষ প্র-শিন্ত হইলে সোডা হইতে দ্রাবক পুনর্বি-জিল হয়, তথ্যে আবার ট্রনসিয়া যোগ কণ্ডল পরে উহা পেটা**স হইতে স্বতন্ত্র** ंद এवर পরিবশ্বে বারাইট মৃত্তিকা সং-न क्रा कड़िल द्वेनिया **हरेएड श्थक ह-**^{উয়া উক্ত মৃতিকার} সহিত মিলিত হুইয়া धारकः। अञ्चरत तमाग्रम विका मञ्जीव आहे धक्ति विषयात विवत्न मा अतित्रा कान्य থানিতে পারিলাম মা। স্থবিধ্যক্তি প্রতা-

গ্ৰামণ্য লিবিপ ক্ষেত্ৰালয় ব্ৰাহ্মণ ক্ষিয়াছেব, নেবেল উয়াট বাৰক উদ্ভিদ বিশেষের পদ্দ প্ৰাতংকালে আৰু, মধ্যাকে বিশাস এবং রকনীবোগে ডিউন্মাস হয়।

বছতর মনুবোর এব্রির সংকার খা-কিতে পারে বে দর্মে দেশেই মেনাছ ই-ষিত হইয়া থাকে, কিন্ধ দক্ষিণ সামেরি-কার অন্তর্গত পেরাদেশে বালেন্ নামে এক স্থান ভাছে তথায় কোন কালেই রুটিপাত হয় নাঃ তত্ৰতা লোকে রুটি ব্যতিরেকে कि अकारत कीवन भारत करत हेहा চিন্তা করিলে মনে আপাততঃ সংশয় উপস্থিত হয়, কিন্তু বিশ্ব বিধান কর্ত্তা ক क्रगानिधान भन्नरमञ्चरत्र विषय चार्रा कहिला अन्तरकर्ता मान्सर क ত ক্ষণ স্থান পায়! যিনি সর্ব্বজীবের পাত ও স্থদতে৷ এবং যাঁহার অমুকম্পায় ঋতি क्ष्म की होत् भर्या ह यथा भयुक्त करन म-मुनम প্রবেজনীয় ও সংখদ সাম্মী প্রাপ্ত হইডেচে, তিনি যে তাহাদিগকে এতা मुग अस्टत विषया विषाठ स्टेटन हेश কদাপি সম্ভব নহে। তথায় যেমন কোন সময়ে বিশ্বমাত্রও বারি পতন হয় না,ভেমন শীত ঋতুতে এৰপ ঘোরতর কুজ্ঞটিকা স-মুৎপদ হয়,যে তক্ষারা অতি অনুকরা ভূমিও ফলবতী হউতে থাকে এবং পথের ধূলি পৰ্যান্ত কৰ্দ্দৰ হুইয়া যায়। হে বিচিত্ৰ শক্তি অনাদিকারণ পরসাত্ম ! ভোমার ছুরবগাঞ্ অদীম মহিমা সাগরের পার আমি কি প্রকারে পাইব। এক রজনীতে কি ভাহা বর্ণন करा यात्र ? मसूचा यनि পৃথিবীর সমকাল বর্তমান থাকে এবং যাবজ্ঞীন অবিল্ঞান্ত কেবল ভোমারই গুণ কীর্ত্তন করে, ভথাপি সে ভৌমার মহিমা সমুদ্রের এক বিদ্যুরও **खन्ड क्रिंडिंग मक्षम इस्ताना । एक्सीनव-**ছো। আমার প্রার্থনা এই বে আমি খ धिरु किश चण्लकानई कीविछ शांकि सन তোমার নিয়ম প্রতিপালন করিয়া স্বস্থ খা-কিরা ভোমার গুণ গাম করিছে করিছে আমার দেহ প্তন হয় এবং নেই ভয়ানক ममरा स्व लामारक नात्रभवारक।

७ जक्रमवाविश्रीयः

মহাভারত। আদিপ্র

दिमालाञ्चन करितन, नमाव्याय कुर एक कर्कुक এই बर्श असू छा छ इहेशा जिम्मावारम গমনোদ্যত হছুলে দেবয়ানী কহিলেন, হে অবিরা ঋষির পৌত্র কচা ভূমি একণে স্কুচরিত্র,সৌজন্য,বিদ্যা,তপস্তা ও শমদমাদি-তে বিভূষিত, এবং মহাযশা অঙ্গির। ঋষি যেমন আমার পিতার মানা, ভদ্ধপ তোমার ণিতা রহস্পতিও আমার মান্য ও পূজা, আনমি ৰাছা বলি অভএৰ হে তপোধন! তাছা প্রণিধান পূর্বেক চ্ছাবণ কর। নিয়-মোপেত ব্রতাচরণ কালে আমি তোমার অনেক পরিচর্ঘ্যা করিয়াছি, এক্ষণে ভূমি সমার্ভবিদ্য স্থতরাং খামাকে ডক্কনা করিবার যোগ্য, অতএব যথাবিধানে মন্ত্র-পুত করতঃ আমার পাণি এহণ কর। কচ কহিলেন, হে অনবদ্যাঙ্গি! তোমার পিতা শুক্রাচার্য বেশন আমার মান্য ও পুজা,তুমি-ও আমার তদ্ধপ পুকনীয়া,হে তদ্রে ! ভূমি মহাত্ম। ভার্গবের প্রাণ হইতেও প্রিয়তমা কন্যা, স্থভরাং গুরুপুত্রী বলিয়া ভূমি আ-মার সর্বাদ। পুজনীয়া। যেমন তোমার পিতা শুক্রাচার্য্য অমার গুরু ও মান্য,ছে দেবয়ানী! ভূমিও তদ্ধপ, অতএব আমার প্রতি এরপ वाका व्यव्याक्तवान्दर। (मवयानी कहित्नन, হে বিজোক্তম! তুমি আমার পিতার গুরু-পুলের পুত্র,অতএব তুমি আমারও পূজা ও মানা। হে কট! বথন অস্থরেরা ভোমাকে পুনঃপুন হনন করিয়াছিল,সেই অবধি তো-মার প্রতি আমার যে কিবল প্রীতি অবিয়া-ছে তাহা স্বরণ কর। ভোমার প্রতি আ-মার যেৰপ ভক্তি ভাছা সৌহার্দ বা অমু-রাগ দারা অবশ্ব তোমার অনুভব হইয়াছে। অতএব হে ধর্মজা। পরম ভক্তিমতী বেলামি আমাকে পরিত্যার করিওনা। কচ কহি-दि एक बद्दा **धरे भनि**दर्शका वि-यदि भाषात्क निरम्नाभ कतिथना, तक शुरु । पृत्रि मानात शक हरेडाउँ छक्रजत, मण-वर वाहात के लगह रहा द निवा-मानी। त बेमामर्ग स्रेट श्रीम वर-

পল হইয়াছ, আমি তাঁহারই জঠরে বাস করিয়াছিলাম, অতএব ধর্মত তুমি আমার ভণিনী, অতএব আমার প্রতি এৰূপ গছিত কথা কহিওনা। হে ভদ্ৰে! এত কাল ভো মার নিকট স্থান্থে বাস করিলাম এবং এখন ও কোন অস্থুখ নাই, এক্ষণে অনুমতি দেও গমন করি এবং আশীর্কাদ করু যেন পথে (कान अपकृत घडेना न। इस्र। कथा ধর্ম।বিরোধে আমাকে স্মরণ করিও এব॰ অপ্রমন্ত চিত্তে নিয়ত শুরুর আরাধনা ক-রিও। দেবয়ানী কহিলেন, ছে কচ! ধর্মা কামার্থে আমাকর্জুক বাতিত চুট্যাও বদি তুমি আমাকে প্রত্যাখ্যান কর, তাহা হই লে তোমার অধীত বিদ্যা কখন সফল: ই-ইবেনা। কচ কহিলেন, আমি তোমাকে কেবল শুরুপুত্রী বলিয়া প্রত্যাখান করি-তেছি, দোব দৃষ্টিতে নহে এবং গুরুও আ-मादक এ विवरंश अञ्चल्हां करतन नारे, अउध-ব রুথা কেন আমাকে অভিসম্পাত করিলে। হে দেবয়ানী! আমি তোমাকে আর্ঘ ধর্ম কহিলাম, তথাপি তুমি অভিসম্পাত করি-লে, আমি শাপের যোগ্য পাত্র নহি, অত এব ভোমার যে শাপ ইছা ধর্মত নছে, কে-বল কাম জন্য মাত্র ৷ অতএব তুমি বাহ কামনা করিতেছ তাহা বিফল হইবে, ঋষি পুঞ্ কখন ভোমার পাণি গ্রছণ করিবেন না, কিছ ভূমি যে আমাকে অভিসম্পাত করি (ल—वामात विमा विकल स्ट्रित, छंग्ह। ह-**উক, কিন্তু আমি য**াহাকে অধ্যয়ন করাইন, देव मन्त्रशासन তাহার मकन ६६८व । কহিলেন, দেবয়ানী কচের প্রতি অভিশ স্পাত করিলে, কচও দেবরানীর প্রতি এই **ৰূপ অভিসম্পাত ক**রিয়া সত্তরে ত্রিদশাল (य श्रञ्जान कतित्वन । उथन हेस्तानि (पव-গণ সমাগত কচকে দেখিয়া বৃহস্পতির স-मरक उँ! हारक कहिए जा शिर्यन। रह कि ! ভূমি যে আমাদিগের পরমান্ত ভুন্ধর হিত সাধন করিয়াছ,ইহাতে তোমার এ যশঃ চির श्वाभी रहेरव अवः जूमि जामानिस्तत अक-**क्रम प्यश्मी दहे**रवा 🗚

বিশেষ সভার প্রস্তাব ব

তত্তবোধিনী পত্রিকা প্রচারিত ইওয়াতে এতদেশীয় লোকদিগের যে নামা গুরুতর উপকার লাভ হুইয়াছে, ইহা বোধ বিশিষ্ঠ ব্যক্তিমাত্রেই স্থীকার, করিয়া **থাকেন**। আদ্যোপান্ত অনুধাবন করিয়া দেখিলে শ্রীযুত বারু অক্ষয়কুমার দত্ত এই ভত্তবো ধিনী পত্রিকা সৃষ্টির এক জন প্রধান উদ্যো-গী এবং এই মহোপকারিণী পত্রিকার অ-সাধারণ শীরৃদ্ধি লাভের অন্বিতীয় কারণ ব-লিয়া বোধ হইবে। তাঁহারই যজে ও পরি-অমে তত্ত্তবোধিনী পত্রিকা দর্বেত্রএরপআদর ভাজন ও সর্কাশধারণের এরপ উপকার সা-ধন হুইয়া উটিলাছে ৷ বস্তুতঃ তিনি অননাম-নাও অনন্যকর্মা হট্য়া কেবল ভত্তবোধি-নী পত্রিকার শ্রীহৃদ্ধি সম্পাদনেই নিয়ত নিবি ষ্ট চিড ছিলেন। তিনি এই পত্রিকার শ্রী-কুদ্ধি দাধনে কুত্ৰকংশ হ্ইয়া অবিশ্ৰাস্ত অত্যুৎকট পরিশ্রম দারা শ্রার পাত করি-রাছেন, ব**লি**খে বোধ হয়, **অভ্যান্তি দোবে** দুধিত চইতে হয় না। তিনি যে অতি विषम शिरहारदारम चाकान्छ इहेगा मीर्घ-কাল অশেষ ক্লেশ ভোগ করিভেছেন, ভাহা কেবল ঐ অভ্যুৎকট মান্দিক পরিশ্রামের পরিণাম, তাহার সন্দেহ নাই। অতএব যি**নি** ভত্রবোধিনী পত্রিকার নিমিক্ত শরীরপাত क्रियारहर, त्म हे भरहानगरक महत्य माधुवान প্রদান করা ও ভাঁহার এতি তথোচিত ক-ভক্ততা প্রদর্শন করা অত্যাবশ্যক, না করি-লে তত্ত্বোধিনী সভার সভাদিগের কর্তব্যা-नुक्रीरमत वाजिकम इस।

দীর্গকাল ছুরস্ত রোগে আক্রান্ত থাকাতে অক্ষয়কুমার বাবুর আরের সঙ্কোচ, ব্যরের বাহুল্য এবং ত্রিবন্ধান ন আশেষ ক্লেশ ঘটিবার উপক্রম হইরা উঠিয়াছে। এ সময় কিছু অর্থ সাহায্য করিতে পারিলে প্রকৃতক্রপে কৃতজ্ঞতা প্র-দর্শন করা হয়, এই বিবেচনায় গত আবেণ মাসের ঘাদশ দিবশীয় বিশেষ সভায় জুমুত বাবু কানাইলাল বাইক জ্ঞাব করেন, বে তত্ত্বোধিনী মতা হইছে কিছুকালের জনা জ্ঞামকুমার বাবুকে সাহাযা
প্রদান করা যায়। তদলুসারে অদ্যা সমাগত
সভ্যেরা নির্কারিত করিলেন, অজ্যর্কুমার
বাবু বত দিন পর্যান্ত সমাক্ হৃত্ত ও সভ্
ন্দ শরীর হইরা পুনরার পরিক্রম ক্ষম না হন,
তত দিন তিনি সভা হৃত্তে আকামী আ
ভিন মাস অবধি পঞ্জবিংশতি মুদ্রা মানিক
র্জি পাইবেন। আর ইহাও নির্কারিত
হইল বে এই প্রতিজ্ঞার প্রতিলিপি অক্ষরকুমার বাবুর নিকট প্রেরিত হয় এবং সর্বাসাধারণের গোচরার্থে তত্ত্বোধিনী প্রিকাতেও অবিকল মুদ্রিত হয়।

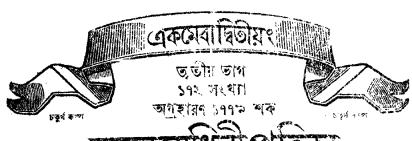
বিজ্ঞাপন।

ভত্তবাধিনী সন্ধার সভা বা সভা ভিন্ন অন্য বে কোন বাজি মাসিক॥ আনা করিনা সভায় প্রদান করিবেন, উঁাহার। নি ন্যমানুসারে সভার পুস্তকালয় স্থিত পুস্তক ঋণ পাইতে পারিবেন।

বিজ্ঞাপন

বঞ্চাৰায়ুৰাদক সমাজ হইতে-প্ৰকাশিত পুশুক এ সভার কার্য্যালয়ে বিজ্ঞান্থ প্রস্তুত আছে, তাহার মূল্য নির্মণ। বহৎকথা—প্রথম ভাগ ... । । চক্মকিবারা ও অপূর্ক রাজবন্ত্র বিষয়ক প্রস্তার ... / । মৎস্ভারী বিষয়ক প্রস্তার ... / । চন্দেশীয় বুলবুল প্রকী বিষয়ক প্রস্তার / ।

ত্তে এই তত্ত্বাধিনী পরিতা, কলিবাতা ন্রবে নোরানাকেন্তিত ক্তরেবাধিনী সক্ষার কার্যালয় ক্ত-তে এক্তিমানে অফাশিত হয় :—ইসার বুলা এক সাক্ষা ২ কার্ত্তিক প্রকাশর সক্ষান ১৯১৮ ক্তিমতাক্য ১৮৫৮



ज्ञाता। थना थानक।

वार्मिद्रकत द्र्थ मुक्ष्य।

যে সমস্ত পবিত্রচিত্ত মহাল্লারা দর্শদা धर्म शहरीहरू शतिख्रमन करतम, छ।इ। मिटाह कें लिए नश्यम ७ व्यास्थ अकात्र विषय छन्। বিষর্জন সক্ষমি করিয়া আপাততঃ তাঁহা-मिश्राक फुल्लालाशी निवास है अजैकि हरा। हेका मणा बढ़ते, त्व क्रवांक बचातल खेलार्क्स न করিতে হ্ইলে অনেক সময় অনেক প্রকার কুপ্রসৃত্তির সহিত নংগ্রাম করিয়া অনেক প্রকার চুংগভোগ করিতে হয় এবং পাল. প্রেচেক বছবিধ বিষয় ভোগও পরিতাগে **করিতে হয়। অকিঞ্**ৎকর স্থার ভোগেব লালসায় কেবল প্রবৃত্তি প্রোটে ভাসমান হইলে কথন ধর্মকেত্রে উপনীত হওয়া সংস্য হয় না। অন্তরাং প্রবৃত্তি নিরোধ চেতুস-হজেই ধর্ম পরারণ লোকের সময়ে সময়ে কটের উৎপত্তি হওয়া সম্ব।

কিন্ত ইহা বিবেচনা করিলা দেখা উচিত, যে ধর্মপালন হেতু ধার্মিক ব্যক্তি ইন্দ্রিয় সংযমাদি অনুষ্ঠান করিলা যেনন কিলিও কট সহা করেন, সেই রূপ অনবর্গুত দর্মা সেবা দারা কোন অনিকচনীয় অলোকিক হথে স্থবী ছয়েন কি না, বিবেচনা করিলে বিশক্ষণ প্রতীতি হয় যে ধর্মা প্রায়ণ লোকে যে অনিকচনীয় অপুকা স্থথ ভোগ করেন, বিষয় স্থা তাইার নিকট স্থথ বলিয়াই গণ্য ইইতে পার্ক্তে মা। যে ব্যক্তি প্রকৃত রূপে

বাশের আনুগত হণ, মালার বুলি, মুলি ম প্রান্তি সমুদায় কল্মিন্কালে ধর্মনে ৮৪ জনন করিয়া গমন করে না, সংগ্র প্রিত্র-িল্বামান ধর্মারালোরভিতি হব, নাহার উন্ত মন্তক বর্মানপ চুকুটে শোভিত থাকে, যে मापु शुक्रम अर्घाइल एकाशब्द, व्यद्मश्रम वर-রিষ্ট ক্রমে জগনীপরের স্থাস্থ প্রেম্বাক্তের खेलनी इ इष्ट्रेंट मभर्ग इष्ट बन्द मर्याना श्रीप मनरक रम हे जनाव क्या मनुद्रेय मन क-शिक्षा व्यक्तिर भारत, भिने धानामाना मेशाया বাকি বে প্রফার অচিন্তনীয় আশার্থা সুধ तम आचारम करत, छाराव मान्ड देवसंत्रक কোন সুধেরট ভূলনা হট্টে পারে মার (**স**ঠ পুণালে) প্ৰিন স্মূন্যৰ ছাত্ৰীঞ্ কেবল জুগম্য সাম, ভান্নে আপ্রেটাট শার্ भाग सुर्व श्रीता विभीतम वालीचा मन्द्र इत्र र भारत्व अर्थन वाकात 'यासम्बद्धाः स्थापः न्। ।

ইং নগা । টে, ম ধর্ম পরায়ণ লোভ কোন নগা সভবেত সাংগ্রেক সংপ্রেদ অনিকর কটিত গাবে লা। উত্তর্গা উপা-দের ভাষণ করা, অপুর্বি সাজায় সাজ্জিত ভাষা, উন্নত আটাজিকায় বাস করা, অপুর্বি গ্রাকে প্রন করা, অসংখ্য লাস দাসী ধারা সেবিত ভাষা ধর্ম জীবি লোকের নকে স্থ্যান্ত হয় না, দিও ভাজ্জন প্রকৃত থার্মিক বাজির কিছুনান স্থাবের অভাব্যাকেনা। বে

ধর্মা প্রায়ণ সাধু লোকের মনো ভূমি পাপ कलेक पात! विकास इस, त्य वास्तित पर्ट করণ পুণাকণ স্থান্ধ বারিতে থাকে এবং যে পুণশীল পুরুষ নিয়ত জগদীশ্বরের প্রেম পী পশ্লের করিয়া দ্য পান জনিত অনিক্চনীয় স্থার স্থী হব, সেই মহা পুরুষ দিবসের অফম ভাগে শাস্ত্র ভোজন করিয়া **বাদুশ তৃংপ্ত ল**াভ क्टरम, भग्नाभी। ताक तारकक्त प्रका (प्राप्त গেছা পেয় চাতুর্ঝিষ উপাদের অংস্কাদন ক্রিয়াও ভাষার সহস্রাংশের একাংশ স্তর্থ . ভোগ করিতে সমর্থ হয় না। যে ধর্মানীল লাগু ব্যক্তি প্রম প্রাৎপর প্রমেশ্রের ীতি কণা অমূলা মৰিময় হাও আগন কণ্ঠ নেশে থারণ করে, বহণামান্য নিরামর ছার ভাষার মাদৃশ শোক হয়, ধর্মা হীর লো। ্কুর শ্রু শুভ স্থানুস্কার ছার্ল কি ভাষার এক স্ণান্তিও শোভা কইডে পা**রে** ? সে মশ্রেদেরে প্রিত্র পুরুষ সাহতঃ শানির নিং কেতলৈ কাল ক পৰা কৰে ধে কাকি ৰাখানা श्र कृष्टि आधार प्रकृषिश (म सुर्व आख হয়, ডিংকঠাতিত ভালাবিকো বল্জিরোজা **ম**ং নিবরে হলে যদিয়তে যে অলস্বাদিত খাছুকা श्रुष श्रद्धान मन्त्रीन गरिएड शहा भी। शा শ্মিকের ১৫ সংখ্যা হয় সংখ্যানহয়ে মতুব্যায় ছুন্নকের সমুধ্য প্রার্থেক। দাও সুধ্বর, ভাষ্য ৰক্ষতভু ভোগী সাধু কোনেই আৰু গত আছে, দীন ভাবাগন ধর্মানীল ব্যক্তি (कान कुषाटर्डंड मरिङ चीत यथम। माना छै-দরাল্ল বিভাগ করিয়া যে অনিবাঁচনীয় স্থাপে क्षभी व्यापन, यभ ध्वत्रवन्। मानादाः क्रमी द्यारक সহত্র সংক্র লোককে দুলভি লব্য ভোজন হলাইহাও দে স্থথ আত্মাদন করিতে শম-र्भ इत् या। कलाइः यथार्थ धर्मालुतानी वाङि দিশাদ সম্পূদ উভার **অবস্থাতেই সমভা**ব ও প্রদান্তদিত থাকিয়া এক অনির্বাচনীয় স্থ্য ट्यांग टलाग । भद्यांनील चाक्ति **फाँउ मंग्य**-শেত উল্লেখ্যৰং নিচলিত **চিন্ত হয় না এবং** বিপ**েদও মুহ্মনান হয়না। প্রামানী ও জা**-বিং⊸ৌমনুৰঃ হে বিষয় **মনের বিন্তুমাত্র** স্পাদে উগভ ও বিচলিত চিত্ত হাইয়া খালেৰ প্রকারে আপনার অকল্যাণ উৎপাদন করে,

বথার্থ ধর্মপরায়ণের মন ভাষার প্রচুর লীরিমাণ দারাও আন্দোলিত হয় না। সে
ব্যক্তি সম্পদের শিশ্বর দেশে অধিক্রাছ ইইলেও আপনাকে উক্ত মনে করে না এবং
স্থান্তরাং পতন আশস্কা জনাও কথন শক্তি
ভয় না। যে ব্যক্তি ধরার্থ কপে ধর্মের মর্মা
ভারগত ইইতে পারিয়াছে, সে ব্যক্তি জানে
যে ভ্রেন্তর পরিয়াছে, সে ব্যক্তি জানে
যে ভ্রেন্তর পরিয়াছি ইংখানিচ স্থানিচ
ভাতএব সে ভাগ্নী বিষয় সম্পদকে সহায় নরিয়া ক্রমে ক্রমে নিতা সম্পদ উপাজাব ব্রিতে থাকে।

क्तान धर्माधीय वाक्ति अल्लामानाए इहेरल তদীয় আত্রহ ছারা কেবল স্থীয় কুপ্ররুত্তি সকল চরিত।র্থ করিয়া আপনার অংশেষ প্রকার অক্ষ্যাণ উৎপাদন করে, নানা একার শানীরিক অত্যাচার করিয়া নানা ক্রেশ ভোগ করে এবং অনংখ্য প্রকার অ-रमीहिकान करिया जाशास्क विकारीत शानि নিশিউ কার, ভাগার **সেই ক্রিক সম্পদ** নিতা বিগলের কারণ হল, এবং অস্থায়ী সামান্য প্রথা ক্রমে চিরস্থারী গাঢ় ছঃখ উ-ৎগন করিতে **থাকে। কিন্তু ধর্মানীল বাক্তি** गलाम अल्ला इकेटन कमालि এधकात एः ध ভোগ करतन ना, जिनि मण्यामत्रं भाषारमा আপনার সাধুইছে৷ সকল সম্পাল করিয়া ষ্থ পর কংলের **স্থেয়**েপল করেন, তিনি জানেন বে কুপাময় জগদীশ্বর নির্ধনের উ-পারের জনা ধনীকে অর্থ প্রদান করিয়াছেন, छुर्वतालात ज्ञाना अमा विलाधित यल ध्यमान করিয়াছেন এবং অজ্ঞানির উপদেশের নি-মিত্ত জ্ঞানবান্কে জ্ঞান দান করিয়াছেন। এই জানিয়া তিনি স্ব**দীয় সম্পদ দ্বারা** কেবল অন্যের চুঃথ মোচন করেন এবং সহপ্রে অর্থ ব্যয় করিয়া সংসারের **অসংখ্য** উপকার সাধন করেন, তাঁহার সম্পদ দ্বারা কাহারও কমিন্কালে বিপদ হয় না। স্বৰ্ণ যেমন বহু মূল্য মণির সহিত জড়িত হইলে সুরাগ রঞ্জি হয়, ডিনিও দেইৰপ त्रीत मणामरक अर्थायुक्त करिया चामूर्य (मा-ভায় শোভিত করেন। বিশেষতঃ যে ধর্ম তত্ত্বিৎ সাধু সমুঘা বিশ্বপিতা ও বিশ্বনিয়-छ। এकमाण ज्यामि शूलपटक मानद्दत्र प्रकल मन्त्रारमञ्ज कादन कादनन, याशात भटन ५ रे ৰূপ দৃততর প্রতার বিদামান থাকে, বে একমাত্র ঈশ্বরের করণা ভিন্ন আমরা কি कथात जब कि जुकात जल, कि शतिथार नत वज, कि निवारमत इन, हेजापि कान थे-কার জীবনাবলম্বই প্রাপ্ত হইত ম না,তিনি সম্পদ লাভ করিলে উছোর মন হইতে যে এক আশ্চর্যা ক্রডজ্ঞতার ধারা উল্পিড হয়, ভদ্মারা তাঁহার অন্তঃকরণ পর্বাদাই এক আশ্চর্যা আনন্দরদে প্লাবিত থাকে। তিনি শ্বকীর সম্পদ ভোগ জন্য জগদীশ্বরের নি কট রুভজ্ঞতা প্রকাশ করিয়া যাদৃশ স্থা क्वशी हृद्धम अश्मात मध्या भ ख्राचेत दुलगा দিবার স্থল দৃষ্ট হয় না, পরস্ত কোন প্রিয় ব্যক্তির নিকট হইতে কোন স্থুখ লাভ ক-রিলে প্রীতি রনে মিপ্রিত হইয়া যেমন সে স্থুৰ স্বিশুণীভূত হয়, সেই ৰূপ তিনি স্থীণ প্রিয়তম পরমেগরকে আপন সম্পদ প্রন-জানিরা শত সহত্র গুণে হুহী হয়েন। এই कर्प धर्मानील नाष्ट्रि मण्यमाक्ष इडेटन स् সকল অনিবাচনীয় অলৌকিক স্থুখ ভোগ करतन, धर्माविधीन वाख्ति कत्मिन् कारलङ সে সমস্ত তুলাভ স্থাবের রসাস্থাদন করিতে পাৱে মা !

ধর্মালীল ব্যক্তি যেমন আপন সম্পদকে অপুর্বে ধর্মারনে অভিষিক্ত করিয়া তজ্জ্ব-নিত মুখকে দিখনীভূত করেন, দেই ৰূপ ধর্মা ৰূপ মহাসহায় অবলয়ন করিয়া বিপ-দকেও অতিক্রম করিয়া থাকেন। তর্ক্তিত সাগর মধ্যে নিশ্চল শৈল যেমন স্থির ভাবে উন্ত মন্তক হইয়া অবস্থিতি করে, সেই ৰূপ নিশ্চল চিক্ত সাধুরাও সংসারের বিপদ তরঙ্গ মধ্যে স্থিরভাবে কাল ক্ষেপ করেন। मः भात भर्षा (तार्त, भारत, कता, मृजूा, ছ্ঃখ, দরিজতা নিয়তই বিচরণ করিতেছে. धवः भर्यात्र करम मकल मनुवारक हे आश्र रहेप्डरक, किन्न धर्म विशेष वाङ्गि विश्वन-विख इहेटन बामून का उत्रहर, धर्मभीन वा-कि कथनहें देशका हताम मा, जिमि त्या-পার্বিত ধর্ম ৰূপ দৃত্তর চর্ম ছারা সাংসা-রিক বিপদ যাণ সকল নিবারণ করেন,তিনি विन बाक तिरहामन इहेर्ड शतिहाउँ इहे-

য়া দীনাবস্থায় পরিণত হয়েন, তথাপি তাঁ-হার অমুলা মানদিক শাস্তি অন্তরিত হয় না এবং তাঁহার স্থানভাষ্ট ও মান হানি হ-ইলেও তিনি অধৈৰ্যা ও আকুলিভ চিক্ত इरातन ना, जिनि रगकाल य व्यवसास প-তিত হউন ভাচাতেই তিনি স্বীয় উপার্জিভ धर्मा ७८वृत जारमाज्या कतिया कृश्व शारकम এবং তাহাতেই প্রাণ থিয়তম প্রাণ পুরু-শের প্রেমবারি পান করিয়া পুলকিভ হ-সেন। ভাঁহরে সামুখন ফুপারী হইয়াকে: বল দামানা বৈবাহিক স্থব ভোগের প্রত্যা-শায় বাস্তথাকে না গ্রং স্ফ্রাক্স অক্সী-ভূত হুইয়াও মোহমুদে উল্লুভুইয়া আৰু লীক মান্যশাও প্রতিষ্ঠা গৌরবের পশ্চ**ে** ভড়ী হয়না, তঁখের বলিজ মন বিজে-্ণর দৃড় শুখাল ভিন্ন করিয়। সংকীর্ণ ভার পরিত্যাগ করে একং অপুরে উদারভার গা-রণ করিয়া স্থীয় প্রাশস্ত্রা প্রকাশ করে, সু-खताः मामाना देवयसिक स्टर्यत दित्रह क्र**ना** ७ তিনি কাতর হয়েন না এবং সাংসাবিক মান যশ ও প্রতিষ্ঠাদির ভঙ্গ হৈত্ব তাঁহার স্থ ভক্ষে সভাবনা হয় না।,তিনি কারা-ক্ষম হইলেও ওপায় একাকী নিজ্ত থাকিয়া নিকিমে ঈপরেতে চিত্ত সমাধান করিয়া স্থা হয়েন, এবং কোন অবিচার কশতঃ निर्दायन वर्ध थाश्र इरेल्ड हील हीला-কর গমন পূর্বেক ভাছাকে স্বার পিতৃরাজা পৈতৃক ভূমি জ্ঞান করিরা চিন্তকে এশান্ত রাখো, তিনি বাবে মূদুর লাসে গাটিত হ-ইবার উপক্রান্ত হয়েন, তগনও তাহাকে মসলাকর মংগ্রের নির্মান্ত্রত কার্য क्वामिता करियो। इतान ना। त्य अर्थानीज म । ज्ञा अक्रमात यना वि भूक्याक आश-मात विश्वपाद तक्षु व मण्यादनत मधा स्वक्ष मन्मर्गम करतः भ कि आत दिना दिनामः क विशव काम करत ? मा काम कु: 😝 ছাবিত ধ্য় বৈ মানন্দং ব্রহ্মাণাবিদ্বান নাব-ভেডি কুত্শ্চন'' অতএব আন্থিত কাৰ্য্য कातन स्टब बाह्य स्था एपि अ धर्मीन वा-ক্তিফে কখন কোন প্রকার নিপদে পতিত হইতে হয়,তথাপি তিনি ভাহাতে ধর্মাবিহী-न लारकत गाप्त प्रदेशका अभाउ इत्यन

না। স্বৰ্ণ যেমন **অৱিতে দক্ষ হইলে ম**লিন না ছইলা আৱও উজ্জুল হয়, ধর্মাণীল লোকেও সেই কণ বিপদৰূপ **অ**ৱিতে পতিত চইলে দুনা না হইলা শীয় এভা প্রকাণ করিতে থাকেন।

क्लगा निधान कशती यह धर्माणहाश्व म-মালাদিলোর জন্য যে **দকল অন্নির্কাচ**নীয় নুখ নিদিট করিয়া রাথিয়াছেন,তালা আর কামারও ভোগ করিবার **সম্ভাবনা নাই।** তিনি বিশ্বকেতে যে চিন্তাকর্ষণী মোহিনী শোভা বিভার করিয়া রাশিয়াছেন তদ্র্শ-নে সকলেরি মন মোহিত ছয় এবং সক-ब्बर्ड क्ष्या क्रुट्यन मक्षात रुग: ममु-ল্লাড নিখন শোভিত নিকল প্রান্ত শোনী, নীলোজসূল সলিল পূর্ণ এসারিত সমূদ্র স-कन, मार्कामर छमी छेव इ मादा विक्थि उक्न-পূণ নিবিড় কামন এবং মনোহর হরিতবর্ণ শেতিত সুপ্ৰশন্ত শশু কেন্তু সকলোন ক-विद्या कामात **मरमामा खाञ्चार**पत छेम्स रष्ठ ? द्विक रहार्रिन कुल्ला मधुन गाम, বন্যারি ভূগদলের উল্লাখনতার নিশ্যস্থ কা-বের মড়েবে মুতি এবং সঞ্চাস্মাগলের চাড়েদশন অভিনৰ মল্ছ মারুতের দ্রুথপা-শুড়াৰ স্বিয়াল দিন বি জলের লান পান **প্রভৃতি** অর্**লিম সূত্র ভোগে ক**াইর মা আনন্দ কৰে। ? কিন্তু ইত্যাদি স্থাটির শোভা নন্দান ও অক্লিম আক্ষা প্ৰথ ভোগ ছার। ধর্মারা মমুধা যে একার আনন্দ লাভ করেন, ভাছা অপর ব্যক্তির হৃদয়ক্ষ হই-বারও উপার নাই। ধর্ম প্রায়ণ মহায়া। বাহ্নি যে সময় কোন সমুদ্র তটে দগুন-মান হুটারা ভূদীয় আশ্চর্য্য প্রশস্ত ভাব নি-রীক্ষণ করত ভাষার রচনা **কর্তা জলদী**-শ্বরের ভাষে শক্তির বিষয় আলোচনা ক-রেন, ভংকালে উট্টার **জ্নয় মধ্যে যে আ**-তিবনীয় আনন্দলহরী **সংগরিত** *হইতে* পটেল, ভাষার রহিত কি কোন **স্থারেই** ভুজনা হুইতে পারে? তি**নি যুখন প্রাভঃকা**-কোপিত গোহিত অৰ্থ তুলা **অনুপ্ৰ ছ**--র্বাম ডল মধ্যে জগত প্রস্থিতার পর্ম সৌ मर्गा व्यवसायम कतिमा श्रुवक शूर्व इत्स्मः এবং যখন জনগভেলকে আর্গভিহারিণী বিভা-

বরীর স্থাতিক ছায়াতকে গ্রমন করিছে সন্দর্শন করিয়া বিশ্বপিতা অথিল নাথের অমৃত গুণ গান কয়িতে থাকেন, ভিনি ৰ थन प्रत्र विर्म्मनेग्टक (मर्ट वि**रम्बरतत** মহিমা কীর্ত্তন করিছে আর্বণ করিয়া <u>কা</u>-হার সহিত একড়ান হইয়া ভগদীব্রের ম্ভিমা ঘোষণা **করেন। তিনি যথন** বন্য পশু বৰ্গকৈ স্ব স্থা শাবকের প্রতি স্থাভা-বিক বাংসন্য ভাব ব্যক্ত করিতে সন্দর্শন করিয়া উপ্তরের ক**রুণা সমুদ্রেতে মনকে** নিম্ম করেন এবং যখন ভিনি প্রভাক দু-র্ব্বাদলে, প্রভ্যেক তরু মূলে, প্রত্যেক কুস্তুম ক্ষেত্রে,প্রত্যেক স্কুখাদ্য কলে,প্রত্যেক বায়ুর হিলোলে এবং প্রত্যেক নদী জলে সেই স-নাতন পুরুষের অপরিমেয় অগাধ মহিমা প্রত্যক্ষ করিয়া পরিতৃপ্ত হয়েন, তৎকালে ভাঁহার ক্ষয় মন্দিরে যে অসদৃশ আনন্দ উৎস উৎসারিত হইতে থাকে, তাহা কি অপন্ন বাজি দ্বানা কোন কপেই অনুভূত হুইতে পারে? ধর্মাজীবি সাধু পুরুষ ভিন্ন আর কোন ব্যক্তিই সে অন্ত্রপম আকর্ষা স্থা ভোগে অধিকারী হইতে পারে না। ধর্মাত্র। ব্যক্তি সাংসারিক বাহ্ বস্তু সকল হইতে যেমন উক্ত প্রকার অনিকটেনীয় স্থা ্রাপ্ত ২০, সেই নপ স্বীয় অন্তঃকরণ মধ্যেও এক অন্তুত আনন্দ উপভোগ করেন। ধ-খন কোন উত্তর অন্তঃকরণ একত্র সংমিলিত হ্র, যথন এক মনের সহিত অন্য মনের, शिलन हरा, यश्रेन छूटे वाक्तित पृथक् इनम থেম রবে জবীভূত হইয়। মিজিত হইয়া যার, যথন ছুই মনে বিচ্ছেদের লেশমাত मा थारक उदकारन (य कि अपूर्व स्रुर्वेत्र সঞ্চার হয়, তাহা কে বর্ণন করিয়া শেষ ক-রিতে পারে? তংকালে ছুই দে<u>ছে</u> এক প্রাণ বনতি করে, চুই মনে এক ভাবের উদর হর এবং ছাই মুখে, এক প্রকার বাক্য निर्भाष्ट इहेटड शास्त्र । य जानानान् वास्त्रि এই আশ্চর্যা হাদয় সংক্রম স্থাবের অমৃতা-ত্মাদ লাভ করিয়াছে, সে ব্যক্তি অব্ভট্ট অনুগত হইয়াছে, যে এমুখের নিকট পা-र्बिन जांत्र क्यान सूचहे सूच बिन्द्रा भग रहेट शास्त्र मा, कहे समाजूबा चन छ छ-

(बहु जिक्छे अन्। स्थ नीतम दाध रहा। कि ब बबुबा यपि मसूरवात नहिछ हिछ दिनिमा क्रिमा अञ्चल अश्रूत स्थ नाउ क्तिए भारत, रम यनि चुनरम्बाकाचत-ব্তি অন্তঃকরণের সহিত আপন অন্তঃ করণ মিলিভ করিয়া এমন আশ্চর্য্য আনন্দ লাভ করিতে সমর্থ হয়, তবে ঈশ্বর প্রাণ ধর্মাত্ম। ব্যক্তি যে একমাত্র প্রীতির আকর ও অবিতীয় স্থাবের সাগর জগদীবারে মন क्षान ममर्भन कतिया कि भर्माछ व्यक्तोकिक ज्यानत्म ज्यानिक्छ रहा, छाहा क विनाउ পারে? ধর্মাত্মা দিগের, এই অনির্বাচনীয় সুখই সকল স্থাের সার এই শ্রীভিরস সং-ভোগই সমন্ত ভোগের প্রধান। ঈশার ভক্ত ধর্মনীল ব্যক্তি বৎকালে আপনার নিভূত হৃদয় মন্দিরে সেই দ্রোধার ও স-কলের সার সর্কেশ্রকে প্রতিষ্ঠিত করিয়া ষ্ঠাহাতে স্বীয় আল্লা সলিবিট করে এবং ভাঁহাতে আপনার সর্বান্থ সমর্পণ করে, ত-ৎকালে যে সেই অসামান্য ভাগাধর বাজি कि अन्दिरनीय चनीय स्टाय स्थी हर, তাহা কি কোৰ ৰূপে বাক্যেতে বলিয়া শেষ করা যায়,তৎকালে নে ব্যক্তি দেই অমৃতা-নন্দ পুরুষের প্রেম স্থা পান করত পৃথিবীর र्घ भाक मकनरे विश्वृष्ठ रस এবং সংগা-রের সকল ভাব ভূলিতে থাকে, তখন ক্রমে তাহার বাক্যাঞ্জন্ম হয়, নেত্র নিশ্চল হয়. -क्षे विश्वि रुप्र केवर शांज न्यामा तरिछ रुप्, छ-९काटन त्र इंड् लाटक शांकियां हे लाकास्त शास रम्र जरर उथम (म स्कृत्म जाननादक अ বিশ্বত হইয়া যায়।

आत्या ९ कर्ग विधान।

कि कि केशांत बाता आश्वात छेदन वें गाँवन इट्रेंड शांत्र, उर ममुगारत मरब् बर्ट शह इट्टेंड बर्ट बार्ट्स स्टिश्ट कर्म कर बार्ट्स मार्ट्स क्रिय कर्म कि से बाह महान कि ना, जा-हात मुखान करा बाहमान । आश्वादन विश्वान करा बाहमान । क्रिय स्ट्रांटन विश्वान करा बाहमान । क्रिय स्ट्रांटन किता स्ट्रांटिक मार्ट्स स्ट्रांटिक क्रिय स्ट्रांटन गांद्र हम्म क्रिया नाक्या व आमार्ट्सिक स्ट्रांटिक क्रिया क्र

रात भराम हरेशारह, स्टब्स् इनस वन्न विश्वाम वक्त मूल ना इहेटल क्षर्छावकारतत কেবল বক্তা মাত্র সার হয়, ভোতারও কোন বিশেষ ফল দর্শেনা। অতঞ্জব উল कथनहे अरक्षत नाम अभीक भार्य नरहा यात्रास्त्रकातिनी ७ यात्रास्तिनी नात्म त्य **তু**ইটি অসাধারণ শক্তিদার। মনুবোর **আলা** শোভিত হইয়াছে, তাহা বিশেষ বি-निष्ठ थाकित्न चात्र्यादकर्य विधान मस्रव কিনা, এমন সন্দেহই উপস্থিত হইতে পারে না। রুপানিধান বিশেশ্বর আমাদি-গকে এৰপ ক্ষমতা প্ৰদান করিয়াছেন, যে षामता इच्छासुनादत क्रुकल विवस्त्रहे छिख পরিচালন করিতে সমর্থ হই। আমাদি-रशत मरनत शकि विषया कथन मरनानित्वन कतिरेल जामता जनाशारम हे छेहात यावजीय অতীত অনুষ্ঠান সমুদায় প্রত্যক্ষ এবং বর্জ মান সংকণ্প সকলও সতর্কতা পূর্বক প্র-তাবেক্ষণ করিতে পারি। উহার অশেষ বিধ বৃত্তি ক্ষমিত যে সমস্ত অন্তুত কার্যা-জাত নিষ্পন্ন হইতে পারে, কি কি উপা-দেয় কলভোগে উহার অধিকার আছে এবং কত প্রকার কউট্ বা উহার সম্ভক্রা স-ন্তুব, তৎসমুদায়ও বিলক্ষণ অবগত হইতে পারি। এইকপে আমর। আপনাদিগের যথাৰ্থ প্ৰকৃতি কিৰপ, কি উদ্দেশেই বা আ-মরা তাদৃশ প্রকৃতি সম্পন্ন হইয়াছি, তা-हात ख्वानलाएक नमर्थ हरे। अञ्चल हेराल উল্লেখ করা আবশাক, আমাদিগের বর্জ মান অবস্থা যে ৰূপ কেবল তাহাই আমরঃ বুঝিতে পারি, এমন নহে, উভরকালে কি ৰূপ অবস্থাপ্ৰাপ্ত হুইতে পারিব, ভাছাও বিলক্ষণ অনুভব করিতে সমর্থ হই। বি-শ্ববিধাতা আমাদিগের হৃদয় ভূমিতে ধে অনির্দেশ্য বর্দ্ধিকুতার বীক্ষবপন করিয়া দিয়াছেন, তাহাও নিরীকণ করিতে পারি **এবং मसूरा कटबत हत्र উट्टिश स् पूर्व**छ। তাহাও দৃষ্টি করিতে সক্ষম হই। পশুগণ जारभक्ता जामद्रा त्य ७७ (आर्थ इ-रेगाहि, উজৰণ पाषादगियनी मिकरे छा-र्डिकार्ताः सामता स्विमन दुक्ति पाता हें नम्य अनिविष्ण विषद्य अनोबादन है

প্রবেশ করিতে পারি: স্বাভাবিক সংক্ষার সম্পান্ন পশ্দিগের তাহাতে কিছুমাত্র অধি-কার নাই। কিন্তু উক্ত শক্তির অসম্ভাব हर्देश प्राध्यक्ष विधारमंत्र जात ध्यम-জিই খাকে না । কি করি**লে আপনার ম**-कत हा, यपि (महे छ्लानहें ना शांकिल, छटेंच ভন্নতর চেফাই কেন **হইবে। আত্মোৎ**-कर्स भाषत्व धार्माणितत्व मण्यूर्व स्थानाडा আছে, ইহা স্পাই প্রতীতি হইলৈও উহার অনুষ্ঠান যে এত অপ্প দেখা যায় ভাহার কারণ আর কিছুই নচে, কেবল আলামু-मन्तारन अनुतान ना थाका। नितरमय अ-ভিনিবেশ পুর্বেক্ **অবন্ধ** প্রকৃতি পর্যালোচন করে এমন লোক অভি বিরল। যদি মন্ত্র-মোরা কথন ভাছাদিগের অন্তর্মার প্রতি नृष्ठि निः किल करत, डाइ। इरेल धकरी গভীর তিমিরারত অগা**ধ অথ**তে বা**তীত** তথার অার কিছুই দেখিতে পায়না। এই <u>রণে অধিক সংখ্যক লোকে প্রায়ই সাম্রা-</u> র সহিত কখন পরিচয় না করিয়া জীবিত पारक १२२ मधाकारन (मह विमञ्जन करत ।

কিন্দ আমাদিগের আছাত্র বিষয়ে অভিনিবেশ ও অনুসকানের ক্ষমতা আছে, र निवाहे (य श्राचात छेथकर्म माध्य कहा म-মুব এমন নছে ইহা অপেকা অধিক গুরুতর আহ্নেও একটা অসাধারণ সামর্থ্যে আমাদি-গের অধিকার আছে। যাহ। ছারা আমরা হিত চিন্তা, কর্ত্তব্য বিবেচনা ও আত্মশোধন করিতে পারি, তাহাই সেই অনুপম শক্তি। আমরা ঈশ্র প্রদত্ত যত প্রকার প্রসাদ লাভ করিয়াছি, এইটা সর্বাপেকা যেমন গৌ-রবাবহ তেমনি ভয়নর। যেহেতু আপনার শুভাশুভ বিষয়ে মনুষাজাতি যে আপনিই দায়ী হইয়াছে, উক্ত শক্তিই তাহার মূল। আনরাযে সমস্ত মানসিক শক্তি সমূহে অधिकाती बहेसाहि, उदम्यूनासंस्क जामता ইচ্ছানুসারে চালিত ও উত্তেজিত করিতে-ও সমর্থ হই। আমাদিগের ছুজার রিখু-वर्णत कृषिनगि ७ मनिन अञ्चिनि नेक-लिय श्राड एक मानमान कुछम्राई (व जिल्ला-रमत भागत धमन नरह, जोहानिगरक नानिक ७ वनवन कतिवातक कमें बादही बा-

यामित्रत तृत्वि कृष्णि ७ वर्षा छात्रकि महणा-त त उउतायत द्रामिती स्ट्रेट शादत. তাহাই কেবল আমরা স্থানিতে পারি এমন नटर किंख यहाँ एक रमस्यान इंख्या मेखव. ভাদুশ উপায় শকলও নিয়োগ করিভে পারি। এতত্তির আমানিগের ইছারু-সারে চিন্তার প্রবাহ ক্লবা পরিবর্তিত করা কোন নিংগ্রের মর্শ্মগ্রহ করিবার অভিনাব इहेटन छ। हाटक बुक्तिकानम करा, शूर्वका-বের প্রতি ত্বির দৃষ্টি রাখিয়া খাহাতে ভাছা অটিরে প্রাপ্ত হওয়া যায়, সর্কা প্রথম্ভো ভা-হার চেক্টা করা ইত্যাদি ব**ছবিধ ব্যাপারে**-র উপরেও আমাদিণের আধিগত্য **আচে**। এইনপ আন্ধোধিনী শক্তিই মানব প্রক্ল-তির প্রকৃত ঔদার্ঘা বিধারিনী অমূল্য সম্প-ত্তি। এসম্পত্তির অধিকার সত্ত্বে আমা-দের আর কিছুরই অনির্তি নাই, এফণে আমরা যে কোন স্থানে যে অবস্থায় অব-স্থিত হই না কেন, এই সম্পত্তির শুভকর माहार्या (य घरचाई कथन ना कथन छै९-রুফী ভাগাভোগে সমর্থ হইতে পারিব, তা-ছাতে আর সংশয় কি? বরং বিবেচনা कतिराम की रेन পर्यंत नित्रकम् आरम्भ रहे-তে প্রস্থিত হইয়া পরিশেষে উহার পূর্ণতা ৰূপ প্রাকান্ত প্রাপ্ত হওয়াই আরও অধিক স্থের বিষয়, অতএব খে কোন বিষয়ের আবিষ্কার করা মনুবোর নিভাস্ত আৰক্ষক বোধ হয়, তক্ষধো আপন প্রকৃতি নিহিত डेक बाबारगांविनी गंकिर नमधिक भरवय-ণার বিষয় এবং সর্বভাষত্তে অত্যে তাহারই আবিষয়ণ বিধেয়। এই পরিদুর্ভমান ভৌ-তিক জগতের উপর যে কতদূর শক্তি প্র-कारमत উদ্দেশে মানব বুक्तित रुखि रहे-য়াছে, অজান তিমিরাক্স অসভালোকেরা তাহার যেমন কিছুই অন্তেডৰ করিছে পা-रतमा, त्मरेक्श बाचरणाविती गस्तित्व द्व কিপর্যান্ত বিস্তৃতি, ছুর্ভাগাক্ষণে প্রায় কাছা-রও তাহা চিন্তার বিষয় হয় না ৷ কুজনান वाक अक्रुचित्र जेगादा चानाविश्वत यन व-कात मामबी पार्ट, केंग्रनाक्ष द नकी-त्यका अतिका छ। ब्राह्म क्षत्र क्षत्र सामता जारिया अपन दर्ग भागवन्त्राक निर्वाचक

শক্তি প্রভাবে কর্ম্ব ভূত প্রপঞ্জের ঘারতীয় বাগার সকল নাশ্যম হইতেছে, ভালা অংশকার বিজ্ঞানিতার আনিভাবে আছে, ভালা অংশুও কর্ম মনে করিমা। ইং কি অংশ আক্রেণের বিষয় বে স্কৃত্ব কর্মনি শক্তিও আমাদিগের নিভ্ত মানস মন্দিরে চিরকাল অনমুভূত ও অব্যবহৃত হইয়াই প্রস্তুপ্ত রহিয়াছে! কলতঃ আত্মোৎকর্ম সাধন বে সম্ভব ঐশক্তিই তাহার নিদানভূত হইয়া আমাদিগের প্রকৃতি পাশে উহাকে গুরুতর কর্মবা কর্ম কর্মেণ নিবক্ষ করিয়াছে।

এইৰূপে আত্মেৎকৰ্ষ বিধান যে সৰ্ক बोइमञ्जर हेश এक अकात अভिপन्न हरेन। এইক্ষণে তাহার স্বরূপ নির্দেশে প্রবৃত্ত হওয়া बाइटिएए, असूधातम कड़िया (मिर्याण मा-मानाकारत ইहात भगाशक कताल वस कठिन ताभाव मरह। दरान वृक्त है इंडेक **वा बाह्य इंडेक व्यव**ेता समये क्लेक, स्काम **बश्चत्र উৎকর্ষ সাধন** আর বিচু*ই নহে, কে-*ব**ল উহার বর্জন করা**মান। বর্জনেরও **চরম ফল বিভূতি। যা**হার গ্রাণ রুত্তি অ-র্থাৎ বিস্তৃত হইবার সামর্থা আছে, তারাই উৎকর্ষিত হইতে পারে। অভএন যে কোন ভাগাঁৱান ব্যক্তি সর্বা প্রবত্নে আপ नाटक स्टक्समर्भी मनीककाती नाइनी यतिष्ठ ও পর্ম স্তুর্থভাজন করিবার আশয়ে যাব-তীর মহীয়নী শক্তি ও উৎকৃষ্ট মনোরত্তি নমুদায় উত্তেক্তিত করিতে চেটা করেন, তিনিই সাজোৎকর্ষ বিধানের প্রকৃত অ-कुछान कहिला बाटकन।

লোকের ভিন্নভিন্ন প্রবৃত্তি ও ক্ষমতামুসারে উক্তর্জপ উৎকর্ষ বিধানেরও বছবিধ
ভেদ হইরা থাকে, কিন্তু আপাতত্যু সমত
ভেদের বছরু প্রতীশ্রমান হইলেও পরপ্রপান
রা সহয়ে নকলেই পরস্পার দৃঢ়তর নিবজ
ও সমরেত ইইরাই বর্জিত হয়। একমাত্র প্রত্তর্গন বেমার বিজ্ঞান শার্ত্রবভাগ প্রত্তরণ বেমার ইহারও বিভিন্ন ক্ষমতামুলাক্রে ক্রেই ক্রেমার ভিন্ন বিভ্না বার্ত্রবভাগ বার্ত্রবা থাকেন, কিন্তু বার্ত্রবভাগ বার্ত্রবার বিভান ক্রম্ভব

नमान, त्रहेबल स्वविष्ठात निष्णम भारताय-कर्ष विषदा असमामित्रत श्रक्त जिल्ला न-মুদায় শক্তিই পরস্পার সমঞ্জনীভূত ও এক-তান হইরা বর্জিত হইতে থাকে ৷ কোন ह्राकृत वर्कन ममरश छेशाल भाषा धामाधा প্রভৃতি প্রত্যেক অংশেরই ষেমন রূদ্ধি হয়, বিবেচনা করিয়া দেখিলে ইহাও সেইৰপ: ভতত্ত্ব আলোহকৰ বিধানের বছবিধ শাখা আছে,এই কথা শুনিলেই যে ঐ সম-স্ত শাখা পর স্পার স্বহস্ত ও ভিন্ন ভিন্ন প্রক্রিয়া বিশিক এবং প্রত্যেকেরই ভিন্ন ভিন্ন উপায় আবিশ্বক করে, এনপ নিবেচনা করা উচিত নহে। উলিখিত বিষয়ের সম্পূর্ণকূপে জা-ৎপর্যাগ্রহ হইতে পারে, এই আশয়েই উক্ত শাখা সমুদায়ের স্বতন্ত্ররূপে বিবেচনা করা ধিধের। অতএব এফণে তাহারই বিস্তারিত বিবরণে প্রবৃত্ত হওয়া যাইতেছে।

अथम **३: धर्मा अ**ङ्ख्या विषयाक छेदकर्म । অপর শাথা সকল অপেকা এইটাই সম विक लीव्रदेव चान्यमः। मधुरा वर्धन আভিনিবিক চিত্তে আপনার অন্তরান্ধার প্রতি দৃষ্টিপাত করেন, তথন তাঁহার যাব-ভীয় মনোর্জি সমুদায় ছুই শ্রেণীতে বিভ-ক্ত রহিরাছে দেখিতে পান। তৎকালে দে বিষয়ের মর্মাগ্রহ করিতেও ভাঁচার স্পৃহাজমে। তিনি দেখেন ভোগভুফা, **অজন স্পৃ**হা, বুভুফা, প্রতিবিধিখনা, জি **ঘাংশা প্রভৃতি** যাবতীয়ে নিকৃষ্ট বৃদ্ভিত্তী **শুস্ক ভাঁহাতেই** আসভাও প্যাৰণিভ **ই**ই য়াছে এবং দৰ্বতোভাবে কেবল তাঁহারই উপকার, ভূষি ও মান সাধনেই সমুৎস্ক রহিয়াছে৷ কিন্তু যখন তিনি অপর শ্রেণী টার প্রতি দৃষ্টি করেন, তথন দেখিতে পান उपस्तिस मकन द्खिलाने शक्या । भूग **छ निध्यार्थ। कि प्यति कि मिज् नकटनत्र**हें হিতসাধনে তাহারা সমভাবে তৎপর রহি-शारछ। आगीयदर्शत यथार्थ अञ्चलकार्ष ও স্থানাধনে দতত অমুরক্ত ও আছাবিত कति बाब निमित्त उद्दिती शूमेश्रीमः काशाय প্রবৃত্তি দিতে থাকে। তাঁহার প্রতি তাহা-ता रव अन्न अल्लाह कात नमर्गन करत, मया क्षरद्भ कारी वरन क्षतिए भोडारी गयुरगत

কর্ম এবং পরম কলা। শের বিষয়। স্থীয় স্থাধ-্রাধীও স্বার্থ বিরোধী হই**ক্ষেও যাহাতে তিনি** ন্যায় ধর্মোপদিউ গরিষ্ঠ কর্ত্তব্য কর্মা সকল অপ্রতিহত চিত্তে সম্পন্ন করিতে পারেন, ভাহার৷ একবাকা হইয়া **কেবল ভাহাতেই** ভাঁখাকে দীক্ষিত করিতে **থাকে। কিঞিৎ** अनुभावन क्रिय़ा (मथि**एल व्यवश्राहे हेह**। াতীত হইতে পারে, যে উক্ত প্রবৃত্তি ব-্জতি মনুষাই অপ্রসিদ্ধা। ভূতধালী বস্তু-ফ্রা স্বরংস্থা হুই**লেও তাদুশ নরাকুতি** পিশাচ প্রকৃতি ব্যক্তিকে ক্থনই বহন ক-রিলে পারেন না। কোন বাজিত যত লখু-চেতা ও নীচাশয় হউক না কেন, স্বার্থপরতা পাশে যত নিৰদ্ধ থাকুক না কেন, তাহার নীর্গ মানস ক্লেড্রে অবশ্যই কথন না কথন স্বার্থ প্রতিপক্ষে যে একটি উদারভাবের— বিশুদ্ধ ধর্মান্তমে।দিত কর্ত্তব্য ভাবের **আ**-বিভাব হইয়া থাকে, ডাহা দে কথনই আ-স্বীকার করিতে পারেনা। ভাহার চিক্ত-জুজাঞ্চ নিরম্ভর কুটিল গামী হইয়া স্বার্থ সাধনে সমুখ্যুক থাকিলেও তাহার হৃদয়া-কংশে শপক্ষপাত খুনা বিচার ও নাধারণ মুদ্রান্তির মূড্ড অবহিত **থাকা মন্ত্র**-নোর সংবদা কর্ত্তবা " এই বলিয়া যে এক-টি মরুর্ধনি উচ্চরিত হ্ইতে থাকে, তাহা-্ত আর সংশ্য নাই। মান্ব প্রকৃতি স-प्रक्रिनी श्रहेक्य निध्यार्थ द्रु छिएक जामता क-খন সন্ধিৎ কথন স্থমতি কথন বা ধর্ম প্রকৃত্তি বলিয়া উক্ত করিয়া থাকি। আমাদিগের যত প্রকার শ্রেষ্ঠ শক্তির অধিকার ऱ्याटह, जे টীই সর্কোপরি এবং **সর্কাত্যে ঐটীর উৎ**-কর্ঘ সাধন করাই **আবেশ্যক, যেহেডু উহার** উংকর্মের উপরে**ই অপর সকলের প্রক্লউ** অাবিজাব নির্ভর করে। নি**র্মাল বিবেক** অংশক। কাম কোপাদি **নিক্নট বৃত্তি শ**্ কল সমধিক প্রবল হইয়া আমাদিনের জন্য মন্দিরে উচ্চতর কলকল শব্দ উত্থা-भिज कतिरत भारत, में वर्षे, कि**छ वि**न ব্যেকর স্থাসিজ নিঃস্থা সমিধানে ভা-रानिएशह (सहे समस दूधा निनाम सुपुत श-हारू रहेश याय, मटनार मारे। छरात्र जनीय अ**कार**वड़ अकास वनहरूना रहेरलेख

जाराता यथन सामन **भागन** विषय कारल চরিতার্থ ইইরা মহা আক্ষালন করে, তথ-নও উহার তীব্রতর ভংগন ও গভীর ভ-রকর গর্জন হারা অবশ্রহ সমূচিত হইয়া থাকে। উক্তৰূপ স্বার্থ সন্ধায়িণী ও পরার্থ বিদিনী বৃত্তি বয়ের পরস্পার সামঞ্জ ব্যা-পার অংশকা আত্ম জ্ঞানের আর কোন অংশই অধিক **গুরুতর বলিয়া প্রতীয়মান** হয় না। অতএৰ সাধ্যামুসারে উক্ত ব্লক্তি ৰয়ের সূর্ফাটীর দমনও অপরটীর **বর্জ**ন সা-धन शुक्रक क्रम्यामरम विद्वक बाटकत था-ধিষ্ঠাপন করাই আজোৎকর্ষ বিধানের সা-রাংশ। ধর্ম প্রবৃত্তি নিয়ামক এই মহতী শক্তিটীর প্রতিপোষণ বিষয়ে আমরা ঐ-কান্তিক চিত্তে যত্ন করিলে উহার যে ক-তদুর উল্লভি হইতে পারে, তাহার ইয়ভা-করা ছুংসাধ্য। বস্থাগর্টে এবস্থিধ বছতর মহীয়ান্ ব্যক্তির উৎপত্তি হইয়াছিল যে তা-হাদিগকে নায় পথ ও সত্য পাদপের আশ্রয় হইতে পরিভ্রম্ভ করিতে কোন শক্তিই শক্ত হয় নাই এবং ভাঁহারা সর্বাত্মক বিচার ও বিশ্বব্যাপিনী প্রীতিরূপ প্রাক্কৃতিক নিয়মের উল্লন্ত্র অপেকা করাল কুতাকের ভীবণ মুর্ভিও অধিক ভয়ন্তরী বোধ করেন माहे।

দেহের সহিত আত্মার সম্বন্ধ।

লীবালা যতদিন পর্যান্ত এই শরীর ৰপ পিঞ্জর মধ্যে বাস করে, ততদিন দেহের ব হিত তাহার এক আশ্চর্যা ক্ষনির্বাচনীর স-যক্ষ দেখিতে পাওয়া যায়। শরীরে কোন রোপের উৎপত্তি হইলে তৎক্ষণাৎ মনের বিজাতীর ক্লেশ হইতে থাকে, এবং মন কোন বিষয়ে কিন্টু রা মানি বিশিক্ষ হই লেও শরীর শীপ ও জীও হইতে কার্মর করে। দেহালার এই কল প্রকৃতি নিজ্ সম্বন্ধ হাত প্রায় প্রত্যাহ্ন মহাস্থার বিশিক্ষ আছে, কিন্তু এক এক নম্বন্ধ এইন জন নারীরিক রোপ বিশেষে ননের এইন জন নিউ হয় এবং কোন ক্ষেত্ত ক্ষর্মনিক শীকা, আলোচনা করিলে বিষম বিশ্বস্থ উপস্থিত হর এবং তাহা কোন বলে প্রত্যক্ষ না ক বিলে প্রতায় করা কঠিন হইয়া উঠে।

शीड़ात अथम खेटजटकटंड यन निटलंब ছইতে থাকে। শরীর মধ্যে ছরাদি কোন প্রকার রোগ প্রবেশ করিলে মনকে একা-গ্র ও সংঘত করিয়া কোন গাঢ় বিষয়ে অভিনিবেশ করা কোন কপেই সহজ হয় না, তৎকালে কোন গুরুতর বিষয়ের বি-চার করা কিয়া কোন তর্কের মীমাংসা করা নিতান্ত কঠিন হইয়া উঠে। অনন্তর রোগ যত স্থায়ী ও বলবং হইয়া শরীরকে বি-কৃত করে, মন ততই বিকিপ্ত ও বিচ্ছিন হইতে থাকে, রোগ সহকারে ক্রমে মনো-বুক্তি দকল স্তব্ধ হইয়া ভ্ৰম প্ৰমাদ জনিতে क्षारक धवर व्यवस्थित ताच्य उनान नारं उत शक्ति श्रीष्ठ नृक्ष इत। डेवामापि माननिक রোগে যেমন কোন কোন ব্যক্তি नात मानत्मानिक विवत श्लीहत यथीर्थ दिवदत्तत नात अञास यास এবং তদমুসারে নানা প্রকার প্রকাপ বাক্য উচ্চারণ করে,সেই রূপ শারী-রিক রোগেও অনেক ব্যক্তি অপ্রত্যক চিস্তিত বিষয়কে প্রত্যক্ষবং প্রভায় করে এবং নানা প্রকার প্রলাপও কহিয়া থাকে। জ্বাদি শারীরিক রোগে কাছার কাছারও মন এমন বিকৃত হয় যে ভাহারা নর্ন মুদ্রিত করিয়াও মানস পথে নানা প্রকার ভয়ন্ধর কম্পিত মূর্ত্তি সক্ষর্শন করিয়া চমকিত হইরা উঠে এবং কেছ কেছ আ-পন পাশ্বস্থ পিতা মাতা প্রাকৃতি বন্ধু বর্গ-क्रिएक शास्त्र।

তাজার এবরকুমী ব্যক্ত করিয়াছেন, বে একজন রোগী রোগ মুক্ত হইবার পর ব্যক্ত করিল বে ভাষার পীড়িভাবস্থার দে-ব্যক্তি যে সমন্ত বিষয় প্রবেগ, দর্শন ও স্পা-শ্নাদি করিয়াছিল, ডম্মধ্যে কিছুই তাহার মরণ নাই, কিন্তু ভৎকালে দে ব্যক্তি যে সকল বিষয় চিন্তা পথে দর্শন করিয়াছিল ভৎসম্থলাই ভাষার স্বরণ রহিয়াছে এবং মুক্তমুদ্ধার ভাষার স্বরণ রহিয়াছে यदब्रक गाम विटम्ब कब्रिक्स बर्गन कविन।

কোন কোন শারীরিক রোগে বছক।-শের বিশ্বত বিষয়ও আসিয়া শ্বৃতি পথে সহজাবস্থায় স্থরণ হয় না, কোন কোন রো-গোপলকে তাহা অনারামে মনে হয়। এ-कि वालक हजूर्थ वर्ष वशकारमत ममद्भ म-স্তকে আঘাত প্রাপ্ত হইয়। অচৈতনা হই রাছিল। অনন্তর বছতর অস্ত্র চিকিৎসাদি দারা আরোগ্য লাভ করিলে, তাহার ঐ विकित्नामित विवस कि छूहे 'यतः। हिलना, সকলই বিশ্বত হইয়াছিশ। পরে পঞ্চদশ বর্ষ বয়সের সময় একবার, জ্বতাত হুইয়া প্রলাপে তাহার মাতাকে ঐ মওক:গাতাদি সমস্ত পুর্বে হুভান্ত অবগত করিল। যেৰূপে আহত হইয়াছিল, যে ব্যক্তি চিকিৎসা করিয়াছিল এবং চিকিৎসকের যে প্রকার विश्वा हिल, उरम्मुमग्रहे अविकल वर्नन করিল"। জরমেন দেশীয় একটি স্ত্রীলোক দীর্ণকাল ইংলগু দেশে বাস করিয়া আপ-নার দেশ ভাষা পরিত্যাগ পুরুক ইংল-ণ্ডীয় ভাষায় কথোপকথন করিত একবার পীড়ার সময় সে অন্নরত জর-নেন ভাষা কহিতে লাগিল। ভাক্তার প্রি চার্ড বাক্ত করিয়াছেন, একটি স্ত্রীলোক পী ড়িত হইয়া ক্রমাগত এক বিজাতীয় মুতন ভাষা কহিতে লাগিল,পরে অমুসন্ধান দায়া প্রকাশ পাইল, যে ভাছার বাল্যাবস্থায় সে ওএলেম বেশে কোন এক ধনির গুড়ে कंट्याशन कि मीर्घकान वाम कतिया शृद्धी। লিখিত ভাষা শিক্ষা করিয়াছিল, কিন্তু ত ৎপরে বহুকাল অনভ্যাস বশতঃ তাহা স্-माक् बार्श विश्व उद्या नियाहिन, शूनकात এই রোগে তাহার উহা মারণ হইল😮 🖰 পীড়িতাবস্থায় যে সমস্ত বিষয় স্মৃতি পথে আসিয়া সমাগত হয় আরোগ্য লাভ করিলে जारा मम**खरे मदन** थादक ना, चटनदकहे তাহা পুনব্বার ভুলিয়া যায়, অভএব বি-লকণ প্রকাশ পাইতেছে বেশারীরিক রোগ জন্য চিত্তবৃত্তির বিশেষ ব্যতিক্র ঘটিয়া **छे अकात्र वाशात छेरशम इस ।**

Abtroromine a Mental philosophy.

भातितोक त्वारशत ममन् त्यम त्काम देवान न्त्रां क्रित श्रुका दिन्धु ए विषय आमित्रा अवंतेना-কড় হল, সেই সাপ উহার জন্য অনৈকৈর ব্যুতি শতিক মাডিকমণ্ড ইট্রে। কোন ও-্ত্তে পুৰুৱে আজোন **হইলৈ অনেক লোক** .১র.ভাস ও যত্ন শিক্ষিত বিষয়ও জুলিয়া ায়া, উইলিস নামক একজন পতিত ্যক্ত্যুসি সে ব্যুষ এক কেভিডি এক ভ ষ্ম্য তার এইতে আহেরাগা লাভ করিয়া এফন ব্যরণ ধীন এক্ট্য়াছিল বে ভাহার ্যেশ শুভুৱা আরোগা পাওয়া ইত্যাদি কিছু লাল মনে পড়িত মা, অনভার ছুই মাস ার ক্রমে ক্রমে ভাগর উক্ত বিশাৃতি লোগ দুর্কটক: তাজার প্রিয়াড উল্লেখ করেন ্ণ আহিরিকা ডেপীনে একটি ছাত্র একবার আরহাইতে মুক্ত হইয়া পুরেশিক্ষিত বিষয় প্রার্থ এমন সমূলে ভুলিয়া গিরাছিল, বে জাহার বিদ্যাবদর্গত আর **উহার স্মরণ** स्ति मं, कमप्रयाप्य शुमर्जात **स्थाग्रीलि** বিদানে হ করিছে৷ লেটিন ভাষা**র ব্যাকর-**व्यक्ति किल्ला के बिराइ के हार अकर দিঃ বেড়েভি এটাট জুডা পাটের হেনে পালুমার আহি সুক্রান্থ সালেলংকোণা **করাতে** ্লান্ডের ভাষার পুর্ক্তিকিল **সমুদা**র क्रिका, क्रिका क्रिकार । एकांग एकां**न गण**त শালীবিদ্য লোগে জলানছিত পূর্ম বিষয় সং ক্ষম সার্থ লাগে, নিজ্য ভংপুরেরর নিষয়ভ শুণ্ডিলহতে আনস্ত হয়৷ একজন ভাত-লোক অধ্য হইতে পতিত হওয়াতে শুকু-ভয় ৰূপে আহত হয়েন এবং কোন চিকিৎ-ন্ক কর্ত্তার ক্রিজিং উপশ্য পাইলে তাঁহা-(क अपनात भंदोरतत समक **छाव वित्य** করিয় জনগভ করেন, এবং আপনার চি-किट्नाह शामक छिशांच निर्माण किहिन्न নেন্ অন্তর স্করে কলে আরোকা লাভ বারলে পর ভাষার একজন বন্ধু জীহাকে शृहरू करोह या है वात या खाना वित या तिशा উট্টের সঞ্চে বাতা করিল, ঐরোগীর ভব-নের স্থিকটে আসিয়া তাহার বন্ধু ভাইাকে সতর্ক করিল, যে তুমি এক**খা বাটাতে** তোমার ত্রী পুত্রের সাক্ষাতে একাশ ক বিওনা তাহারা অবণ করিয়া কেবল অন্ত্ৰ ভীত ও উৎক্ষিত হইছে। রোগী তা-হার জী পুরের নাম অবশ করিয়া বিশায়া-शत रहेन, जोशंत त्य जी भूळ चाट्स, धम-ন কিছুই সারণ হইল না 🔭 । ডাব্রুর প্রে-গরি বাক্ত করিয়াছেন, যে কোন জীলো-কের শারীরিক **অনুস্থতা হইস্না এক আ**ন্চর্য্য বিশ্বতির উৎপ**ত্তি হইয়াছিল, দে যে ভ**-বোর নাম ম**নে করিতে পারিত না, সে** দ্রব্যের আক্রার প্রকার অনায়ানে ভাহার মনে হইত। এক ব্যক্তি একদা **অপশার** রোগে আক্রান্ত হইয়া শৃতিভ্রমে ভ্রান্ত হ ইয়াছিল, সে আপনার বন্ধ নান্ধাব সকলে-র আফুতি প্রকৃতি মনে করিতে পারিত, কিন্তু কাহার ও নাম করিতে সমর্থ হইত मा। भाषा काम का का कि जा का কোন লোকের বিষয় পরিচয় দিত, তৎ-कारम लाहारक के शक्तिएम राक्तित निक्छे লইয়া বাইভ, কাহারো কাহারো অমতও বিশ্বৃতি ঘটে, যে কর্ণেতে নাম প্রবণ করিলে ভাহা হারণ করিতে সমর্থ হয় না, কিন্তু ঐ বিষয় লিখিয়া দিলে, তৎক্ষণাৎ তাহার মনে হয়। এক গাজির এই প্রকার আশ্চর্যা ভ্রম জ্মিলে পর নে এক ধানি কাগজের উপর আপ্লার সমস্ত আবশ্বক স্তব্যের নাম লিপিবজ করিয়া সম্মুখে রাখিয়া সমু-দায় কার্য্য নিম্পাদন করিত। এই ব্যক্তি-কে কোন বিশয় বুঝাইবার আবশ্চক হ-हैल, बे विविष्ठ भट्य मिरे प्रका सिशाहेंगा भिएं रहेए। **अकल्म चनी** जिय**र्बन क्या**-টীৰ পীড়িত **হইলে পর ভা**হার **ঐৰূপ স্মৃতি** শক্তির অন্যথা **হইয়াছিল। : সে**ি**আপন** জাতীয় ভাষা ভূলিয়া গিয়াছিল। কিন্ত नर्यम (कुक्ष) अत्रापन ७ हेर्ने किक छा-বার মিজিভ করিয়া ক্রথোপক্ষম করিত। নে অতি শৈশবাৰম্বার ঐ বন্ধ ভাষা শিকা করিয়াছিল। বিজ্ঞ বছকাল আর देशत काम कामनेवनः कटा नारे, कि**ड** শারীরিক জোগে তাহায় নবোর্তি বিক্লত इश्वराटक क्यांकित कार्या कुन रहेशा जिल्ल-प्राथाना नामान प्रदेश । अरे नाकि नवन

কোন আপথে কোন দ্রব্যাদি ক্রম করি-তে বাইত, তথকালে বিক্রেডাকে স্থীয় প্র-রোজনীয় সকল দ্রবা অসুলি ধারা দেখা ইয়া দিত। যান বাছনে ছোন বন্ধু বাজ্ব-বের নিকট যাইতে হইলে সে ব্যক্তি যান বাছক ও র্থচালককে ইঞ্জিত করিয়া তা-হাও দেখাইত, কোন দ্রব্যা কোন ব্যক্তি কি কোন বিষয়েরই নাম মনে করিয়া বলিতে পারিতনা।

শারীরিক রোগ হেড় কোন কোন ব্যক্তি क्रिश्र निर्फिक्त काल्य घटेना मात्र पू লিয়া যায়, কিন্তু তাহার পূর্ব্বাপরের সমস্ত विषयुष्टे न्यात्व शादक। अक अस शानति একবার রোগগ্রস্থ ছইয়া চারিবংশরের স-মুলায় বুরান্থ বিশ্বত হইরাছিল, কিন্ত ত-ংগুরের এবং পরের সমত বিষয়ই ভাছার শারণ ছিল। অনন্তর ভাগার রোগ শাক্তি इड्रेटन शत करम करम शुन्दवात के ठातिन ংসরের ঘটনাদি ভাহার স্মরণ হইতে লা-িলে। শুকুতর আশকাতেও অনেকের স্থ-ত্রির লোপ হয়। ছট্লগু প্রদেশের মধ্যে একদা এক নির্জার বিলান ভাসিয়া পড়া ट्ट दक कारकत था। नके इह, के विशव कारत निकांत मध्या अविधि दीक्षाक छेल-স্থিত ছিল, এবং মে উত্ত বিপদ হইতে নিঝিমে উত্তীৰ্ণও হইয়াছিল, কিন্তু ভগাণি ঐ বিপদ দর্শনে তাহার ক্ষম্বয়ে এমন শক্ষা জিমাছিল,যে সে একেবারে ঐ চুর্ঘটনা ও ভাহার পূর্বে কিয়ৎ কালের র্ভাভ সকল বিশৃষ্ঠ হইয়া গেল। আর এক জন স্ত্রীলোক শারীব্রিক পীড়ার আক্রান্ত হইয়া দশ বং-শরের সমুদায় ঘটনা বিস্তুত হইয়াছিল। তন্ত্রবিশ্ব পাণ্ডিত গণ এই প্রকার অসামান্য বিসারবৈদ্ধ এই কারণ স্থির করিয়াছেন, যে मञ्द्रशांत्र महन मक्न विषय गमान करण च-किंठ इस मा, बाइएड बरमज्ञ ममधिक का-ভিনিবেশ হয় ভাহাই মনেতে বন্ধ মূল হ-रेत्रा रहेन। जात बाहात श्राट छान्न मनः-শংৰোগ না হয়, তাহা চিত্তকৈত্যে ৰড় ছ-পর বংশ অভিভ হর না। স্তরং শারীরিক त्त्राचे कमा एवं गमस ठिख वृच्चित्र याजिकम गाँहे, त्व अग्रह बार्शाक्क विषेत्र अनुस् म-

নোভূমি হইতে অপনীত না ছইয়া যাহা মনেতে সামান্য কপে অকিত হয় তাহাই অপনীত হইয়া যায়। পণ্ডিতগণ পূর্ব্বোক্ত বাজি
নিগের অবভানুসদ্ধান করিয়াও এবিষয়ের
পোষক প্রমাণ প্রাপ্ত হইয়াছেন। যে সময়
উলানিগের মনের অবভা উত্তম ছিল, এবং
যে সকল বিষয়ের প্রতি উহার। গাড় কপে
মনংসংযোগ করিয়াছিল, তৎসমুদায় উহানিগের স্মৃতিপ্র ইইডে অনুরিত হয় নাইত।

এই রূপ নানা কারণ লারা **দেবেহুর স**-হিত আন্ধার অপূর্দ্ধ অনিফাচনীয় সম্বন্ধ প্রতীয়মান হয়। অলকা ও গদৃধ্য মনেতে হর্ষ শোক রাগ ভয় প্রভৃতি যে কোন ভা त्वत्र जातिकीव इश्, मृश्चमान (प्रस्त्र छे-পর তাহার সম্পূর্ণ চিক্ল প্রকাশ পার। ম-নেতে ক্রোধের সঞার হইলে শরীরের শোণিত উফ হইয়া নাসা কর্ণ চকুরাদি অ-নেক অজ লোহিত বৰ্ণ হয় এবং মনোম-ধ্যে চুংখ শোকের সঞ্গার হইলেও নয়ন হ-ইতে অনবরত অক্ষপাত হইতে থাকে। প্ৰায় মানসিক **প্ৰভা**ক ভাবই জড় দেছে ताङ इरेश थारक। घरनक विष्ठकन लाहिक মনুঘার মুখাবলোকন করিয়াই মনোগত ভাব বলিতে পারেন। ইহার তুল্য আ-শ্রুণোর বিষয় আর কি আছে: অচিন্তা শক্তি সম্পন্ন জগদীশ্বর চৈতন্যাত্মক আ খারে সহিত জড়মর দেহের কি চমংকার সংক্ষাই নিবন্ধ করিয়া দিয়াছেন। তাঁছার প্রতিষ্ঠিত এই অচিত্রীয় অস্তুত সহতা স্থির চিত্রে চিন্তা করিলে বিসেয় সাগরে निमध इट्रेंट इश्रा एकि घटना यह अकात मधक्त विकासान चार्र्, उधर्पा प्रहाकात् সরক্ষা অতিক্ষুত। এই দেই ৰূপ গুলিময় পিঞ্জর মধ্যে যাবং চেতনাত্মক আত্মা বাস ক্ষিৰে, জাৰএই উব্লিম্ছিত জড় দেহের खेळु[ः] मद्रश्चा विमामान थाकिटव। **य विक्रि**ज শক্তি সম্পন্ন বিশ্বকারণ কর্ড দেহের সহিত অভড় ভারার উক্ত প্রকার আভিয়া मञ्जा भिवस क्रिया निद्यार्थन, मिटे जनस कानवान अनानि शुक्रवरक श्रीं जि शूर्वक मनकात कति

Abercrombie.

বিজ্ঞান বার্তা। ভোতিষ

সানবর্ত্তমান ইংরাজি শকে লিপজিক নামক হানে পণ্ডিতবর এরেই সাহেব এক ধুমকেতু আবিষ্কৃত করেন, গত ২৬ মার্চ দিবলে বেন সাহেবও নিওয়কি নামক হান হইতে এ ধুমকেতুকে সন্দর্শন করিয়াছিলেন। বেন সাহেব কহিয়াছেন, যেউজ ধুমকেতু দেখিতে অভিনয় উজ্জুল, পরিক্রান্ত্রন্ত্রন্ত্রিক্রায় উজ্জুল, পরিক্রান্ত্রন্ত্রন্ত্রিক্র মান্ত্রিকর দীপ্তিশ।

:।—বন্তমান ইংরাজি শকের ১১ আ:-্ঞল দিবসে পাদরি ওডেল সাহেব উই-নিবিলোসিস নামক স্থান হইতে এক আ-শ্চর্য উজ্জ্ব উল্লে পিও সন্দর্শন করিয়া-ছেন। উক্ত সাহেব বে সময় উ পিণ্ডটি সন্দর্শন করেন, তৎকালে আকাশ প্রকিঞ্ছিৎ অপ্রিষ্ঠার ৬ ধুমাছল ছিল, ক্তিয় ঐ ক্রেকাপিপের জ্যোতিঃ প্রভাবে র-कर्ने (८७ के ज्ञाम निवस्त्र माध्र चाटनाक अस्य इसेटा अं डेक्काशिएडि मृना स्ट्रेट গশিংমাভিমুখে পতিত হয় এবং দর্শকের छत्क देश पूर्वट स्त्र नाश अकान शहा। উহা মৃতলে পতিত হাইতে না হইতেই নিংশকে প্নোতে তিরোহিত হয়। উচা অদুকৈ হইলে পরও কিয়ৎকাল সুনোতে এক প্রকার আলোক দৃষ্ট হইরাছিল, অন-ন্তুর ক্রমে ক্রমে উহার আর কোন চিহ্নই इहिल ना"।

शमार्थ विमा।

১০—বর্ত্তমান খ্রীকীকের জ্লাই মাসে আমিরিকার জন্তঃপাতি ডাটস মাউথ নামক স্থানে যাদৃশ শীতাধিকা হইয়াছিল, চভূবিংংশতি বর্ণের মধ্যে উক্ত স্থানে প্র প্রকার হিমের প্রবলতা হয় নাই। ঐ স্থানের
প্রান্ধ বিদ্যালয়ে প্রতিবংসরেই সমস্ত শ্রুত্ব
র শীত উফতার বিষয় লিখিত থাকে, ঐ
নিক্টিই লিপি পরীকা ভারাপ্রমাণ হইয়াছে,

Amiricanjournal.

र्य २८ वरनरतत मर्पा चात छक् होरन ध थकात नीज धावना रहा नारे ।

হা— ছেনেরি উইট সাহেব ব্যক্ত করিয়াছেন, বেয়ালি লবণ মিলিড সমুদ্র কল
বালুকাস্য় ভরের মধ্যদিয়া নির্গলিড হইয়া
পড়ে, তাহা হইলে উহার লবণাক্ত দোষ
দূর হয়। জল বে সময় বালুভূমির নধাদিয়া নিঃস্ত হইতে থাকে, তৎকালেই উযার লবণের ভাগ বালুকাতে মিসিয়া যায়!
উক্ত প্রকার পরিস্রুত কলের বে কেবল লবণেরই ভাগ অন্তরিত হয়, এমত নহে উহাতে আর আর্যে সকল পদার্থ মিলিড
ধাকে, বালুকাপরি ক্রমণ দারা তাহাও পৃথক হইয়া বায়"।

রসায়ন বিদ্যা।

-- এদেশীয় অনেক লোক বাষ্পালোক সন্দর্শন করিয়া চমৎক্রত হইরাছেন, কিন্তু ইউরোপ থণ্ডের স্থানে স্থানে বিজ্ঞাৎ আলোকও এক্ষণে দীপালোকের ন্যায় বাবহুত হইতে আরম্ভ হইতেছে, সম্প্রতি পেরিস নগরে বিজ্ঞাৎ আলোকের এক গরীকা হওরাতে তত্রতা পণ্ডিত বর্গ ও আনেক ভজলোক দেখিয়াছেন, যে বাষ্পালোক অপেকা বিজ্ঞাৎ আলোক অনেক পরিকার ও আনেক উজ্জ্বল। এই অন্তুত ব্যাপারের রচনাকর্জারা এক প্রেসিক্ক অট্টালিকাতে চারিটি বিজ্ঞাৎ দীপ সংযুক্ত করিয়া দেখাইরাছেন, যে ঐকপে সর্ব্বাহই তয়স্কর বিজ্ঞানিকাকে সামান্য দীপবৎ ব্যবহার করা যায়*।

বিজ্ঞাপন ৷

তত্ত্বাধিনী সভার সভা বা সভা ভিন্ন অনা বে কোন বাজি মাসিক ॥ আনা করিয়া সভায় প্রদান করিবেন, ভাঁহারা নিয়মানুসারে সভার পুতকালয় ভিত পুতক ঋণ পাইতে শীরিবেন।

ক্রে এই তত্তবোষিনী প্রতিষ্ঠা কলিকাতা সগতে বোড়ানীকোছিত তত্তবোষিনী নতার কার্যালয় ধই-তে প্রতিবাদে প্রতামিত চর — ইয়ার মূল্য এক টাডা ২ অগ্রহায়ণ রবিধার লক্ষ্ম ১৯১৪ কলিগতাল্য ১৯৫৮

^{*}Amiricanjournal.



ন্ত কৰা একমিনমগ্ৰতা শীদ্ধা না একিকমাসীও দিদং শৰ্কামক্ষক । তিদেবনি ডাং ক্লানমন তুং শিৰং স্বড দ্বির বয়বমেব মেবামিডীফং সর্অব্যাপিসক্ষান্ত ক্লাক্রয়ন ক্ষ্তিং সক্ষাণ্ডিন ক্লু ক্ষম্পূর্ণন প্রতিম্প্রি। একস্য তল্যে, পাসন্মধ্য পার্থিক ইমহিক ক্ষত্ত ভ্রতি। ত্যান্ ক্রীভিস্তাস্য ক্রিক্সার্য্যাধানক তলু পাসন্দেশ।

ব্রান্ধসমাজের বক্তৃত।।

ভ্ৰমান্ত্ৰকং যে নুপশ্যন্তি ধীরাজেয়াং ক্তৰং শাৰ্তং নেতরেয়াং ।

যাহার। উচ্চাকে নিকটন্থ বলিয়া জানেন, ভাহাদিগেরই নিভা দুখ হয়, অন্য বাজির। দেমুখ লাভ করিছে পারে ন!।

হে মানবগণ ! দেই সব্বেশরের—সেই দ্যবাধিপতির গুণ কীর্ত্তন করিয়া মানব জন্ম मार्थक कतः; এই আলোকময় मधान মন্দিরে কেবল তাঁহারি মহিমা সন্দর্শন ও তাঁহারই সহবাম জনিত বিশ্বস্ক আনন্দ **সম্ভোগকর। সেই প্রণয়াস্পদ পরম পি**-ভার নিকটবর্ত্তী থাকা আমাদিগের কি পর্যান্ত প্রার্থণীয়, তাহা বলিবার নহে। তিনি আমাদিপের প্রীতিভাজন প্রম বন্ধু। সেই প্রিয় বন্ধু আমাদিগের সকলের অন্তরেও বাহিরে স্থিতি করিতেছেন, ইহা একবার ছক্তি ভাবে জান চকু দারা প্রতীতি করিতে পারিলেই ভাঁহার সহিত সহবাস করা যায়। আপনাকে নিতান্ত জনন্যগতি ও পরাৎপর পরম পিতাকে আপ্নার অভিতীয় সহায় ও করুণামর আত্ময় জ্ঞান করিয়া এবং প-विक अनुःकतान केशिक नर्समा अञ्चलवर रक्षीभागात (मिशा, ठाइरिंड अविव्हान उ শ্ৰীতি প্ৰকাশ করাই তাঁহার সহিত সহবাসঃ केशिक महिल कहे बल महतान द्वारे धा-पानिकार उपमध्य। त्वत्भ नापन हात्। वह

প্রম উদ্দেশ্য সিদ্ধ হইতে পারে, তাহাই আমাদের কর্ত্তবা। ভাঁহাকে প্রীতি ও তাঁহার প্রিয়কার্য্য সাধন এ উদেশ্য সম্পাদনের একমতে উপায়। অনানে। বিষয়ের ন্যায় প্রীতি ও শ্রন্ধাও অভ্যাস সাপেক, কিন্তু कि आक्रांश्वर विषय विषय विषय में विषय कार्या, अमञ्जूषाय (य अञाम-**मार**शक ইছা সকলেই স্থাকার করেন, অথচ গ্রীভি ও আন্ধাও যে ক্রমে ক্রমে অভ্যাস করিতে इय़, देहां घटनदिः दित्तहरा कत्त्रन ना। যেমন চালনা না করিলে, শরীর সবল হয় না, এবং বুদ্ধিও পরিবর্দ্ধিত হয় না, সেই ৰূপ জীতিওভক্তিও চালনা না করিলে वर्षमाना इस नां। महीरत्व र्य अक हालनां না করা যায়, তাহা যেমন ক্রমে ক্রমে ছুর্বল হইয়া আইনে, নেই বপ মনেরও যে রুজি প্রিচালিত না ২ লু তালাও ক্রমণঃ নিস্তেজ ইইতে থাকে। ফলতঃ অপারমহিমার্ণর, স ব্য গুণালর, সকল মঞ্জাস্পাদ,পরাৎপর পর-মেশ্বরে প্রতি প্রীতি ও শ্রন্ধা করিতে অভ্যাস করা এখন কঠিন কর্মাইবা কি ? ভাঁছার অন্ত গুণ, অদীম মহিমাও অশেষ কুশলা-जिथात भर्याद्रलाएना केंद्रिटल, काहात भाषान मग्रहणदश् श्रीिक तरभत मध्यात मा इस ?

আমরা যথন বে দিকে নেত্র পাত করি,তথ-নুষ্ঠ দেই দিকে তাঁহার অতি প্রগাঢ় অনির্বাচ-নীয় কনে এবং অপার স্কুদার্য্যওকারণা স্বর্গে

কোটি কোটি নিদর্শন দেখিতে পাই। আমরা कीर्कि कुनल अलुवा निरमत स्व मकन अब्द कार्या श्रयाद्याच्या कतिया मुक्त कर्छ था-শংসা করিয়া থাকি,বিশ্বকৃষ্মা বিশ্বাধিপতির ्दिश्व कार्रगांत कुलनांग्र रम ममुनांग्र कि हुई নহে ; অতি সুক্ষা খ্যানবৰ্ণ দুৰ্বাদল অব্ধি छ छ न भीनदेश शंशन मधन शर्या छ ममल বস্তু সেই মহামহিমার্ব মহেশবের অপা-র মধিমা প্রচার করিতেছে। অসীম প্রায় প্রশক্ত মহাসাগর, অভানত বনাকীর্ণ গিরি-প্রস্থ, শতপদ-বিশিষ্ট সহস্র-শাথ বটরকা, धदः मिवाकटत्रव डिमग्रास्य कारलत् ब्यान्धर्य। দৌন্দর্যা,ও স্থবাকর পূর্ণ চন্দ্রের পরমরমণীয় অনিব্রচনীয় শোভা এ সমুদায় অবলোকন ও সারণ করিলে কাহার অভঃকরণ প্রমে খরের প্রেম নীরে নিমগ্ননা হয়? তিনি আমাদিগকৈ জ্ঞানরত্ব প্রদান করিয়া কত জ্ঞানই প্রদর্শন করিয়াছেন ! স্তুক্মার স্নেগ বুত্তি ও বিশ্বদ্ধ কারুণা শ্বভাব স্থাটি করি-য় কত স্নেহ ও কত কৰুণাই প্ৰকাশ ক-বিয়াছেন! অমোদিগকৈ ন্যায় অন্যায় নি-ৰূপণে সমৰ্থ করিয়া কি আন্চর্যা অপক্ষপা-তিতা অণ্ট প্রচার করিয়াছেন! চক্ষু এক এক নিমেশে ভাঁহার কত সহিমাই প্রভাক্ষ ক্রিতেছে ' আমাদের প্রতিবারের নি-শ্বাসক্রিয়া ভাঁহার কত স্নেচ্ছ প্রকাশ ক-রিতেছে : প্রাণ স্থনপ সমীরণের এক এক হিলোল ভাঁহার কত করুণাই প্রদর্শন ক রিতেছে! আমরা যে স্থানে যে পদার্থ অ-বলোকন করি, তানাই তাঁহার করণারসে অভিষ্ক্ত দেখি, যে স্থানে গমন করি, (महे शादमहे कै। हाटक প्राठाकावय (मनी-পামান দেখিতে পাই। যদি পৰ্বত শি**থরে** আরোহণ করি, সেখানেও তিনি বিদামান, যদি গভীর পহবরে প্রবেশ করি, সেখানেও তিনি বিরাজমান, মহাদাগরকে সম্প্রতি করিয়া তদীয় তটেই দণ্ডায়মান হই, আর নদী তীরস্থ প্রশন্ত শাথ রুক্ষ ছায়াতেই বা শয়াদ থাকি, সর্বতেই তিনি রাজত্ব করিতে-ছেন। তাঁহার জানময় নেত্র অক্ষকারকেও জ্যোতির ন্যায় দর্শন করিতেছে, তাঁহার পক্ষে ভামনী নিশার নিবিড় অস্ত্রকার ও

মধ্যাক্ল কালের পরিষ্কৃত দিবালোক উভরই ভুলা। এই অথও এলাওের প্রত্যেক
পরমাণ্ ভালার পরিষয় প্রদান করিতেছে।
এই রূপ দৃষ্টি সহকারে ক্লব্লণাকর পরমেশরের অনুপন গুণ সমুদার অহরহ পর্যালোচনা করিলে তাহার প্রতি শ্রকা ভক্তি ও প্রীতি
আপনা হইতেই প্রকটিক হইতে প্রের্
তথন তাঁহার গুণ কার্তন করিয়া বেষল বিশুদ্ধ স্থা সর্ত্রোগ করা যায়, এমন আর
কিছুতেই হয়না। তথন ভাহার প্রীতি তাঁহার প্রসম্বতা ও তাঁহার সহবাস লাভই সকল কর্ম্মের উদ্দেশ্য হইয়া থাকে। যে
বিষয়ের সহিত তাঁহার সংস্ক্রব নাই, তাহাতে আর পরিতোব জ্যোনা।

অন্তঃকরণকে পরিশুর না করিলে প্রম পরিশুদ্ধ পরমেশ্বরের সহবাস লাভে সমর্থ হওয়াযায়ন। অপরাধী প্রজা যেমন রা জার মহিত সাক্ষাৎ করিতে শক্ষিত হয়. সৈই ৰূপ পাপাসক্ত ব্যক্তি তাঁহাকে হৃদ য়ন্ত করিতে ভীত ও অসমর্থ হয়। অতএব অভঃকরণকে পরমেশ্বরের প্রেমরাগে রঞ্জিত করিতে হইলে তাহার পাপরপ ধূলিকণা मकल अकालन करा कर्जना श्रिय साम्बर প্রিয় কর্যোও ভাঁহার প্রিয় বস্তুর প্রতি খীতি না করিলে তাঁহার প্রতি যথার্থ প্রীতি প্র-কাশ পায় না : অতএব বিশ্ব পতির অশিল বিশ্বের প্রতি প্রীতি প্রকাশ পূর্বেক সর্বাদী-বের শুভটিন্ডা করা বিধেয়। সমুদয় ত্রন্ধা-গুই তাঁহার প্রীতি ভাজন, সকল জীবই তাঁহার স্লেহাস্পদ, অতএব তিনি যেমন নিরপেক্ষ ভাবে সকলের প্রতি সমান দৃষ্টি রাখিয়া বিশ রাজ্যের ব্যবস্থা করিয়াছেন, তাঁহার সাধক দিগেরও সেই ৰূপ তাঁহার पाळावर रहेशा मंद्राभाशात्राचेत्र एकामुकीन করা কর্ত্তবা, "তিনি আমাদিগের স্থুখ ন-দীর প্রস্তবণ।" তিনি আমাদের সৌভাগা उत्रत्न এकमाज भूग प्रदेश। नहीं कि क्थन প্ৰভাৱৰ হইতে পুৰক্ হইয়া প্ৰাহিত হই-ए भारत , ना हुक कमानि मून शहर व-क्रिय हरेया विकिष्ठ हरेटक शाद्य ? क्षक वर তিনি সকল औरवत सूर्व मार्थनार्य बात्रीह चाका कानु क्षिता तारिणाट्यन, अञ्चलकरे

शालन करों के **डि**यां। मानव कथा नार्थिक কবিবার আর উপীরাত্তর নাই। তাঁহার ম-अन्त्रं मार्थ नियम नभू नयं शाखिलाला वर्ष नमर्थ হটবে, ততই নিৰ্মাণ আনন্দ অনুভূত হ-ইয়া ভাঁছার করুণাময় বিশুদ্ধ স্বৰূপে দৃচ্ তর বিশ্বাস জনিবে, এবং ততই তাঁহার প বিত্র প্রেমের হইয়া তাঁহার সহবাদের উপযুক্ত হইবে। ধাঁহানের ধর্মে অনুরক্তি ও পরমপিতা পরমেশ্বরের প্রতি প্রীতি উপ-क्टिक्स नाहें, केंक्सिता (य अस्क्तादिके अहे পর্ম প্রার্থনীয় অবস্থা প্রাপ্ত ইইবেন ইহা কোন মতেই সমূর নহে। কুসক্ত পরিত্যাগ, স্বারু সঞ্জ অবলয়ন, পরমেশ্বর বিষয়ক ও ধর্মা বিষয়ক উপদেশ শ্রবণ ও তৎপ্রতিপাদকঃ গ্রন্থ অধ্যয়ন, অহরত উলোর প্রতি প্রীতি প্রকাশ ও ভাঁহার প্রির কার্য্য সম্পাদন ই ত্যাদি সাধন যতু পূর্যবিক অভ্যাস কর। উ।-২াদের পক্ষে আরপ্ত কন্তব্য। যে সকল রুত্তি চালনা করিতে অভ্যাস করিকে, তাহাই প্রবল হট্রে। অভ্যাস না করিলে, শ্রীরও সবল হয় না, বুদ্ধিও প্রখর হয় না, ধর্মাও <u>উ::ভ হয় না। কুলোকের সংসর্গ করিয়া</u> ের মন ভুষ্ট থাকে, অদ্যাপি ভাঁচার অবশ্চিত্ত পাপ পিশাচের হল হইতে মুক্ত হয় নাই এবং ভয়ান ও ধর্ম অন্নাপি তাঁ-হার অন্তঃকরণ অধিকার করিতে সমর্থ হয় নাই ও উহোর অপরিশুদ্ধ অভঃকরণ কদা-পি পরমু পরিশুদ্ধ পরমেশ্বরের বিশুদ্ধ সিং-হাসন হইবার উপযুক্ত হয় নাই। কিন্ত टेव्हा ना शांकिरंत उपरमम खनत्। कि इ-ইবে? যে ধালকের বিদ্যা লাভে অনুরাগ নাই, সে যেমন কদাপি স্থৃশিক্ষিত ছইতে পারে না, দেই ৰূপ যাহার অধর্মে বিরক্তি ও ধর্মে অনুরক্তি হয় নাই, সে কদাপি ধর্ম ৰূপ মহারত্ব লাভ করিতে সমর্থ হয় না। যাঁহার ধর্ম লাভের ইচ্ছা জমিয়াছে তাঁহোর আর কি অবশিষ্ট আছে? তিনি আপনার व्यनिदायी हेक्हा दतन उधियम् उपारमन অবণ, তাত্ত্বধারন ও সাধুসক্ষ করিতে যত্র-বান্হন এবং ভদারা ক্রমে ক্রমে ক্রকার্যা व्वेदे परिकन, किन्छ यादात हेन्छ। नाहे, केशित स्वत बील्कामत बरूक्षि कुना।

তিনি প্ৰিত্ৰ সমাজে উপ্ৰিষ্ট ইইয়াও নি র্জন বনবাসী সদৃশ এবং ৰাল্লয়ার উপদেশ वाका व्यवन कवियाल दिस्ह जुना। कनर একেবারেই বে সকলের একান্ত অন্তরাগ জ্ঞে,ভালা নতে, যেমন বালক গণ কিছু দিন অধানন করিতে করিতে বিদ্যা র**সের স্থা**দ এছণে সমর্থ হয়, সেই কাপ শ্লানেকে পুলঃ পুনঃ পর্যেশ্র বিষয়ক উপজেশ আবেণ ক-রিডে করিতেও পরম প্রীতি ভাজন পর মেপরের প্রীতিরস পানে অনুরক্ত হইতে পারেন। অভএব বরেয়ার সাধ্**দল** করা, এবং যে স্থলে পরাৎপর প্রমেশধের প্রায়য় ও শুণকীর্ত্ন হয়, সে স্থলে সারদং গমন করা সকলের পক্ষেই আবশ্যক। এক এক রোগের নানা ঔষধ আছে, কাহার কোন অবস্থা কোন্ ঔষধ ছারা আরে(গ) লাভ क्ट्रेटन, दक रिकारक शास्त्र ? श्रुमः श्रुमः ६ রমার্থ প্রদঙ্গ আবণ করিতে করিতে কোন নাকেনি সাধুলাকা জনদয়ক্ষম হট্রাপ্র-মেশ্বরে প্রতি গ্রীতি সঞ্চারিত করিতে পারে। তথন তাঁহার তুণ কীর্তন শাসংগ অনুরাগ করে, তাঁচাকেই এক মাত্র আ্রাথ জানিয়া নিউয় জদয়ে উহোর প্রদর্শিত পুণঃ পথ অবলয়নে উৎসাহ রুদ্ধি হয়, এবং 🕉 🖰 हात महताम लाएखड वामना उमन हरेकः অন্তঃকরণকে তদন্ত্রপ পবিত্র রাখিতে যার আমাদিগের উপাদন জান 😗 এই পরম পরিশুদ্ধ ব্রাহ্মসমাজ, ইলা 🧽 প্রকার বাসন: ও উংসাহ উদ্দু হইব'র चामनः এशास প্রধান স্থান। সমাগত হুট্য় স্ক্রিফলাকর প্রমেশ্ব রের আর্থেনা করিয়া ক্র**ভার্থ হই,** এবং **उम्मरिके** करु करु धना नास्त्रित्व ख মুরাগ ও প্রীতি স্পণ্য হইতে থাকে। এই मकल कला। भारतादर्श के अभाक এहे স্তানে সংস্থাপিত হইয়াছে। এবং এই ৰূপ मगाक भक्त प्रमाज्य अञ्चल हर्गाएकः এই সকল শুভ लक्षा सम्पर्मन कतिहा छ। মাদের অস্থকরণ আশা ও ভরসায় পুণ 🖘 ইতেছে এবং উৎসাহে ক্ষীত হইয়া উঠি-তেছে।

হে পরমান্ধন্! এখন ওও দিন কড

দিনে উপস্থিত ছইবে, যে তথা আমাদের দেশ এই ৰূপ পুণ্য-ধামে পরিপূর্ণ ছইবেক। আমাদের আত্মীর স্বজন, বন্ধু, বান্ধার, প্র-তিবাসি দকলে আমাদের সহিত সন্দিনিত ছইয়া তোমার আরাধনায় প্রবৃত্ত ও অন্ধু-রক্ত ছইবে, এবং এদেশের সকল ভাগে স-কল নগরে সকল প্রামে, বর্ষেন্থর্মে, মাসে মাসে, সপ্তাহে সপ্তাহে, দিবসে দিবসে তো-মার অপার মহিমা বর্ণিত ও তোমার অ-বুপম গুণানুকীর্ত্তন কীর্তিত ছইবে। হে পরমান্ধন্ এমন শুভদিন কত দিনে উপস্থি-ত হইবে।

ওঁ একমেবাদ্বিতীয়ং।

বিজ্ঞানশাস্ত্র।

বিজ্ঞান শান্তের আলোচনা অতীব স্থানারক। কোথার বা আপাতরম্য পালভা ইন্দ্রির সুখ! আর কোথার বা স্টাক্র বিশ্ব কৌশলের অভিজ্ঞান জনিত বিশুক্ষ আমোদ। কোথার বা কম্পনা চন্দ্রের তেজাবিধীন আলোকের শোভা! এবং কোথার বা বিজ্ঞান স্থারের তেজাবিধীন প্রভা! অভাবের নিগুড়ার সমাক্ কপে অবধারণ করা মানব বুদ্ধির অভীত বটে, কিন্তু ইছা কি আমাদের নিতায় সৌভাগোর বিষয় নছে যে পৃথিবী পিঞ্জরে বদ্ধ থাকিয়াও আমরা চন্দ্র, সুর্য্যা, গ্রহ্থ নক্ষত্রের উল্লেখ্য অনস্ত কৌশল প্রত্যক্ষ ক্রেরিয়া ভাগবিধা অনস্ত কৌশল প্রত্যক্ষ ক্রেরিয়া ভাগবিধা অনস্ত কৌশল প্রত্যক্ষ ক্রিরমা তাছার ভাগ কীর্ত্তিন করিভেছি।

এই স্থভাব ক্ষেত্রে আমরা কতই অদ্বুত ব্যাপার প্রত্যক্ষ করিতেছি। একটি
একটি কারণ হইতে কতবিধ কার্য্য উৎপন্ন হইতেছে। যে শক্তি, চন্দ্র, স্থ্যা, এই.
নক্ষত্রকে নির্দ্ধিক স্থানে নিয়োজিত রাথিয়াছে, সেই শক্তির প্রভাবেই প্রশন্ত নদী,
গাতীর সমুদ্ধ ও মহোচ্চ পর্বাত স্থ স্থ নপ
ধারণ করিয়া অশেষ শোচ্চা বিস্তার করিতৈছে। তাহারই প্রভাবেশসুদ্ধ উক্ষ্ সিত ও
নদী স্রোতস্থতী ইইতেছে, তাহারই প্রভাবে ইটি ধরাত্রে গ্রিক্ত হুইয়া উত্ত-

প্ত ভূমিকে শীতল করিভেছে, শিশির বিন্তু প্রত্যেক পুলা ও প্রত্যুক্ত কুক্ষ পরকে শিক্ত করিতেছে, এবং ভুষার, সমূহ পর্ম-তোপরি রাশি রাশি পাতিত হইয়া নদ নদী উৎপাদন **করিভেছে। কেবল এক জল**ই ৰুপান্তর হইয়া কত প্রকার কার্যা স-ম্পাদন করে। এই জল জমিয়া হিমশিলা জমে, সেই হিমশিলাকে কিঞিৎ উ-তপ্ত করিলে পুনর্কার ভাষা জল রূপে প-রিণত হয়, এই জলকে অনেক দিন অ-নারত রাখিলে আপনা হইতেই ক্রমে ক্রমে অদুত্য হইয়া যায়, উহাকে অধিক উত্তপ্ত করিলে বাষ্পা ৰূপে উপিত হয়, সেই বাষ্পা अक्ज स्ट्रेल यन स्वयाला, जीवन वक्क हिन ও বিছালতা দারা আকাশকে চমকিত করে, সেই বাষ্ঠাকে শীতল করিলে পুনর্বার উহাজল হইয়া পতিত হয়। এই স্থলে এক বস্তুর কত প্রকার পরিবর্তন হইল ! এক খণ্ড গালা উত্তম ৰূপে ঘৰ্ষিত হইলে উহা অনেক লঘু বস্তু আকর্ষণ করে. এবং অন্ধকারে কোন বিভালের গাত্র ঘর্ষণ ক-রিলে ভাহার গাত্র হইতে অগ্নি ক্ষুলিক উৎপন্ন । किंद्ध हेशकि আরুষ্য নহে , যে পদার্থ বিস্থাতের কারণ এবং তাড়িত বার্ত্তাবহের আয়ুল, ভাহাই উক্ত চুই বি-यस्यत छेश्शामक ?

উদ্ভিদ রাজ্য কি বিস্তীর্ণ ! ইহাতে ন্যুন কম্পে পঞ্চাশং সহজ্ঞ প্রকার রুক্ষ বর্ত্তমান আছে, তাহাদের আকার,প্রকার, ফল, পত্র, পুপ্প, গজ্জ—তাহাদের ঔষধীয় গুণ ও র-দ্ধির নিয়ম সকলই বিভিন্ন প্রকার। কিন্তু পদার্থবিং পশুতের। সেমুক্লও স্থির করিরাছেন !

আবার ইহাকি আশ্বা নহে বে আমরা প্রায় ৪০-মন বারুভার অক্সের বহন করিয়া কীরিত আছি? রেহেতু আমাদের শরীরের অভ্যন্তর মংকিশিং বারু ক্রীয়
ভিত্তি ভাগকতা প্রের আনারাকে বেই ভা
রের প্রতিবিধান করিতেছে? এই বারু
ভার রাতীত আমাদের এই দতেই মৃত্যুদশা উপ্রিয়ে ক্রত এবং ব্যুক্তী বর্ত্তই দুভিত্রাং ক্রায় বাইতা এই বারু এই কালে

ভাৰত কাৰ্য্য দক্ষাৰা করিতেছে, কৃষ্ণ ছিত্তের ভিতর প্রবেশ করিয়া ভাষাকে নবীন পত্র, স্থাক্ষাপূপাও স্থাদ কল ধারণ করিবার উপযুক্ত করিতেছে, এবং কি মন্তব্য কি পশু, পক্ষী, কীট, পড্জ, কি রক্ষা, লতা, পল্লবাদি সকলকেই জীবন দান করিতেছে। জল বস্তু হইতে জলোৎক্ষেপণ ও বাজ্গীয় বা নের বায়ুভেদী ও তর্জভেদী গমনক্রিয়া অ-বিধি মক্ষিকাদির চলন কার্য্য পর্যন্তে সকলই বায়ুর ভারবন্ত্র জারা সম্পন্ন হইয়া থাকে। এ ভারবন্ত্র গুণেই নদী ও সমুদ্রের জল বাজ্য কপে পরিণত ইইতে পারে না এবং উহা-তেই স্থান্ত্র জলবিন্দ্র মিশ্রিত বায়ু ছিলোল ভারা পরিশ্রান্ত জন গণের প্রান্তি দূর হয়।

আবার যদি নিভান্ত অসংক্রপ্ন ও পরস্পা-র বিপরীত পদার্থ সমূহে অসম্ভবনীয় অত্যা-শ্রুষ্য সরক্ষ নিরূপণ করা যার, ভাষা হইলে আর এক মূতন আনন্দ কেত্রে উপনী 🕏 🚌 ইতে হয়। ইহা সহজেই কে মনে করিতে পারে,যে এক অত্যুক্ত ল হীরক খণ্ড ও এব थान तुम्भवर्ग जङ्गात जक्हे भागर्थ। १४७ কোন স্বতন্ত্র বর্ণ মহে, হরিৎ পীতাদি বর্ণ এ-क्क इरेश शक्रवर्ग छेर शामन करत, वरे (इन् কাচ বিশেষে **স্থা**ন্যর শুভাষয় কিরণ হই-তে রক্ত, নীল, প্রীতাদি বর্ণের প্রতাক্ষ হয়: যে করেণে অমি প্রজ্বিত হয় সেই কার-(गरे लोशांक्रिक मित्रा श्राप्त, विवश्या मे कातर के ताजिकारण छेडिन भनार्थत त्कि হয়। চেতনাবান্পদার্থের নায় রক্ষাদিও নিম্বাস প্রস্থাস বহন করে, কিন্তু তাহাদের নিশাসক্রিয়া রাত্রে ও দিবসে সমান নছে। যে বায়ু জ্বলম্ভ অনলের ভিতর অবস্থিতি করে, তাছাই আমাদিগকে ব্যোম্যানে আকাশ পৰে লইয়া যায়,যে রক্ষ পত্র ভূমিতে পতিত **रहे**ग्र বোধ হয় একেবারে নফ হইবে;তাহা বাস্তু বিশেষে পরিণত হইয়া পুনর্বার রক্ষ नजानितं दृष्टि विषयः माराया करत। य णातविद्यीत व्यक्तक भनार्थ উভाপের काরণ, ভাৰাই জন্ম পদাৰ্থের ও স্থাতিল বায়ু পৰাক্ষে কারণ এবং তাহা সমুদর বস্তুর পর-মাৰ বিভিন্ত করে। তাহাঁ পৃথিবীর তাৰৎ नका गरिक क्रिक बादक व स्था हरेटड थ- ত্যেক সান্ধবিপলে প্রায় বৃথি লক্ষ জোন পর্যান্ত গমন করে, তাহার অসদ্ভাব হাইলে পৃথিবীর তাবং বস্তু পারাণপিগুবং করিন হাইলা অকর্মণ্ট হাইরা যাইত। এই সমঙ্গ বিষয়ের জ্ঞান অপেকা মন্ত্র্যা সদৃশ জীবের আর অধিক কি এ/গনিষ হাইতে পারে? এই প্রকার জ্ঞান দিক্ষার জ্ঞালক্ষেপণ অপেকা আর নির্দেশ আমোদ কি আছে? বিশ্বগতির বিশ্বরহনার জাহার প্রমান্ত্রত কৌশল প্রভাক করিয়া জ্ঞানবান্ত্রাক্ত বে চমংকার নম্বলিত আমন্দর্যান্ত বে চমংকার নম্বলিত আমন্দর্যান্ত বে ক্রাক্ত বাক্তি তাহা স্বলেও কাপেনা করিতে পারে না।

স্বভাবের উদার মূর্ত্তি অবলোকন করি: त्म मकरनत्रे सन केमात क.त भ.त्र करत এবং **অপার শাস্তি অ**নু**ভব করে।** রুহ্নসতি গ্রহ কি চমৎকার! এই গ্রহের আনতন প্ থিবী অপেক্ষা প্রায়ত্তরগণ্ডর অন্তর্ভারত এব **সহস্ত বংশর পূর্ব্ব হ**ইতে এক্ষণ প্রয়ন্ত গুলি বীতে যত জাব জন্ম বাস কারনা অর্নিতেভে। উক্ত এহ ভাহার এক কালে শত গুণ জীব জন্তর নিবাস ভূমি হইতে পারে। এই এহ এক ঘণ্টার মধ্যে চত্তুর্জণ সংস্তা ক্রোশ ক রিয়া আপুনার অকোপরি দ্রুত বেলে গুণি ত হয় এবং অনন্ত আকাণে পুথিবী অপেকা রুহৎ রুহৎ চারিটি চন্দ্রের সহিত তভোগিক বেসে मक्ष्रं करत। यकि अहे अक मानागा এহের গতিক্রিয়া ও আয়তন আলোচনা ক तिवात भगत व्यामारमा भरत अलाकृषी 🕃 **দার মূর্ত্তি** চিত্রিত হয়, তবে **স্থা**য়ের বিষয় অনুধাৰন করিলে ভাষ্ আমাদের খুদ্ मटन भारत करा छुः जाना इक्ट्रें , जटनहरू নাই। কিন্তু স্থোর সহিত উহার ভুলনা कतित्व छेशाक वजान कूज ताव इस। म-মন্ত গ্রহের একত্রীভূত একটি লোক মণ্ডল चरभक्तात्र स्टरी थात्र ७०० छ। दृहर, স্কুতরাং রহস্পতির ন্যায় সহস্র গ্রহ ও পৃথিবীতুলা লকাধিক লোক মণ্ডল ফু র্থ্যের মধ্যে অনারাদে অবস্থিতি করিতে পারে। স্থা মুহুর্ভ কালের মধ্যে কত **क्र**्रेम् इव**र्षे अ**र् ७. छेश्यर् शर्व चकीत तिथानान विकीर्ग कतित्रा पाटनाक अ-

मान कतिएण्डा किस अन्नभीवासम्बद्ध विभाग विश्वतारका कि थे अक्षे बाक क्रिया আলোক প্রভা বিভার করিভেছে? এমত কত কত সূৰ্য্য আৰু ল পথে বিচরণ ক-রিয়া অনস্ত স্থান মধ্যে আপন আপন ভাোতি বিভরণ করিয়া **থাকে। প্রভোক** ্কত্র এক একটি স্থ্যা। আমাদের এই স্থাবির নায়ে তাহারাও স্বকীয় জ্যোতিতে প্রকাশ পায়। এই সূর্য্য **অপেকা তাহারা** অপে তেজন্বী ও **অপ্য বিস্তৃত নহে ৷ `আ**-মরা শুদ্ধ চক্ষে প্রতি রক্ষনীতে সহজ্ঞাধিক इे श्कात स्था मधन व्यवस्थाकन कति এবং দুরবীক্ষণ যন্ত্র সহকারে এমন কোটি সূর্যা প্রতাক্ষ হয়। কিন্তু আবার যে সকল লোক মণ্ডল আমাদের চকুও দুরবীকণ বল্লের অগোচর ভাছার সংখ্যা ছয়তো **অগ-**্নীয়। অতএব যদি সমস্ত সৌর জগ**ং**ও একবারে বিনকী হইয়া যায়, তবে ঈশ্বরের রাজের এক ধলিকণার লোপ হইল বলি-তে হইবে। কিন্তু ঈশ্বরের কি আশ্চর্য্য কৌ-শ্রণ: তিনি যে কৌশল দ্বারা **তাঁ**হার অ**পূর্ব্ব** ণক্ত গুলিকে নিয়ন্ত্রিত করিয়াছেন, ভাহার কণ মাত্র ব্রতিক্রম হইলে সমুদয় স্থাটি প্রণা-ীর বিশুস্থালা হুইয়া যায়। স্কুর্যোর আকর্ষণ শক্তি হইতে চুতে হইলে পুথিবী **আপন** স্থান ভ্রম্ট হয় এবং সূর্য্য যে আকর্ষণ দ্বারা নিয়মিত পথে ভ্রমণ করে, তাহার কিঞিৎ-মাত্র ব্যতিক্রম হইলে সূর্য্য স্থকীয় পথ প-রিত্যাগ করিরা অন্য কোন অনিদিউ পর্ব जरलञ्च करत्। सूर्या এই बाश मना अस হুইলে যে গ্রহণণ ভাহার আকর্ষণ দারা मृष्ठ वक्कारम वक्का च्यारह, ও यथाविधारम পরि-গুলিত ক্টতেছে, তাহাদের গতিকিয়াদির বিশ্বাসতা ঘটিয়া উঠে এবং এই ৰূপে ফুর্যা, চকু, এছে, নক্ষত্র পরস্পার হয়তো এন্ধপ সংঘটন ছারা চুর্ব হইয়া যায়, পাত-এব ঈশ্বরের নিয়মের কণামাত্র ব্যতিক্রম হ-ইলে এতাদুশ ভয়কর ব্যাপার **উৎপ**ন্ন হয়। কিন্তু কত কোটি কোটি বুংসর **অন্তীত** হইয়াছে, তথাপি তাহার কিঞ্মাত্রও মা-जिक्म परि नारे, देशांक नेपातत कि म-शेशनी नकि अकान शाहरबड़

বর্ষান আমরা এই ক্ষে পৃথিকীয় কি একটি
সমুস্ত , একটি পর্বাত, একটি বৃক্ষ পদ্ধ, একটি ক্ষুত্র তুর্ণের কিবল সম্পূর্ণ কলে মুক্তিতে
পারিনা, তথন সমস্ত ক্ষিত্র কৌশল আমরা
কিবণে মনে ধারণ করিতে সমর্থ হইব ? আন্মরা যে পৃথিবীর ন্যায় অন্যান্য ছ্যুলোকের
স্কুডার পর্যাবেক্ষণ করিতে সাহস করি,
ইহাই আমাদের স্পর্জার বিষয়।

কিন্তু এই বিন্তীর্ণ ভূমগুলের সহিত যদি সমস্ত স্থির তুললা করা যায়, তবে ইহা এক বালুকা রেণু হইতেও স্থক্ষ বোধ হইবে। কোন ব্যক্তি একটি এহ হইতে এই পৃথিবী অবলোকন করিলে, ইহাকে এक कुछ विन्छूत नात्र मुक्कि कतिरव धवः ভদপেক্ষা অধিক দুরস্থিত লোক হইতে इंशात तिम्छू निमर्गल अखाया स्ट्रेंटन न!। একটি গ্রহ পৃথিনী অপেক্ষা ৭৩৫ গুণ রুছৎ এবং উহা বে এক অঙ্গুরীয়ক দারা পরিবে-টিত রহিয়াছে তাহা এত বৃহৎ যে পৃথিবী হইতে চক্র লোক স্পর্শ করিতে পারে। আর একটি গ্রহণ্ড এত ব্লহৎ যে এই পৃথিবীর ন্যায় ১৪১৪টা পৃথিবী একতা করিলে তাহার তলা হয়। সমস্ত গ্রহের একত্রীভূত একটি লোক মণ্ডল অপেক্ষা স্বয়ং সূর্যা প্রায় ৬০০ গুণ ও পৃথিবী অপেকা ১৩লক গুণ বৃহৎ।

এই সকল গ্রন্থ উপগ্রহের গতি-ক্রিয়াই বা কি চমৎকার। শুক্র এই এক ঘন্টার মধ্যে ৩৪০০০ ক্রোশান্ত রুধ গ্রহ এক বিপ্রান্থর মধ্যে ৭৭৫ জেশে করিয়া জা-কাশ মার্গে বিচরণ করে। শনি আপন অধীনস্থ অফ চন্দ্রের সহিত ১ ঘণ্টার মধ্যে २२००० क्यांग जमन करत, धुमरकष्ट्र विरमव স্থারে নিকটবন্তী হইলে স্বন্টার লক্ষ याकन পথ অভিক্রম করে। सामारमङ ऋर्या সর্বাসমেত প্রতি ঘণ্টায় ৭৫০০ বোজন উদ্বীর্ণ হইয়া স্বীয় পথে জমণ করে। এ**ই কুলে** কোটি কোটি কোক সংক্ৰা কোটি বকাটি स्टर्शन एक किएक अमामाना स्वरंग विद्यान कृत्र सहामरे निर्मित्रे गर्भ मानारम कति-IN ARTHUR ARE THE THE MENT WHEN चाक्रके प्रवेश बहिबारक क्षेत्र कि मानान CONTRACTOR OF THE PARTY OF THE

ক্লব্যের কি অভুন্য শক্তির নিদর্শন আ-দর্শন করিভেছে ডাহা ব্যক্ত করা দূরে ধা-কৃক অনুভব করাও অনম্ভব ।৪

পাপকর্মে মানব প্রকৃতির কি কি অনিষ্ট হইতে পারে তাহার সংক্ষেপ বিবরণ ৷

় " পাপং কুর্মন্ পাপকীর্ত্তিঃ পাপমেবা-পুতে ফলং " এই শব্দ করেকটি আপা-ততঃ ভয়ন্ধর বোগ হয় বটে, কিন্ধ অনুধা-বন করিয়া দেখিলে ইছাতে জ্ঞানের মধুর মৰ্ভি বিলক্ষণ কৃতি পাইতেছে। যে কোন কর্মা মঙ্গল সংকল্প জগদীশ্বরের অভিপ্রায় বিরুদ্ধ বলিয়া স্থির করা যায়, তাহাই পাপ শক্তে উক্ত হইয়া থাকে। স্ক্রাং পাপা-চরণ করা শুদ্ধ ঈশ্বরের প্রতিপক্ষ হওয়া-মাত্র। আমাদিগের প্রত্যেক নিশ্বাদে ধে অচিস্তা মহিম পরম পুরুষের অপার করু-ণার পরিচয় পাওয়া যাইতেছে, ভাঁহার অনভিপ্ৰেত কাৰ্য্যে যে অশুভ ফল উৎপন্ন হঠবে তাহাতে আর সংশয় কি। যাহাতে ে ই গরলময় কলের স্বাদ এছণ করিতে না হয়, ভদ্বিষয়ে সাবধান করাই উক্ত ৰ-চনের উদেশ্য। পাপকারী বাক্তি আপনার প্রতি—আপুনার মহীয়দী প্রকৃতির প্রতি ও স্বকীয় বিশুদ্ধ আত্মার প্রতি যে কি কি প্র-গাচ অনিষ্ঠ উৎপাদন করে, প্রস্তাবিত বিষ-য়ামুসারে এক্ষণে ভাহারই বিবেচনা করা বিধের।

একের পাপাচরণ ছারা বে অন্যের
প্রভৃত অনিষ্ট ছাটতে পারে, ডাহা নির্দেশ
করা বাছলামাত্র। অন্যের প্রতি যত প্রকার
অত্যাচার সম্ভাবিত হইতে পারে, পাপীদিগের ছারা ভাহার অনুষ্ঠানের আর কিছুমাত্র অবশিক্ট থাকে না। বে কর্ম কোন
কমেই ধর্ম প্রবৃত্তির অনুমোদিত হইতে
পারে না, ভাহার অনুশীদনে বে ব্যক্তি অবলীলাক্তমে প্রবৃত্ত ইইলা থাকে, সে কি
না ক্রিছে পারে? প্রকা কিবে যে কার্ম্য

भागीनिरभन्न जनाथा बरह। भागरक मामा-किक कम्यान शुरक्षत्र अविधि विदश्मिमी गंकि বলিলেও হয়। উর্ণনাজির ন্যায় উহা বেপানে त्यवादन विषय करत, ताहे ताहे ऋताहे ছংখজাল বিস্তার করিতে থাকে। সমুদার বিশ্বকে ছুঃখ সলিলে মাবিত করিয়াও উ-रात क्लिरहासा। कृमधन मत्या त्य क्रक কত লোককে প্ৰত্যহ পাপজনিত অন্দেষ ছঃখ ভোগ করি**তে** হয়, তাহা কে বলিতে পারে ? কত কত গৃহত্ত্বে ভবনে যে কেে!-ধের ভীষণ মুর্জি সঞ্চারিত হইতেছে, স্বার্থ-পরতার এবল প্রভুত্ব প্রকৃতিত হইতেছে. অহন্তারের ভয়ন্ধর কলহ উপিত হস্তেছে, তাহার সংখ্যা করা ছুঃসাধ্য। কোন স্থানে বিশাস ঘাতকতা পিশাচী অগণ্য ক্লেশ ক-न्हेकाकीर्ग व्यापन क्रमना महिन दिख्छ क-রিতেছে: কো**ৰ**ায় বা হিংসা রাশ্বনীর করাল দর্শন ছারা কোন নির্দেষ ক্রছয়ের মর্ম বিদারিত হইতেছে, কোন স্থলে উদ্ধ তরিপু বর্গের প্রতাপ দাবানলে অপর आभी शुरक्षत स्थ कानन एक कतिराउद्या কেখায় বা ভোগমূগত্ঞায় আকৃট ই-<u>জিয় কুরঙ্গ সকল আত্মীয় গণেরও আত্ম</u> প্রসাদ কবলিত করিতেছে। এই রূপে কি আন্ধীয় নকু বান্ধাৰ, কি অপুর প্রাণী স-मृह, मकलाबरे 'अभीड़िए ও विमीर्व कामस नक्त थे बहु उ भाभ क्षेत्र भिनादहर स्था পৎ माकी ७ वगीपुर हरेश जानित्रहा

কিন্তু পাপশীল মানব সকল আপ্রাদিগের আচরিত অসং কর্ম্মের কল স্কুপ্র ছংসহ যক্রণা সমূহ আপ্রারা যেমন সহা ক্র রে, তৎসমুদায় যত ভয়ানক ও ক্লেক-র হউক না কেন, অন্যের সম্প্রে অব-ছাই অকিলিংকের বোধ হইবে,সম্পেহনাই। প্রায় সকল বিষয়েই অধর্মা নিব্দান যে বিষমর কল উৎপন্ন হইরা থাকে, অসুষ্ঠা-ভার সহিত ভাহার যত ঘনিষ্ঠতা হয়, ততাই বিষমতর হইরা উঠে। কোন ব্যক্তির ছ্--শ্বীলকা নিমিত লাহার বদু বাল্ল দিগকে বত কট গাইতে হয় সমাজত অপর স-ক্লেকে কিন্তু স্ক্রান্ট্রিক ক্লান্ত বিশ্বিক लहेट इत्र, वसू वास्तव नगरक जावात তত লইতে হয় না। সেই ৰূপ ৰে আপন ছুদ্ধতের প্রতিক্**ল আপনি বেমন** ভৈগি করে, অন্য কাহাকেও আর দেরপ করিতে ক্তব না। বে আপন অন্তর্ভ উদার বি-**(स्टब्स अक्षात्रिक डेशस्त्रो त्रक्त डेझक**्यन श्रुक्तक व्यमानवदः यमृष्ट्रागादत्र श्रुव्ह रहेश তাহার প্রশস্ত প্রকৃতি , সমুজ্জুল গৌরব ও প্রভাপুঞ্জ একবারে নিষ্পুভ বা নির্ব্বাণ ক-রিয়া কেলে এবং ক্ষমন্ত্রত চিরসঞ্জীবনী আশালতার এককালে সমূলে উন্মূলন ক-রিয়া দেয়। অনোর প্রতি কি ইহার অ-পেক্ষা অধিকতর অপকার সম্ভবিতে পারে? কদাচ নহে। ছুরাচার পামরেরা অংপন গ-রীয়সী প্রকৃতির বিরুদ্ধে উদৃশ তম্পাচ্ছন ভয়কর ও শোকাবহ ব্যাপারে প্রবৃত্ত হই-য়া থাকে যে ভাহার কিছুমাত্র অনুভব ক-রিতে পারিলে তাহারা আপনারাই কম্পিড ও রোচন প্রায়ণ **হয়, সন্দেহ** নাই:

কোন কোন ছুরিতকারী এমন কথা খলিলেও বলিতে পারে, যে ত্ফর্মে রত হই-য়া তাখার। আপনাদিগেরই অধিক হানি করিয়াছে। কিন্তু ইহাতেই কি ভাহাদি-গোর আর: ভৃষ্টি কাভ করিতে পারে? ইছা কি কথন কিংস্থার্থ নায় পর্তার কার্য্য विभाग भग इहेटल शास्त्र ? अस्नक फून-শীল মমুষ্য গণের উদৃশ সারল্যভাব প্রকাশ পার বটে, যে ভাহাদিগের পাপাচরণে অ-ন্যের কোন অনিট না হইয়া শুদ্ধ আপ-নাদিগকেই তদীয় প্রতিফল ভোগ করিতে হইয়াচে, এবং তাহারা এৰূপ মনে কলিয়াও কিছু দাৰুনা পায় : কিন্তু এৰপ জানুত্ব দার। কি আরও দৃঢ় প্রতীতি হর না যে ঈ-দৃশ সরল স্বভাব কলুব বিকারে বিক্ত হ-ওয়াও সমধিক শোচনীয় বিষয়? ইহাও কি বোধ গমা হয় না **বে জনোর**্কোন অপকার সংঘটন না হইলেও ওল আপন অপাপবিদ্ধ বিমন আত্মাকে ৰুজুবিত করা-प्रिरे विषय (माषांदर, नर्वार्था व्यक्तिकार के নিতাত বভাৰ বিক্লম কৰ্ম ? প্ৰকৃষ্ণি এং শকারী ভূম জনগের জাসাত প্রতি জাচ क्षि वरे वर्ग ज्यादत प्राम्यको विकास

(क्रम कहारे अस्तिक विवदात मुना छा-ৎপর্যা। পাপী লোককে এক একার ব ভাব বিৰুদ্ধ অন্ত অন্ত ৰলিয়াই ছিন্ন করা উচিত। যে ব্যক্তি আপন প্রকৃতি রাজ্যের चनुहस्त्रनीत नित्रम नकन अवनीनाकरम य-বহেলন করিয়াও বুদ্ধি বৃদ্ধি এবং ধর্ম প্র-বৃত্তির উপদিষ্ট উৎকৃষ্ট ক্ল্যাণগ্র স্থম-ধুর শাসন সমুদার অসক্তিত চিত্তে ও নি-ঠায়ে অতিবর্ত্তন করিয়া নিক্লফী রুজি নি-করের কিন্তর হইতে ও জঘণ্য ভোগ লা লসাকুণ্ডে আত্ম বিসর্জ্জন করিতে পারে। ভাহাকে একটা অস্বাভাবিক নরাকৃতি জন্ত না বলিয়া আর কোন্**শব্দে উক্ত** করিব। হা ' যে বাজি পাপরূপ অস্থরের কুহক জালে এৰূপ আচ্ছন হুইয়া পড়ে, যে স্বৰ্সাফী হৃদয়েশ বিশ্বাধিপের সংস্থাপিত সমৃদ্ধ ধর্মা-জ্ঞান রাজ্যের নিয়মবঙী নাহইয়া প্রভাত অশেষ প্রকারে ভাহার ভূয়ো ভূয়ো বিজো-**হাচরণে** অবিক**লিত হৃদয়ে প্রবৃত্ত হ**য় ও প দে পদে আপন প্রকৃতির বিরুদ্ধ ব্যবহারে প্রণয় বন্ধন করে, ভাহাকে আর কি বলিয়া मसूषा (व्यनी भट्या शना कता बाह्र ? উজ-ৰূপ যদৃজ্ঞামত অত্যাচার ও নিরম লভ্রন প্রায় সচরাচর প্রত্যক্ষ করা যায়। এই সমস্তই মহাপাপ বলিয়া গণ্য হইতে পারে: তদ্ৰপ প্ৰতিজ্ঞা সহকারে ধর্মনীতি স্থ**ত্ৰ স**ক-লের খণ্ডন করিতে চেফা করা অথবা ধা-**শ্মিক বর্গের প্রতি উপহাস কর। অতি ভয়ন**র দোষ ও নিঃসন্দেহ পালাম্বার চিত্র,বরঞ ত-ৎসমুদায়ের সহিত তুলনা করিলে অজ্ঞান তি-মিরারত ত্রেল প্রকৃতি সম্পন্ন মানব গণের কার্যাগত বে কিছু দোব দৃষ্ট হয়,ৰে সকল-क विरम्ब **इंकर्ज वला यात्र ना । উत्ति**थिङ পাপ প্রবৃদ্ধি আমাদিগের জ্যান্তরিক সৌ-मधा ७ चिक रने जाना अनुविभी मशीसभी প্রকৃতির বিষাতক এক শকার নাংঘাতিক द्यार्थ अ**विद्यान्य । इत**ा क्रिकेट उत्पा रहेल काराज लावा शक्तवानि अएकाक मः शहे (यम्म करम करम किस्स रहेश ११-विरन्दर अकार विदेश स्त्रेश शहर मानर

প্রাপ্ত হইবার ফারণামুসজানে প্রবৃত হইলে व्यवसार के की कात कतिए इस. रेग छ-कात आकृष्टिक धर्म ममुस्हेत कान विस्मय रिकाक्षाः जिथा। हे उहारक वेवश अधिक ও বিনক্ট করিয়াছে। তথাপি সূক্ষ কপে বিৰেচনা করিয়া দেখিলো নিশ্চয় এতীতি হইবে উহার সেৱপ শ্রীক্রট হওয়া প্রকৃতি সিদ্ধ নহে। যদি কথন কোন বিশাল শিশ্প যন্ত্রের সমুদর কৌশল সহসা কোন বি-রোধী কারণের ব্যবধানে বিকল হইয়া যায়. ভাছা হইলে যে শক্তি বিশেষ সহকারে ঐ যন্ত্রের কার্য্য নির্ম্বাহ হইত ভাহার গতি রোধ ছওয়াতে উহাকে এক কালে বিশ্বী করিয়া কেলে,সভা বটে, কিন্তু সেরূপে বি-নষ্ট হওয়া কি উহার স্বভাবসিদ্ধ ধ্যা? विशृष्यम रहेश विकल शाकरव विलयाहे কি উহার নিৰ্মাণ হইয়াছিল, এৰপ কথ-नहे नरह। त्रहे क्रम, काम कालापि नि-ক্ষরত্তি সকল মনুযোর স্বভাবসিদ্ধ হ-ইলেও সমুচিত শাসন বিরহে যথন উদ্দাম হইয়া উঠে, তখন অস্বাভাবিক মুর্ত্তি ধারণ করিয়া ধর্মা **প্রকৃতিভ**্ব য**ন্তের যাবভীয় কৌশল** मक्ष धक काटन विमुखन ও विनक्षे कतिया ফেলে। কিন্তু ভাহা হইলেও উক্ত উৎ-শৃষ্ণলিত ধর্ম ঘল্লের যে প্রতীকারের সম্ভা-বনা নাই,ইহা নিতাস্ত প্রত্যক্ষ বিরুদ্ধ কথা।

অনেকেরই এই ৰূপ সংস্কার আছে. বে পাপকর্ম ও তলিবন্ধন ফুঃখ ভোগ কর৷ মন্ত্ৰের স্বভাৰাধীন। বাস্তবিকও জীব প্রবৃত্তি দৃষ্টান্তে ইহা অপেকা অধিক স্থা-ভাবিক বলিয়া স্থার কিছুই প্রতীয়মান হয় ना वर्षे ; किन्छ विरवहना कतिरल अहे थ-চলিত বন্ধমূল দংস্কারই আমাদিগের সর্বা-नात्मक निकान। এই व्यक्षत्रम नर्यानधानी ভরকর সিক্ষান্তই ময়ুখ্য জাতির ধর্ম রাজ্য বি**লাবনের মুলীভূত** কারণ। বাহ পদার্থ সমুদারের কার্য্য কারণ প্রণালী পর্যালো-**टरन मर्जारतेल अन्यनः यक्टलाल्जि स्ट्रि**व বলিক্স যে একটি আনন্দ প্রস্বিনী আশার শাৰিকাৰ হয়, ঐ কাল শ্ৰূপ সিদান্তই তা-शरक विकास निवास नांधरत निवेध क-THE PERSON NAMED AND PARTY.

অধির নংকাশ হইলে তদীয় মলিনত তি-রোহিত হইলা বিমল জ্যোতিতে বিকাশ পার, তদ্ধপ জন্তুজ্ঞানাগ্রিক্সালা মানব প্র-কৃতি যাবতীয় কলুখরালা বিমক্ত করিয়া অপুর্ব ধর্ম জ্যোতিতে সমুক্ষ্মল হয় এবং পাপের হস্ত হইতে বিমুক্ত হইয়া অমৃতা-নন্দ লহুৱীতে অভিবিক্ত হয়।

আত্মোৎকর বিধান।

দিতীয়তঃ ধর্মতন্ত্ব নিবন্ধন উৎকর্ম। আমরা আপনাদিগের প্রতি দৃটি করিলে এবয়িধ অশেষ শক্তি সমূহের নিদর্শন পাই, যে তদ্বারা আমরা চিরপরিবর্ত্তনশীল এই দৃষ্ঠমান বিশ্বের সহিত দুঢ়তর সম্বন্ধ হইয়া ৰাহ্য পদাৰ্থ সমুদায়ের প্রতাক্ষ করিবার নিমিত্ত আমাদিগের দর্শন আ্রণা-দি জ্ঞানেক্রিয় সকল প্রস্তুত রহিয়াছে এবং যাহাতে সেই সমস্ত পদার্থ আমাদিগের বৈষয়িক স্থা শাধনের ছেতু হছতে পারে, তাহার উপায় স্বরূপ হস্ত পদাদি কর্মেন্সিয ও বিবিধ মনোতৃত্তি সমুদায়ও বিদামান আছে। এতক্তির আমাদিগের জারও যে একটি চমৎকারিণী শক্তি আছে. দেশ কাল ব্যাপী যে সকল বস্তু আমর৷ 🖣শ বা প্রে তাক্ষ করি কেবল তৎসমুদায়েই উলার পর্যবসান হয় না। উহা পার্থিব পদাথ **সমুদা**য় অতিবর্ত্তন করিয়া পরিশেষে জনা-দি অনন্ত কারণের অমুসন্ধানে প্রধাবিত হয়। যতকণ সেই সর্ববিজ্ঞানময় চিব-স্তন চিদায়ার সংস্রাবনা পার সে পর্যান্ত উহা আর কিছুতেই নিরস্ত হইবার নংহ। व्यामानिदशत (नरे ञ्चामश्री ্বন্ডি টাকে আমরা ধর্মতভ্রোক্তাবিনী বলিয়া উক্ত করি। মানবীয় ভাবাঁ ছারা উহার মাহাত্মা ও গৌ-রবের অতিমাত বর্ণনাতেও অত্যক্তি হট-বার প্রসক্তি থাকে না, এই মহীয়সী শক্তি প্রভাবে ভীবাস্থা এই দৃশ্যময় ভূত প্রাপঞ্চের অতীত সেই পরম পুরুষের সহিত সহ্যাসে-त्र वोगाण क्षांच रत्न भहे चालाक नना-विषी अस्तिश्रीवर्गी उक्तित महाक उत्थार **加州中华州城市 新州市 南非河南北州** 企会区

কল্যাণের নিদান। তরুণ দশাতেই বদি मसूरगात स्कृमात मानरन **मनिकल्लिक** ख-ক স্বৰূপের প্রকৃত জ্ঞান অধুরিত ও ক্রু-রিত হইতে আরম্ভ করে **এবং নিরম্ভর ভ**-জিবারি সেক সহকারে জেমে জমে বুজি পাইতে থাকে, তাহা হ**ইলে মানব প্রকৃতির** ত কি অনিৰ্বাচনীয় অপূৰ্ব্ব ভাব হইয়া উঠে, ভাঙা বুদ্ধি দারা ধারণ করা ছুংসাধ্য। ঈ-মরের আজ্ঞাবহ থাকিয়া সমাহিত চিত্তে তাঁহার উপাদনায় প্রবৃত্ত হওয়া এবং চরমে তাহার স্বরপের অনুরূপ হইবার আশঃ कत। অপেका आभाषिरभन्न अधिक उपार्या ওপরন পুরুষার্গের বিষয় আর কি হইতে পারে? ইছাই আমাদিগের স্বভাবজাত বর্দ্ধি-পরম উপাদেয় ফল। নীতি ফুডা ভরুর প্রবৃত্তির সহিত ধর্মতজ্বোদ্ধাবিনী বৃত্তির অতি নিক্ট সময়। ইহারা উভয়ই নি-স্বার্থ ভারাপর এবং **পরস্পার সমবেত হই**-গ্ৰাই বৃদ্ধি পায়। ধৰ্মা <mark>তত্ত্বই নীতি প্ৰবৃত্তির</mark> আমূল ও প্রাণ স্বরূপ। এই ধর্মতত্ব দারা দ*িল্*ভ হুইয়া আমর: **জ্ঞাননেত্র সহকারে** জগদীন্দরের অপক্ষপাত বিচার ও সর্বাময়ী প্রতিভাব অংকোক্ষ করিয়া শ্রন্ধা ও স মাধান পূর্বক তাঁহার উপাসনা করি এবং বিবেক স্থানি কৰ্ণ ভার। পূৰ্ণ স্থৰপের অন্ত-कप इष्ट्रेवात अना भेनी अञ्चल खन क-রিয়া থাকি? যেঙেজু ইহাই অধিকণ্ণিত প্রকৃত ধর্মের সার মর্মা ও মুখ্য তাৎপর্যা।

ভূতীয়তঃ বৃদ্ধিবৃত্তি ঘটিত উৎকর্ষ।
আমরা আম্ম শক্তি সমুদের গরেষণায় প্ররত হইলে অথ্যে বৃদ্ধিবৃত্তির আবিদ্ধার না
করিয় আর অন্যাদিকে দৃটি করিতে পারি
না যে মহতী শক্তি দারা আমাদিকের
করতর, বিতর্ক ও বিচার প্রভৃতি মানসিক
কিল্লা নির্বাহ হয় এবং ফাহার প্রেমকর সাহাংয়ে সভাের সন্ধান ও প্রাপ্তি হইরা থাকে,
তাহাকেই বৃদ্ধি বৃত্তি বলা। এ বৃত্তির স্থক্ষেণ্ণ করিতে আমাদিসকে আর অধিক
আয়াস পাইতে হয় না। মনুব্রের অপর
শক্তি সকলে অক্সেম বৃদ্ধি বৃদ্ধ কর্মান বল
এবং সম্প্রিক স্থানার বিশ্বি

यपुरान् १७ अहे जनिया यनि रकाम बालि-क উপৰেশ বেওয়া যার, ভাষা হইলে সে প্রথমতঃ বোদ শ্রির উহত্রবিধান ও জ্ঞান নৈপুণাদি শিক্ষা করাই সেই উপদেশের मुश উদ্দেশ্য বলিয়া ছিব করে,সল্পেছ সাই। এমন কি " শিক্ষা " এই শক্ষটা প্রয়োগ कतिरल लाटक धात्रहे गरन करत दुक्ति व-ত্তির পরিচালন ও বর্জন করাই উহার অর্থ এই ৰূপ শিকাদান মিমিড্ডই স্থানে স্থানে বিদ্যালয় সকল সংস্থাপিত হইয়াছে এবং ঐ সকল পাঠাগার হইতে ৰালক বৃদ্দের নীতি প্রবৃত্তির উত্তেজন ও ধর্মাতত্ত্বের অমুশীলন বিসর্ক্তিত হওয়াতে সে সমুদয় উচিত মত-ইফী ফল দায়ক হয় নাই, অপর দাধারণে ' বুদ্ধির যাদৃশ আদর ও গৌরব করিয়া থাকে সেই কপ করাই উচিত বটে; কিছ ধর্ম প্রবৃত্তি অপেকা উহাকে অধিকতর পূজার্হ মনে করা কথনই ন্যায়ামূগত ও যুক্তি স-মত হইতে পারে না। ধর্ম প্রবৃত্তির সহিত জ্ঞানোলতির ছ্রপনেয় সম্বল রহিয়াছে। আমরা বস্তবিচার পূর্বকে সংপক্ষ অবলয়ন করিয়া ধর্মা প্রবৃদ্ধি সমুত ৰছবিধ বিশুদ্ধ কার্যা নিজাল করতঃ মৃত্যুক্তা নামের উপযুক্ত হইব এবং তলিবন্ধন চিত্ত বিকাশও আশ্ব প্রসাদাদি অশেষ পবিত্র স্থুখ সম্ভোগে সমর্থ रहेटल পातिन धरे উष्ण्याने कक्रगानिधान বিশ্বপিত। আমাদিগের চিক্ত নিলয়ে বুদির অধিষ্ঠাপন করিয়াছেন৷ স্থতরাং ধর্ম প্র-বক্তির উন্নতি নিমিডাই বুদ্ধিবৃদ্ধির উৎকর্ম বিধান আবশ্যক হইয়াছে। অভএব যদি काम धाकातान् वास्त्रित वृक्षितिसम्बद छे कर्म সাধন ত্ৰতে ত্ৰতী হইবার বাসনা থাকে, অত্যেই তাঁহার ধর্মানুষ্ঠান ক্রপ সংকশ্প कहा नर्वा कर्जना अक्षान বা অভ্যানেই কিছু মান্দ শক্তির ুপু-ণতা প্ৰাপ্তি হয় না। বিশ্বাৰ্থতা অবলয়ন করা সর্বোপরি আবঞ্চক ; বেহেতু ভারাই अटबार व्यान स्कूल । जार्च विनिर्धा एक ज-ত্যের সন্মান ও উপার্জন করাই বৃদ্ধি-ব चित्र अस्ति विकास । अने चाल श्रीक Tribult bulletin territoria i caroni

ভের প্রতি দৃষ্টি রাখা কথনই উচিত নহে। **उहा जामाहिशतक राशास्त्रकारेक यात्र ज-**প্রতিহত অদুচ্চিত্তে সেই খানেই গমন করা কর্ত্তব্য। তাহা আমাদিগের যে কোন স্থার্থের প্রতিরোধ করুক, তঃসহ যাতনা লায়ক বা বিশেষ ক্ষতি কর হউক; কি কোন অভ্যাচার জনিত উপদ্রবই ঘটুক, किছুতেই मह्नु हिंछ इंख्या कर्खवा नहिं। अहे ৰূপ অধাৰদায় ও দৃঢ়তাই সতোর প্রতি প্রকৃত নিশ্বার্থ প্রীতি। ইহা ব্যতিরেকে স্বাভাবিক স্থাৰুক্ষির্ত্তি সকল ব্যতিক্রাস্থা ও কুমার্গ ধাবিনী হর ও মনের উজ্জল প্রতিভাও প্রভা শূনা ছইয়া যায়।অধিক কি, সত্যের প্রতি প্রীতি শুন্য হ**ইলে,** মানব প্রকৃতির যে স্থমধুর উদারভাব তাহা এক-কালে কলব্বিত ও গ্রলময় হইয়াউঠে। সত্যের প্রতিহতাদর হওয়ায় কত কত প-ণ্ডিতাভিমানী তাক্তিকেরা যে লোকের কি পর্যান্ত অনিক্টোংপাদন করে, তাহা বর্ণিত ভইবার নহে। ঐসকল পামরেরা শুদ্ধ ঁঅনোর প্রতিই প্রতারণা করে, এমন নহে; বিবেচনা করিয়া দেখিলে আপ্নারাও প্রতা-রিতহয় এবং পরিশেষে আপন নির্মিত রুখা বিত্তাজালে আপনারাই আবদ্ধ হই-য়া পড়ে। কত কত অসামান্যধীশক্তি সম্প-্ম লোকেও যে অগাধ ভ্ৰান্তি ক্পেনিমগ্ন হইয়াছিল, পদার্থ ও বিজ্ঞান শাস্ত্র ঘটিত পুরার্ত্ত মধ্যে তাহার ভূরি ভূরি প্রামাণিক দুক্তান্ত রহিয়াছে। প্রচান্তরে **এরপ প্রমাণ সকলও দৃতি**করা যায়, যে ঘং-नामाना माननिक गक्ति मण्यम कठ कठ ব্যক্তি শুদ্ধ সত্য ও স্বজাতীয় জীববর্গের প্র ডি নিঃস্বার্থ প্রীতি পরতন্ত্রতা জন্য ক্রমেক্র মে লোকসমাজে অভুল প্রতিপত্তি ওমাহাত্ম नाज कतिता भिनादेशना वस्था भरभा त्य ৰমন্ত অসীম্বীশোষ্টা সম্পন্ন বছল শুভ विश्वाती अधानक ७ धर्मानरमनकन्नन स स **िष्काबीन युवक इत्मन रूपन त्कटक छान** बीक (दाशन ७ मप्तक शूर्वक ठोशांपिशतक লাবেশ্ব ক্রাক্তর রঞ্জিত করিয়া অপুণা ধন্য बालगणानः अक्तिपात्रपीत स्टेश। तस्तिहरूम,

কর হইরাছিল, ঘাঁহারা কোন প্রাকৃতিক विरमय आधानानानी ना स्ट्रेटन उक्त नतन স্বভাব, পক্ষপাত খুনা, কিঃস্থার্থ চিত্ত ও বা-বজ্জীবন সভাপ্রায়ণ থাকায় তাদুশ বিশুক ষশোভাজন হইয়া ছিলেন। হিতি ছা-পক গুণোপেত কোন প্ৰাকৃতিক বস্তুকে বল পূর্ব্বক আকুঞ্চিত করিয়া পরে ছাড়িয় দিলে তাহা যেমন আপন স্বভারান্ত্রারে পুনরায় পুর্বোবস্থায় অবস্থিত হয়, সেই-রপমনুষোর প্রশস্ত চিন্তাশক্তি যথন স্বার্থ পরতা ভার হইতে অবকাশ পায়, তথ্য উহা সীয় প্রশেষ্যালাভ করে। যথন মনুষা বিবেক শৈলের শিখরাক্ত হইয়া বিজ্ঞান-লোচনে বিচিত্র বিশ্ব যন্তের যাবভীয় নি-ৰ্ম্মাণ কৌশল অবলোকন করেন এবং সাম ক্রিক আচার পদ্ধতি ও সমুদার জীব প্রব-জ্বির পর্যালোচনে তৎপর হরেন, তথন জাঁ-হার অন্তঃকরণ স্বতই স্বার্থ পরতঃ পরিহার পূর্বাক প্রসারিত হইতে আরম্ভ করিয়া এক-কালে সর্ধব্যাপী হইয়া উঠে। অতএব নীতি প্রবৃত্তি ও ধর্মতন্ত্রোদ্যাবিনী কৃত্তির প্রকৃত উন্তি হইলেই বুদ্দিভূমি সমাক্ উকারা ও সমুঠিত ফলশালিনী হয়। বুদ্ধি রুক্তি নি বন্ধন উৎকর্ষের সহিত ধর্মা প্রবৃত্তি বিষ য়িনী উন্নতির যে অতি নিকট সম্প্র, তপ্তি য**ে প্রায় কেহই মনোনিবেশ** করে নাবক **অনেকেই পূর্ব্বদীর অ**ন্তর্ক্তাবে অপর্টীবে **अरक्कारत विभक्त न करत, अटे निधिड**े এবিষয় এত বাছল্য ৰূপে আফোলন কর বাইতেছে। কানের कृष्टिकश्चि करम লোকের যে কি বিপরীত বুদ্ধি ইইয়াছে, তাহা বোধ গমা করাই স্কৃতিন। প্রায় मकरंगरे धर्माञ्जान (श्वराधाः) देवस्त्रिक कार्याः নৈপুণা ও ৰোগ শক্তিবই অধিক প্ৰাধান্য ও বিশেষ আৰম্ভাকত। মনে করে। विमाजाम करारे भिकात क्षतां अवाब अक त লিয়া স্থির হইয়াছে; স্তরাং তদ্মু-माद्र मकरण अक्रुंच कन्मा। जननी धर्मानी उ শিকা ও তত্ত্বজান দীকাকে জলাঞ্জলি দিয়া एक विश्वणित उशास्त्र तह नमुश्यक बरेटल्ट्रा दिनाथ देमभूना दव भुक्रमभूकनीत SIFICE AND THE PARTY WITH

গ্রহার প্রাক্তি হইলে উয়া দেবসূতি পরিহার পূর্বাক বে ভয়কর বৈভ্যাকারে পরিণত হর ভাষাতেও সন্দেহ মাজ নাই ! অনেকেই মনে করে বৃদ্ধি বিদিয়ক

चानकहे मान कात दुषि विमेशक উৎকর্ষ বিধান আরু কিছুই নহে,শুক্ত সাংস সারিক বিবিধ তত্ত্বের অভিজ্ঞ স্থপ্তরা মাজা অভিজ্ঞতা লাভ করাও **কিছু অণ্প আবেছ্ক** ক নহে, কিন্তু কেবল উহাতেই বুদ্ধি বুদ্ধি বিষয়ক উৎকর্ষের পর্য্যবসান হওয়া কদাচ সম্ভাবিত নহে। বৈ সকল পদার্থের বিচা-রে ওতত্ত্ব নিরূপণে আমাদিগের অধিকার এংছে,তৎসমুদায়ে আমর। দেপ্র্যান্ত ইচ্ছা-নুসারে বুজি পরিচালন করিতে না পারিব, য়ণ্টান্ত মনকে সংযত ও বুজিলারা পুঞ্জা-গুপুখৰপে প্ৰভোক ঘটনার কার্যা কা-রও মিরুপৰে সমর্থ এবং বর্ত্তমান ঘ**টনা** नुरके ভবিষ্যদ घ**টन। व्हित क्रतरा नक्रम** না বহুৰ এবং **যেপ্যান্ত ধর্ম তত্ত্বের সূধা**-ণিক উগৰে**শের অনুমোদিত হই**য়ানা চলিব, মে পর্যান্ত বৃদ্ধি বৃদ্ধি ঘ**টিত উৎক**-শের আর কিছুতেই পূর্ণতাইইবেনা।

বিজ্ঞান বার্ত।। জ্যোতিষ।

১ — অক্স কোর্ড নগর স্থিত মান মদির হইতে একজন জ্যোতিবিৎ পণ্ডিত
৪০ সংখ্যক মূতন এহটাকে সন্দর্শন করিমাছেন। এই অভিনব এহের আকৃতি
ও স্থিতি গতির বিষয় অদ্যাপি কিছুই প্রকাশ পায় নাইণ

া কিয়ৎকাল অতীত হইল ক্এক বাজি জ্যোতির্বিৎ পণ্ডিত সুর্য্য মণ্ডলে ক্ তিপয় চিক্ত সন্দর্শন করিয়া এক মতের অব বিগরেণ করিয়াছেন। তাঁহারা দেখিয়াছেন, যে গণনত্ব সৌর বিশ্বর সহিত ভুনপুল ভিত তাড়িত পদার্থের অনেক সমুক্ত কাছে উল্লিখিত সৌর বিশ্বর হাস রুদ্ধি অমুসারে পার্থিব তাড়িত পদার্থেরও হাস রুদ্ধি হইয়া বাকে এবং তদনুসারে অবনীতকো শুসার দির উৎপত্তি ও কীব শরীরে কার্যা সাম্বর হইয়া থাকে । তা— আমীরকার অভ্নাতি নিউই

য়র্ক প্রদেশীয় আনকেনী নামকছার নিবা

নী একজন কার্তিমতী স্ত্রী উক্ত ছালে আক

মানমন্দির প্রস্ত করণের জনা প্রচুর আর্থ
প্রদান করিবাছেন এবং নিউ সাউথ ওএল্নৈর মন্তর্গত বিভনি নামক ছানে আর

একটা নাম মন্দির প্রস্তুত হইবার উদ্যোগ

হইভেছে

৪া— ইউরোপে অনেক অশ্প বৃদ্ধি মমুষ্য পুনর্ফার পৃথিবীতে এক ধূমকেতু পতন
হইবার ভয়ে মহাতীত হইরাছিলেন, কিন্তু
এরেগদ নামক একজন পণ্ডিত বিশেষ বর্ণনা ষারা ভাঁছাদিগের উক্ত অস্থলক ভয় দূর
করিয়াছেন প্

রসায়ন বিদ্যা।

২। দিবসের মধ্যে সকল অবস্থায়
মন্ত্রের নিশাস সমভাবে প্রবাহিত হয় না,
অবস্থা বিশেষে নিশাস কিয়ার অনেক ইতর বিশেষ হয় কিন্তু কোন্সময় মন্ত্রের
কিপ্রকার নিশাস নির্গত হয় এবং সে কি
পরিনাণ বায়ু সেবন করে,তাহা ইতি শুর্বের
ক্ষার কপে নিজারিত হয় নাই। সম্প্রতি
ভাজার ইসমিও নামক একজন পাওত নি
শাসের পরিমাণ কিন্তু ইরিয়া এক চম্থকার উপায় করিয়াটেক কির্মাণ বিশাস ত্যার
করে এবং কাডাইর কির্মাণ বিশাস ত্যার
করে এবং কাডাইরা বিভাইরে, শোশসর
ভারা উপার নির্মাণ বিশাস ত্যার
করে এবং কাডাইরা বিভাইরে, শোশসর
ভারা উপার নির্মাণ করি ও প্রান্তির করি করার
করে বিশাস বিশাস বিশাস ত্যার
করে এবং কাডাইরা বিভাইরে, শোশসর
ভারা উপার নির্মাণ এবং কার্যারাহন করের
ক্রিয়া করি ক্রান্তির বিশাস ত্যার
করে করি ক্রান্তির বিশাস করের এবং বাডাইর

পশ্তিত তাহা ক্ষুদ্দরকপে নির্দ্ধারিত করিয়া-ছেন। এই বিষর পরীক্ষার জন্য তিনি এক ষন্ত্র প্রস্তুত করিয়াছেন এবং উক্ত যজ্ঞ ছার। আপনার দকল অবস্থার নিখাসক্রিয়া প-রীকা করিয়া দেখিয়াছেন। এই যজের বিস্তারিত বিবরণ পরিণামে প্রকাশ পাইবেশ

ত।—হলিছক নামক এক প্রকার পুষ্পা বৃদ্ধের ছালে উৎক্লফ কাগজ প্রস্তুত হই তেছে। এ ছাল হইতে সমধিক আঁস প্রাপ্ হওয়া যায় এবং তদ্ধারা যথেফ কাগজ উ ংশল্ল হয়। প্রায় তিন বিঘ! ভূমির হলিহ-কের ছাল হইতে শতাধিক মন আঁস প্রাপ্ত হওয়া যায়। কেবল যে উক্ত বৃদ্ধের ছা-লেতেই কাগজ জন্মায় এমন নহে, উহার মূলের সাঁস ধারাও কাগজ প্রস্তুত হয়। মূল সমুদায়কে পেষিত করিলে পর তন্মধা হইতে এক প্রকার শস্তু নির্গত হয় এবং এ শস্তু দারা উৎক্লফ কাগজ জন্মায়।

ভূতত্ত্ব বিদা।

১--পণ্ডিতবর ইমন্স সাহেব কেরো-লিনা নামক স্থানের মৃত্তিক। অভ্যন্তর হই-তে প্রাচীন কালের এক অন্তুত পশুর দন্ত প্রাপ্ত হন। ঐ দন্ত বৃষত বিষাপের নাায় রহৎ এবং শুনা গর্ম ।

২া—দক্ষিণ আমিরিকার অন্তঃপাতী কু-ইটো নামক স্থানে এক ভয়ন্ধর ভন্ম বৃষ্টি হইয়া গিয়াছে। প্রভূত ভন্ম রাশি ধারা আ-কাশ মণ্ডল আচ্ছর দেখিয়া প্রথমতঃ অনে-কেই ভূষার বৃষ্টির আশঙ্কা করিয়াছিল,কিন্ত ष्ववित्यहें में बागका मृत रहेग। मकामहे দেখিল যে খুন্য হইতে অনবরত ভঙ্মা রাশি ৰ্মিড হইতে লাগিল এবং ঐ ভন্ম দার। পশ্চিক ও অপরাপর সমস্ত লোকের সর্বল-রীর আছল হইয়া গেল। এই অস্কুত ভন্ম-পাত হার। সুর্যা কিরণ পর্যান্ত আক্স হই-अधिन, ध्यर देश निभाकारन क्षाप्त भूगं भग-বরুকে জানুত করিয়া এক ভয়রর ভাষনী-निकानतीत एकि कतिगाहिक। कुरेटिंग कुन र्श क्षा नचा नच नकी अपृष्ठि नमस्हे क्षिक्षाचे पुरेशा श्रम, अनः चन्न मन्-THE PROCES WILLIAM ME

ইল। কুইটো হইতে প্রায় ১৫ পঞ্চদশ কোশ অন্তরে কটোপেক্সি নামক এক আগ্নেয় পিরি আছে, নকল লোকেই বিবেচনা করিল, যে ঐ আগ্নেয় পিরির অগ্নুত্রতার উৎপত্তি হইন্যাছে, কিন্তু পরিশেষে অনুসন্ধান দারা প্রকাশ পাইল, যে লারাকোঁ নামক অন্য এক অগ্নেয় পিরি হইতে অসম্বত ভন্মাশি উপিত হইয়া এই ভয়ন্তর ব্যাপার উৎপাদন করিয়াছে। ফলতঃ উক্ত ভন্মপাত জন্য কুইটোম্ব সকল লোকেই ভীত হইয়াছিল, আনকেই উহাকে দৈব চুর্ঘটনা বোধ করিয়া উহার নানা প্রকার শান্তির চেন্টা করিয়াছিল।

न्गिण्य विमा।

া—দেউণিটির্গ বর্গ নামক স্থান নিবাদী জেকোবি নামক একজন শিপ্প শাস্ত্রজ্ঞ পণ্ডিড, এক প্রকার অস্কুত তাড়িত ষদ্ধ প্রস্তুত করিয়া ভদীয় সাহায়ে নিবা নামক নদীতে সমুদার আরোহীর সহিত এক থানি ভরণি এক ঘণ্টার মধ্যে সার্দ্ধ জোশের অধিক দূর চালনা করিয়াছেন। জলপথে নৌকাদি পরিচালন বিষয়ে তাড়িত শক্তি পরীক্ষার জনা কেবল প্রথমতঃ উক্ত বন্ধ প্রস্তুত হক্তী মাছে, উহা জন্ম আরও আনেক উৎক্লফ হইবার সন্তাবনা এবং দিনে দিনে এ যন্ত্র যত উৎকৃষ্ট হইতে থাকিবে, ততই নৌকাদি উহার তেজে সম্বর চলিবে। পরিণামে উক্ত প্রকার যন্ত্র দার। সংসারের আনেক উপকারের সন্তাবনা গ্র

২ ।—এণি উইচ নামক স্থানে ডাড়িত বার্জাবহের যে তার আছে, তাহা অধিক কালস্থামী ও উৎকৃতী কর্ম্মোপ্রোগী করি-বার উচ্ছেশে এ তার ভারময় না করি-য়া জৌহনির্দ্মিত করিবার কপেনা ছির হ ইয়াছে। ইহা পরীকা করা ছইয়াছে যে লৌহের ভার অপেকা ভাত্রের ভার বিল-কণ ছারী হইবে এবং তাহা প্রায় ৩৫ কেরপের অধিক লব পর্যান্ত এককপ্রান বক্ষ করিয়া করিয়া বাছবে গা

রিচালিত হয়, তথ্য পোতে**র গতি কি**রা ও কম্পন জন্য ভাষাতে দুরবীক্ষণাদি যন্ত্র ত্তির রাখিয়া কোন কার্যা সাধন করা যায় ন। এফণে এক জন শিম্পকার ঐ প্রকার অবস্থায় অর্ণৰ পোতে দুরবীক্ষণ স্থির রা-থিবার এক য**ন্ত্র প্রস্তুত করিয়াছেন,ভাঁহার ঐ** নজ্যোগরি দুর্বীক্ষণ স্থাপিত হইলে তাহা আর বিন্তুমাত্রও কম্পিত ও অস্থির হয় না. ভংলতে বেনন স্থির থাকে, দোছলামান াাভোপরিও দেই প্রকার নিশ্চল হইয়া ংকে, এবং তদ্ধার। অনায়াদে মনোর্থ নৈদ্ধি করা যায়। ইস্মিথ সাহেব স্বকৃত যন্ত্র দহকারে একদা দুরবীক্ষণ ভারা পোত হউতে বৃহস্পতির চন্দ্রের **গ্রহণ সদর্শন ক**-রিরছিলেন। তিঁহোর উক্ত যন্ত্র দারা না-বিক গণের যথে**ই** উপকার **দর্শিয়াছে**"।

গা- জল মধ্যে কোন জবা মগ্ন হইলে লাহ। উড়োলন করিবার এক প্রকার গাশ্চরা বন্ধ প্রস্তুত হইরাছে, ঐ যন্ত্র যোজনা করিয়া আবভ্রন করিলে পর ভদীয় বলে জ্যা মধ্য হইতে বছা মণ পরিমিত ভারী ভারী দেবা সকল উঠিয়া পড়ে। নদ নদী ও সাগরাদির জল হইতে নই জব্য উদ্ধার করিবার একপ যন্ত্র আর ইতিপূর্বে প্রকাশ পায় নাই। উৎক্রই শিপ্পে ব্যবসায়ী পণ্ডিত ভিন্ন অপর লোকে ঐ যন্ত্রের সকল কৌশল বোধগম্য করিতে সক্ষম নহে, এই নিমিন্ত ভদ্বভান্ত বিস্তার ক্রমে লিখিত হই-লন। বি

নাতেন, যে চুই ভাগ সর্জরন ও এক ভাগ গাতেন, যে চুই ভাগ সর্জরন ও এক ভাগ গাতা পাতা একত্রিত করিয়া অগ্নি পাক ছারা লোহ পাত্রে দ্রনীভূত করিলে অভি চমথ-কার দর্মি বন্ধানের উপকরণ প্রস্তুত হয়। ঐ উপকরণ ছারা রেসম পসম ধাতু কাঠ কাচ মৃতিকা প্রস্তুরাদি নানা প্রকার দ্রব্য ঘোড়া বায় এবং উহা দারা যাহা একবার যুক্ত ক-রা যায়, তাহা অভিশয় মৃত্ত ছায়ী হয়। ভেবি সাহেৰ উক্তঃ উপকরৰ সারা গুলের ছাদ ও অন্যানা নানা বিশ্বর স্ক্রি মধ্যোগ

ড়ের মদলা আর প্রার প্রচলিত নাই। উহা

একবার জমিয়া গেলে আর উন্তাপেও গলে না এবং রুটিতেও কর হয় না। উহা

সকল দেশে ও নকল সমরেতেই সমান ক্রমশার্দ্রী হয়। ঐ উপকরণের সক্ষে টর্পেণ
টাইন অথবা নাপথা যোগ করিলে, উহা
আরও বিশেধ উপকারী হয়।

৬। — উল উইচ নামক স্থানে এক শিপালরে লোহ ২ইতে অতি আদ্বর্যা পরিমাণে ইসপাত প্রস্তুত হইতেছে। ঐ শিপ্পালরে লোহ দারা ইস্পাত করিতে কিছুমাত্র
লোহের ভাগ বাদ ধার না। যতখানি লোহ ততথানিই ইস্পাত জন্মায় ।

বিধবা বিবাহ।

গত ২৮ অগ্রহায়ণ শ্নিবার রজনীতে একটা বিধবা কন্যার পাণিএইণ সম্পন্ন হ-ইয়াছে। এই কন্যার পিতা বর্তমান তিনি कनामान ক্রিয়াছেন। যত্তনার্থ চটোপাধ্যায় বর। লক্ষীপ্রিয়া দেবী কন্যা। বর স্থুশিক্ষিত ও সদংশ্রুত ব্রঃক্রম আঠার বংসর। কন্যাটা অতি বালিকা, বয়ঃক্রম আট বৎসর মাত্র। এই বয়দের মধ্যেই তিনি বিবাহ সংস্কার লাভ ও বৈধব্য যন্ত্রণা ভোগ করি-য়াছেন। অতি শিশুকালেই অর্থাৎ দেড় বং সর বয়সে বিবাহ ও আড়াই বৎসর বয়সে বৈধব্য সংঘটন হইয়াছিল। এরপ জল্প বয়নে বিবাহ হইলে ঐ বিবাহ প্রকৃত বিবা-হ সংস্কার বলিয়া গণ্য হওয়া উচিত কি না, हेहा मञ्जूर्व मरन्तर छव । , याहा इंखेक (प-শাচারাত্মনারে ঐরপ বিবাহ বিবাহ সংস্কার বলিয়া অপীক্লত হইয়া পাকে এবং ঐৰূপ নাম মাত্র বিবাহের অব্যবহিত পরক্ষণেই বরের মৃত্যু হইলে কন্যাও বিধবা বলিয়া পরিগণিত হইয়া থাকে, স্তরাং তাদৃশী विथना क्नाटक यावकीयम देवथवा यज्ञना ভোগ করিছে হয়। মাৰ্কীবন বৈধ্বা য-স্ত্রধা ভোগ কেমৰ ভর্মর ব্যাপার তাহ। तामविनिके दाकि गांकहे पिनका क्याउ আছেন। অতএব শাস্ত্রামুদারে চলিয়া অবলা জাতিকে ছঃসহ বৈধব্য যন্ত্রণা হইতে মুক্ত করা বুদ্ধিজীবী জীবের বিধেয় কিন। এবিষয়ে অধিক বলা বাছলা মাত্র।

এতদ্বেশীয় লোকেরা চির প্রবঢ় কুস[ু] ক্ষারের নিতাত বলীভূত। পুরুষানুত্রন याका करेबा आनिएउएक, छारा नाना अन-র্থের মূল ও নানা উংপাতের হেতু হইলেও. ভাঁচারা ভােমুক্তর জ্ঞান করিয়া তদমুসারে চলিয়া থাকেন। এই প্রথা প্রবল ও প্রচ লিত থাকাতে কত প্রকারে কত অনিফ গ টিতেছে তাহার ইয়তা করা ইহা অহরহঃ প্রত্যক্ষ করিতেছেন, তথাপি দোষে এতদেশীয় কুদংস্কার লোক দিগের জ্ঞান হয় না। কলতঃ ক্ সং**ক্ষার মন্তুব্যের অতি বিশম শক্র**া বিধ-বা বিবাহ প্রচলিত হইলে যে এককালে অনেক অনর্থ নিবারণ হইয়া যায়, ভাহার **मः भग्न नाई। किन्छ विथवा विदाह वर्छ-**কাল প্রচলিত ছিল না। কতিপয় পুরাপু-রুধের ঐবাবহার অবলয়ন করিয়া চলেন নাই। স্থতরাং এক্ষণকার লোকদিগের চি-ত্তক্ষেত্রে ক্রমে ক্রমে এই কুসংস্কার বদ্ধ মূল হইয়া উঠিয়াছে যে বিধবা বিবাহ অতি অসং কৰ্ম। বিধবা বিবাহ যে যথাৰ্থ শাস্ত্রানুগত কর্ম দে বিষয়ে আর সংশয় করা যাইতে পারে না। কিন্তু এতদেশে শাস্ত্র অপেকা দেশাচারের অধিক সন্মান। **স্ত্রাং শাস্ত্র দক্ষত হুইলেও দেশা**চার প রিগৃহীত নয়বলিয়া একণ প্রয়ন্ত বিধৰ: বিবাহের ভাদৃশ আদর হুইভেছেনা। কিন্তু যথন প্রচলিত হইতে আরম্ভ হইরাছে তথন रेश कानमा उरे जन हा विच न दश य अ है আয়েক্ষর ব্যবহার জনধিক কাল মধ্যেই প্র-वन श्रेषा छिटिएक।

অনেকে এই আপত্তি করিয়া থাকেন,
যদি এই ব্যবহার বথার্থই জ্যেকর হইবেক,
তাহা হইলে আমাদিগের পূর্বপুরুবেরা ঐব্যবহার অবলয়ন করিয়া চলেন নাই কেন?
অবিবরে বজব্য এই যে এই ব্যবহার সত্য বেতা হালার ও কনিমুগের কিছুকাল পর্যাত্রাহারত ছিল, ভুতি ও পুরালে ভাহার

অসংশয়িত প্রমাণ প্রাপ্ত ছওয়া যায়। তৎ পরে ক্রমেক্রমে এই ব্যবহার। রহিত হুইয়া আসিয়াছে। রহিত হইবার এই এক প্র-ধান কারণ লক্ষিত হইতেছে যে পুর্বা পূর্বা যুগ অপেকা কলিযুগে সহমরণের ও অনুগ মনের প্রথা উ**ভরোভর প্রবল হইরা উঠে**। অনেক অথবা প্রায় **সকল বিধবাই স্বামীর** সঞ্জি জ্বলচ্চিতায় কিয়া বিদেশ**স্থ স্থানীর** মূড়া সাবাদ শুনিয়া **স্বতন্ত্র চিতায় আরো**-হণ করিয়া। জীবনধাত্রা সমাপণ **করিতেন।** স্ত্যা: একএকার ন্যায় পূর্বের বিধবার সং-খ্যা এত অধিক ছিল না এবং সকলকে স্বাস্ত্র কর্মা ভূগিনী পুত্রবধু প্রভৃতির ছংসহ रेनधन। बञ्चन। ट्रांश এवर रेवधवा निवस्तन পরিবার মধ্যে নলো অন্থ সংঘটন অব-লোকন করিতে হইত না। যদি বিধবার भःभाः, देवधवा **यञ्ज**का **८७१५ ७ देवधवा** নিবস্তান আনর্থ সংঘটনের মাত্রা অপপ হইল, তাহা হইলে আর বিধবা বিবাহের তাদুশী আবশ্যক্তীরহিল না। বোধ হয়, হেতুবশতই ক্রমে বিধৰা বিবাহের **ু** অপ্রচলিত হ্ইয়া আসিয়াছিল। কিন্তু এক্ষ-ণে রাজ শাসনে সহমরণ ওজালুগমনের প্রথা রহিত হইয়াগিয়াছে, সুত্রাং বিধবার সং **খ্যাও অত্যন্ত অধিক হুইয়া উঠিয়াছে** এবং **তলিবন্ধন অনুষ্ঠ সংঘটনের প্রিমাণ্ড** ভ ভরেভির অবয়ব রুদ্ধি প্রাপ্ত ইইতেছে, **অত**এর, **যে কারণের অসন্তা**লে বিশ্যা বি-वारहत अर्थ। अअविनास क्षेत्र। जामिताकिन, यथन के काद्रगविषयन। ध्रवण इत्रेश छिठि য়াছে, তথন বিধৰা বিবাহের প্রখা অবল-মন ভিন্ন অনর্থ নিবারণের আর কোন উ পায় হইতে পারে না।

গত বংশর আহারণ মাসের এরোবিংশ দিবসে এই শুভ কর্মের অনুষ্ঠানার ভ হইরা ক্রমে ক্রমে রাজণ ও কারস্থ
জাতীর কএকটা বিধবার বিবাছ ব্যাপার
সম্পন্ন হয়। তৎপরে করেক মাস আর
বিবাহ হর নাই। ইহাতে অনেকেই সিকার করিরা রাধিয়াছেন, এবং স্করে প্রটার করিতে আরম্ভ করিয়াছেন, যে বিধবা
বিবাহর আইন রহিত ছইরা গিরাছে, অর

বিধবার বিবাহ হইবেক না। কিন্তু থ কিন্দ্র যে নিতান্ত জাতিমূলক এবং থ প্রচার চেন্টা যে কেবল বিদ্বের মূলক,তাহা সম্প্রমাণ করিবার নিমিত্ত প্ররাস পাইবার প্রয়োজন নাই। গত অপ্রহায়ণের অন্টাবিংশ দিবসে কলিকাতা রাজধানীতে একটীবিধবারবিবাহ সম্পন্ন হইয়াছে, ইহাই তাহার দেলীপামান প্রমণে। বাঁহারা এত দিন লোকের নিকট এই অলীক কথা যথার্থ বলিয়া প্রচার করিবা আমোদ ও আম্ফালন করিয়া বেড়াইয়াছেন, এক্ষণে ভাঁহাদিগকে বোধ হয় কিছু অপ্রতিত হইতে হইবেক।

বিজ্ঞাপন।

আঙ্গোবর্ণাকুলের ক্লাসমুক এঞ্জে-ন্টস ডিপজিটরি।

ক্বরভাজা -কলিকাতা

ট্রনীং সিন্টিন (ইংরাজী । এবংসর মহান্ধা হেয়ার সাহেবের স্থারণার্থ সাসংসরিক সভায় জনাইট্রেনীং স্কুলের প্রধান শিক্ষক শ্রীসুক্ত বারু শ্রীপতি সুখোপাধায় মহাশয় শিক্ষা প্রদান প্রধানী বিষয়ে যে এক স্থানি বক্ত তা পাঠ করেন, অগুনা তাহা উল্লিখিত পুস্তকাকারে প্রকাশিত হইয়াছে এবং বিক্রেয়ার্থ আমাছিলের এক্সালয়ে প্রস্তুত আছে। শিশু সন্তান দিগতে যে প্রকার প্রধানীতে শিক্ষা দেওয়া কর্ত্রা তাহা সংক্রেপে অতি পরিপাদী ক্রেপ্রত প্রস্তুত গ্রেম্ব বিশ্বত হইয়াছে, ঐ পুস্তুক থানি শিক্ষকদিনের প্রক্ষে বিশেষ কর্ম্বোপ্রযোগী, স্প্রেচ নাই।

গ্রার আমাদের গ্রন্থালয় হইতে ন-গদ মূল্যে বালকশিকোপযোগী অথবা অন্য প্রকার পাঠ্য গ্রন্থ করে করিবেন, তাঁহাদি-গকে নিয় লিখিত নিয়মানুসারে ক্রিশন প্রদান করিব, কিন্তু চুল্ ত ভুলাগা অ-গ্রেষ স্কল গ্রন্থ স্করাতর লাভ্রা নার না, তাহার পক্ষে <mark>উজ নিরম পরিপালন ক-</mark> রিতে পারিব না।

১ অবধি ৫ টাকা পর্যান্ত শতকরা ২২॥০ পুত্তক বিশেষে ১০০০ ১০ ৫ অবধি ২৫ টাকা পর্যান্ত শতকরা ১৫

🗐 খার, এম, বস্থু এণ্ড কোম্পানি

বিজ্ঞাপন!

নিম্নলিথিত ছুই প্রকার পুস্তকের প্র রোজন হইলে কলিকাতা বছবাজার হাড়-কাটার গলি পঞ্চাননতলা মৃত স্থামচাঁদ পাইনের বাটাতে হিতৈবিদী সভার সম্পা-দক প্রযুক্ত বাবু কানাইলাল পাইনের নিকট ক্ষা মৃতন চিনাবাজারত্ব প্রযুক্ত বিশ্বপ হালদার এও কোং নামক ২৭॥। সংখ্যক কার্য্যালয়ে তত্ত্ব করিলে বিনামুল্যে পাওয়া যাইবেক। মকংসল হইতে ডাকের টিকিট প্রেরিত না হইলে বেয়ারিং ডাক-যোগে পুস্তক পাঠান হইবেক।

On the Utility of Public Worship. The Supreme Being of the Brahmo Theology and his administration of the Government of this world.

বিজ্ঞাপন

তত্ত্ববোধিনী সভার সভা বা সভা ভিন্ন অন্য বে কোন ব্যক্তি মানিক ॥ অন্যাক্তিন বিয়া সভায় প্রদান করিবেন, ভাঁহারা নিরমানুবারে সভার পুক্তক্ষার হিত পুতক খার পাইতে প্রবিবেন।

क्षा वह प्रभूतिवासी मुक्तिका, क्षित्रका वश्वत्र त्यांबोगीत्वादिक उत्पादासी क्षात्र वार्वामण वर्षे त्व आदिवादक अवस्थित का — वृक्ष्य हुन्य आक्षित्रका अनेत्र सक्ष्यात् नक्षत्र अस्त्र वृक्षित्रकात्रः कृत्या



*্*তত্ত্যরোধিনীপ্রত্রিকা

%বাএকমিদমগ্রন্থানীছান্য একিকনা নীজনিক সর্বামস্ক্রন। তদেবনিত্যেজানমন্ত্রিনিত প্রজন্ধান্ত্রিকরেনেকমেবাছিতীয়ং। ক্ষান্ত্রিকর্মনিত্ত্ব সন্ধার্ত্ত্যান্ত্রিকরেনিক্ষিত্র বিশ্বনিক্ষিত্র স্থিতি এক স্থাওইসালেন্ত্রিকর মান্ত্রিকরেনিক ক্ষর্ভক্তরতি। তদ্মিন্ত্রিকরিনিক্ষ্যান্ত্রিকরেনিক্ষর প্রিমকার্য্যাধনক তদু পাসন্দেব।

शर्माणिका।

প্রথম কালে জ্ঞান শিক্ষার সময় বালক গ্ৰাকে ধর্মোপ্রদেশ প্রদান করা যে নিভান্ত কৰুৱা, ভাহা বছবিধ যুক্তি ও বিবিধ প্ৰ ক্ষেপ্রমাণ দার। প্রতিপদ ইইতেছে। শি ফার তারতমো যে মন্বোর ধর্মজ্ঞানের কতদুর পর্যান্ত ইতর বিশেষ হয়, বিচক্ষণ ব্যক্তি কিঞ্চিৎ বিবেচনা করিলেই তাহা অনায়াদে বোধগমা করিতে পারেন। প-রম ন্যায়বান্ পরমেশর মন্ত্রা মাতেরই মনোভূমিতে ধর্মের বীজবপন করিয়াছেন, বে ব্যক্তি যে পরিমাণে আপনার মনোডু-মিকে কর্ষিত করিতে পারে, তাহার অন্ত-রস্থিত ধর্মাকুর সেই পরিমাণে বর্জিত হয়। **যেমন ইতর ক্ষেত্রে** কোন রুক্তের ব**জি বপন করি**য়া ভাহাতে বারি সেচন ও যত্ন সাধন না করিলে তাহা আক্রিত इस ना, ध्वर व्यवद्भ कि कि व्यक्ति हरे-লেও সে অঙ্কুর যথা সম্ভব তেজ প্রাপ্ত না **হইয়া ভুম্দর ৰূপে বর্দ্ধিত ও ফলমুথ হ**য় না, কিয়ৎকাল নিজেজাবস্থায় অবস্থান ক-রিয়া ক্রমে শীর্ণ ও শুষ্ক হইয়া যার, সেইৰূপ মন্তবোর অন্তরস্থিত ধর্মাবীজেও শিক্ষাবারি **নেচন না করিলে তাহা স্থানর ৰূপে অন্ধ** রিত হয় মা এবং কথঞিৎ অঙ্করিত হই-লেও ভাহা উপযুক্ত তেজ প্ৰাপ্ত না হইয়া कननाद्यी रम्न मा, अवज्ञ ७ अभिका दर्ज দেই ধন্মান্ত্র অতি মান ভাবে কাল্যাপন করে বা দিনে দিনে পুষ্ক হইয়া যায়। অ-তএব জগদীখন প্রদন্ত ধর্মানীজকে অদুরিত ও বজিত করিবার জন্য তাহাতে বিহিত বিধানে শিকাবারি দেচন করা সর্বাতোভা-বে কর্ত্ব্যা, তাহা না করিলে কোন ক্রমেন্ট মনুধ্য সম্পূর্ণ ৰূপে ধর্মাকল লাভে অধিকা-রী হইতে পারে না।

পুরাহত্ত পাঠ করিলে বিলক্ষণ প্রতীতি इय, य कारन कारन शृथिवी मरथा यथन যে পরিমাণে ধর্ম শিক্ষার বিস্তার হইসুভে তৎকালীন লোকে সেই পরিমাণেই ধর্মতত্ত্ব लाज कतिराज ममर्थ इड्रेग्नार्ष्ड, এवः स्य (म শীয় লোকে ধর্মা শিক্ষার প্রতিযে একার মনোযোগ করিয়াছে, তাহারা তদলুরূপ ধ-র্মাধিকার প্রাপ্ত হইয়াছে। পূর্বকালে মি-সর রাজে। যে সময় নান। প্রকার শিংপবি-দ্যাদির প্রচার হয় এবং যৎকালে তত্ত্রস্থ লোকে আক্ষয় নিপুণতা প্রকাশ করিয়া অসামান্য প্রাসাদ ও স্তম্ভাদি প্রস্তুত করে, তৎকালেও মিসর দেশে ধর্মাশিকার সম-ধিক প্রচার না ইওয়াতে তথার যে সমস্থ অত্যাচার হইয়া পিয়াছে, ইতিহাস কর্ত্তঃ রা তাহা লিপিবদ্ধ করিতেও হৃদয়ে বেদনা বোধ করি**য়াছেন। মিলর দেশীর পূর্ব্ব**কালীন লোকে অপরাপর শিপে জ্ঞান প্রচার ও অ-ন্যান্য বিদ্যা বিস্তারের প্রতি যে একার

মনোযোগী হইয়াছিল, তাহারা ৰালক গ-ণকে ধর্মা শিক্ষা প্রদান করণে তাদুশ মনঃ-সংযোগ না করাতে কোন **ৰূপেই মহন্তে**র অস্পেদে অধিৰত হইতে পাৱে নাই*। পু-ব্রতন গ্রীস ও রো**ম দেশীর লোকে**রা স্ব স্বালককে যে প্রকার যুদ্ধাদির শিক্ষা প্র-দান করিত দেৱপ ধর্ম শিক্ষা দিত না. এ-জন্য তৎকালে ঐ সকল স্থানস্থিত লোকের কেবল জিঘাংসা ও অর্জনম্পুহাদি নিরুষ্ট বৃত্তি সকল উত্তেজিত হইত এবং তাহারা ডদনুসারে কেবল চির্দিন যুদ্ধ বিগ্রাহ ও नत २७॥, धना পहत्र ७ **एम्म व्युक्तांकि छ।**-রুণ দূথিত কর্মে লিপ্ত থাকিয়া স্বভাবকে কলঙিত করিত। পূর্ববকালে গ্রীম ও রোম দেশে এক এক মুদ্ধ উপ**লক্ষে যে দকল অ**-ভাগেরে হইয়া গিয়া**ছে, ভাহা মনে হইলে** এখনও হৃত্কম্প হয়ু†। ধর্ম পরায়ণ লোকে দৈবাং একটি মক্ষিকার প্রাণ বধ করিলে যে প্রকার কাতর হয়, গ্রীস ও রোম দেশীয় বীৰ গণ সহস্ৰ সহস্ৰ মন্ত্ৰবাহিংসা ও শত

। নগর দথ্য করিয়াও <mark>তাহার সহস্রাং</mark>-শের একাংশ কাতর হইত না। শৈশব কালে ভাহার: ব্যাবিধি ধর্মোপ্রেশ প্রাপ্ত না হ-ওয়াতে ভাষাদিনের উৎকৃষ্ট ধর্ম প্রবৃত্তি সকল নিম্ভেজ ও হীন বল হইয়া থাকিত এবং পুনঃ পুনঃ নিক্নফী ব্লুত্তি সকল পরি-চালিত হওয়ায় তৎসমুদার মহা তেজবিনী হইয়া উঠিত, সুত্রাং আর অসৎকর্মে তা-হাদিগের কিছুমাত্র অনিচ্ছা উৎপন্ন বা আত্ম প্রানি উদ্ভৱ হইত না। যে সময় মনুষ্য জ্ঞাতি বিহিত বিধানে ধর্মাচর্চা ও ধর্ম শিক্ষার ाड मानार्यान कतिज ना. जरकारन कि ইউরোপ কি এসিয়া কি **আফ্রিকা, সকল** अारन क्वितन युक्ष विधाशानि व्याजााठारतत्रहे আতিশ্যা ছিল, তৎকালবৰ্তী এক এক জন কোমল স্বভাবা স্ত্রীলোক যে সকল হিংসার कार्या अञ्चल्लीन क्रियाट्स, जाहा निश्विक করিতেও লচ্ছা বোধ হয়। সিপি**উ, হেনি**-বল সেকন্দর, তৈমুরলক, জঞ্জিজভাঁন প্র-ভৃতি প্রাচীন যোদ্ধাদিগের নাম শ্রবণ ক-

রিলে এবং তাহাদিগের এক এক ব্যক্তির युक्त विवद्रग शांठे कदिएल, स्वयन क्रमरहरू বিকল্ডা জয়ে, সেই ৰূপ ক্লিওপেট্রা প্র-ভৃতি পূৰ্যকালৰতী জীলোক দিগেরও চরিত্র चार्व रहेरत मन व्यक्तित क्या व्यवस्त शी-সাদি দেশে ক্ৰমে যত ধৰ্ম শীক্ষাৰ প্ৰচাৰ হইতে লাগিল এবং যে পরিমাণে ভঞ্জৎ দেশীয় লোকে আপনাদিগের উৎকৃষ্ট বৃদ্ধি সকল মার্জিত ও বর্দ্ধিত করিতে আরম্ভ করিল তত্ই ঐ সকল দেশ হইতে নানা অত্যাচার অন্তরিত হইতে লাগিল,এবং সেই পরিমাণে কল্যাণেরও আবির্ভাব হইল। লু**থরের ধর্ম** প্রচারের পর জর্মণ দেশীয় লোকের যে সম-ধিক ধর্মোলতিও কল্যাণ সিদ্ধি হয় তা-হাতে আরু কোন সন্দেহ নাই, পিটরজার ক্রিয়া রাজে। ধর্মচর্চা বিস্তার করাতে, যে তত্রস্থ লোকের ধর্মা প্রবৃত্তি স্থন্দর রূপে প-রিশুদ্ধা হয় এবং তাহারা বিবিধ প্রকার আ-হিতাচার হইতে পরিতাণ পায়, বোধ করি তাহা বিদ্বস্ত্রলী মধ্যে সকলেই স্বীকার ক-রিবেন। এই ৰূপ পৃথিবীর পূর্বে রুত্তান্ত পাঠ করিলে বিলক্ষণ প্রতীতি হয়, যে যৎ-কালে যে দেশীয় লোকে ধর্ম শিক্ষায় অ-বচেলা করিয়াছে, তথন তত্ত্ত লোকে সেই পরিমাণে অধনাবস্তার অবস্থান করিয়াছে এবং যখন যে দেশে ধর্মা শিক্ষার ও ধর্মা চচ্চার যে প্রকার বিস্থার হইয়াছে, তথন সে দেশীয় লোকের স্বভাব সেই পরিমাণে পরিশুদ্ধ হইয়াছে।

ধর্ম শিক্ষার প্রতি অবহেলা করিলে বে মানব মণ্ডলী মধ্যে কি পর্যান্ত অকল্যাণ উ-ভাবিত হইতে পারে,তাহার প্রমাণ অদ্যাপি অনেক স্থানে বিদ্যানা রহিয়াছে। তা-তার রাক্ষ্যের মনুষ্যেরা অদ্যাপি প্রার্ম আপামর সাধারণ সকলেই দক্ষার্ভি করিয়া থাকে এবং বিদেশীর পথিক ও ব-ণিক দিগের প্রতি নানা প্রকার দৌরাত্মা করে। আরব রাজ্য মধ্যেও দক্ষার্ভি চৌ-র্যার্ভি লাম্পটা প্রভৃতি ভয়য়র পাপের বি-লক্ষণ প্রাত্তিবি আছে। চীন দেশীয় লোকে শিক্ষা স্তাবি প্রকার্ভি গৌপনে বিভর শিক্ষার স্ভাবে প্রকার্ভ গৌপনে বিভর

^{*} Wilkinson's manners & customs of the ancient Egyptians.
† Dick's philosophy of Religion pp. 271-272-273.

व्यक्ताव्यन कविया थाटक। विजेबिका छ-পরীপ বাসী প্রায় অধিকাংশ লোকেই নর रुजा कतारक कुरुचा छाने करत मा अवश প্রায় বছতর লোকেই নর্মাংস ভক্ষণ করে। নিউজিলও প্ৰভৃতি বছতর দ্বীপ ও উপদ্বীপ বাসী অসভা লোকে বালক কাল হইতে কোন প্রকার ধর্মোপদেশ, ও ধর্মা শিকা প্রাপ্ত হয় না বলিয়াই তাহারা উৎকট উ-ংকট পাপাচরণে কিছুমাত্র শক্তিত হয় না ত্রীসন নামক একজন ভ্রমণকারী ব্যক্ত ক-রিয়াছেন, যে একদা তাঁহারা সমুদ্র পথে গমন করত এক ভয়ন্তর বিপদে পতিত হ ইয়াছিলেন, বার্বেরি নামক স্থানের নি-কটে তাঁহাদিগের পোত জল মগ্ন হইলে পর ঠাহারা অনেকেই অতি কটে তীর প্রাপ্ত হইলেন, কিন্তু তথাকার কতকণ্ডলি অসভ্য লোকে ভাহাদিগের প্রতি এত অভ্যাচার করিল, যে তাঁহার৷ জল হইতে রক্ষা পা-ইয়া স্থল প্রাপ্ত হওয়াপেক্ষা সাগর জলে নিহত ইওয়াই শ্রেয়জ্ঞান করিয়াছিলেন। প্রথমতঃ কতকগুলি অস্ত্রধারী মনুষা আ-দিয়া **তাঁ**হাদিগের মধ্যে অনেকের প্রতি অসমত প্রহার করিতে আরম্ভ করিল এবং বিধিমতে বিধম যন্ত্রণা প্রদান করিতে লা-গিল। অনস্তর উক্ত স্থানে তাঁহাদিগের পোত মগ্ন ইইবার সমাদ প্রচার হওয়াতে পোতস্থ পণ্যদ্রব্য ও আরোহীদিগের নষ্টা-विश्वे खवामि लुठिवात कमा मानामिक इन ইতে নানা প্রকার লোক আসিতে আর ষ্র করিল এবং সকলেই স্বীয় স্বীয় অবস্থা মত ধনাদি না পাইয়া হতভাগ্য আরোহি দি গকে নির্দায় ৰূপে প্রহার করিতে প্রবৃত্ত হ-ইল, তত্রস্থ জ্রীলোকেরা পর্যান্তও আদিয়া তাহাদিগের অঙ্গে নিষ্ঠীবন প্রদান ও চ-ক্তে ধূলি প্রকেপ করিতে আরম্ভ করিল। धनखते थे निर्मन ছताचा निरात मर्था कह-কেছ পোত ভ্রম্ভ ছুর্জাগ্য মনুষ্য দিগের আ-নেককে ধৃত করিয়া আম মধ্যে লইয়া গেল এবং তথার লইরা গিয়াও বিজাতীয় যন্ত্রণা व्यनान कतिन। थे प्रकाश लाकता उर-সনা শরীর দণ্ড,জনসন,আম ও সঠিত মাংস क्कम अवर **अनममानवात्र (श्रीमहिकाकि की** द

ক্ষর নাার উৎকট উৎকট পরিভাম সাধন প্রভৃতি নানা প্রকার ক্লেশ প্রাপ্ত হইল এবং মধ্যে মধ্যে জীলোকেরা কৌত্হলা বিষ্ট হইয়া আসিয়া ভাহাদিগের অভে প্রস্তরাঘাত করিলও বালক গণও স্বস্থ জননীর অমুকরণ করিরা ভাহাহিগের কে শাক্ষণ ও অঙ্গেতে ধূলি প্রদান করিতে এই ৰূপে তাহাদিগের আনর য-জ্বণার অবধি রহিল না। কিন্তু তথাকার কোন লোকেই ভাষাতে খেদ প্রকাশ বা তাহা নিবারণ করিল না। অভএব ঈহ: বিলক্ষণ প্রতীতি হইতেছে, যে পুর্ব্বোলি-থিত স্থানবাসি অসভা লোকে যথাবিধি ধর্ম শিকা প্রাপ্ত হয় নাই বলিয়াই তাহারা অ-नाशारम छेल ध्वकात निर्मश वावहात कवि-তে প্রবৃত্ত হইয়াছিল, উছারা বালক কালে উপযুক্তমত ধর্ম শিক্ষা প্রাপ্ত হইলে এবং সর্ব্যাদা ধর্মের চর্চ্চা করিয়া মনোগত ধর্ম **अर्जु अक्ल मार्किंड क्रिंग्ल कश्रम डेब्रि** থিত ৰূপ পাপাচরণে সাহস্ট হইত না। পর্ম ন্যায়বান্পর্ম পিতা মনুষ্য মাত্রকেই মহত্ত্ব লাভে অধিকারী করিয়াছেন এবং সকল মন্তব্যকেই সমান প্রকৃতি প্রদান ক রিরাছেন, কিন্তু শিক্ষা ও উপদেশের তার তমা হেতু কোন মনুষা লোক সমাজে দে বৰৎ প্ৰতীয়মান হইতেছে এবং কোন ম মুষ্য পশু অপেকাও অধমাবস্থায় অবস্থিতি করিতেছে।

প্রথমবিদ্বার জ্ঞান শিক্ষার সময় বালক গণকে ধর্ম শিক্ষা প্রদান না করিলে যে বিধ্যম ভয়কর অনিউ উদ্ভাবিত হওয়া সন্তর, তাহা আমাদিগের এদেশেও সুস্পাই প্রকাশ রহিয়াছে। পূর্ব্বাপেক্ষা এক্ষণে এদেশে বালক শিক্ষার প্রণালী যে অনেক উৎকৃষ্ট হইয়াছে ভাহাতে আর কোন সন্দেহ নাই, কিন্তু পিতা মাজা ও শিক্ষক গণ বালকের বিদ্যা শিক্ষার প্রতি যাদৃশ মনোযোগ করেন, ধর্ম শিক্ষা বিষয়ে তাদৃশ মনোযোগ করেন, ধর্ম শিক্ষা বিষয়ে তাদৃশ মনোযোগ করেন, ধর্ম শিক্ষা বিষয়ে তাদৃশ মনোযোগ করেন করি বিক্ষা অদ্যাপি শিক্ষা প্রণালী সম্পূর্ণ হরেন না বালিয়া অদ্যাপি শিক্ষা প্রণালী সম্পূর্ণ হরেন বিশক্ষণ দোষ প্রনা হয় নাই, এক্ষণেও শিক্ষা প্রকাশ বিশক্ষণ দোষাজ্ঞত প্রহিষ্যাহে। একেশ্রেক কালক গণকে জ্ঞান

শিকার সময় ধর্ম শিকা প্রদান না করাতে त्य प्रक्रम शुक्रणत व्यक्तिक छेस्टर स्ट्रेट्ड्स, বিচক্ষণ ব্যক্তি কিসিংকাল মনোনিবেশ ক-রিলেট ভালা অনায়াসে অবগত হইতে भारतन। गानव जान्छ धर्म विशेन श्रहेल যে সংসারের কি পর্যান্ত অকল্যাণ জমিতে পারে, তাহা ধর্ণ করিয়া শেষ করা অসা-বা, অবোধ পশু অপেকা অধার্মিক মনুষ্য অধিক ভরন্ধর। কিন্তু এদেশে ধর্মা শিক্ষার প্রতিবে প্রকার অমনোযোগ দৃষ্ট হইতে-(ছ, ইश क्रांक्स दक्ति वा इंग्ली इटेल পরি-ণামে এখান হইতে ধর্মতত্ত্ব বিলুপ্ত হইবার সম্পূৰ্ণ সম্ভব। শিক্ষা ও উপদেশাভাবে বিদ্যালয়ত্ত অনেক ছাত্র ও স্থাশিকিত নৰ্য प्रक्षानात्री मिरशत यहा **अत्नरक**त यह ध-শ্মেব মূর্ত্তি ক্রমে ছায়ার ন্যায় হইয়া বাই-তেছে এবং যে পরি**ম্যুণে ধর্মের তেজ স্থান** হট্তেছে, সেই পরিমাণে অধ**র্মের প্রভা**ও রুদ্ধি হইতেছে। আমরা যদি বর্ত্তমান শিক্ট সম্প্রদায় গণিত লোক দিগের ধর্মানুষ্ঠান বিষয় বিশেষ কপে অ**নুসন্ধান করিয়া দেখি** তাহা হইলেই উহার বিশেষ প্রমাণ প্রাপ্ত

हेड। कि बाएकरशत निवस, य वि-माानव ७ भारेमन्दि भक्त वालक मिर्श्व স্বভাব শোধন ও গৌরব বর্দ্ধনের নিদানভূত ধর্মা শিক্ষার অভাবে সেই সকল বিদ্যালয় ও পাঠশালা তাহাদিগের অধঃপতনের কা-রণ হয়? আমরা দেখিতেছি যে ছাত্রগণ যেমন কোন বিদ্যালয় প্রবিষ্ট ছইয়া বিদ্যা শিকা করিতে আরম্ভ করে, অমনি কুসং-সর্গে লিপ্ত হইয়া ক্রমে অধর্ম অভ্যাস ক-রিতেও প্রবৃত্ত হয়। যে সকল পাপাচরণ খারা মমুখাকুল একেবারে অধংপতন প্রাপ্ত হয় এবং যে সমস্ত অধর্ম ও অপকর্ম জন্য मः मारतत छेश्रम प्रमा छेश्यम रहेवात नि-ভাস সম্ভব ধৰ্মোপদেশাভাবে ছাত্ৰ গণ বি-मालय अविके इहेगा आंग्र उदम्मारमञ्जू দৃষ্টান্তাবলোকন করে এবং ক্রমে অমুকরণ করিতে প্রবৃত্ত হয়ণ আমরা যদি একে একে **अटमगीत्र ममन्छ विमानिएसत् बानक भएगत्र** স্বভাব ও চরিত্র অনুসন্ধান করিয়া কেখি, **जारा रहेदन धात्र अभिकारण बानकदकरे**

অধর্মপক্ষে লিপ্ত দেখিতে পাই। বিদ্যালয়ত্ত ছাত্রেরা যে সক্ষ অধর্ম অভ্যাস করে তাঁহা কোন মতেই উলেখের যোগ্য নহে, তৎদ-মুদার স্মরণ করিলে হৃদয়ে বেদনা বোধ ও निमातः । निष्कांत जिल्हा रहा। हात्र ! हेरा कि সামান্য আক্ষেপের বিষয়া যে বিদ্যালয় ধর্মোনতির একুমাত্র প্রধান স্থল,কেবল এক শিক্ষার অভাবে সেই বিদ্যামন্দিরেতেই বালক দিগের মনে অঞ্জর অধর্মের স্থ্র পাত হয়। শিক্ষক গণ বালক দিগের জ্ঞান শিক্ষা বিষয়ে যে প্রকার মনঃসংযোগ ক-রেন, যদি ভাহাদিগের ধর্ম শিক্ষার জন্য ভদমুৰূপ দৃষ্টি রাথেন, তাহা হইলে ছাত্র গণ কখনই স্বেচ্চারি চইয়া উক্ত প্রকা-রে আপনাদিগের স্বাভাবকে মলিন করিতে সমর্থ হয় নাঃ কেবল শিক্ষার ত্রুটি ও শি-ক্ষাকের অনবধান জন্য বালক গণ নানা প্রকার অধর্ম পক্তে লিপ্ত হয়। যদি এ-তদ্দেশীয় প্রত্যেক বিদ্যালয়ের প্রাত্যহিক বিবরণ প্রাপ্ত হওয়া যায় তাহা হইলে দৃষ্ট হয়, যে প্রতিদিন এক একটি বিদ্যালয়ে নানা প্রকার বিগহিত কর্মা সকল অ-নুষ্ঠিত হয় এবং প্রতি বিদ্যালয়ের শিক্ষক দিগকে জিজ্ঞাসা করিলেও তাহার প্রমাণ পাওয়া যায়। কিন্তু ধর্মা শিক্ষার স্থারা ঐ সমস্ত অত্যাচারের যথা সম্ভব উপায় নির্দারিত হয় নাবলিয়া উহাক্রমে বৃদ্ধিই হইতে থাকে। বিহিত বিধানে উপদেশ না পাওয়াতে দিন দিন বালক দিগের ধর্ম প্রবৃত্তি নিজেক হইতে থাকে এবং তা-হাদিগের এই ৰূপ দংকার জ্ঞা, বে আ-মরা অসত্য কথাই ব্যবহার করি আরে চৌর বৃত্তি ও অন্যায়াচার, নিষ্ঠুরন্তা প্রস্থৃতি অন্য কোন কুকার্য্যই অমুষ্ঠান করি, ভাহাতে আমাদিগের কোন হানি নাই, আমরা ভূ-গোল জ্যোতিষ পুরার্ভ গণিত শাস্ত্র ও পদার্থবিদ্যাদি অভ্যাস করিয়া বুদ্ধি র্ভিকে মার্জিত করিতে পারিলেই লোক নমান্তে প্ৰতিষ্ঠাভাতৰ ও মহত্ত্বে আস্পাদে অধিকদ এই ৰূপে ছাত্ৰ গণ শ-হইতে পারিব। র্মায়ুষ্ঠানে অবহেলা করিয়া কেবল অঞ্চলাত্র लार्वरिया अकृष्टि कविलय निर्किषे गू-

ক্তকের প্রতি মনোভিনিবেশ করিয়া কালকেপ করে এবং তদমুরূপ রম্মাদিকেই শিকনীয় ও অমুক্তের ব্লিয়া ভাবেন। স্কুজাং
তাহাদিগের ক্ষুত্রস্থিত ধর্মক্রোত দিনে
দিনে রুক্ত হইয়া যায়, তাহাদিগের নির্কৃত্রবৃত্তি সকল কোন কারণে উত্তেজিত হইলে তাহা নিবারণ করিবার আর কোন
উপায় থাকে না এবং ঐ পঠদ্দশাতেই অধর্মাভাাস বিলক্ষণ জ্ঞীভূত হইয়া যায়।

পাঠাবস্থায় প্রথমতঃ বিন্যালয়েতেই বে সকল ছাত্রেরা এই ৰূপে ধর্মজ্ঞান বিবর্জিত হয়, তাহার: বয়ঃপ্রাপ্ত হইয়া সংসার প্রবেশ করিলে ভাছাদিগের ছারা যে সকল অ ত্যালারের সম্মাৰনা, বিচ্ছ লোকে তাহা অন্যাদে*স* ই বোধগমা ক্রিতে ভাগদিগের মনে কোন প্রকার নি সূষ্ট প্রবৃত্তি প্রবৃষ্ণা **হছলে ভাছা**র। ভদ-মুগানি হইয়াই কা**র্যা করিতে উ**দাত হল ! তাহার। কেবল লৌকিক রক্ষা করিয়াই জী ্রৰ যাত্রা সমাধান করিতে চেফী। পায়, ভা-র।দিনের যান কিছুমার ধর্ম ভয় **থা**কে মাহার মনে ধর্ম ভয়ের বেশ মাত্র না थातक, तम त्य कि चप्रक्रत करू. छ। हा विभिन्नः শেন করে। বায় ম।! কি নিরুফীর্ডি কি উৎকুণ্ট ংশ্ব প্রবৃত্তি, সন্তব্য মনে বসন যে কোন ব্ৰিড ডাৰেজিড মধ্য পেনই তাহার নেই রুভি গরিতার্থ করিছে ইচ্ছ। হয়, কিও কেনে কারণে বার্ষিক লোকের কেনে নির্ফীর্ভি চরিতা**র্থে**র ইচ্ছাহ্**রল** তিনি প্রবলা পথা প্রবৃত্তির দারা সেই ইচ্ছার নি বারণ করিয়া আপনাকে অধর্মপদ্ধ হুট্তে দুরে রাথেন, আর অধার্শ্বিক লোকে তথ कराद सह हेल्ड्रात चलुगामी इहेता छाल চরিতার্থ করত আপনাকে পাপ কুপে নি-ক্ষেপ করে। ুখতএব বালাবস্থ। ইইতে যাহার মন ধুর্মশাসনে অনুশাসিত না হয় व्यवस्थान्त्रव व्यक्ताम ना करत, तम इ-ग्राटी मनाग्रादमङ श्रवां विदर्भादम अ सूर्वे रहेश हित कीवन अवगारकारक छा-मयान रुग्न (म व) कि (कवन लाक उत्य अकारण कान निम्हनीत कर्म मा-धन कतिए भारमी रम्म ना अवर लोकिक

প্রতিষ্ঠা হইতে পরিত্যক্ত হইবার আশক্ষায় राक्ष अद्भ कृष्ण करत मा, त्म (करन ली-কিক বিন্দা প্রতিষ্ঠার প্রতি কর্ণ পাতিত করি मारे कालमाश्रम करत, धर्चीत मिक्क अकवात দৃষ্টি পাড়ও করে না।ু**নে ব্যক্তি** গোপনে त्वका मनित्त मित्राशास वमक यामिनी যাপন কারয়া পুনর্বার দিবা ভাগে 🛎 কান্যে প্ৰতিষ্ঠাভাজন **হইতে আ**ইনে এবং স্কুযোগ পাই**লে ছলে বলে বা কৌ**শলে ল্যোকের ধন মোষণ, সর্বান্ধ হরণ প্রথান মু∞করিয়ে আপনার **লোভাদি র**ভি*ৰে* চরিতার্থ করিতে **পারে। বস্তুতঃ** কেনি কুকর্মই ভারার অকর্ত্তব্য **থাকে না.ত**বে ব^{িচ} কিছদিন লোক ভরে কিঞিৎ বিরত থাকে, বিজ্বপর্মভয় বিহীন মনুবোর লোক ভয়ত বা কতদিন স্বায়ী হয় এবং সে লৌকিক ভয়ই তাদাকে ক**ডদুর পর্যান্ত অপশা** চইতে দুরে রাখিতে পারে। **তাহার ছ**ট ইন্ছ সকল পুনঃ পুনঃ চরি**ভার্য হ**ইয়া ক্রমে যত রন্ধি পার ততই তাহার লৌকিক ভয় হুংস इवेर इ थ. तक अवश स्म स्मारकत व्यमाकारक সকর্ম প্রকার কুলিয়াই করিতে পারে । श्रात्तादम रम **श्रामिक शाशानाती ह**हेचा छेट्ट, ইন্দ্রির চরিতার্থ করাই ভাহার সর্বার্থ স'-धन त्यां इयं अवः श्रीहरू नामाना अर्थ লাভই ভাষার স্বর্গ ভোগ ভুলা জান হইতে থাকে। যে **প্রকার ছ**ল্চরিত্র খট-মের বিষয় এ**লিখিত হইল এদে**শীয় ভার্না তন বিদ্যালয়ের ছাত্র দিগকে প্রে পিক-প্রদান করিবার পদ্ধতি না থাকাতে তাল-দিলের মধ্যে অনে**কেরই সেই** প্রকার *স*ং ব্রিত্র ঘটিয়া উ**ঠিতেছে এবং অ**বিশ্বরে প্রয়া শিকার কোন উপায় বিধান না করিলে ক্রনে সকলেরি ঐ প্রকার **সম**্ভার সংঘটন হট্ৰায় সম্পূৰ্ণ **সম্ভাৰনা দৃটি হটু**তেছে। একণ্ডার বিদ্যাভিমানী নব্য, স্প্রেদারী লিনের **মধ্যে প্রায় অধিকাংশেরই**্ধ**র্গে**-তে অনাস্থাও **দৃঢ়জর শৈথিল্য**ভাব দেখা ষার, বর্মা শিক্ষার অভাবই তাহার এক মান্ত कातन विविद्या अधूकुष इहेटल्ट । হউক দেশের স্থানিকিত সম্প্রদায়ের গর্লের প্রতি এ প্রকার অনাদর হওয়া মহান্নবের कात्रण नरमाहः महिन् अधामृण विष्य द्राप्त के एर्ड रव कि अकात्र अदलयत्र करणावशीक इट्या महाव छाड़ा वेर्गन कतिर्द्ध मका रहा।

যদি কেশের স্বশিক্ষিত মণ্ডণীতেই ধ-র্মের আদর না থাকে,তবে এদেশে ধর্মতত্ত্ तका भारवात बात कि मध्य! जाहा ह-ইলে ক্রমে ক্রমে সকল লোকে ধর্মচ্যুত হ-টাত থাকিবে। সংসার মধ্যে সকল লোকে मगान भवका आक्षेत्रमा, खुळतार म्कल् লোক সমভাবৈ জ্ঞান বর্মাদির শিক্ষাও পায় नः, (कह श्रुतः श्रुतेश डेशामा व्यवग ७ धा-उामि शांठे कतिशाः छान धर्मानि आश्च रस्, এবং কেহ কেহ[়]বা স্থশিকিত দিগের দুকী ভ দর্শন করিয়া ভ্রান ধর্মের মন্ম লাভ করে। মনুষ্যের এই ৰূপ প্রকৃতি দৃষ্ট হয় ্য স্থূশিক্ষিত ও শিক্ট সম্প্রদায়ীরা যে কার্যা অনুষ্ঠান ও যে প্রকার ব্যবহার অরলয়ন করে. সাধারণ লোকে বিনা উপদেশে প্রায় তাহার অনুকরণ করিয়া **খাকে**, অতএব যদি এ-দেশীয় শিক্ট সমার্চ্ছে ধর্মা চর্চার শৈথিলা ২য়,তবে সাধারণ লোকেও অবশ্ব যে তাইার অনুগামী হটয়া ক্রমে ধর্মেতে অনাদর ক-রিবে ইহাতে **সন্দেহ্কি? যদি অশি**-ক্ষিত সাধারণ লোকে দেখে, যে উদ্ভয় विकाराग् । विवक्त वृक्षिमान् लाटक অন্যােসে বেশ্যা গমন, যিথ্যা কথন ও অ-পহরণাদি সকল প্রকার কুকর্ম করিয়া কুকা হইতেছে নাতবং কোন ৰূপে শকা প্রাপ্ত ইইভেছে না, তবে তাহারাও উক্ত প্রকার অধর্মাচরণ করিতে কিছুমাত্র শঙ্কিত হইবে না। ভাহারা **অনায়াদে ওনিঃশকে স**-কল প্রকার কুকর্ম সাধন করিবে এবং প-রক্ষর সকলে কুকন্মী হইলে ক্রমে ক্রমে এখান হইতে লোক ভরও বিলুপ্ত হইবে। শদি দেশুর্যাপী যাবভীয় লোকেই এক প্র-कात व्यवस्था निश्व हम्, जत्व तम व्यवस्था व्य-গুঠান করিতে আর কেছ লৌকিক আশ-ফায় শক্ষিত হয় না, সূতিরাং এদেশের যা-বতীর লোকে পাপাচরণেরত হইলে এদেশ মন্যেও অধর্মামুষ্ঠান পক্ষে কিছুমত্রে লোক जर पाकित्व ना, भाष्मित भग अत्कवादन পরিষ্টার হট্যা উঠিবে। অতএব স্থানি-

किए विके नमार्थ कुकिनात कारात रहे লে, জালা যোরভর অনর্থের কারণ হয়। पर्वा<u>त्रिका स्थाल ना ह</u>हेश अस्तित त्यादक ক্রমাগত কুকর্মশালী হইকে তাহাদিণের বংশ পরম্পরারও অধর্ম ক্রোতে ভাসমান হওয়া নিতান্ত সমুদ্রী যদি পিতা ভাতাদি असकन कत्मिन्कारण बालक शवरक धर्मा শিক্ষা প্রদান না করে এবং আপনারাও ৰ্ষণ্ম শাসন অবসম্বন, সংক**ৰ্মো আছে**। ও অ-भःकत्मं यगमत ना कत्त्र, छाहा हहेता এ বালক গণই বা আর কি উপায়ে সংপ-থে উপনীত হইতে পারে, তাহারা স্বস্থ গুরু জনের অনুকরণ করিয়া ক্রমে পাপ-शक्तर मध इत्र, अठ वर अस्म मस्या धर्मा শিক্ষার পদ্ধতি প্রচলিত না থাকাতে চির-কালের জন্য এদেশের অধঃপতন হইতেছে, পরিণামে কোন কালে যে ইহার কোন কল্যাণ উদ্ভব হইবে, ভাহারও পথ রুক্ **২ইতেছে। যদি দেশের ছ**রবন্থা দূর করি-বার জন্য অর্থ সমের্থ্যাদি নানা উপায় দার: চেক্টা করা আবশ্রক হয় এবং যদি প্রজার कलाां वर्कतन्त्र अना ७ लाक मनारक य-ত্যাচার নিবারণ হেতু রাজ নিয়ম ও রাজ দণ্ডাদি বিধান করা শ্রেয়ক্তর হয়, তবে এ-দেশের চিরক্তল্যাণ নিবারণ নিমিত্ত অ বিলয়েই বালক পণকে ভ্রানশিকার স-হিত ধর্মানিকা প্রদান করা সর্বতোভাবে कड्या।

ভাজোৎকর্ষবিধান।

পূর্বের উক্ত হইয়াছে, যে পর্যান্ত আনাদিগের চিন্তা শক্তির একপ যোগাতা না

ইইবে যে আমরা অনায়াসে-বুদ্ধি সাধা
সকল বিষয়ের ই মর্ম্মগ্রহ করিতে পারিব,
সে পর্যান্ত বুদ্ধি বিষয়ক্ক উৎ কর্ষের আর
কিছুতেই শেষ হইবে না। এক্ষণে কোন্
কোন্বাপারে সেই যোগাতাটি প্রকাশ পায়,
তৎ সমুদারের নির্দেশ করা যাইকেছে।

যে কোন পদার্থের তত্ত্ব নির্পণ ক-রিভে হইবে, একাগ্রচিন্তে তালার জাব-না ও অভ্রান্ত পর্যাবেক্ষণ করা আবক্তক। বছ বিধ সৌসাদৃশ্য বশতঃ বে সকল স্থা দাৰ্ব আপাউতঃ এক জাতীয় বলিয়া আ-তীয়মান হয় কিন্তু বাস্তবিক পর্যার বিভিন্ন, সে সমুদায়ের তাদৃশ ছলকা প্রভেদ ও প্রতীয়মান শাদৃত্তের হেডু নির্দারণ করা আবর্শ্বক। বিশেষতঃ বিশেষ বিশেষ কার্যা পর্যালোচনে সামানা কারণ ও সা-ধারণ নিয়মের অবধারণ করিয়া বিশ্ববাা-পী সত্য শৈলের চুড়া প্রাপ্ত হওরা সর্কো-পরি আৰশ্যক , এই কপ ব্যাপার স-কল সুষাপত্ত নাহইলে বুলি বুলি ঘটিত छेदकर्राहत आह त्यम इस्वाह विषय कि ? ৰুদ্দি প্রিচালনের যে সমস্ত উৎকৃষ্ট প্র-कात निकिष्ठ इडेन उनार्था (भारवास्कृष्टिड् স্কাপ্রধান ও সমধিক অনুশীলিত হইবার বিষয়। বিজ্ঞান শাস্ত্র বেস্তা পণ্ডিতেরা যে বস্থারার প্রধান সন্থান বলিয়া গণ্য ও মাননীয় হইয়া থাকেন উল্লিখিত বোধ শক্তি সম্পন্ন হওয়াই তাহার কারণ। ভাঁহার वित्मय वित्मय काया मृत्ये मामाना निगम পুঞ্জের উদ্ভাবন করিতে ও সদ্বীর্ণ যুক্তিনদী দারা প্রশস্ত সিদ্ধান্ত সাগরে উপনীত হইতে পারিরাছেন বলিয়াই ঐ কপ অসামান্য लौत्रत्वत जाम्लाम इक्ताह्य । काछे थ-স্তর বাধাতু গণ্ড সকল অ্থবা অন্য কোন বস্তু উৰ্দ্ধে ক্ষিপ্ত হুইলেও ভূতলে পতিত হইয়া থাকে, ইহা সকলেই আবহনান কাল দেখিয়া আদিতেছে, কিন্তু ধরণী মুখেজে -ল কারী নিউটন্ ঐ প্রাকৃতিক নিয়মটি অ বলম্ব করিয়া এই ৰূপ মধান্ দিয়াত ক রেন যে যাবভীয় ভৌতিক পদার্থ আকার ও দূরত্ব অনুসারে, প্রস্পর অংপ ব অধিক আকুই থাকিয়া বিশাল বিশ্বমন্দি-রের উপকরণ হইয়াছে ও তাহার উপরে আমাদিগের ভূয়দী কল্যাণ সন্ততি নির্ভর করিভেছে। একজন কোন দেশের পুরার্ভ পাঠ করিয়া ভাষার যাবজীয় বিশেষ বিশেষ রুক্তান্ত শুলির বিবরণ করিয়াই নিরস্ত হয়; কিন্তু আরি একজন সেই সমস্ত বিবরণ একত সৰলৰ পূৰ্বক এক স্থাতে পৰ্য্যা-লোচন ক্রিয়া সেই সকল ঘটনা পুঞ্জের নিগাঢ় কারণ নির্দ্ধারণ করিতে সমর্থ হয়ে-न जेवर स्माहे स्माहित्याक मिरात किंबन শ্রম্ভি, ভাছাদের সভাতা বর্জনের কত ভূর মন্তাৰনা, কোন্কোন্কিরের উপর তা शामिरशंद मक्नामक्रम बिर्फत करत धन বস্কু*্*নির্দ্ধেশ করিতে পারেন। একন্যতি কোন কাতীয় লোক পিলের বীতি নীণি কিম্বে বিশেষ আচার ব্যবহারাদি দৃষ্টি করিয়া ইতন্ততঃ তাহারুই প্রসঞ্ করিয়া বেড়ায় চ কিন্তু অন্য কোন বাক্তি শেই সমশ্ব আচার, ব্যবহারাদির মূল স্থ্র ধ রিয়া মন্তুশোর এক্তি কিৰপ ভাগই मिक्तिके कित्रिश थारकन। अहे बर्टन र विष्यु ध्वा याहेत्व , भागामा मर्गम अदशकः। বিশেষ দৃষ্টির যে অধিক প্রাধানা তাছা সংব্রুত প্রতীয়মান হইবে। কিন্তু ইলা-নী**ত্তম লোকে**র কি বিচিত্র স্বভাব ইইয়াছে, প্রশৃষ্ট সত্যমার্গে পরিভ্রমণ ও মমুবোর সাধারণ প্রক্ষতির পর্যালোচন করিতে প্রায় কেইট সমুংস্ক হলনা, প্রভাত অকি-ক্রিংক্র **সামা**না নাপার লইয়া সকলেই আদর করিয়া থাকে। হা! ক্রমণঃ উৎরুষ্ট হ্**ট**রার চেন্ট। করিরা মনুষ্য নামের উপ युक्त इंडेर्स अपन यामना काशास्त्रा इयसा. সক্লের্ট যেন বলে:ভাবে কাল কভন করিতেই লাল্স। হইতেছে। চিম্বা, অ-নুভৰ, বিচার প্রভৃতি ধাবতীয় উৎকৃষ্ মনোবৃত্তি সমুদায়ের প্রাশস্তা লাভ করাই रम मसुरवात ममाक् छे ९ वर्ष मापन, जान (करूरे मान कात नः। बञ्च ७३ व्याद्या । दर्ज বিধানের অঞ্চ বলিয় যে কোন বিগয়েব প্রদক্ষ করা যায়, মন ও বুদ্ধির সানিওছ। পরিহার করাই যে তাহার মুখা উদ্দেশ্য তা**হাতে** আর **স**ংশয় নাই।

চতুর্থ দেশালিক উৎকর্ষ। সামাদিগের প্রকৃতি ক্ষেত্রে স্লেহ, প্রীতি, দয়,উপটিকীয়া প্রভৃতি যে সমস্থ অমৃত ফলের বীজ নি হিত হইরাছে তাহাদের অন্ধরণ, পরিবর্জন ও শোধন করাই এই উৎকর্ষের বিষয়। আমরা, পিতা মাতা, ভ্রাতা ভর্গিনী, পুত্র কলক্র প্রভৃতি আত্মীর বর্গ ও অপর বক্ষ্ বাহ্মর দিগের সহিত একটি অনিব্রচনীয় ক্ষেত্র সম্বন্ধ রহিয়াছি সত্য বটে কিন্তু যা হাতে সেই বৃদ্ধন কোম রূপে ক্লেশকর না

হুইয়া নিয়ত আনন্দ্রার বর্মণ করিতে थारक, उष्टिगरम विद्राप विद्राम विद्रान् शाकार অ্যাম্যদিরের ঐহিক স্থির কল্যাবের **উপায়।** ্লা অংগ গ্রন্থতি ইতর জ**ন্তরা যে ৰূপ স্লা**-ভাবিক মজোর বশতং পাত্রজেনে, জেহ ্রীতি প্রস্থৃতি ভাব সমস্ত ব্য**ক্ত করিয়া গাঁকে,** মনুখোরাও সেই রূপ **স্তাব সিদ্ধ সংকার** জুন, ব পিতা মাজার প্রতি ভ**ক্তি, ভার্য্যার** সাহত প্রতি, পুত কনার **প্রতি স্বেছ ও** লপর ব্যক্তি দিগের সহিত সম্বাবহার ক-রিয়া থাকে সন্দেহ নাই; **কিন্তু তাহারা** লায় পরতার বশহদ হ**ইয়া ঐ সমস্ত স্থা**-ভবিক সংক্ষারের উচিত মত প্রায়োগ ুরিতে সুমূর্থ হয় ব্**লিয়াই যাবতীয় জন্তর** শ্রেষ্ঠ হটয়াড়ে ও সকলের**ই উপরে প্রভুত্ব** করিতেছে, ধুদি কোন ব্যক্তি **স্বাভাবিক** শংক্ষার মাজের 'অন্তুর্শা**ননে তাহার পুজের** প্রতি অস্তব্য স্থেচ সমূতি বি**ন্তার করিতে** गत्यः किय तम साधमातक वृक्ति कीवी मसूचा বাংগে কাৰ্য থামে জ্ঞা**ন ও ধর্মের স্থত্ত** সকল স্কারিত ক্রিরা এ**বং স্থার্থ পরতা** শ্বন, ভিনার স্বভাব ভারা **স্বজাতির প্রতি** অন্যাত ওপরম্পিডার প্রিয় **পুত্র হইবার** লপণুজন কারতে যুৱ যা **পায়, তাহা হইলে** ঞ্জা জাতুর সঞ্চিত ভাষার **আর বিশেষ** कि भागा किस निवास कामग्र निमीन क्षा, जाजानिराज्य कामगोश **मनुषा कृत्य अ**हे. শুপা পাঞ্চাবের্থ অর্থিকা দেখা যায়। ক্ৰমা পুল দিগকে উক্ত ৰূপ উদার প্রকৃতি সম্প্র করিতে যত্ন কর' বে পিতা মাতার অৰম্য °কভাৰা ক**ৰ্মা, ডুৰ্ডাগাক্রমে তাহা** অংলভেরট জলয়জন হয়না**ই। পলী**গাম নিচয়ে এৰপে বিভার লোক দুষ্ট হয়,তা-হারা সায় কুও বা অন্যায় **সেহ পরতন্ত্র** व्येश व ये शुळ मिरशत विमान्त्रभीनन বিষয়ে প্রাঙ্মুখ হইয়া থাকে; তক্রারা, ভাগার যে ঐ একা**ন্ত নিরূপায় বালক রু**-াদর ক্ষান ধক্ষের উন্নতি ও **উত্তর কালে** াহাদের শাবতীয় বৈষ্ধি**ক স্থাস্থাদের পথ** একেব।রে রুদ্ধ করিয়া দি**তেছে,তাহা স্বপ্নেও** ক্থন মনেকরে না। কোন কোন লোকে বাল-ক গণকে শিক্ষিত করা আবশ্বক বোধ করে

वर्षे । कि इं इंग्ड्रानिशस्त : भरबीशाक रव नक्त्र क्रान्हे जाहाद्वत क्ष्मान हेटस्थ থাকে; স্তরাং কতকগুলি অশুদ্ধ বর্ণ বিন্যাস अ वर्गामामा अक्रशंक कतिएक शिक्तक्ति-तारे मित्रस रहा। अरे बाल वीनक मिरगत পক্ষে যদিচ কিছুনা কিছু উপায় 🕫 ই-য়া থাকে; কিন্তু হতভাগিনী বালিকাগণের শিক্ষা বিষয়ে আর কেইই মৃত্রু করে নাঃ দেশের বিচিত্র আচার অসুসারে ত্রী লো-কের বিদ্যাভ্যাস করা একেবারে বিরুদ্ধ বলিয়াই হির রহিয়াছে। যাহা হউক ইদানীন্তন কোন কোন স্বদেশ মঞ্চলাকাজ্ঞী মহাস্থা লোকদিগের আন্তরিক যত্নে স্থানে স্থানে জ্ঞানালোক বিকীৰ্ণ হইবার যে ৰূপ উপায় হউতেছে,দেশে দেশে বালক ও বা-লিকা বিদ্যালয় **সকল সংস্থাপিত হইতে**ছে. ভাছাতে কখন না কখন যে উপরেক্তি পশু ভাবের নিয়াকরণ হইতে পারিবে, এমন আশা ক্র্যাছে।

এই करण **राभन अनात स्नर** क्षतृत्वि নিব্যান অশুভ ফল উৎপন্ন হইয়াখাকে: त्म हे अप प्रशा, डिप्रहिकी**शां**नि अनासा द्रल्डि অন্যায় প্রয়োগ দ্বারা কিন্তুর জনিস্ট হইতে পারে। দয়। মানব প্রকৃতির অ**নুপ্র অলন্ধা**র ভারতে আর সংশয় কি ? কিন্তু উপযুক্ত স্থানে এ-যুক্ত না ২ইলে উহা আর কিছুতেই শোভ। করী হউতে পারে না।উপযুক্ত পারে প্রদত্ত হংলেই উহা দাতা ও গৃহীতা উভয়েরই আন্দ প্ৰস্বিনী হয়; দীন হীন কুথাত বাজিকে অন্নদান, আতপক্লান্ত ভূকাকুল বাক্তিকে গানীয় প্রদান, নিরুপায় শীতাতুর বাক্তিকে বস্ত্রদান, কুষ্ঠা, অন্ধ্র, খঞ্জ প্রভৃতি কার্য্যাক্ষম ব্যক্তি দিগকে অর্থদান, অজ্ঞান তিমিরাফ্র ব্যক্তিকে জ্ঞানদান ও শোক ভাপিত নাজিকে অঞ্চ প্রদান করিয়া যে অনুপম বিশ্বদ্ধ সন্তোধ লাভ ছইয়া থাকে. তাহা যে ভুক্তভোগী হইয়াছে, সেই বলিতে পারে। কিন্তু হন্ত পদাদি সম্ভুদায় কর্মে-ক্রিয় বিশিষ্ট বিলক্ষণ হাই পুষ্ট অলুসা विके सके लाक पिरशद कके मृत्के महा পর হইয়া মুক্ত হুল্পে অর্থানি প্রধান করা

काम करम है जाती कुनक नतात की है। व-विकास स्था विकास आदश्री । आसानि-त्वतः इमरच अवे क्या मगान कार्या के विख्न मुक्के स्रेता: शार्क िकड कर स्रेक्निय সবলেক্সিয় লোকে ভিকামীবা হইয়া নে প্রভাই পুরুষ পুরুষ পর্যাটন ক্ষিত मुणि जिका बाडा जेक्द्रभूष्टि क्वतिर्टट्ट, কত কত পরিক্ষম রিমুখ নরাখনেরা গ্রামা पि ठीर्थ अस्परम बामः करिया भागत्य का-वदक्षभ क्रवडः अमान्नादम कीविका मिर्का**र** করিভেছে জানার সংখ্যা করা ইংসাধী। **एक जिल्ला रे क्या ? क्या मक्य महाग**रसरा হৰকৰ্মান্তিত 💨 বলিয়া 💸 শ্ৰেনিকা 🗦 স্বেন, **फैं।हात्राह**्या कि कतिक्रा बाटकम्य क-রুণাকর: ুবিশ্ববিশাতা : **বে**ু অভিপ্রায়ে मञुचारक इस भनानि कर्ण्याल्या ७ हकूः জোতাদি জ্ঞানেন্দ্রির বিশিষ্ট করিরা স্থাট করিরাছেন, নে দকলকে অকর্মণা করি-তে প্রব্রত্ত ছওয়াকে অধর্ম না বলিয়াইবা **ब्यात (क्रान् नाम्स छेङ कतिव ? । এই बाश** উপচিকীৰা রুদ্ধির অবণাপ্রয়োগেও সমা-জের বিস্তর অনিষ্ট ঘটিতেছে।

কেহ অনন্যগতি পানাসক্ত পাপাত্মার অখন্য পিপাসার শাস্তি বিধান করিতেছেন, কেহ্বা 'কোন নউমতি ও বেখাসজি প্রভৃতি বাদনকলাপে ছতদর্বস্থ নরা-খমের ছুম্পুরুত্তি পুঞ্জের পোবকতা ক-**ব্লিতেছেন, কেহ কেছ বা কোন দস্থা** ব্য-বহারাজীবী #ব্যক্তি দিগের সহারতা করি-য়া লোকের[ু] অনিষ্ট প্রবাহ প্রবল করি--**ভেছেন, হা 🕾 কড কালে** যে আমাদিগের रम्भ रहेए बहे ममस प्रमाद मामाजिक बाबराह्र भिक्तांगिल स्टेटव, कल कारण य প্রচলিত ধর্মের ভীষ্ণমূর্ত্তি অন্তর্হিত হ-<u>ইছকু "এবং ্কডকালে বে জাত্যক্রিমান,</u> अपृष्ठि बावजीत मनन शिक्तिशी अधना বংকার ব্যুক্ নিরাক্ষত কইবে, বলিতে नाहि मा। यनक स्य श्रीक नक्छ विमा अ क्यारमञ्ज क्यारिक क्षेत्राहिक में क्**रे**ट्रे, क कतिबान काता की दिना निकास कता TOP AND COLOR MEMBERS अवनाम मार्च निवाद मुद्देश काम महिना

भवनात वाक् जाटन अक्का जावनावन ना कृतिक भागमात माहाया केतरन शान अरन अपूर्वक सा हहत्वः (य भर्ताच नटा भट्यत क्षात्राच भारत थाएनिए करियाङ धटर्मतः छ ्यक्ष काज्यत मकन विमर्क्किक मा प्रहेटव, ভিয়াচরিত অভ্যান জনিত বিষম ছুক্ত কলক্ষজাত বিশুদ্ধ ধর্মনীয়ে বিধীত ন হুইবে, এবং দম্পতির মধ্যে পরস্পর প্রণয় ুনিবজ্ঞান সম্বন্ধ কিনপ, পিতা পুত্রের মধ্যে কি প্রকার ব্যবহার কর্তব্য, পরস্পার জ্রাভূ **बरर्शत** मर्था कीमृण आहत्त्व रिहिंड इत. **ঞ্জিবাদী ওশ্বদেশস্থ জ**ন গণের প্রতি কিৰ-প সম্বারহার করা উচিত,ও ভূমওলবাদী যা-ৰজায় লোকের প্রতি কিপ্রকার দৃষ্টি করিতে रुत्त, रामधीन्द्र कई मूमल विषयात वर्गार्थ ख्डान ७ व्यक्तुकीरनत व्यवस्थात शाहित्व, त्य পर्यात्र चार्यानिरशंत मार्याक्क उरकर्षत আর কিছুতেই শেষ হইবেনা

মহাভারত। আদিপর্বা

१४ अधारा -- महानभर्त ।

ৈ বৈশ্পায়ন কহিলেন, কচ বিদ্যালাভ করিমা এত্যাগমন করিলে দেবতারা সা-তিস্য় হর্মপ্রাপ্ত হইলেন এবং তাঁহার নি-কট সেই বিদ্যা অধ্যয়ন করির্নী ক্লুভার্য म्बना विद्या रमवज्ञारका निकछ न्यानिक নিবেদন করিলেন, ছে পুরন্দর! তোমার বিক্রম একাশের সময় উপস্থিত হট্যাছে. এক্ষণে বিপক্ষ কুল ধংগকর। সমাগত শর্কদেব মুখে এই কথা শুরণ করিয়া দে-বরাজ তংক্ষণাৎ তথা হুইতে প্রস্থান করি-লেন, এবং ক্রিয়দ্র গমন করিয়া প্রক প-तम तमनीय बँदन अविक श्रेत्रा प्रिशियन কতকণ্ঠলি কন্যা তীরদেশে স্ব স্থ বস্ত্র রাখিয়া জলকীয়া করিতেছে। তথম তিনি রায়ুর খরপ পরিতাহ করিয়া প্রচ্ঞবেলে কন্যাদিগের বস্ত্র সকল একতা মিলিড ক-क्रिज्ञा - मिटलन । केना जा अकटल अक्कालिन भव स्ट्रेट डिलिंड रहेन वर्र का व बंध निकटि लाहेन छाहाई बालन बटन क्रिया श्रियान क्रिएंड नाशिन।

ৰুষ্প্ৰভালনা শৰ্মিষ্ঠানা জানিয়া দেব্যা-নার বস্ত্র স্বীয় বোধে গ্রহণ করিলা পরিধান করিতে উদাতা হউলে ঐ উপলক্ষে উভয়ের বিশন বিবেশৰ উপস্থিত ২ইল 📭 দেবখানী कहिरान, व्यादा व्यक्त करना! जुरे निया কল্পা আমার বর পরিধান করিতেছিল্; এত ম্রোচারে ডোর কখন ভাল হইবেক ता । अभिशा भर्मिकी कहित्यम, **अरत ए**न-শানি তার এত অহঙ্কার কেন? ভোতে ভাষাতে কত অন্তর, তা ভুই জানিস্মা, এজনা এত গরে করিতেছিদ্। আমার প্রিটা কি শ্রন করিয়া কি উপবেসন ক-রিয়া ধ্থন ব্যক্তে থাকেন, ভোর পিডা িয়ে আদনে উপবিক্ট হইয়া স্তুর্তি পাঠকের নায় বিনীত বচনে নিয়ত তব করিতে পাকে ৷ যে ব্যক্তি স্তব মাচ্ঞা ও প্ৰতিগ্ৰহ ক্রিয়া জীবন যাতা নিকাহ করে, তুই তার কুলা: ভার ঘ্রাকে শকলে তার করিয়া খাকে, চিনি অর্থ দিয়া মুকলের প্রার্থনা পূর্ব করেন, কখন দাছার নিকট প্রতিগ্রহ ক-্রন না, আনি উংহার কন্যা। অরে তিকুক তমরে! কুই যত ইচ্ছাত্থ কর মনস্তাপ ক্র, ক্ষোভ করু, হিংসা করু, অণবা শাপ দ, আমি ভোকে মন্ত্রণা বলিবা আ**ছ**করি मा ।

দেখানী শশ্বিষ্ঠার এই নূপ গরে পুর্বা বচন প্রবণ গোটর করিয়া কোণে কম্পিত কলেবরা ছইলেন এবং সেই বস্ত ধরিয়া हे। नाहानि कतिएक नाशितन। . उपनितन শব্দিষ্ঠা ক্রোধ ভরে অধীরা হইয়া অগ্রপ-শ্চাৎ না ভাবিয়া বল পূর্বক দেবঘানীকে এক স্মিহিত অন্ধা কুপে নিক্ষেপ করিলেন এবং কুপে পতিত হইয়া দেবযানীর প্রাণ विद्याण बहेशाटक, शहे खित कि ब्रिश नहण्ती গণ সমভিব্যাহারে গৃহে গমন করি**লেন।** দেই সময়ে নজ্যতনর রাজা য্যাতি অস্থা-রেছেণে মৃগয়ায় নিগতি স্ইয়াছিলেন। মৃত্যু র অত্যেদণে বনে বনে ভ্রমণ করিয়া **অস সহি**-ভ সংতিশয় ক্রাস্থেও পিপাদায় একান্ড অভি-দত হইয়া জলের অনুস্থান করিতে করিছে 🖠 त्म हे कूरभन्न निक्षे अभिष्य हुई लाह व्यव **ज्याक्षा कृषि निरम्भ माज अस मर्वास छ**े

न्तरी अ नक्षांचक्रक कृतिका कारिकीक क यन स्थानत कविया विषयक्तिक करेरवर अनस्त्र अस्टिक (माकाकृता अवस्थाकन क-तिया मध्य महामध् भूतिक मान ना बादका লিজ্ঞানা করিবেন। হলারি। ভূমি কে, কাহার কম্যা, ও কিবংশাঞ্চ ব্যক্ত গতিত হইলে, বল। দেখখানী কহিলেন, দৈত্যেরা দেবগণ **দারা সংগ্রামে নিহ্**ভ एदेरन विनि मश्रीवनी विशा क्षणांत ७९-ক্ষণাৎ তাহাদিগকে আৰু দান করিয়া খাঃ त्तन, आबि तारे शकागटबात कना ; আমি যে এই অক্স কুলে: পতিত হইয়া নিতান্ত অনাধার ন্যায় রোদন করিতেছি. তাহা তিনি অবগত নহেন। এক্সণে মহা-রাজা, আমার এই দক্ষিণ হতে ধরিয়া আমাুকে কুপ হইতে উদ্ধৃত করুন। আপ-নি সহাকুল প্রস্থুত,প্রভুত যশঃশালী, বিখ্যাত দয়াবান্, মহাবল পরাক্রান্ত অভি শাস্ত স্থভাব ; অনুগ্রহ করিয়া আপনকার আ-মাকে এই কুপ হইতে উদ্ধৃত করা কর্ত্তরা য্যাতি পরিচর অবেণে তাঁহাকে অসামান্য ব্রাহ্মণ তনয়া জানিয়া তদীয় দক্ষিণ কর এছণ পূৰ্বক ভাহাকে তৎক্ষণাৎ কুপ হই-তে উত্তোলিত করিলেন এবং সমুচিত म छायन शूर्यक छ। हात निकृष विमाय सहिता निक ताक्षानी आदान कतिस्तन।

धरे ममदत्र (एवयानीत महहती धूर्विका महना (महे खादन উপश्वित अहेरता (मेवशा-नी लाक मस्थ इसास करितना वर्निकः! তুমি স্থরায় পিতার নিকটে রিয়া বল, শ-শিষ্ঠা সামীর এই দুরবস্থা করিয়া শিষ্ট্রেছ, আর আমি র্যপর্বে রাজার নগরে প্রহেশ করিব না। তদনুসারে মুর্ণিকা সত্তর পম্মে শুক্রাচার্য্যের নিক্ট উপস্থিত হুইয়া দেব-यानी नःकाख नमस्य बुखान निरंतन कहिना। रूकाराया **चारमाश्चित्र धार्म**्कतिया **यह**-शरतानः खि क्षिण के क्षाधिक क्**रेटन** वायर কন্যার অবেষণার্থে ডৎক্ষণাৎ তথা **হত্তি** প্ৰস্থাৰ করিয়া স্থাকিবিল্যে ক্ষেই স্থাকে उगिका रहेता क्षाकाकृत मद्द 🗷 वक्क पूर्व महरन के सारक द्वारकारत जानियमें कवियो गमनारक्दनः क्रियातः। स्ट्याः। स

यानकर्पामुगात स्व कृथ छात्र कतिश বাকে; বোধ করি তুমি কোন পাপ ক-রিয়াছিলে, আজি সেই পাপেরই এই 🖚 लाजा बहेल। तक्वानी कवित्तमन जाज! আমার পাণের নিষ্কৃতি হউক আর না হউক এখন সে কথা শাকুক, শৰ্মিষ্ঠা আমাকে ষে দকল ছুলি:ক। কহিয়াছে ভাহা বলি,মনদিয়া **खन। ७३ वित्रसं, भन्तिका (यञाद्य वि म-**কল কথা কহিয়াছিল, অবিকল সকল ভ^লল শুকের নিকট কহিয়া বলিলেন, দে যেরপ कहिसाटक, यनि कामि यथार्यहे मिकल हहे, তাহা হইলে আমি শর্কিটার নিকট অপ-রাধ স্বীকার ও ক্ষমা প্রার্থনা করিব। নতুবা ভাষাকে ইছার সমুচিত প্রতিফল দিতে হ-हेर्दक। एक कहिर्लंग दश्म ! हुमि ধাচক চাটুকার অথবা প্রপ্রত্যাশীর কন্যা নহ , ভোমার পিতা কাহাকেও স্তব করে না, তাহাকেই স**কলে স্মরণ** করিয়া থাকে: व्यवस्था निष्क द्वत्रभन्ता, मित्रहाक हेन्द्र न-ভ্ৰাত্মত বজাতি প্ৰভৃতি সকলেই ভানেন। শামার অচিত্রীয় প্রভাব। ব্রহ্মা ভূফী হইয়া এই বর দিয়াছেল, স্বর্গ, মতা প্রভৃতি যে द्धाल राकिछू वस्तु चाह्य, चामि छ०मभूमा-রের অধীশর। জগতের হিচের নিমিত্ত আ-মিই জল কৃষ্টি করি, আমি যাবতীর শক্তের পুষ্টি সম্পাদন করি। আমি একথা পরি-शम कतिया कहिर्छि ना, याहा कहिलाम ইহার একটাও অলীক নহে। শুক্র বিষা-দম্য়া দুংখাতুরা শোকাভিতৃতা তনয়াকে এই ৰূপ মনেহের, বচন পরস্পরা ভারা সা ষ্না করিছে লাগিলেন।

१३ व्यथामा ।

শুক্র কহিলেন, হে দেববানি ! যে নর পরের তিরন্ধার বাক্য সহ করিয়া উপেকা করিয়া থাকে. ভাগার এই স্থাবর জক্ষা-ত্বক কগৎ কয় করা হয়। যে ব্যক্তি উচ্ছ্ -ঙ্বল ক্ষমের ন্যায় উদ্ভিক্ত ক্রেম্থ রিপুর নিগ্রহ করিতে পারে,তাহাকেই সাধু লোকে প্রকৃত সার্থি বলিয়া গ্রমা করেন, নতুবা যে ব্যক্তি ক্ষমান্ত হুইয়া ক্ষরনিয়তে লহুমান

क्य, कोश्रादक मार्तेचि वला यात्र मा। व বাক্তি ক্ষমাণ্ডণ বারা উত্তিক্ত ক্রোধের নি-্রাহ্ করে তাহার সমস্ত জগৎ জন করা হয়। যেমন সর্প জীণস্থক পরিতাপে করে সেই ৰূপ যে বাজি ক্ষাগুণ প্ৰভাবে উ-দ্রিক্ত ক্রোধ রিপুকে বিসর্জ্জন দিতে পারে, তাহাকেই প্রকৃত পুরুষ বলিয়া লোকে গণ্য করে। বে ব্যক্তি জোধের দম্ম ও ভির-। कात वादका छेटभका श्रमर्भन करत अवर সন্তাপের হেতু উপস্থিত **হইলেও সম্থ**ি না হয়, সেই সকতে সিধ্বিভাজন হয়। এক বাক্তি শত বংসর ব্যাগিয়া অবাণে মাসে মানে যজানুষ্ঠান করে, আর এক ব্যক্তি কাহারও উপর জোধ **প্রকাশ** করে **না**। এই উভয়ের মধে। অকোপন ব্যক্তিই প্রধান : বালক বালিকারা হতচেতন হইয়া পর**স্পর** যেরপ বিরে!ৰ করে, প্রাক্ত ব্যক্তি সেরপ करतम मा ; वालक वालिकाता वलावल वि-বেচনা ও পুর্ব্বাণার পর্য্যালোচনা পরিশুন্য इहेब्राहे मिक्श कतिया थात्न। •

দেবঘানী কহিলেন, ভাত! আমি বা-লিকা বটি, কিন্তু ধর্ম সমুদয়ের উৎকর্ষা-প্রক্ষ প্রিভঞানে নিতাভ অক্ষমা নিছি; এবং ক্রোপ ও ক্ষমা এ উভয়েরও বলাবল বিচারে অসম্থানছি: কিন্তু বেব্যক্তি অ পন মঞ্জ বাঞ্জা করে, ভাহার শিধা হউ য়া যে অশিধাের বাবহার করে, ভাহাকে ক্ষম। করা বিধের নছে। আত্রত যেস্তে অসদাচার তথায় আরু আমার বাস করি তে প্রবৃত্তি নাই। যাহায়া খনেত বংশ ও ব্যবহার ধরিয়া অকারণে নিন্দা করে, আন্ম মঞ্লাকাজকা প্রাজ্ঞ বাজি তাদৃশ পাণিষ্ঠ मिराद निक**छे वाम क**द्भिरंबन ना.। **आ**द খাঁহারা অন্যের বংশ মর্যাদা ও ব্যবহারের সাধৃতা জানিয়া সমুচিত সমাদর করেন, তা-पृश माध् श्रुक्य फिरशत मिश्रात वाम क-রাই শ্রেয়ঃকপে। তাত! বলিতে কি, শ্-র্মিষ্ঠার সেই সকল ছুর্বাক্য বিশ্বদিয়া বা-(कात नात सामात समस्य विक स्टेश আছে ও ঘোরতর যাতনা প্রদান করিতে-है। जामि कान करमहै अमिर्ड नाहि-क्षांगाहीन बांखि रिगदक व ভাগাবান লোকের উপাদনা করিতে হয়, ইহা অপেকা ছুক্ত কর্ম আর কিছুই নাই। প্রেরা ক্রেন্ডাদৃশ ব্যক্তি দির্গের প্রেক ক্রিপ্রা মরণ ভাল।

বিজ্ঞাপন।

গাগামী ১১ মাথ শনিবার সদ্ধা: ৭ ঘণ্টার সময়ে অফীবিংশ সাহৎসরিক ব্রাহ্মসমাজ হইবেক!

শ্রীতানন্দচন্দ্র শর্মা শ্রীবাবেশর শর্মা উপাচার্য্য ।

বিজ্ঞাপন।

ত্র-ক্ষমতাশর্জিরের প্রতি নিবেদন যে কাহার। ১৭৭৯ শকের স্থীয় স্থীয় সাঙ্গন-রিক দ্বি ১১ মাছের মধ্যে সমাজে প্রেরণ করেন

> শ্রীবাদেশর শর্মা। সম্পাদক।

विकाशन।

তজুবোধিনী সভার সভাবা সভা ভিন্ন
আনা যে কোন ব্যক্তি নাসিক। তেনান করিয়া সভায় প্রদান করিবেন, তাঁহারা নিরমানুসারে সভার পুস্কললয়স্থিত পুস্কক
ক্ষণ পাইতে পারিবেন।

বিজ্ঞাপন।

আক্লোবর্ণাকুলের ক্লাসবুক এজে-ন্টন ডিপজিটরি।

ক্ষরভাঙ্গা — কলিকাতা

ট্রেনীং দিন্তিম (ইংরাজী) । এবংসর মহান্তা হেয়ার সাহেবের আ-রগার্থ দায়ংসরিক সভায় জনাইট্রেনীং ক্রুলের প্রধান শিক্ষর জীযুক্ত যার জীপ্তি মুখেপাথার মহালর নিজ্ প্রধান প্রদানী বিষয়ে যে এক স্থানি বক্তা পাঠ করেন, অধুনা তাহা উল্লিখিত পুতকাকারে প্রকানিত হইয়াছে এবং বিক্রয়ার্থ আমাদিগের প্রস্থালারে প্রস্তুত আছে। শিশু সন্থান দিগেকে যে প্রকার প্রশানীতে ক্লিকা দেওয়া কর্তবা, তাহা সংক্ষেপে অতি পরিপাটী ক্লপে উক্ত এত্থে বিহুত হইরাছে, এ পুত্তক থানি শিককদিগের পক্ষে বিশেষ কর্ম্মোপ্রযোগী, সন্দেহ নাই।

ঘাঁহার। আমাদের গ্রন্থালর ছইতে ন-গদ মূল্যে বালকশিক্ষোপ্রোগী অথবা অন্য প্রকার পাঠা এন্থ ক্রম করিবেন, তাঁহাদি-গকে নিমা গৈথিত নিম্নামুসারে কমিশন প্রদান বরিব, কিন্তু চুল্ভ ও চুম্পুণিও অ-র্থাৎ যে সকল গ্রন্থ সচরাচর পাওয়া বায় না, তাহার পক্ষে উক্ত নিয়ম পরিপালন করিতে পারিব না।

১ অবধি ৫ টাকা পর্যান্ত শতকরা ১২॥০ পুন্তক বিশেষে ১০

৫ অবধি ২৫ টাকা পর্যান্ত শতকর৷ ... ১৫

[পুস্তক বিশেষে ১০
অন্যৎকৃত এজেন্ট প্রতি ১০

নগদ মূলো ক্রয় করিতে অসমর্থ ব্যক্তির। যদি এক মান মধো টাকা দেন ৬০ আমানের নিজ প্রকাশিত গ্রন্থে ২৫

শ্রীহ্বার, এম, বস্ত্র এণ্ড কোম্পানি

বিজ্ঞাপন ৷

ত্তি এই তত্ত্তালিনী সনিকা, কলিকাতা কাৰে বিশ্বনাধানিক কিছু কাৰ্যনাক কাৰ্য়



ত্রুরোধিনীপ্রতিকা

প্ৰশ্ববাএকমিলমপ্ৰজাসীয়ামাংকিকান্সীতিদিলং সৰ্কামস্ক্তং। তেনেবনিভাংজ্ঞানমমতাণিবংশতক্ষিয়ব্যব্যব্যব্যক্ষকাৰ্যিতীয়ং। স্কাৰ্যাপিসক্ষিন্তিত্ব, স্কাশ্বয়সক্ষিকিম ক্ষাডিনছ বুস্পূৰ্বমঞ্জিন মিটিন এক সাড়ইস্যান্ত্ৰীপাসন্ত্ৰাপাসন্ত্ৰিক তেন্দ্ৰিন্দ্ৰ জীডিজস্য প্ৰোহ্ম গাঁচিন ক্ষাড়াজান ক্ষাত্ৰিকাৰ তিনুপাসন্ত্ৰাৰ

অন্টাবিংশ সায়ৎসরিক ব্রাকসনাজ।

কলিকাড়া ১১ মাধ ১৭৭৯ শক

পত ১১ মাঘ শানিবার স্কান ৭ ঘণীর সময়ে ত্রাজ্বমাজের অন্তাবিংশ দায়ৎদরিক কার্য্য অতি সমারোহ পূর্বক নির্বাহ হয় । প্রথমতঃ উপাচার্য্য মহাশ্বরের। বেদীতে উপবেশন করিলে, প্রীযুক্ত নবীনকৃষ্ণ ব-ন্দ্যোপাধ্যায় নিম্ন লিখিত প্রস্তাব পাঠ করিলেন।

"মানব জাতির উন্নতি সিদ্ধি ও স্থুখ রু-चित्र करा कानीयत य ममल भगार्थत কৃতি করিয়াছেন, তল্পাধ্য ধর্মত দর্বে প্র-थान। धर्मा काता मसुरा रा अकात उत्तरा-ৰস্থায় উপনীত হইতে পারে এবং ধর্মা দারা त्म सामृत छेश्क्रके छ्शाश्वामन कतिएं .म-মর্থ হয়, আর কোন পদার্থ দ্বারাই সেরপ স্থী হইতে পারে না। ধর্ম যে মানব জাতির মহত্ত্বের প্রধান কারণ এবং ধর্মাই বে মন্ত্রাের সার ধন, বােধ করি কোন বা-জিরই তাহাতে সংশয় হইতে পারে না। কিন্তু আশ্চর্যোর বিষয় এই যে আমরা যাহাকে বকলের সার বলিয়া স্বীকার ক-त्रि**टि, এবং সম**স্ত বিষয়াপেকা <u>ভ</u>োষ্ঠ ৰূপে প্ৰত্যক্ষ করিভেছি, তাহাতে ষ্থাবিধি ৰত্ন করিতে রত হুইতেছি বা, ধর্মেছিতি

<u> শংসাধনের জন্য যে প্রকার গুরুতর যত্ন</u> করা আবশ্রক, তাহা দূরে থাকুক আমরা नामाना नामाना विषयात कमा यानून करणे! থাকি ধর্মোন্নতি পক্ষে তদ্ধপর করিনা। আমরা ধদি প্রত্যেকে আপন আপন প্রাতাহিক কার্যা পর্যালোচনা ক-রিয়া দেখি, তাহা হইলে সুস্পাই দেখিতে পাই, যে আমরা দিবানিশি কেবল বিষয়-চেটা, বিষয় ভোগ ও বিষয় রস চিন্তা ক িায়াই কালক্ষেপ করি। কদাচিৎ একবার ধর্মাত্র মনেতে উদয় হইলেও ভাহাতে গাঢ় ৰূপে, চিন্তাভিনিবেশ করিতে পারি না এবং কিবাপৈ যে আমাদিগের ধর্মেতে অ-থিকার জনিবে তাহাও একবার চিত্তা ক-রিয়া দেখি না। বিশ্ব ইহা নিশ্চর মত্যা,যে विना युद्ध कान विषयुष्टे निष्य दल ना। वि-শ্বপিতা প্রমেশ্র ভাঁহার এই অক্ষয় ভাগ্রার বস্তন্ধরাকে অমজলাদি সমুদায় প্রয়োজনীয় शनार्थ शतिशूर्व कतिया तः श्वियाद्वन, किन्द षामता अककारन निटन्ठके इहेटन रयमन अहे পূর্ণ ভাগুরে পৃথিবী মধ্যে বাদ করিয়াও অনকলাভাবে কুং পিগদার প্রাণ ভাগে করি. मिहे बर्ग धर्म विवरम् एक एक वृत्ता इहेन চিরদিন আমাদিগকে ধর্ম রসাম্বাদনে ব-ঞ্চিত থাকিতে হয়। গতিকৈয়া সমাধানা ক্রিয়া কেবল অভিলাব দ্বারা কোন স্থা-নান্তর প্রাপ্তি ইওয়া বেখন অসম্ভব, ভূমিতে বী জ বপন করিয়া তাছা আকুরিত ও বর্দ্ধিত।

না করিয়া তথ্যক লাতের আশা করা

নেনন অসম্ভব, বিভিত বিধানে সাধন না ক
রিয়া ধর্ম কলাকাজ্যা করাও তত্ত্বপ অস
ন্তব। অসম্ভব ঘিনি অসুর্ব্ধ ধর্ম তত্ত্বর স্পান

কার সংস্পৃত্ব কপে মন্তব্য নামের উপযুক্ত।

হঠতে ইচ্ছা করেন এবং সমাক কপে মা

নব সংলার স্বপাস্থাদনের অভিলাষ রাখেন,

তাল্যমনোবাকো ধর্ম সাধন করিতে তাঁছার

ন্তবান হওয়া উচিত।

করুণাপূর্ণ প্রমেশ্বর আমাদিগের কমস্থিতি ও অ্থ মৌভাগা প্রভৃতি সমুদায় 🛭 সম্পদের কারণ, খাঁচা হইতে আমর। জনক জননী ভ্ৰাডা ভগিনী ও আগ্নীয় স্কুছৎ প্ৰভৃতি ভক্তি ঐতির গাত্র সকল প্রাপ্ত হইয়াছি, এবং দিনি রুপা করিয়া এ সমুদায় বিশ্বকে আনাট ার স্থাবের কারণ করিয়া স্থাটি ফরিয়াড়েন, ব**ছতর লোকে তাঁহাতে প্রীতি** করিতে অবংহলা করিয়া শামনে বিষয় রদে সল্প থাকে এবং সামান্য বিষয় ভো-গর ভারাদিগের মনকে সম্বরে আরুষ্ট করে কিন্ত ভজনা কদাণি এরপ বিবেচনা করা উচিত মঙে, যে জগদীঘরের প্রেমামৃত পানাপেকা জগতের আর কোন বস্তুর অধিক অথ দায়ত এবং আর কোন বিষ-प्रहे मनुषा भटन आंधक आख्वाप मध्यात করিতে পারে। যেমন শক্তিয়ীন বন্ধ পক্ষ বিহল উচ্চতর তরুর ফলাস্বাদনে অন্ধিকা-ती रहेश परमामाना नीवल अरवाहे मकुके ধাকে এবং অধঃস্থায়ী সামান্য ক্রব্যের লা-লিশায় বাস্থাকে, সেই ৰূপ লয়ুচেতা কুজ দ্বী লোকে ঈশ্বরের প্রেমামূত পানে অ-'धिकाती या इंडेशाई मामाना विषय ভোগে ज्**छ थादर এবং সর্বাদা কুদ্র বিষয়েরই** ।র্থনা করে। যে বিধয়া**সক্ত পুরুষ**্স-ষ্ট্রদা বিষয় রুদেই মগ্ন থাকিতে বাঞ্ছা করে ात्र चर्चि आधन **दरन** अकवात **(महे পূर्गानम**् ্রক্ষার অনাস্থাদিত অপূর্যা শ্রীতি রসের অব্যাদ পায় তাহা হ**ইলে কি আর সে** কোন ৰূপেই ভাহা বিশৃত হইতে পারে ? ভাহার নন অবস্থ সেই অমির্বাচনীয় তে-थाशृष्ठ भाग कतिएड है छेगाड देश बर्द्द त

তজ্ঞ্না পৃথিধীর সকল স্থুখ সম্পদ পরি-ত্যাগ করিতেও উদাত হয়। যে বাক্তি কার্য্য দারা বিষয় রস ভোগ, বাক্য দারা ও সেই রস চর্বিভচর্বণ এবং মনেতেও বিষয় রস চিন্তন বাতীত ক্ষণ কালের জন্যও अना कान विषयात अधुनीतन करत ना. বে ব্যক্তি দিবানিশির মধ্যে একবার ভ্রমেন্ত ঈশবের তত্ত্বিসের আলাপ করে না, জী-হার মহিমা চিন্তন পূর্বেক তাঁহাতে একবার মনোভিনিবেশ করেনা এবং বাক্যেতেও একবার ভাঁহার গুণ কীর্ত্তন করে না সে ব্যক্তি কি প্রকারে অনুপ্র ঈশ্বর তত্ত্বের পরিচয় পাইবে, এবং কিরপেই ভাহার তংশ্রেমায়ত পানে প্রবৃত্তি **হ**ইবে**। মনু**-যোর এই ৰূপ প্রকৃতি যে, যে বিষয় সর্ফা-দা অনুশালন করা যায় তাহাই অধিক আ-যক্ত হয় এবং যাহা নিতা নিতা অভ্যাস করা হয় ভাহাতেই বিশেষ অধিকার জন্ম। আমরা বালক কাল হইতে যেন্প বিষয় জ্ঞানের উপদেশ পাই, বিষয় লইয়া অন্ত-শীলন করি এবং বিষয় রসের চিন্তা করি. যদি তদনুসারে জগদীখনের অপূর্য তড়ের জ্ঞান প্রাপ্ত হই এবং তাঁহার তত্ত্বামুশীলন 🛊 कता अजाम दति, जारा इन्टेटन विनक्षन দেখিতে পাই, যে ভাঁহার সেই স্থাতুলা অসামান্য জীতি রসের নিক্ট সামান্য বিষয় সম্পদ কিছুমাত্র বোধ হয় না, উ:-হার প্রেমামৃত পান জনিত অপূর্বে স্থের নিকট বিষয় ভোগ জনিত হুখ, সুখ বলিয়া ই গণ্য হয় না এবং তাঁহার সেই পূর্ণ স্ব-कार्भत निक्षे এজগৎ भमार्थ विनिष्ठाई य-बुकुछ इस ना। এই विषयत यनि काहातं छ সংশর থাকে, তবে তিনি পরীক্ষা **করি**য়া দেখুন, এখনি প্রমাণ পাইবেন। তিনি প্র-তিদিন বথা নিয়মে জগদীবরের তত্ত্বরস আলোচনা করিয়া তাঁহার প্রকৃত পরিচয় লাভ করণ, প্রত্যহ নিয়মিত কপে ঈশ্বরের জ্ঞান শক্তি দয়া প্রীতি প্রভৃতি অনিকচনীর মহিমা সকল চিন্তা করিয়া তাঁহাতে চিন্ত मचिविष्ठे क्यून बदर श्राष्ट्रिक्टन स्वयु बाटम रमरे नर्कमाकि मनाजन भूजनरक रेजमान कटन क्षणांक क्रमन, कहा इंद्रेश कारात

হুদয় স্থিত প্রেমধারা আপনা হইতে উপ্থিত ছইয়া সেই অনেষ্ঠ প্রীতির সাগর জগদী-শ্বরে প্রবাহিত হুইবে এবং তাঁহার মন সেই অনুপম প্রেমরসের আত্মাদ পাইয়া পুনঃ পুনঃ ভাচাই ভোগ করিতে ব্যস্ত হইবে সং-माद्भित भक्त सूथहे छ।हात निक्र मार्मा ৰং প্রতীরমান হইবে এবং পার্থি সকল সম্পদ ভালার নিকট অগ্রাহ্ হইরা উঠি বে। তিনি উক্ত কপে যত প্রমার্থ রদের অ্নুশীলন করিবেন ততই তাঁশার মনে मूजन सूजन हेल्लिय मकन अन्तृष्ठित स्हेर्ड থাকিবে, তিনি যেনগ কথন দেখেন নাই তাহাই দেখিবেন, যে রস কথন আমাদন करतम नारे, जाहातरे आश्वाम श्रांख रहे-বেন এবং যে সুখ কথন ভোগ করেন নাই সেই সূথ উপভোগ করিবেন। তিনি অ **ভরে বেনন শত শত ভূতন** বিষয় প্রতাশন कृतिया नव ऋथित आश्वाम भाई दनन, स्मञ् ৰূপ বাছেতেও এজগৎ তাঁহার নিকট মূতন ৰূপ ধারণ করিয়া ভাঁহাকে মূতন **স্থ** প্র-দান করিবে। তিনি দিবাকরের ভূতন **(माज) मन्तर्भन कतिर्दन, नक्छ मध्यमत** মূতন ভাব নিরীক্ষণ করিবেন, এবং নদী নির্বার বন উপবন গিরি গুহা প্রভৃতি যাব-তীয় পদার্থকে নববেশে শোভিত দেখিবেন। তিনি কোকিলাদি স্থরৰ বিহল কুলের মধুর স্বর অবন করিয়া অপূবন মুখ আস্থা-क्रम कतिरवन अवर ऋशंक कुछम हरात भी-**রভও তাহাকে ফুতনানন্দ প্রদান করি**ো। তিনি জনক জননী আত্মীয় স্বস্থ গণকেও **অভিনৰ ভাবে অবলোকন করিবেন,** এবং **যাবভীয় মন্ত্ৰ**) জাতির সহিত তাঁহার এক মূতন সম্বন্ধ নিবন্ধ হইবে, তিনি ইছ জন্মেই कचारत आख स्ट्रेट्स अवः हेर लात्क বাস করিয়াই লোকান্তর বানের হ্বাস্থ:-षन कतिरवन। िल्छ धरे थकात घरनाक শামানা স্থা ভোগ নিভান্তই যত্ন সাপেক, विना यद्भ मसुरा कथनहे এপ্রকার অপূর্ব হ্বৰ ভোগে অধিকারী হইতে পারেনা।এই ৰূপ হুৰ ভোগ করিতে হইলে, যথা নিয়মে প্রেমময় পবিত পুরুদের পরিচর পাওয়া निवार कर्वता धवः नर्वमा मत्नामत्मा छ।-

हात खलुभम मोन्नर्या ७ खमामामा गार्थ्यो चारलाइना कर्ता फेडिड। शृथिनी मध्या কত স্থানে কত প্রকার স্থানর পদার্থ বিদা-মান রহিয়াছে এবং কত স্থানে কত শত সক্ষাণ সম্পন্ন সাধুপুরুষ বিদমোন রহিয়া-ছেন, किन्नु गावं भे मक्त প्रमार्था मि काहात अ প্রভাক্ষ গোচর না হয়, তাবং কি কোন ন্যক্তিরই ভাষতে প্রীতি বা আদর জন্মে? যখন যে বঃজি ঐ স্পাণুৰ। সৌনদ্ধাসা-ক্ষাহকার করে, তথনি সে ভাষাতে মগ্ন হ- ' ইয়া যায়। অতএৰ বিলক্ষণ প্ৰতিপন্ন হ ইতেড়ে, যে মনুষ্য যে পর্যান্ত জগদীশ্বরের সক্ষেত্রের লাভ করিতে না পারে ভাবৎ কোন ৰূপেই ভাঁছাতে গ্ৰীতি করিতে সম-র্থ হয় না, যে চিত্তে তাঁহার অযুপ্ম তত্ত্ব প্ৰতিভাত নাহয়, সেমন ইইতে কি ৰূপে তাঁহার প্রতি গ্রীতি উপ্তিত হইবে।

পূর্ণ মত। পদার্থের প্রত্যক্ষ লাভ কর। किছू अध्यात बाशात नदह, छेश मसुना মাত্রেরই পক্ষে দন্তব। যে ব্যক্তি যথাবিধি সাধন করে, দেই তাঁছার মাক্ষাৎকার প্রাপ্ত रुहेट्ड मनर्थ इस । हेहां प्र**ात्र हो, या** ख নির্বাচনীয় পরম পুরুষ ইন্দ্রিয় প্রতাক্ষ কোন क ए भनार्थत नाम नरहन, कि छ देश दिन -য়া তিনি যে কোন ৰূপেই আমাদিলের প্র-ত্যক যোগা নত্য, এমন নহে, জড়পদ.থ তিম যে আর কোন প্রকার পরার্থকে সা कारकात कतिहरू शाता याथ ना हैश कान **মতেই স**ক্ত হউডে প**েব না।** মন কারা তাঁহার অসীম জ্ঞান, অনস্ত শক্তি ও অপার করণার বিষয় আমোচনা করিয়া তাঁহার অনুপম ভরে চিত্র স্থাবিষ্ট করি-(लहे उँ।हात माक्यारकात गांच कता गांस, এবং অনায়াদেই তাঁখার গ্রীতি রদের আ-স্থান গ্রন্থ করিয়া মানব জন্মকে সফল ফ-রিতেও সমর্থ হয়, এব্রহ্মাণ্ড ভাঁছার ম-श्मि क्लाटभरे शूर्ग रहेशा तकियाटक, अवर সমন্ত সংসার তাঁছারই প্রেনামৃত ছারা অ-जियिक दिशाह, भागता द्वरण भागक করিরা তাহা পান করিতে ক্রটি করি। তিনি আপন সম্ভান গণকে ভাঁহার প্রীতি-ৰূপ অমূল্য স্থা বিতরণ করিগার জনা উ-

কৈঃব্বে আন্তান করিতেছেন,কিছ আমরা
নেই " মহান নাদের প্রতি বধির হইরা রহিয়াছি "আনরা বদি ভাঁহার আভ্যন্তরিক
মকরান শব্দের প্রতি শ্রুতিপাত করিয়া
তৎপ্র অন্তামন করি, তাহা হইলে আনারাসেই উংহার ভত্ত্রস পান করিয়া আনিবেচনার আন্দল অনুভব করিতে পারি।

স্থা নিধান কাণীখনের অমৃত তত্ত্ব পান করিবার যে সকল পথ আছে, আমা-নিগের এই ব্রাহ্মধর্ম তাহার একটি প্রধান

যাহাতে মনুষা জাতি চিন্ত কেতা গৰিত্ৰ করিয়া **ভাহাতে ইম্বরের প্রী**তির বীজ বপন করিতে পারে এবং দেই বীজ অঙ্রিত ও ধর্ষিত করিয়া তৎকলাস্বাদনে অধিকারী হয়, সেই উদ্দেশেই এই তালা-ধর্মা প্রচারিত হইয়াছে এবং সেই উদ্দে-শেই এই ভালসমাজ সংস্থাপিত হইয়াছে। বাঁহার৷ অরুপম পরমার্থ রস পান করিয়া মনুষা জন্মকে সফল করিতে ইচ্ছা করেন এবং সংসার মধ্যে জগদীশ্বরের গ্রীতি রস প্রচার করিতে অভিনাম রাথেন এবং নিত্য কল্যানকর প্রমার্থ তত্ত্বকে পৃথিবীর নক্স मन्त्रान वर्णका शितिके कारनम। खाञ्चाध-র্মের উল্ভি সাধনে নিয়ত যুর্বান্ছওয়া ও কায়মনোবাকে। ত্রান্সাধকো প্রান্ধা করা তাঁ-হাদিগের নিভান্ত উচিত। কেবল বাকো-তে পরমার্থ তত্ত্বের প্রশংসা করিলেই কিছু ধর্মানুরাগ প্রকাশ পায় না এবং কেবল वाको हाता ७ উहात का निक्ति इस ना, या-হাকে আমরা সকলের সার এবং সকল হ-ইতে মহৎ বলিয়া অঞ্চীকার করি, তাহাতে काम्मदनावादका आस्त्रा कता निजास छेठिछ এবং তাহার প্রতি সকল বিষয় অপেক্ষা অ-ধিক ষত্ন করা কর্ত্তব্য। আমরা যদি উৎক্রফী विषद्य ध्ववदृष्टला कृतिया नर्वना नामाना বিষয়েতে রভ থাকি, তাহা হইলে কি আ-মানিগের কিছুনাত্র মহত্ব থাকে? অতএব যেধন আমাদিগের নিত্য কালের সংস্থান र्ष विषय जामानिर्वत हित्रमिरनेत्र व्यवनयन **এবং যাহা আমাদিগের ইছ পর লোকের** ञ्चरश्च काञ्चन, जरमारद्वव समस्य अने व्यद्भावन তাহাই উপান্তৰ করা আমানিদের উচিত্র নেই বিষয় সহত্রে সংস্থাপিত করা আমা-দিগের কর্তবা, এবং সেই সম্পদ সাধন করাই আমাদিগের বিষয়। "
অনন্তর আযুক্ত সীর্কার্মনার গলেখান

অনন্তর জীযুক্ত সীৰ্কি এইছি নিজেগা-ধ্যাস বে প্রস্তাৰ পাঠ কলিন, তাহা নিজে

প্রকটিত হইল।

र जाहा। अमा कि जानत्मत मिन। त्व দিনের প্রতি লক্ষ্য করিয়া আমরা মাসাবধি মানস রসনার উৎসবরদের স্থাদ এহ ক-রিয়াছি,যে দিনের সমাগম প্রত্যাশার নিরস্ক-त উৎসাহ কাননে বিচরণ করিয়াছি, আ-হলাদ সমীরণ দেবন করিয়াছি, স্থবিমল মুখ পুজের ভ্রাণ লইয়াছি; সেই মহোং-সবের দিন অদ্য উপস্থিত। হে ব্রাহ্মগণ! হে ভ্রাতৃবর্গ ! আমাদিগের পরম আশা নিবন্ধন ব্ৰাহ্মসমাজ অদা অফাবিংশতি বর্ষ বয়ংক্রম অতিক্রম করিয়া এক অভিনব বর্ষে প্রবেশ করিলেন। অতএব তাহার বয়েরদ্ধির সঙ্গে সঙ্গে কত দুর এীর্ছি इहेग़ाह्ह— य উদ্দেশে জন্ম হয় তাহার कि পর্যান্ত সিদ্ধি হইয়াছে, তাহার প্রতি লো-क्ति वि प्रायुट्या बाद्या क्रियाहः, मक-লে এক মত হইয়া একবার সবিশেষ অভি-निद्यम्महकारतः পर्यारलाज्य करा । यनिष्ठ দেখিতে পাও একাল পর্যান্ত মহতী আশা তরুর অমুরূপ ফল লাভ হয় নাই, তথাপি ভোমাদিগের একে বারে ভয়োদ্যম রা গ্রিয়মাণ হওয়া কর্ত্ব্য নছে। কোন মহোচ ভূধরের শিধরভাগে যেমন **অণ্প সময়ে** अनाम्राटन चाद्धारून कता नाधा रूमना, **चनी**-মবৎ প্রতীয়মান সম্ম ভূমওল মধ্যে আভ পরিজনণ করা যেমন সম্ভাবিত হরনা, স্থ-থবা কোন বিদ্যোহযুক্ত বিশৃত্বল রাজ্যে भाषि द्वाशन ७ **मृज्यना दक्षन क**र्ता **ए**-यन कान करमहे खरिलाइ मन्यात्र हर नी, সেই ৰূপ তোমাদিগের অমূপন অসামান্য সমাজের মহান্ উদ্দেশুও অচিরেই সম্পাদ হওয়া সম্ভব পর নহে। বিবেচনা করিয়া मिथिएन তোमारमह उद्योगम रहेवाइहै वा विवश कि ? (जामता वि मशेत्रनी भन्न भारती **भारतहरू कड़िका**ह, ता अनिकारनीय म्बर् क्राइड कारी विजित्तक क्राइड

আত্রয় লইয়াছ, ভাহাতে ভোমাদিগের ক-স্মিন্ কালেও নিরাশ তাপে সম্ভাপিত হইবার সভাবনা নাই। চাতকেরা যেমন ধরাতল পতিত জলপানে পরিতৃপ্ত না হইয়া নীরদ দেয় নীর ধারার প্রতীক্ষা করতঃ অন্ত-রীক এতি প্রতিক্ষণ নিরীক্ষণ করে, অথবা যেমন স্কুলর চির রোগাক্রান্ত, নিয়ত উগধ শেবন দারা অতি মাত্র ব্যাকুলিত চিত্ত মানবেরা, রোগাবদানে বাসনান্তরূপ আহার বিহার করিতে পারিবে মনে করিয়া ৩-ত্যাশাপর থাকে, কিয়া কোন সন্থীন, অন মতল, পশ্লিল পথে পতিত হুইলে পথিকেরা যেমন অতিমাত্র ক্লিট হুইয়া প্রশৃত্ত পরি ওজ মার্গে উত্তীর্ণ হুইতে পারিলে মনের নারে বিশাম সুখ অনুভব করিবে বলিয়া আৰু: করে, অথবা কোন ছডিক দেশবাদী বর্ণজ রা জাণিকা নিজালার্থে দার্য দক্ত তোগ করতঃ, ভাগাক্রমে কথন বস্তুমতা অভিমত क्यमानिनी इंदेरन अङ्गत अभारत (छ)-भारि खेरा भक्त आश्र इहेर्र विश्वश বেদন খাশ্বস্ত থাকে, দেই ক্রপ ভোমরা সংসারের কুটিলচক্রেপতিত থাকিয়া অদ্যে ভাতি সমুল স্বভাতীয় জীব নগের বছনিং कूमरकात विद्यानित्र एत कडक ती कृष्ट क्षेत्रा ছবিবছ বিধম ৰত্ত্তা পুঞ্জ অহরকঃ সহ कतिरनं ७ दर्भान मः दिश्य ममस्य सम्हे मस्त ভাগ হারী রূপানিপু পরম বঞ্র সহ্বাস জনিত মন্তুপম আনন্দ রদের অংকাদন করিতে সমর্থ ২ইবার অবশ্য হানিনী আপা সাগেরে যে সম্বরণ করিতেছ, তালাতে चात मः भव कि ? भवम काकृषिक भवाम-কলাশ্রর বিশ্বাধিপতি তোমাদিগ্রেক ো গরীয়দী প্রকৃতি প্রদান ফরিয়া এই বরা রাজ্যের নিবাদী করিয়াছেন, ভোমরা এই স্থির কল্যাণ ধারা বর্ষুক সমাজে भवक रहेता जाहातरे अञ्चल कार्या अतः ন্ত হইয়াছ। শত শত জুকোধ ছুরাশয় পা মরেরা তোমাদিগকে এই শ্রেরদী প্রবৃত্তি হইতে পরাঙ্মুখ করিবার নিমিত্ত কত ষত্ন পাইয়াছে, কত কুংকজাল বিভার করিয়াছে, কত নিন্দা, কত বিজ্ঞাপ, কত-हे वा कड़े कि धारांग कतियादह, बना यात्र

না; কিন্তু তোমরা প্রবল বাড্যাহত মহী-धरत्रत नाम व्यविष्ठालक शांकिया कश्मभूषारत দৃক্পাত মাত্রও কর নাই, বরং শভ গুল সাহস ও দুড়তর অধ্যবসায় সহকারে সং কম্পিত কার্য্য সাধনে নিয়ত আগ্রহান্থিত ও্যত্নান্রহিয়াছ ৷ ধাহারা নিতাভ অপ প্রাণ ও **তুর্বক** প্রাকৃতি, তাহারটে **উত্ত**র-কালে বিম ঘটিবার আশ্সাস সাহস করিয়া নে।ন শুভকর কাষ্যে প্রবৃত্ত হ্ই**তে** পারে না: আর এরত ত্ইয়াও মহারা বাংঘাত দর্শনে নিরস্ত হয়, তাহ্যদিনলৈ মধ্যম আ क्रुंचि देविया अना कता यात्र : विख चीयातः ভোমালিগের মাথে পুনঃ পুনং বাছেত চ ইয়াও অবিচলিত চিত্তে সমান্তৰ কণ্ডব, ক্ষের মহুষ্ঠান করেন, ভাগালাই ডঙ্ম প্রক্রাত মধ্যে পরিচাণিত হুট্যা থাকেন। একাল প্রাস্থ ভোমাদিগের অনাম উৎসা-ट्रिय गर्यालयाल कल पर्य माई वर्षे, किल अदे एउ मर्काल वाक्षप्रमाध निवस ६-ইবার পুর্কো ডে.মানিগের জন ভাষ বেরূপ বিশ্বপ্র অবস্থায় ছিল, ভাষ্যে নামত বভ-মান অবস্থার ভুলনা করিবে বিস্তর বিভিন্ন-তা লাকিত হছবে, মনেত নাই। ছবকাটে মে সকল অমান্ত্রেলিড ছবিত আচারে ন্য-বহারাদি এছলিও ভিল, ভং**সম্**দাবের **অংশক্ষাক্ত ভিত্তনক সংক্রে**তির সামিতা আন भिरास द्वार এপ্রাত্রিক জান অপিকাশে বিশ্বা বোজাবলার বিশ্বাত BICI STATE TO A TEN OF ক্ষাৰ ভাষা, পাৰ্যভাষ বিধর উপায় হইরাজে ব্রনিচে এই 🔠 পুর্বের এই অ বিম বিশ্ব রাজের একবলে স্থিতি ছিতি ভগ কড়া মইলেন্ড গ্রহ প্রাথের **সভ**় ও স্বৰূপ এটা অধিনাংশেট্ট বেটেগম্য रहेन ना, अकटनहे ज्य 🖫 अति निर्द्धान ভূডি বিশেষকে জনতেও প্রস্থী, প্রাত্ত ও বাহতী অভাব করিত। কিন্তু এফগুণে এ-কম। ব নিয়বন্ধৰ নিধ্বক।র নিতা পুরুষ ব্য-তীত আরু কেই যে এই দু**খ্যম**ন দুতঞ পধের প্রভু হইতে পারে না, তাহা খ-নেকেরই প্রতীতি হইরাছে। পূর্বতিন মানগ भेरवत कल्युविड मानम कर्नाव विश्वक ताका

্য্যান্তিঃ প্রতিভাত হউতেই পারিত ন', ্তি টালালী অলেকানেক নহায়া শ্বিকম্পিত ব্রহ্ম স্বরপের মনন ও অনুধ্যা-্ল অধিকারী ভুইয়াছেন। অধুনা **অনেকা**-াক পুণা জেতে অনুত কলপ্সদ ব্ৰাহ্মদমা- द्रक , नालिड इहेशा छै॰ नाइ वादिस्माक নয় উত্ত বভল বিমল স্থাশা কিশলয়ে ।⊎বির হটতেছে, বিশ্**ম বিষয় চিন্তা জ**-নিত বিচ্ছিত্র অমহারিণী ব্রহ্মানন্দ ছারা নিসমতঃ বিশৃত **হ**ইতেছে এবং কুদংস্কার কপ বিধলতা ধকল জোন মিহিরাতপে জন মশং পরিওক হইয়া যাইতেছে। ভারতে রাজের স্থানে স্থানে বিশেষতঃ বঞ্জ জুমি মধ্যে অন্যাপি অসংখ্যা কুপ্রথা সকল বি-শুলাৰ প্ৰচলিত আছে বটে, কিন্তু ভাছাতে ূ'বের মত আছা আর প্রায়ই দেখিতে পাঞ্জা মায় না। যাখাদের অবিবেক কর্ষি-্ ক্লেষ্ ক্ষেত্রে কুন সার রূপ কল্টক রুক্ষ ∂িমাত বজমূল ছইয়া আছে, যাহার, ফীু-নাংবধি কুনাব**লারে তল্যাত্রচিন্তে প্রতি ব**ু বন্ধ করিলা আসিলাছে, কেবল তা**হ**া-াটি সাধিজালে পতিত হইয়া ভড়ং কৃপ থাকে প্রম পুরুষার্থ সাধক জ্ঞান করিয়া শেলাকে রব রভিয়াতে, নতুরা মালাদের কিছুমাত্র জ্ঞানের উত্তেক্ চট্যাছে, যা-ভারা মাজ্জিত বুদ্ধি সহকারে স্পস্থিতে-চন। করিতে সমর্গ ক্রীরাছে , সভাভা বুর স্থবিমল আলোক দারা বাহাদিগের হুদ্য ভূমি উভরোত্তর উত্তাসিত হুই-তেছে, ভাষারা **আ**র কোন ক্রমেই অ-ভাবের কার্যাহে অভান্ত ধর্ম মূলক ব-লির বেগে করে লা। এক্ষণে অনেকে বিশ্বন নীতিপুণ বিমল জ্ঞানগৰ্ম আশেষ থিধ গ্রন্থাদি পাঠ ছার। চিত্তের মালিনা গতিহার পুরোধ অবি**কল্পিত প্রাক্ত ধর্মোর** মক্লাৰ্ডেশ সমৰ্থ ছইয়াছেন এবং এক-দাত্র চৈত্যাময় পর**ব্রহ্ম স্থকপে স্বয়ং** বি পান করিয়া অন্য ব্যক্তি দিগকেও তাহা-ारे निकार कतिए यद्ग शाहेराज्यम् । अहे रामक ७ व्यनगामा निवस विद्युहना

এই নদন্ত ও অন্যান্য বিষয় বিবেচনা ক্লিয়া দেখিলে অভিনব বিবেকাস্ত্রধারে বিশাদেশীয় অশেষ কুসংক্ষার পাশের বে

উত্তরোত্তর ছেদন হইবার উপক্রম হই-রাছে, ভাষ। অবশ্যই স্বীকার করিতে क्टेर्टर। विमन दुक्ति मकतिक लाक म-কলের সতা ধর্মের আঞার এছণে যেমন অভিরতি হইতেছে, সেই ৰূপ উচার আত্মুসজ্ক ক**ল স্বৰূপ স্থদেশের বি**গহিত আচার পদ্ধতির পরিশোধন ছারা সামাজিক উৎক্র্যবিধানেও যত্নাধিকা হুইতেছে। উ-পানশীল ধর্ম মিহিরের বিমল জ্যোতিঃ যত বিকীণ হইতেছে, ততই জমান্ধকার তি-রে,হিত হইয়া সদ্চার মার্সের প্রকাশ হ্ইডেছে। এফ**াণ যে কোন মতিমান্** বাজি পবিত্র ত্রাহ্মধর্মের কিছুমান মর্ম গ্রহণে সমর্থ হটয়াছেন, তিনি প্রবঞ্চনাকে অবতাই অবমাননা করেন; বিশুক্ত সতা ত্রতাবলয়নে ভাঁহার অবস্থাই বাসনা হই রাছে ; ছম্মবেশের উপরে ঠ:হার অবশ্যই বিঘেষ কলিয়াছে, এবং স্থালিসাবে প রমার্থ সাধন করা যে মনুযোর সর্বাধা ক ভবাইহাউচিয়ে অবশাই বেপেগমা হই-রাছে।এই ৰূপে সাংসারিক। প্রতিরোধী কাপটা অধারলাদি জবনা ভবে সমুখারের ভিরেভোব কইলে লোকের ক-লাবে বৃদ্ধি লাভীত যে কোন মতেই অনিষ্ট খটিবার প্রাথনা নাই, তহে৷ অনেকৈই বুলিটের পারিসাছেন। পুরের জী গণের সংময়ণ প্রথা, প্রচলিত থাকায় দেশে যে কি পৰ্যান্ত অনিষ্ট প্ৰবাহ প্ৰবল ছিল, তাই কাছারো অবিদিত নাই, কিন্তু একণে অনুমরণ দুরে থাকুক বিধবা রমণী গণের পুনঃ পরিণয় হইবারও উপায় ইইয়াছে। ন্যায়ানুগত বিধনা বিবাহ শল্ৰে সঞ্ত ব-লিয়া নিশ্চিত হুইয়াছে এবং বিধবা গ-ৰ্ব্বজ্ঞান্ত পুত্ৰ কৰা। গণের পৈতৃক বিষয় হ্ইবার প্রতিপোষক রাজ নি-য়ম নিবদ্ধ হইয়া ভাষার পথ বিলক্ষণ পরিষ্কৃত করিয়াছে। সৌভাগ্য ক্রমে न-मुनाव राम मर्या এই উवार छत्र भाषिनी क्रित अथारि अन्त्रक्षण इहेटन वाखिनात জ্রণ হত্যাদি ভয়ত্বর অনিউরাশি বিন্ট ই-ইয়া জনসমাজের বে কত দূর মঙ্গলোরতি मञ्जाविक हरेएक भातिरव, दुकिमान् साकि

भाजहे जाशं विज्ञका अनुस्क्रम कतिशाहिन। অন্যান্য বিষয়ক উন্নতির কথা আর কি উল্লেখ করিব, আমাদিগের গৌড়ীর ভাষা विषय अकवात मरनानित्यमं कतिया (मर्थ। পূৰ্বে যবনাদি ভাষা সংশ্রিষ্ট হওয়ার বাঞ্চলা ভাষার যে কি পর্যান্ত জুরবস্থা ছিল, তাহা সকলেই বিশেষ ৰূপে অবগত আছেন। নানা ভাষায় বিক্লত হওলায় উলায় এতাদুশ ক্পান্তর হইয়াছিল, যে উলকে না পার্মী साहिस्तीमा वाक्रवा । कि छुड़े बना बाहे ৰ না। একাল পৰ্যাত প্ৰকৃত সাধুভাবার ভু র্দী শ্রীরান্ধি ও উচিতমত গ্রহার না হওয়ায় **डेक्ट बल विध्य जायाहे पानक शास्त्र मा** ব**ক্ত হট্যাথাকে। বাজকী**য় কাৰা সং-ক্রান্ত যে কোন বিষয়ে বাঙ্গলা ভাষার আ-বভাক করে, তালা প্রায়ট ঐ ক্রণ ভাগায় লিখিত হয়। যাহা ছটক একণে প্রাণীয় স্থললিত ভাষার দিন দিন যদেশ উল্ল-তি চুটতেছে, এবং গণিত সাহিত্যাদি বিবিধ বিদ্যা সংক্রান্ত যে সমস্ত গর্ম এন্ড উলতে অনুবাদির পর্চিত হইভেচে, ভাহাতে অন্মড়েশীয় জন গণের অচিত্রেল ভাগে ধকোর উল্লিভ ল্টবে, স্-नाई। এই সমস্থ বাাপারই ব্রাহ্মধর্মের অনুমোদিত ও শাসভূত৷ এসমুদার সম্পন্ন হইলে বঞ্ডুমি যে ফি कमिर्वहरीय मधुत छ। ति विकृति हहेत. বলিতে পারি না। হে সর্বেচ্ছ পর্মেশ্র! বতকালে আমাদিগের উক্ত মনোর্থ পরি-পূर्ণ कहेरत, जुमिन जान। **হে ব্রাক্ষরণ** ! এই সকল বিষয় পর্যালোচন পৃত্যক এক-বার অবস্থাকন করিয়া দেখ, অনুমাদিলের মহতী আশার উত্তরোত্তর কত প্রকার আ ज्यामध् छैशिञ्चिष इहेरटाइ। धाई मकन আশাস্থল অবলয়ন করিয়া আমর৷ যেৰূপ অন্তুপম আনন্দ সম্ভোগ করিয়া থাকি, অ-দাই তাহা সবিস্তর প্রকাশ করিবার উপ-যুক্ত দিন। আমরা সাধামতে সকলে এই त्रज्बीटल এই मनाज मन्दित नमदिल इ-रेंग्रा এই बंध चानमहे हित्रकान वाक कति- शिक्त, किल भाक्ताम क्षकारनत मरण मदक्के भाभाक्षिभदक दिवासाय सायन

করিতে হইবে: যে পুণ্ডেলাক মংগপুরু-বের প্রসাদে আমাদিগের উক্ত রূপ আন্দ অধিকার क्षेत्रातक, याहात तुक्ति উৎসাহ প্রভাবে িন্তীর্ণ ভারত রাজের মুগান্তর উপস্থিত হুকবার স্তুত্রপাত হুইয়াছে, যিনি এই ত্রা-জ্যসমাজেরপ মহা রুক্ষের রোপণ কর্তা, ছিনি त्य आक्रमानिदात कामायुन्त भीर्पकीरी क-ইয়া ইছার উপযুক্ত **ফল দর্শন করিছে**। शास्त्रम भारी, हेका हे व्यामास्मत अटा छ कि উল্লেখ্য অনুষ্ঠিত কলগণকর ধাৰে কল কার্য্য সমূজ ছার। জন সমাজের ধ্যক্ষণ উ-ন্তি *ছইতে* পাস্থিৰে ও ভাষাস্থ চুৰ্দ্দশাপ*ই* বাজ দেশের যাদৃশা গারিবার্ডন এইবার সাভাবে না আছে,ডিনি জ্ঞাননেত্র দারা ভাষামত্রেই भनएनाकम कहिए हा मध्ये इनेशा स्थ विश्वेष আনন্দ লাভ করিয়াছিলেন, ভাষাতে আর সংশ্ব কি ৈ জিল আন কিছু কাৰ লীতিত ও কিন্তা বাহন লয়কে এলোক্ষ কলিছে। পর্নবিধা যে কতনর প্রিভৃঞ্জ ২৮ তেন, ডালা বর্ণা-ভীত। তিনি করার কালন্ডলে অকালে প ভিত না হইয়া যদি একলে প্ৰাতি সংস্থার। মে বিয়াজ্যাৰ থাজিতেৰ, ভাষা হউলো, ১৮ कारन कामानियां है सामानिक गेरकार्य है । বিছু চিজ **দেখ**া যাইতেছে, আছা ' ব**ছগু**ন র্জি পাইতে গণতে, তালা সন্দেহ নাই। জননি বফ ভূমি। ভূমি লফ এক লে भाग्यार श्रेक विस्तारमञ्ज पानुन स्थाय जान **প্রাপ্ত হ'ও •প্র**ই, ভাষো আড়ে _বাল্ডা হন সার ৰূপ পুলেন বিজেনে বিল্লাণ অনুভব ক বিয়াছে। হাধকা 🥍 ভুলি রামনে নে রার भवाग तथार्थ वाक्तरविदीन श्लेशाङ्घः ভাষণোহন রাভ অন্যামান্য ধীশক্তি প্রভাবে অপার শান্ত শিশ্ব মহন করিয়া ব্রাঞ্চার্কের

কভিয়াহেন,
"ব্ৰহ্ম বাএকনিদমগ্ৰন্থানীৎ নাম্যুৎ কি
গলামীৎ তদিদং সক্ষমন্ত্ৰ্ভ।

বীজ **ব**ৰণ এই যে অমুলা রড়ের উজার

তদের নিত্যং জ্ঞানমনস্কং শিবং প্রচন্ত্রণ নিরবয়বনেকমেরাদ্বিতীয়ং।

নর্মবাপে সর্মনিয়ন্ত্ সর্মান্তর নর্মা বিধ্যার্মশক্তিমহন্ত্র পূর্বসঞ্জিমমিতি , একস্তা তবৈগ্রেগাসন্মা পার্জিকনৈ-হিক্ক শুভাত্তবতি।

তালাম্ শ্ৰীতিক্তম প্ৰিয়কাৰ্য্যদাধনক ত-তুপাদননেৰ '

ক্ষিন কালেও বহার আর প্রভাষীন হ-देवात महातमा नाहै। शुधिती मस्या एव প্রদেশ সভ্তোর সমাদর থাকিবে, যে প্র খন্থ মনুবোরে জন্য সিংহাসনে €বিবে-ক নাজের অধিজান থাকিতে, যে পর্যান্ত অন্য বিশ্বাজ্যের বিলয়দশা উপভিত্না *২ইবে, সে* প্রহান্ত উলা মান্ব প্রকৃতিকে অবভাই বিভূষিত করিবে, সন্দেহ নাই। এক রাণিতে এই অনুপন পরিশ্বন্ধ ধর্মা বীজের সবিশেষ মর্মা প্রকাশ করা ক-লচ সম্বিত নহে; তবে ভোড় গণের পুতুৰল নিবারণার্থে তাহার ভাল তাৎপর্যা नि(फ्रेन्) करा विरुध विद्युष्टनाम किथिए বিৰৱণ ক্রা মাইটেচছে। এই অখিন বি-শুপ্রপঞ্জের উৎপত্তি হইবার পূর্বের একমাত্র সচিদানন্দ পরপ্রকার তিরেকে আর কিড়*ী* ভিল না, ভাঁহারই অনিকাচনীয় ঐশীশাল প্রভাবে সমুদায়ের কৃষ্টি হুইয়াছে, ডিনি বে ফোন পদার্থের স্ঠটি করিয়াছেন, মক্ত-লই বিশ্যার, কিন্তু উ,চার আরু কোন কা লেই দংশ হইবার অস্তি নাই; তিনি কুটস্থ নিতা, তিনি যেমন কালের ব্যাপা নহেন তেমনি দেশেরও বাংগা হইতে প্র বেন মা তিনি সকলেরই বলপক, সকলে-রই নিয়ন্তা, সকলেরই আঞ্রয়, তাঁলার ল-हिमात अभीमा नारे, उछ। रनत अरेत छ। नारे. নিরব্ছিন ক্লাণেই ভাইার সকল কার্যেনে উদ্দেশ্য এবং অধিল চরচের মধ্যে যে কিছু কার্যা নির্বাহ হইতেছে, স্বলই তাঁহার ভানগ্যা, তিনি জ্ঞান স্বৰূপ, অনন্ত স্বৰ-গ, মন্ত্র স্থলপ, ও স্বতন্ত্র, তিনি অব-য়ব শুনা, একমাত্র হৈত বজ্জিত, ভাইার ইদৃশ চিবিক্তপ স্থৰূপের কিছুমাল পরিব-र्खन इटेबाइ मखावना नाहे, जिनि शूर्व घ-৯প, উপনা রহিত। কি ইহকালে কি পর-কালে যে কোন বিষয় আমাদিগের প্রকৃত মঞ্চলের হে জুবলিয়া নির্দারিত হয়,একমাত্র उँहोत्रहे छेपानमा छाहात निमाम । छै।हात्र

উপাসনাভ কোন अकात करू माथा महरू: ভাঁহার প্রতি একান্ত নিশ্চন প্রীতি এবং যে কার্য্য তাঁহার অভিপ্রেত ও প্রের বলিয়া নিশ্চিত হয়, তাহা সম্পন্ন করাই ভাঁহার উপাসনা ৷ ্রতাদৃশ্র অনারাস সাধ্য পরি-শুক্ষ ধর্মতন্ত্র: যে উদার চরিত মহাপুরুষ কর্জুক আবিষ্কৃত হইয়াছে, যাঁহার আন্তরিক প্রবড়ে আমাদিগের সর্ব্ধ প্রকার চরবস্থা শোধনের স্ত্রপাত হইয়াছে, তাঁহাকে কি আমরা কোন কালেও বিশ্বত পারিব? ভাঁহার মৃত্যু জন্য বিলাপ করিতে ও তাঁহার অশেষ ঋণ সমূহের কী-র্ভন করিতে কি আমরা কখনও নিরস্ত হ-ইতে পারিব? কদাত নহে। তাঁহার নি-কটে আমাদিগকে ধাবজ্জীবন অক্লতিম ক্ল-তজতা পাশে অবশ্ৰই আবদ্ধ থাকিতে হ-ইবে। কালক্রমে আমরা হুজাতীয় বিবিধ কুসংকার হইতে মুক্ত হইয়া চিরু সঞ্জাত কলন্ধ নকল নিরাকৃত ক্রিতে সমর্থ ছই-লে, ও সভাতার উচ্চ সীমায় আরোহণ ক-রিয়া নতুষ্য নামের শ্রেক্ত গৌরব রক্ষা করিতে পারিলেও,কোন অনির্দেশ্য স্থাথের অবস্থায় অবস্থিত হাইলেও, রামমোহন রা-মই যে এসমুদায়ের মূলীভূত ইছা অব-শ্রু ভারার করিতে হইবে। তাঁহার মরণোত্র কালে এই ত্রাক্ষমান্ত মিরা-শনীরে নিমগ্ন হইবার উপক্রম হইলে, দেব প্রতিম বে মহোদয় বাজি , আ-পন অকপট সভা প্রিয়তা গুণে ইহার হস্তাবলয়ন হইয়াছিলেন, যিনি অসীম উ-ৎসাহ প্রকাশ পূর্ব্বক ইহার শীরুদ্ধি সাধনে সংকল্প করিরাছিলেন, তিনিও আমাদিগের मुं । अर्थ इंटर क्यां अर्था इंड इंटर পারিবেন না। তাঁহার নিক্টেও আমর। কোন বালে ক্লভজ্তা ঋণে মুক্ত হইতে পারিব না। রামমোহন রায় সমন্ধীয় কীর্ত্তি ক্রাপের সঙ্গে দঙ্গে তাঁহারও অনুপম গুণ ममञ्ज कीर्जिक स्ट्रेर्फ शांकित्व ; 🦙 🚬

হে পরমান্ত্র বিশ্বপতে! তোমার কি
আনির্কাচনীর মহিলা, কি বিচিত্র করণা। কি
ধরাতক কি সভোমধ্র নর্মাত্র তোমার
মহিলারাণ সমন্ত রঞ্জিত রবিষ্টাই ; সর্মান

ত্রই তোমার অনন্ত করণার স্রোভ প্রবা-হিত হইতেছে। আমরা বে निद्ध निज-পাত করি কেবল তোমারই অপার মহি-यात निमर्गन नित्रीका कति, वि मिटक कर्न পাত করি কেবল তোমারই গুণ গান আং-বণ করিতে থাকি, যে কোন ভক্ষণীয় প-দার্থ রসনা সংযুক্ত করি, কেবল তোমারই করণা রদের আত্বাদন পাই। কি স্থামল पृक्तः पन, कि महाक्षण महीयत, कि नामाना দীপ শিখা,কি গ্ৰহ নক্ষত্ৰাদি জ্যোতিঃ পুঞ্জ, সকলই কেবল তোমার অমন্ত শক্তির নি-मर्गन । जुमि উमात काक्नग श्राटण व्यामामि-গের প্রার্থনা করিবার কিছুই অপেকা রাথ নাই, প্রার্থয়িতব্য বিষয় সকল অত্যেই প্রদান করিয়াছ। তবে এই একমাত্র প্রার্থ-না, কুমতির পরামর্শে ভোমাকে প্রীতি ক-রিতে যেন কখনই আমাদিপের বিরতি না इत এবং সংসার মধো কোন কার্যাটি -তোমার প্রিয়, কোন্টি বা অপ্রিয়, তাহার সমাক্তরান লাভে সমর্থ হইয়া আমরা যাবজ্জীবন যেন মনুবোর সমুচিত সাধ্পথে সঞ্রণ করতঃ কুতার্থ হইতে পারি।"

অনন্তর উপাচার্যোরা ব্রহ্মোপাসনার নিদ্দিউ পদ্ধতি পাঠ করিলেন, ত্রাক্ষেরা ঈশ্বরের জ্ঞান ও শক্তি ধ্যান করিলেন এবং কয়েক জন ত্রান্ধ উপাচার্যাদিকের সহিত মিলিড হইয়া সমস্বরে তাঁহার মহিমা প্রতি-পাদক কএকটি ফাতির আর্ডি করিলেন। তৎপরে উপাচার্যা শ্রীযুক্ত আনন্দচন্দ্র বে-দান্তবানীশ ব্রাহ্মধর্মের ক্লার্মি ক্লান্তি তাং-পর্য্যের মহিত ব্যাখ্যা করিলেন এবং বিতীর উপাচার্যা শ্রীযুক্ত বার্ণের বিদ্যালক্ষার যে প্রস্তাব পাঠ করিলেন, তাহা পদ্ধাতে প্রক্রন্তি

"হে বিশ্বপিতা বিশ্বেশ্বর ! তুমিই সমস্ত বিশ্বের স্থাট ছিতি ভঙ্গের মূল কারণ। যথন ভক্তজনের মানস মন্দিরে ডৌবার জ্ঞান প্রভা উদর হয়, তথন এই পরিদৃশ্বমান ভূ-লোক ও সমস্ত ছালোকের চিল্কচমৎকা-রিণী পরম রমণীর শোভা কতই আনন্দের কারণ হয়। হে নাথা। ভোমার জ্ঞান জ্ঞা-বে এ সমস্তই বার্থ ও মহানু জনবেঁশ্ব হৈছু হয়। হে খাদেশীয় ৰাজৰ গণ!
তোমরা দিবরের ইক্ষামত কার্যা, করিদ্বা তাঁহাতে প্রীতি তক্তি সমর্পণ কর,
আর মনুবার কুটিল উপদেশ পথের পথিক হইও না। সংসারামল সভও পুরুষ
সেই অমৃতমরের গুণ বর্ণনাও গুণানোচনা
করিয়া বেমন পরিত্তা হয়েন, এমন আর
কিছুতেই, হন না। সকল স্থাকর জ্ঞানিদ্রের লাভ করিয়া—ছুর্লভ মনুব্য ক্য
প্রাপ্ত হইয়া যে বাজি সেই সর্ব্য ক্থা
দাতার প্রেমে মগ্ন না হয়, সে কি মনুব্য?

যেমন পিতার জীবন পুশ্রদিগের স্থথের নিমিত্ত, বেমন দয়াবানের জীবন অনাথের জন্য, সেই প্রকার ঈশ্বরের সম্ভাব কেন-ল জীবের মঞ্লের নিমিত্ত। মনুষ্য পু-বিবীতে সহস্ৰ সহস্ৰ পুণা কৰ্মানুষ্ঠান করিয়া সে প্রকার স্থুখ লাভ করিতে পারেন না, যাহা তাঁহার প্রেমের প্রেমিক ব্যক্তি লাভ করিয়াছেন। যিনি যে পরিমাণে ভাঁহার নিষ্মানুগত হইয়া চলিবেন, তৎ প্রিমাণে তিনি স্থী হইবেন। তিনি**ই পু**রাতন,তিনি-रे अमानिरशत मुक्तिमान जना मुक्त रुख দকলে মিলিয়া তাঁহারই পদে প্রনিপাত কর। যাঁহার। তাহা ব্যক্তীত অন্যকে উপা-দনা করেন, তাঁহাদিগের জান্তির আর অন্ত नार्डे " त्ननः यमिनभूभागत्यः " त्नात्क घारः উপাসনা করে তাহা ঈশ্বর নয়। সেই এক অন্তিতীয় ঈশ্বরের আশ্রয় ব্যতীত এই বিবিত্র ভয়োস্ভাবক সংসার হইতে উত্তীর্ণ হইবার আর পথ নাই ''নান্যং প্ডা-বিদাতে ২য়নায় " মুক্তির জন্য অন্য আর উপায় নাই। উঁচার স্মরণ জ্রবণ কীর্ত্তন করিলে আল্লা পবিত্র হয়, তাঁহাকে প্রীতি করিলে এবং ভাঁহার ইচ্ছাম্ভ কাহ্য ক-রিলে জাম পথের পথিক হইতে হয় না। আমাদিগের দেহ দারা যে কর্মা নিম্পন্ন হয় ৰা বাক্য স্বারা **ৰংহা উচ্চারিত হর** অথবা মন বারা যাহ৷ আন্দোলিত হয়, উহা আত্ম अमारणत व्यक्तिताथी हहेत्व व्यामता महरक-ই জ্ঞাত হইতে পারি যে ঈশ্বরের আ-জ্ঞাধীন ইইরা চলিতেছি, নতুবা তর্ক দারা উহা বিধারণ করা সহজ ব্যাপার নহে।

এই জগতের অধিকাংশ লোকেই ইতন্ততঃ व्रथा जमन कतिराउटह, किस किमिरे यथा-র্গ প্রতা পদ্বীতে পদার্পণ করিভেছেন, গ্রিসকল প্রণয়ের আস্পদের প্রতি—স-ব**ালর কারণের প্রতি গ্রন্থা ভক্তি প্রীতি** করিয়া **যথাসাধ্য ভাঁছার প্রিয় কার্য্য সা-**্ন করিতেছেন। ভিনিই ধনা, তিনি-ই বধার্থ পুণ্যবান্। একপ মহাত্রা যদি সমস্ত ভূমওল নিজায়ত্ত করিতে পারেন, ভথাপি তিনি ধর্ম পদবী হইতে এক প-দও বিচলিত হয়েন না, তাঁহার সম্প্র ক্রুন্ন সেই মহামহেশ্রের জ্ঞান বারি পাইয়া একে**বারে শীতল হ**ইয়া গিয়াছে। ফিনি স্থান্য পূর্ণচন্ত্রের সভাপ নাশিনী অমূতময়ী চক্রিক। পাইয়া আত্মাকে শীতল করিতেছেন, তিনি কি ইচ্ছা পূকাক অগ্নির প্রথার তাপে দক্ষ হইতে বাসনা করেন। এখানে যাহা মনোহর জ্ঞান হয় ও যাহাতে প্রণয় স্থাপন ক্রা যায় সে সমস্তই অচির ৵টো⊹ পুৰের যে সকল আচামবর্ণনিবিড় হানন কল প্রক্ষা উৎপাদন করিয়া ধরণীর বিপকার ও শোভা সাধন করিয়াছিল এই শাতের আড়ু ছাবে উহা নফী প্রায় হইয়াছে. সকলের আনন্বর্জক বস্তু ঋতুর সমা-গনে যে সকল বিহস্ত দলের স্থমধুর হনিতে অমু-করণ প্রযুক্ত হুইয়া উঠে, তাহাও কিষিণ্থ कारनत कना। वर्षा कानीन स्व नकन স্রোতো বাহা নদী স্বীয় আনন্দ লহুরী লীলা বিস্তার করিয়া মন্ত্রবোর মন কক্ষু পরিভৃপ্ত করিয়াছে ভাহাই বা কোথায়, আর যে সকল প্রশস্ত ক্ষেত্র স্থামবর্ণ নবীন দুর্বাদলে শোভিত ছিল, তাহা আর দেখা যায় না। কি আশুৰ্য্য ! স্বভাবের কতই পরিবর্জন ? ইতি পূর্বের যাহা দেখিয়াছি, উহা আর নয়ন গোচর হয় না। এই শীত ঋতুর **সমা**ঁ গমে সকল বস্তুই শুদ্ধ প্রায়, পৃথিবী যেন জরাজীণবিত্বা প্রাপ্ত হইয়াছেন। এই ৰূপ শত শত পরিবর্ত্তন দেখিয়া অজ্ঞালোক মনে করিয়া থাকে **যে পুনর্কার আর সে স্থরের** কারণ সকল উপস্থিত হইবেক না; কিন্তু उहा वाखविक नम्न, आवात तमहे त्नोजाना বসস্ত আসিয়া সকলকে সুখী করিছে। 'চ-

क्वर भौतिर्खास हम्यानि ह स्थानि ह " मञ्जूरवात कीयमधं के मित्रत्मत ख्यीन. তিনিও কথন ছংখী কখন স্থী, কখন ধনী কখন নিৰ্ধন্; কিছ এই পৃথিবীতেই ঘাঁহা-দিগের আশা ৰক্ষ আছে তাঁহাদিগের মত হত ভাগ্য আর কে আছে; যথন তিনি मानव नौना मन्नत्र कतिरवन, उथन कछ শোচনা ও কত ছংখ করিবেন। তিনি বিবে-চনা করিবেন, যে আমি যে জ্ঞান শিক্ষা क-রিয়াছি, তাহা এই পর্যান্ত, আমি ষে ধ-শাস্থ্রতান করিয়াছি, উহার শেষ হইল, ত্রী, পুক্র, বন্ধু, বান্ধার, ধন, সৌভাগ্য স-কল হইতে এক কালে বঞ্চিত হইলাম. আমার আত্মা একেবারে ধূলিসাৎ হই-ল, এইৰপ তিনি কতই খেদ করিবেন। যিনি ন্যায়বান্ **ঈশ্রের মঙ্গল অভিপ্রা**য়ে বিশাস রাখেন, তিনি মৃত্যু সময়ে ভূতন মূতন আনন্দ লাভের প্রত্যাশায় মহা আ-निकंड रायन, कावन दिनि कादनन शृथिवीव তাবং বস্তুই পরিবর্তনের চুজ্জয়নিরমের অধীন, অতএব তাঁহার আন্নার পরিবর্ত্তন মাত হইল, ইহাতে বিশেষ কুক হইবার বিষয় কি? আর তিনি ইহাও জ্ঞাত আ-ছেন যে পিপাসা থাকিলে জল থাকা যেমন সম্ভব, ক্ষা থাকিলে অন্ন থাকা যেমন সম্ভ-ব, সেইৰূপ সমন্ত ভীবের উল্ভি হইবার যথন বাসনা আছে, আর সে বাসনা ব্থন এখানে পূর্ণ হয় না, তখন ভাঁহার সে বাসনা অবশ্বই এককালে পূর্ণ হইবেক। পিতা কি উপযুক্ত পুত্রকে সমন্ত ধনের অধিকারী না করিয়া ভৃপ্ত হইতে পারেন? আমাদিলের পরম পিতা সর্ব্বদাই আমাদিকে কল্পণা বি-তরণ করিতেছেন, তাচ্ছীল্য না করিলেই আমরা উহা লাভ করিতে সমর্থ হই। <u> শেই পাপাবিদ্ধ জগৰিধাতা আমাদিনের</u> এমত এক সময় উপস্থিত করিবেন, বে সময় ष्पामाहित्वत्र कान जुंका माखि भाहेत्वरू. ধর্মা ভূকা পরিভূপ্ত হইবেক, বে সময় আ-মাদিণের রোগ শোক ছংখ তাপ পলারিত হইবেক, যেলময়ে অথও শাখত পূৰ্ণ স্থা, व नगरम वाशानरकात छेरम-- ध्यम निरमत छदेश क्रमान्न छदमात्रिक स्ट्रेटक बाक्टिन।

হে জগৎ বিধাতঃ! আমি ভোমার धक निरमत्यत कक्रमा कि वर्गन कतिश्रा শেষ করিতে পারি? ভূমি 🗸 জাপাডডঃ ছুঃধ রাশি হইতে বে ৰুত মঞ্চ বিধান कतिरुष्ठ, जाहारे वं। एक बनिरुष्ठ भारत। বিজ্ঞানই তাহার ৰংকিঞ্চিৎ প্রকাশ ক-রিতে পারে।যেখানে অজ্ঞানাক্ষ ব্যক্তি সমস্ত ব্যাপারকে অমঙ্গল পরিপূর্ণ বোধ করেন, দেখানে জ্ঞান চক্ষুং অনৃতময় মঙ্গ-লময় ফল প্রত্যক্ষ করিতে থাকেন। মহা-নিউকর ভীষণ ভূমিকম্প, মহামর্থকর শস্ত হর জল প্লাবন, মহা প্রলয়কারী প্রবল রঞ্জাবাত, আধ্বের গিরির মহানিষ্ট সাধক ज्वीकृष्ठ थाजु श्रवाइ, श्रव अ मावानल, প-পর্বতোপরি অসঙ্গত শীতল তুষার হৃষ্টি ও অসম প্রচণ্ড সূর্যা কিরণ, এই আপাত প-রিতাপী স্বভাব কার্যা হইতে কত মঞ্চলই উৎপন্ন হইতেছে। ভীষণ ভূমি কম্পে ভূমি পরিষ্কৃত হয়. জল প্লাবনে নদী গ্রোতস্থী ও দোষ শূন্যা হয়, প্রবল কঞ্চাবাতে বায়ু পরিশুদ্ধ হয়, আগ্নের গিরি হইতে মহা-নিউকর ধাতুরাশি নিংস্ত হইয়া পর্বত সমূহ উৎপন্ন করে, দাবানল হইতে অগ্নিস-মূহ সমুৎপাদিত হইয়া বায়ু ও মৃত্তিকাকে দোয শূন্য করে, ভূষার রুটি পর্বতোপরি ক্ৰমাগত পতিত হইয়া নদী সমূহ উৎপ-**ন্ন করে**, এবং উহার জল **একেবারে শুস্ক** हहेबा यात्र ना , ' अवश अर्थत स्वर्ग कित्र १० रम्भ विरम्पय अठूत करण कल भ**र्**छानि छे %-পন্ন হইরা লোকের উপকার সাধন করে। ह् मानव! এই सुक्रित घाकरा (कोमन কখনই তোমার বুদ্ধিগম্য নহে। ভূমি যা-হাতে কেবল বিশৃষ্থল প্রভাক্ষ কর তাহার नभून गरे रू ग्यान, जूमि या शास्त्र निश्च प्रमात লেশমাত্রও দর্শন করিতে অসমর্থ, তাহা নি-রম ব্যতীত আর কিছুই নয়। ভূমি যে কা-রণে তোমার স্রফার প্রক্তি দোঘারোপ করিতে প্রবৃত্ত হও, তাহাতে উছোর অনুপম क्रम्यारे अकाम भाषा । जूमि बाहार्क छ-मक्रावात कार्य कान कर, छारा ममस्य क-গতের মঙ্গল বিধান করে। হে ত্রাক্ষ্ণ! স্পানর। বেশের মঙ্গুলের প্রক্রিকা করিয়া

বে শ্রামান্য ছুঃসহুভার এহণ করিয়াছি, ভাষা কভদুর সম্পাদ করিয়াছি? আমা-দিপের প্রথতের কি ব্রাক্ষধর্ম ৰূপ অমৃত্যয় তরু পুষ্প কলে স্থােভিত হইয়াছে। আ-মরা উৎসাহের সহিত কি ধর্ম যুম্মে পাপ-পিশাচীকে পরাজয় করিয়া এবং কুসংস্কার পাশ ছেদন করিয়া আমাদিগের যত্ন ও প-রিশ্রম সার্থক করিয়াছি। আমরা মাতৃ অ-পেক্ষা গুরুতরাজন্ম ভূমি হইতে কি কু-সংকর ৰূপ কণ্টকময়ী লভাসমূলে উন্সু-লিত করিয়াছি। জ্রাতৃ স্বরূপ স্বদেশীর राजि निरात ऋनत्र कृषित इहेर्ड अख्वान তিমির মোচন করিতে কতদূর সমর্থ হই-য়াছি। ধদিও এক্ষণকার স্থশিক্ষিত ব্যক্তি বৃ-ন্দের কুসংস্কার ক্রেমে অপনীত হইতেছে, তথাপি যে অবস্থার প্রতি তাঁহাদিগের লক্ষ তথায় উপনীত হইতে অনম্ভ কালের আ-বশ্চক। হে করুণানিধান বিশ্ববিধাতঃ! কত দিনে এদেশীয় লোকের অজ্ঞান তি-মির মোচন করিবে? কত দিনে ইহাঁর৷ তোমার অভিপ্রেত সুখ সৌভাগ্য লাভ ক-রিবে? ভুমিই সকলের মূল কারণ, অত-এব সকলে এক্য হইয়া ভক্তি পূৰ্ব্বক তো-মাকে প্রণাম করিতেছি এবং অতি বিনীত ভাবে তোমার শূরণাপন্ন হইডেছি। "

অনন্তর এীযুক্ত দিলেন্দ্রনাথ ঠাকুর বে প্রস্তাব পাঠ করেন, তাহা নিমে উদ্ভূত হইল।

"আদ্য আমাদিগের অফাবিংশ সাম্থসরিক ত্রাহ্মসমাজ, অদ্য কি নৌ চাণের
দিবস। হে সর্বান্তর্যামী পরমেশর! অদ্য
তোমার মকল-মর মুর্ভি আমাদিগের সকলের অন্তঃকরণকে আনন্দে পরিপূর্ণ করিতেছে, এবং সম্থসরের মধ্যে যথন যে কিছু
তোমার অভিপ্রায়ানুগত কর্ম করিয়াছি,
তাহার শেষ পুরক্ষার যে তোমার সাক্ষাংলাভ, তাহার নিমিত্তে আমাদিগের সকলের মন উৎস্কক হইতেছে। সম্থসর
কাল স্থ্য যে একাদিক্রমে আকাশ্মার্গে
পরিক্রমণ করিয়া আদিরাছে, চন্দ্রমা যে উদ্য হইয়া মধ্যে মধ্যে কণ্ডহকে পুলকে
পূর্ণ করিয়াছে, মদ্মী নির্কর যে ক্রন্ত ও

मक्तरदर्भ अवाहिल हरेगा अधिनीत मामा म्हाद्रम मक्षत्रम कतित्राष्ट्र धदः भृषिवीदक ভূষিত ও পবিত্রিত করিয়াছে, প্রাণি গণ যে जिल्लाक नामाविध कार्या श्रेष्ठ स्रेष्ठा-ছে, आत अधिक कि किस्त, এই অপরিমেয় সগতের অন্তর্গত সমস্ত বস্তু যে 🔫 🕆 নি-ক্ষিত নিয়ম হইতে অদ্যাপি এক প্রমাণু ও পরিচ্যুত হয় নাই, এ সকল তোমাভিয় আর কাহার ইজার **প্রভাবে দম্পন হইরা**-(हः श्रृशिवी यमिल प्रश्न ह्य, सूर्या ठस्त्र यमिश अपृष्ट रह, नक्क मक्न यमिश नि-দ্ধাণ হয়, তথাপি তোমার অভিপ্রায় অ-নাদি কাল পর্যান্ত অটল ভাবে অবস্থিতি করিবে। ইহা কি তোমার অভিপ্রায় নহে বে যেমন সুর্গা চন্দ্র প্রভৃতি ভোমার অথ-ওনীয় সাচ্চার অনুবর্তী হইয়া অপ্রমাদে তোমার কার্য্য সাধন করিতেছে, সেই ৰূপ আমরাও তোমার প্রদর্শিত পথে চির্দিন বন্ধ থাকিয়া অকুভো**ভয়ে লোক বার্ত্ত**িন-র্বাচকরি। ইহা কি ভোমার অভিপ্রায় नहरू, ख এই লোকাকीर्न ममान मिमात আমরা যে কয়েক ব্যক্তি উপস্থিত আছি, সকলেই একান্তঃকরণ হইয়া ডোমার অধি-ঠান উদ্দেশে স্বস্থ অন্তঃকরণের কবাটযুগপৎ প্রসারিত করি এবং তোমার **অর্চনার নিযুক্ত** থাকিয়া সংসার তরঙ্গের কোলাহল দূরী-কুত করি। তোমাকে বলিতে হয় না, বে আমরা যাহা একান্ত মনে ব্যক্ত করিতেছি, তাহাতে মুহূর্ত্তেক প্রণিধান কর। কারণ इमि महान् , देभि नर्याताशी,पुषि पर्वामी। তোমার কি মঙ্গলময়ী প্রকৃতি, তুমি বায়ুকে প্রেরণ করিতেছ; আলোক প্রভা বিকীর্ণ করিতেছ, আমাদিগের মনকে উন্নত করি-उन्ह, এবং **भागामिरशत्र मरन अञ्चलात अ-**ণরাঙ্গুর নিবেশ করিতেছ, বে ভাহা প্রক্ষু-টিত হইলে মনুষ্যে মনুষ্যে শত্ৰুতা থাকে ना, नर्वतंत्र ऋरधंत्र मक्षात रुप्त, এবং পৃথি-বীতে ও স্বৰ্গেডে কিঞ্চিমাতা বিভিন্নতা বাকে না। যদি কাহারে। মনে কুটিলভূগ্র স্থান না পায়, যদি কাহারো উপর বিব দুটি ना भारक, यनि मकरस व्येका रहेका सन् **जित्र मक्ना गांधान अनुष्य दशः छात्। ब्रह्म**

धरे जनर परिणका सर्वत हान चात का -থার সম্ভব হয়। পৃথিহীর এঅবস্থা কেনা আকাজন করে। যে ব্যক্তি প্রতি দিয়া-ভাগে সংবায় শিলাচের সহিত দারুণ সং-आरम धर्ड रहाम, जिनि क्षि व्यक्ति है জগদীশরের নিক্ট উক্ত অবস্থা হইতে মুক্তি পাইবার প্রার্থনা করেন। যে ম-হাত্মা ন্যায় পথে থাকিয়াও লোকের নিকট হইতে ক্রমাগত নিষ্ঠুর আঘাত প্রাপ্ত হ-য়েন,তিনি ভাবিপূর্ণ অবস্থা সর্বদা নয়নের পৰে আবিষ্কৃত রাধিয়া অলৌকিক ধৈৰ্ম্ব षानिकन भूदाक भविश्वक पाष्टाकतर। ४-র্মানুষ্ঠানে আপনার সমস্ত জীবন সমর্পণ করেম। এই যে উন্নত এবং প্রথর আশার উৎস, হে জগদীশবা ! তাহার ভূমিই এক মাত্র প্রবর্তীয়ভা; অতএব তোমার অচি-ন্ত্ৰীয় মঞ্চল স্বভাব, ভোমার প্ৰগাঢ় প্ৰীতি, ভোমার সর্বলোক পালনী শক্তি, এস-মন্তের উপর নিতাস্ত নির্ভন করিয়া বলি-তেছি, যে তুমি বঙ্গদেশীয় লোকের মন হ-ইতে কপটতা উচ্চলন কর, সকলের মধ্যে পরস্পার যাহাতে ঐক্য নিবন্ধ হয়, তাহার বিধান কর, সকলের মনে ব্রাহ্মসমাজের উন্নতি চেক্টা উদ্দীপন কর এবং সকলের মনে মহাজ্ঞা শ্রীসুক্ত রাজা রামমোহন রায়ের पृष्ठीरस्त असूत्रामी रहेवात श्रद्धां छटन-জিভ কর।"

পরে করেকটাত্রদা সঙ্গীত গীত হইয়া সভাভঙ্গ হইল।

বিজ্ঞাপন

হিতৈবিণী সভা হইতে আগামী বৈশাধ মাসাবিধি প্রতিমাদে ব্রাক্ষধর্ম ও নীতি বিষ-রক পত্র প্রয়োজন মতে ইংরাজী কিয়া বাজ-লা ভাষায় লিখিত হইরা প্রকাশিত হইবে। ভাহার প্রতি থণ্ডের মূল্য এক পরসা মাত্র। উক্ত পত্রের পরিমাণ আট্পেজী করমার অর্দ্ধ করমার স্থানাধিক হইবে। সভ্যাও অন্যান্য মহালর গণের সমীপে নিবেদন বে ভাহারা উক্ত পত্রের লেখা ছারা সাহায় প্র-দানে অন্তর্গুরুত হরেন এবং উইন্দিনের আ-প্রমান প্রাক্তিব্যান করেন।

Cities in limit was men alpeated tree

नका भारतम बान स्ट्रेंस्क कक्राराधिकी तकांत्र आहि। तका अहि बारत और महिकांत्र अस् केल दिलाक्षाका आक्षेत्र अस्त्र



<u>তত্ত্রবোধিনীপ্রতিকা</u>

্ত কৰা একমিলম একাশী দ্বানাৎ কিকাশাসী জিদিদ শৰ্কাশত কং। তদেবনিত্যংক্ষান্মনত শোদাৰ পত কৰিব্ৰয়ন কেনেৰা দিনীয়া প শৰ্কাশাপৰ কিন্তু স্বাধিক্ষা কৰিব সৰ্কাশিক্ষাক বৃষ্ণা গ্ৰম প্ৰতিমানিত। এক স্বাভটিয়া বোপান নথা পাৰ তিকটনতি কৰা কন্ত ৰতি ভব্নি ক্ৰীভিত্ত স্বাভিত্ত স্বাভিত্

ধর্মাশক।

বালক গণকে বিহিত বিধানে ধর্মশিক।
প্রদান করা যে নিড। স্থ আবেশ্রক ও নিতা স্থ
সন্তব, ইতি পূর্কের প্রস্তাবদর দ্বারা তাহ।
এক প্রকার প্রতিপয় হইয়াছে, কিন্তু কি কি
উপায় দ্বারা শিশু গণকে উপযুক্তমত ধর্ম্মশিকা প্রদান করা ঘাইতে পারে, এফাণে
ভাষারই বিষয় বর্ধন করা ঘাইতেছে।

ধর্ম বিষয়ক শিক্ষা প্রদানের নানা প্রকার পথ আছে! তলধ্যে বাকা দারা সজ্পদেশ প্রদান, কার্যা দারা সক্ষান্ত প্রদান, বালক গণকে সংসংসংগ্রে সংস্থাপন ও ভাছাদিগের উৎক্রই বৃদ্ধির পরিচালন ও নিক্রই বৃদ্ধির নিরোধ করণ, ইত্যাদি কাজিপর উপায় অবলম্বন করিলেই তাহাদি গকে এক প্রকার ধর্মশিক্ষা প্রদান করা স্থানায় হয়।

গালক গণের বীর বীর ধারণাশিক্তি অনুসারালক গণের বীর বীর ধারণাশিক্তি অনুসারে, তাহাদিগকে ধর্মতন্ত্রের উপদেশ করা
কর্তব্য। পিতা মাতা বা শিক্ষক বে সময়
কোন বালককে ধর্মতন্ত্রের উপদেশ দেন,
তথকালে তাহাদিগের ইহা বিবেচনা করিয়া বৈধা উভিত কে তাহাদিগের উপদেশ
বার্লা কর্মা সম্মান ক্রেপে বালকের হুল্যালম
হুইতেই কিনা গৈবে সকলে ধর্মোনালন
ব্যাহ্রিক বিশ্বানালী ক্রিকে ক্রেম্বন না হয়,

তন্দারা ভাষাদিগের কিছুমাত্র উপকার দ র্শিবার মন্তাবনা নাই। ক্ষুদ্র শিশুকে ক-ठिन भक्त ७ अम्भक्ते छाद्य छेश्राम्म कः রিলে কেবল উপদেষ্টার পরিশ্রম বিকল इस। एर नकल धर्माभरमभ मिश्विमरश्व মনেতে সলিবিট হয়, তাহা কদাপি নির্থক याग्र ना, यमि ७ भव्दमा के भव्दन छेल्ट्रस्ट्रमञ् जास कल प्रविद्ध शांउसा यस मा, किन् তদ্ৰপ উপদেশ কোন না কোন কালে অ-वश्र हे श्रीय क्या श्रकाम करता। কোন কোন শন্যের বীঙ্গ দীর্ঘকাল ভূমিতে প্রেক্তর থাকিরা এক সময় সঙ্গারত হয়, সেই ৰূপ কোন কোন ধর্মে প্রেদ্ধ বান্দ গ্রেব মনোমধো নিহিত থাকিয়া দীর্ঘ কালের পর यकीम कालाध्यापन करता। निकात तथ्य বালক গ্ৰায়ে সকল উগদেশ বাকোর প্রতি নিতান্ত অবহেলা করে, হয়তো সে সকল কথা এক সময় তাহাদিগের সারণার্চ ১-ইয়া তাহাদিগকে গুরুতর অধর্ম হইতে রকা করিতে পারে। অতএব সর্বদাস-ত্বরে ধর্মোপনেশের কল প্রত্যক্ষ না হই লেও বালক গণের অবস্থারুষায়ী উপদেশ করিতে অবহেলা করা কর্ত্তরা নহে। কোন **अकात उपनक शाहरमहे मिछ अंगरक** नीकि भिका धानान कता विद्यस्त वानक গণকে ধর্মোপদেশ করিবার সময় সংক্ষেপ नीकितात राजकात ना क्षिता काश्रत मुख

বিভার ক্রমে পরিষ্কার করিয়া ব্যাখ্যা করি-ल वित्नव উপकात मर्ग्ना अण्यवस्य भिन्। नगरक कथा कारण कान केशरमण ध-লাল করিলে দে উপদেশ তাহাদিগের বে-मन राज्यत वार्ष क्रम्यक्रम वस, मर्ग्याक्र বাক। সকল তক্রপ হয় না। বালক গণ ইতিহাস প্র**সজে যে সকল উ**-পদেশ অবণ করে, তৎসমুদার তা**হাদিগের** মলেতে বন্ধমূল হইয়া বদে এবং ভাষার ্দাৰ প্রণাও তাহারা অনায়াসে বিচার ক-রিক্তে পারে। কোন বালক কোন অপরাধ ক্তিলে ভজ্জন্য ভাহা**কে কটু ও কৰ্কশ বাক্যে** ভংগনা না করিয়া মিফী বাক্য ছারা সাস্ত্র-না করা উচিত এবং **তাহাকে স্বয়ং সেই** লোবের বিচার করিতে ভার দেওয়া কর্ত্তব্য। কি বালক, কি যুৱা,কি**রদ্ধ,সকল মনুষ্যেরই** এই প্রকৃতি যে যখন পর মুখে কোন প্র-ভার খ্রীয় দোৰ অবণ করে, তথন তাহা-দিগের সেই দেখে পরিহারের ইচ্ছানাহ-ेंद्रा दर्द भरनर्छ यनाना जारदर छेन्द्र হয়: অপরাধি ব্যক্তিকে **তুর্বা**ক্য **প্রয়ো**ন গ করিলে অবশ্বই তাহার ফ্রোধের উদয় হয় এবং মন্ত্ৰা যথন নাগান্ধ হয় তথন কোন ৰূপেই সত্যাসতা ও দোব শুণ স্থির করিতে পারে না। তাহাকে যদি স্থাৎ সেই দোষ বিচার করিবার ভারাপণ করা যায়, তাহা হইলে দে ব্যক্তি কোপযুক্ত না হইয়া প্রশাস্ত মনে আপন দোষ বুঝিতে পারে এবং ভজ্জন্য সাপ্রাধ হইয়া মনে মনে শোচনা করে। মন্ত্র্যা বে দোৰ আপনাতে অতিশয় লঘু দেখে অন্যের পক্ষে ভাহাকে প্তরুতর ৰূপে দেখিতে পায়। অতএর ছাত্র বা পুত্র অপরাধি হইলে নেই অপরাধ খনা ব্যক্তিতে আরোপ করিয়া ভাহাকে বি-গার করিতে দেওয়া ক**র্ত্তন্য, ভারা হইলে** नरएक हे त्म जाशन चश्रतार्थत मसक् जाव বুৰিতে পারে এবং তাছা হইতে সম্যক ৰূপে নিবৃত্ত থাকিতেও চেকী পায়। যথন কোন মনুবা শ্বিকৃত অপরাধ ক্রমং বিভার করিতে প্রবৃত্ত হয়, তথাই ভাষার ফ্রোপারি रिहाके अवृति नकत संस्कृति मा क्रेक्स THE OFFICE CONTRACTOR STATES

জাএত হয়, স্কুজরাং তন্ধায়া ভাষ্ট্রের জনা-য়ানে বহুত অপরাধে প্রবৃদ্ধ করিতে পারা বার এবং তদ্ধারা সনাক্রানেই ভাহাকে কু-क्य रहेरण सिवृष्ट ऋषिष्ठा मरकर्ण्य शहर করান যায়। ছাত্র বা শুক্তাবিদ্ধ শৈপরাধ नमार्गन कतिरव (काश्रभन्नवमः इहेन्। अक এক সময় ছুर्याका **बालांग कतिएक इक्क बढ़**हे, কিন্ত অপরাধি পুত্র বা অপক্রাধি হাতকে কটু বাক্য খারা ভাড়না না করিয়া মিফী কথার উপদেশ এদান করার যে কডগুণ, তাহা লিখিয়া শেষ করা অসাধ্য। কটু वाका बाता व वानकत्क त्कान मर्छ है कु-কর্ম হইতে নিরুত্ত ও সংকর্মে প্রায়ত্ত ক রিতে পারা যায় না, এশাস্ত বচন দ্বারা উ-পদেশ করিয়া তাহাকে অতি সহজেই ধর্ম পথের পথিক করিতে পারা যায়। মাহাতে ধর্মের প্রতি বালক গণের বিশেষ অমুরাগ জ্ঞবে, অবকাশামুসারে তাহা বিশেষ করি-য়া ব্যাখ্যা করা কর্তব্য। প্রতি**দিন যেমন** निर्फिष्ठे निरमाञ्चमादत वालक मिगटक छान শিক্ষা প্রদান না করিলে তাহার৷ কোন ক্রমেই কুতবিদ্য হইতে পারে না, সেই ৰূপ ঞ-তাহ কোন সময় নির্দ্ধিক করিয়া যথা নি-त्रत्य भिश्व मञ्जानत्क धरर्माशरम्य श्रमान না করিলেও সে কোন ক্রমে ধর্মজন্ত লাভ করিতে সমর্থ হয় না। প্রতিদিনই বালক গণকে কোন নির্দ্দিট কালে ধর্মোপদেশ প্রদান করা আবশ্যক নিয়মিত উপদেশ বাংক্যের প্রতি বালক গণের যে প্রকার আন্ধা জন্মে, সামান্য বাক্যের প্রতি কশ্বনত্র নে ब्रुश करन हो। व्हर्नक स्थादनके काम धर्कत অনেক প্রকার প্রদক্ষ হইয়া থাকে এবং यानक गमन याना कत्रहे छाहात क्षणि व्यक्ति-পাত হয়, কিন্তু আদ্ধা পূৰ্বাক যে ব্যক্তি সেই বাংকার প্রতি মনোয়োগ করে এবং यञ्ज भूर्यकः छार्। दकः क्रमदत्रः भातनः करत्रः त्तके जाराज क्या नाइफ पश्चिकाकी स्त्र। बिरुप्तिक **छेला. पन्ना पान्ना आनक अन**्द्र तक्य कर्षाः व्यवनः काम, जानारङहेः वास्त्रिकान 和CNT, PITTINGE, 至3314, ATTENT शक्तिकार विकास नेपकार समिवान ज

कहिबाब नमम " धर्म भागन कंतिरण कन्नान स्य, **এবং अपर्या** भाषा कतिरम् सम्मन घटडे " लेकुण नश्यक्त वाका क्षरज्ञान ना क-রিয়া বে প্রকার ধর্ম পালন দ্বারা বাদৃশ শুভ मश्चिम इहेट भारत अवश्यक्रभ अधनी কর্ম্ম দারা যে প্রকার অস্তুভ উৎপন্ন হইবার मखारमा, जाहा दिएमच कतिया विवत्र क-**ब्रिटन भिन्छ महान निर्फाद स्मर्के উপদেশের** প্রভূতি স্থত হু মনের আদর জন্মে এবং তাহা-রা অবক্সই তদমুষ্ট্রী কার্য্য করিতে চেম্টা তুরে। যে প্রকার ধর্ম কার্য্য অনুষ্ঠান কব্রিয়া যে সকল লোক যে প্রকার স্থ ভোগ করিয়াছে এবং যেৰূপ সংসারের কল্যাণ সাধন করিয়াছে, ও অধার্মিক লোক ধর্ম পথ পরিভ্যাগ করিয়া আপনার ও পৃথিবীর যাদৃশ শশুভ উৎপাদন করি-য়াছে, উপদিষ্ট ছাত্র বা পুত্রদিগকে বিশেষ করিয়া তৎসমুদায়ের নিদর্শন প্রদর্শন করিলে ভাহারা স্থস্পাই ৰূপে ধর্মাধ-শ্বের ভাৎপর্য্যাবধারণ করিতে পারে এবং ইচ্ছ। পূর্বেক ধর্মের শরণাপন হইতে রত হয়। স্থার বস্তর প্রতি **শতঃ** প্রীতি **হও**য়া মনুবে/র যেমন স্বভাবসিদ্ধ, মহৎ বিষয়ে প্রদার উদয় হওয়াও তাদৃশ প্রকৃতি মূলক। উপদেশক গণ যদি সমুচিত বাক্য ছারা স্ব স্ব উপদেশ্য দিণের মনে ধর্মের মহত্ব প্র-ভিতাত করিয়া দিতে পারেন, তাহা হইলে অনায়াদেই তাখারা ধর্মেতে প্রদা করিতে উদাত হয়। পুত্ৰ অথবা ছাত্ৰাদি উপদেশ্ৰ शनटक क्रेश्वत छटबुत छेशटनम कतिवात मयत्र खाद्यांनिरभद्र मिक्के अभिग्रेश्वरत्त्र छ। न শক্তি ও কল্পার বিষয় বিশেষ করিয়া বর্ণনকরা বিধেয়, ভাষা হইলে উহাদিলের মনে আপনা হইতেই ঈশবেতে আলা ভক্তির উদয় হয় এবং তাহা হ**ইলে উ**হারা (चक्। भूर्यक जगनीचतन त्यम मान्ती ভৌগ করিভে বাঞা হয়। এ একাডের नवेंग भेगार्थरे जनावि भूमारयत जनके महिमात्रे नाक व्यामा कत्रिएएट्, अवश স্বাদ্য বস্তুতি ই ভাষার জার শক্তি ও কর-नात किंदू दिशीनामान क्रकान त्रविहारिश, कायराज चाराचा प्रदेश क्यादिक व्यवस्था

कवा क्षानकर योगियाक जेवत उरस्त फ्लारान कतिएक भारतन, अवः छेङ अकात বিহিত উপদেশ দারা উপদিষ্ট ব্যক্তিও ক্রমে ক্রমে ঈশরের অপূর্যতত্ত্ব লাভ ক-রিতে সমর্থ হয়। শিশু গণ যে অবস্থায় পিতা নাতা ও আচার্যোর নিকট হইতে অপরাপর বিষয়ের উপদেশ অবণ করে, পিতা মাতা প্রস্থৃতি যদি তৎকালে স্বীয় ৰ-স্তানদিগকে বিহিত বিধানে ধর্মতত্ত্বের 🖫-भटनम कटत्रन, **जाहा ह**हे**टन कथन ला नमख** उপদেশ निकल इस ना। वालक शंव वर्षम গুরু বাক্য স্থারা অপরাপর যাবতীয় বিশ্ব-য়ের ভাৰ লাভ করিতে সমর্থ হয়, তথন তাহার। যে বাক্য ভার। অবশ্বস্থ ধর্ম জ্ঞান-ও লাভ করিতে পারিবে, তাহা সহজেই 🕮-তিপন হইতেছে ৷

<!-- विटीयटः मक् को ख क्षानि । कृकी-স্তু প্রদর্শন ছারা বালক পণকে বেমন সহ-জে ধর্মা শিক্ষা প্রদান করিতে পারা যার, অন) কোন উপায় ভারাই সেৰূপ পারা যায় না । যাঁহারা বিশেষ বাপে মানব প্রকৃতি व्यात्नाच्या कतिया (पथिशादह्य, वृष्टाताइ বিলক্ষণ জানিয়াছেন, যে কোন ব্যক্তিকে কোন বিষয়ের শিক্ষা দিতে হইলে কার্য্য দার। তাহার দৃষ্টান্ত প্রদর্শন করা কতদ্বর পৰ্যান্ত কৰ্ত্তবা এবং সেই কাৰ্য্যত উপদেশ কি পর্যান্ত ক্রমশালী হইয়া থাকে: বাক্য দারা সহস্রবার উপদেশ করিলে যে উপকার না দৰ্শে, এক দৃষ্টান্ত প্রদর্শন দারা তাহা অনায়াদেই সিদ্ধ হইতে পারে। বিশেষতঃ অস্প্রয়ক্ষ বালকেরা প্রকৃতি সিদ্ধ প্রবৃত্তি হেতু সভতই অনুকরণে রত। বালক গণ স্বাপিতা মাতা শুরু স্কৃৎ এড়তি কর্ছ পক্ষীরদিগকে যে প্রকার বাক্য ক্ষহিতে 🛎-वन करत, (महें बन कथा कहिएक अख्यान করে, যে ৰূপ আচার ব্যবহার করিছে मर्भन करत, त्मरे क्ल आकात वावहात अ-মুষ্ঠান করিতে স্বৈড হয়, এবং জনিড়া কৌ-তুক হাভাচাপ ও অণরাপর রীচ্চি নীন্দির विषदान थाना काम करत, कामा रे जन-লাক কৰিয়া: কাছে । শিক্ষা সাদ্ধা প্ৰভূতি क्षा जन विद्या पहिला कर्या नवा स्वयन

সহজেও বেমন সভুৱে বালক দিগের খ-ভাবে প্রবেশ করে, তাহাদিগের উপদিউ বাক, সমুনার কথনই সেরপ করিতে পারে না। বালক গণ শুরু জনের কা**র্যোর ছ**-মুকরণ ভরিতে গে প্রকার রত হয়, তাহা-দিলের উপদেশানুসারে কার্য্য করিতে ত দ্রপ হয় না। অব্যাজ**চিন্ত শিশু গাঁণ যে** আপ্র আপ্র গুরুজন যুগের **উপদেশ হা**-কনাপেক: অনুষ্ঠিত কাৰ্যোর অধিক সমুগত খ্য় এবং তাহাদিগের **আচরিত কার্য্য যকল** इका पृद्धक अन्ताभ करत, माना शास्त्रहे ভাগর নিদর্শন বিদ্যমান রহিয়াছে। বিচ-कर्ग नाष्ट्रिक करात् नद्रमाधीलन कति जारे গাহার ভূরি ভূরি প্রনাণ প্রত্যক্ষ করিতে পালেন। যে পরিবারের প্রধান পক্ষীয় যো-কেরা সকলে সংক্রিয়ার অমুষ্ঠান,সভা বাকা বাৰহার এবং নাায় দয়া ও প্রীতি ভক্তি প্র-इकि उन्तरेष थाइङि मधुनास्त्रत **असूनी**लन করেন, তংগরিবারত ক্ষুদ্র বালকেরাও তা-हात अभुक्तम कतिहा **मर्दामा (महे क्र** माधु अनुकेष्य हट इह, जात याहाता भवान। অস্থ্রিয়ার অভ্নতার বিষয়ে ব্যব্ধার अनः क्यां विश्वा पष्ठ व्यस्क्रातामि कुट्यहिन मकरणत अञ्चलक इच्छा नामा क्षकांत व्यवसं কর্মা করিয়া থাজে, ভাছাদিগের সন্তান স-স্থৃতি এবং শিষা প্রভৃতি **অন্নকারী** গণঙ খাপন। হইতে উক্ত প্রকার অধ্রান্তান করিতে অভাগে করে। যে পরিবারের প্র-বান প্রকার লোক্দিগের মধ্যে সর্বাদা প্রণয় अ बेकाভाव विवास करत, उरशतिबावक বালক বালিকারাও প্রায় তদনুষায়ী হইয়। মাপনারা পরস্পার প্রণয়ভাবে **সম্বদ্ধ থাকে** এবং যে গৃহছ কর্ত্তু বর্ণের মধ্যে পরস্পর দ্বেৰভাৰ ও অসন্ভাৰ সঞ্চারিত হয়, সে**স্**লে বার্কেরাও প্রায় তদমুৰূপ ভাব ধারুর ক-রে। যে পরিবারের প্রধা**ন বর্গে নিয়ত কলন** বিদ্যার অমুশীলন করিয়াই কালক্ষেপ করে, তত্ত্ব সন্তানগণও সর্বাধা বিদ্যালুদ্ধীলন ক-प्रिय़ रूपी रय, आतः त्यन्ता क**र्फाणित्**शद मर्था हेलिक ऋरंबत माधिक ध्याप्रकातक था। बानक विचारकांत्र हेस्सिन स्ट्राबन केरबार न क तिरुठ (कवी चाम) भाग द्वाप वाका

रश्टम दर मखाँब क्यान दम चांक देनमहाबंका ररेए रे मना भारमत असुक्रान कतिए शांदक । शाम माधाखिक वश्मेकाक कान একটি কুত্ৰ শিশুকৈ একদা পান পাত্ৰে अंग शृरी कतिया मना भीरमंत्री चातूकंत्र क-রিতে দেখা গিয়াছে। যে সকল শর্লমতি শিশু গণ আপন আপন গুরু জনকে স্ক্ मा शत्र हिश्मा ७ शत्र वर्धामि कतियो जी-मापिত हहें ए अठाक करते, जाहाती च च कम्बानुमार्वे जमा शकार्थ श्रेष्ठ श्रेकी या-বোপ করিয়া ভাল ছেদন বা কর্ডন পূর্বক আপনাদিসের জিখাংশা স্থাতিকে চরিতার্থ করে। অকপটচিত্ত শিশু গণ যে আগন আপন গুরু জনের অফুন্ঠিত কার্য্যের অফু-করণ করিতে স্বতই রত হয় এবং অনায়াস পূৰ্বক তাহা অভ্যাস করে, এই ৰূপে তা-হার ভূরি ভূরি প্রমাণ দশীন ষাইভে পারে। অতএব যাহার৷ আপন আপন পুত্র ও চা-ত্রদিগকে ধর্মাশিকা প্রদান করিতে অভি-লায রাখেন, ভাঁহাদিখের অভো দ্বীয় স্ভাব শোধন কর। উচিত। আপনি নিশাল না হইলে কখনই অন্যের মালিন্য দুর করিতে পারা যায় না। যে ব্যক্তি কার্য্য দ্বারা[্] সর্বনা প্রদান করে, ভাহার কুকর্মের শিক্ষা মৌখিক ধর্মোপদেশ স্থারা কি কল দর্শিবে? ধর্মশিকা কেবল মুখভারতি দারা কথন-ই সম্পন্ন হয় না, উহাতে কার্যাামুষ্ঠান ্রমাবশ্যক করে। যে ব্যক্তি শ্বরং সর্বে-দা অধর্মা দেবা করিয়া কেবল কথা ভারা পুত্র ও ছাত্রদিগকে ধর্মান্তুগত করিতে অ-ভিলাষ করে, ভাহার ভুলা অবোধ আর কেইই নাই। ক্ষেত্ৰেতে কণ্টক লভায় বীন্ধ-বপন করিয়া চম্পক পুষ্পাঞাপ্ত হুইবার আশা করা বেমন অসম্ভব ভাহার অভিনাম-ও তক্ৰপ অনঙ্গত। ~ আৰু বাক্তি পথ । এদ-र्भक रहेरण रामन राखाल्लाम रहे, व्यथान्त्रिक लाएक वर्ष निका धमान कतिएक (त उरहा-विक छेन्द्राच एवं बर्देश छेटेन विक्रिया কার্যতঃ নামা অকার ছবিয়া অনুষ্ঠান ক जिमा श्राम कार्ना विका अवस्थातील जन्म-THE WINDSHIP WITH TRANSPORT MENTAL PROF CAMPAN MENTAL

त्व, काहाजा यदि चत्रः भागकूभ हुई-ভে গারোশ্বাস করিতে না পারেন, তাহা रहेल शुक्रानिकह वा किवल कनूवशाल হইতে উদ্ধার করিয়া ধর্মা শিখরের চূড়াব্রড় করিবেন? পুজাদি মেহপাত্র গণ কোন ৰূপে ছক্তিয়ান্বিত না হয়, প্ৰায় স্বস্থুব্য মা-ত্রেরই এই ইচ্ছা, কিন্তু অনেকেই আপন কর্ম দোবে সে ইচ্ছা চরিতার্থ করিতে পারে না। যে সংক্রিয়া সর্বাত্র সন্দর্শ-ন করিবার ইচ্ছা হয়, তাহা সর্বাত্যে আ-পৰাতে দৃষ্টি করা কর্ডব্য এবং যে কুকিয়া অন্যেতে না থাকিবার প্রার্থনা, তাহা অগ্রে আপনা হইতে দূর করা বিধেয়। স্বয়ং স-ৎক্রিয়ার অনুষ্ঠাতা না হইয়াসদমুষ্ঠিত হ-ইতে ইচ্ছা করা নিতাস্ত অনুচিত। ইকু যদি স্বরং মিউরস শুন্য হয়, তবে কি আর সে কথন অন্যকে মিষ্ট করিতে পারে। ব্যক্তি আপনার মঙ্গল সাধন করিতে অক্ষম হয়, তদ্ধারা কি কথন অন্যের কুশল সম্পন্ন হওয়া সম্ভব ? কুপ পরিপূর্ণ না হইলে আর তাহার সলিল দারা অন্যত্র প্লাবিত হয় না। অতএব ঘাঁহার৷ অন্য ব্যক্তিকে ধর্ম শিকা প্রশান করিয়া সংসারের মঙ্গল সাধন করি-তে ব্রতী হন, ভাঁহাদিগের দর্বদা স্বীয় স্থ-ভাবের প্রতি দৃষ্টি রাখা কর্ত্তব্য। জগতে ধর্ম বিস্তার করিবার যে সমস্ত পথ আছে, তন্মধ্যে আপনি ধার্ন্দিক হওয়াই প্রধান পর। আপনি ধর্মামূগত হইলে যে কেবল আপ-नात्रहे कूमल रहा अमन नटर, धर्मा कृष्टी ख প্রদর্শন স্থার। সংসারেরও হিড সাধন করি-তে পারা বার। স্থ্র্যা বেসন শ্বরং জ্যো-তিয়ান্হইয়া অক্ষাওকে ক্যোতিশন করে, ৰাৰ্ষিক ৰাক্তিও সেই মণ স্কীয় ধৰ্ম প্ৰভা খারা দমত সংসারকে ধর্মরাধ্যে রঞ্জিত क्टतः। शतम कानवान् शत्रमधत धर्माध-র্শের বহিত চমৎকার নিরম সংস্থাপন ক রিয়াছেন। আপনি ধর্ম পরের পাছ হ-रेरन ए नहान नहिंछ अवृद्धि छन्त्र-गानी हरेना तर शब चन्त्रम नृस्तक जाकवी सर्वाश रह, शार्किक विष्णत अहे वर्क गावक गूज कांत्र व्यवस्था जातर वर्षकीय क रेका त गुळ क्योगाविक प्रवस्थान कहता

राज्य कृथ्य ভোগ করে, অধার্মিক দিগের **এই চরম मঙ। अन्नेश्वत अनीछ এ**ই नि-রু**ম ব্যঞ্জন করাতে অনেক মনুষ্য জ**গতে পাপ প্ৰৰাহ প্ৰবাহিত করিয়াছে এবং অ निक छेड निश्य भागन कतिया मश्मात्रक ধর্ম ভূষণে বিভূষিতও করিয়াছে। অনেক ধার্ম্মিক লোক শ্বকীর ধর্ম দুউান্ত ছারা পুত্রাদিকে ধর্মামুগত করিয়া অমৃত কল ভোগ করিতেছেন, এবং অনেক অ্ধার্শ্মিক মরুষ্য আপন অসদৃ কীন্ত স্বারা স্ভান স-ভতিকেও অসৎপর্ণামী করিয়া বিষম বিষে অর্জরীভূত হইতেছে। যে বিখ্যাও ও প্রতিপন্ন পুরুষের প্রতিবছ জনে দৃষ্টি-পাত করিয়া কাল্যাপন করে, এবং বছ জনে যাহার অনুকরণ করিতে রত হয়,পাপ কৰ্মা হইতে তাহাকে সৰ্ফাদা সতক্ৰধাকা উচিত। তাহার পাপাচার বছব্যক্তির পাপ ক্রিয়ার কারণ হয় এবং তাহার পুণা-जरू **जरुश (लाक्टक जरूठ** कन क्षेत्रान করে। যাহা হউক মানব প্রকৃতি আলো-চনা করিলে প্রভীতি হয়, যে ধর্মানৃষ্ঠান वाता नम् छोछ धानर्गन कता धर्मा विका প্রদানের এক প্রধান উপায়।

৩।--ভৃতীয়তঃ সংসর্গ। বালক গণকে विक्छ विधारन धर्मानिका शामान कत्रगार्ध मक् छोत्र क्षत्रभीन कदा समन धानकक, সেইৰূপ তাহাদিগকে সভত সংসংগ্ৰ রক্ষা করাও নিতান্ত বিষেয়। সংসর্চের ক্ৰম দুকীন্ত অপেকা কুন নহে, দৃষ্টাত ষারা বালক গণ যেমন অনায়াসে উত্তমাধম অবস্থা প্ৰাপ্ত হয়, সংসৰ্গ হেডুও সেই ৰূপ তাহাদিগের উন্নতি ও তুর্গতি ঘটিয়া থাকে। দক্ষ হেতু মূর্খ পণ্ডিভ হয়, পণ্ডিভ হাজিও পাণ্ডিত্য খুনা হয়,ধাৰ্দ্মিক অধাৰ্দ্মিক হয়,ছং-শীল স্থশীল হয় এবং সরল ব্যক্তিও কপটভা অভ্যাস করে ও কপট লোকেও সরলতা প্রাপ্ত হয়। যে বালকের **স্বভাবতঃ মুখ্যু** রুদ্ধি সকল উত্তেজিত থাকে,তাহাকেও ক্রমাগত সংস্-কে ব্লকা করিয়া সংখ্যাবাপন্ন করা বার এবং परनक नश्यकार विभिन्न नामू वानकर कृषश्चर्त निकार्देशा मना शकि आश्च रका जन गरिका देखा वानव काम दहे

्डरे प्रसुधा मान धारीश हरेटट थाएक। কি বালক, কি যুবা, কি বৃদ্ধ, কেছই সভত একাকী কাল্যাপন করিয়া স্থী হয় না। युवा वाकि रामन वाशन नमवत्रक स्क्र অবের সংসর্গ ভিন্ন থাকিতে পারে না, বাল-কেরাভ সেইৰূপ এক বয়ক্ষ বালকের সাহিত ুলী লাদি লা করিয়াও স্থির থাকিতে **সমর্থ** ध्य म'। कि **स्व एवं क अक का बालक मर्क्स**ग বা অধিক কাল একত্রে বাদ করে, **তম্মধ্যে** বাদ অধিকাংশ শিশুর মন্দ স্বভাব ও কুচ-রির হল, ভাহা হ**ইলে অবশিক বালকেরও** আপ্ৰা হইতে ম**ন্দ স্বভাব হইয়া উঠে।** मक्रो निर्भव मध्य अधिकाश्रम य कार्या অনুষ্ঠান বা যে ভাব ধারণ করে. অবশিষ্ট ভাগ ভাষা না করিয়া কোন মতেই ক্ষাস্ত থাকিতে পারে না। সহবাসী স্থহাৎ দি-গের অনুরোধ বিষম অনুরোধ, সে **অনু**-রোধ বোধ হয় কেহই হেলন করিতে সমর্থ হয় না, সভত সহচর বান্ধাবের সভেষাথে প্রায় কোন ক্রিয়াই অকর্ত্তবা থাকে गा। স-হুচর দিগের সড়েশ জন্য কোন সময় ন্যায়

কৃত হয় এবং অপরাপর সকল সাধু কর্মাই পরিবভিত হইরা ধাকে। সহবাসী **স্তহ্**ৎ দিগের অসভ্যেষ এমনি অসম্ যে লোকে তক্ষন। আর কর্তব্যাকর্তব্যের প্রতি কিছু-মাত্র দৃষ্টিপাত করিতে পারে না। মন্ত্রধ্য বরং ধর্ম পদনী পরিত্যাগ করিতে প্রস্তুত হয়, ভথাপি সহবাসী দিগের অসত্তোষ ও অ-নাদর সহু করিতে সাহস করে না। যে কাৰ্য্যের প্ৰতি নিভান্ত অপ্ৰকৃত্তি ও স্বতি-শয় অ্ঞ্জ: থাকে যে কার্য্যকে অতিশ্র গ হিত ও নিন্দিত বলিয়া বোধ হয়, বাহার चञ्चक्रीन करा पृद्ध शाकुक, नाम व्यवन मार्क মনেতে ঘূণা ও লজ্জার উদয় হয়, সম্বয়ক সঙ্গি দিগের অমুরোধে অনেক ব্যক্তিত-জ্ঞপ কাপারেও রভ হইতে বাধা হর। সতত সহবাসী বর্গের সহিত সমভাবংপর হ্**ইবার প্রত্যাশা**র **কড স্থাল যালক যে** ক্রে দারুণ ছুক্রিজের আধার ছুইরা উ টিরাছে: ভাষার কর্মনা করা করিন। সূথি। বীতে বত প্রাধানক ক্রাণীল সমুখ্য বিদ্যা

मान, चाटक, दर्शपरक छात्राक स्रविकाश्म हे नक क्रमा मके रहेबाटक । अथस्य गारात मना পাৰের প্রতি নিভাস্ত বেব থাকে, এক বিচ্ছু স্থরাম্পর্ক করাকে বে পাপ কর্ম বলিয়া জানে, কিছুদিন পানাসক্ত পুরুষ हि-গের সংসর্গ করিলে সেও এক জন প্রসি-দ মদাপায়ী হইয়া উঠে। যে স্কুট্রিত সাধু পুরুষকে পরস্তী মাতৃবৎ বোধ করি-তে দেখাগিয়াছে, লম্পটের দক্ষ দোবে নেই ব্যক্তিই আবার বি**ধ্যাত প্রদারাস**-क बिला मृग् रहेशाहा धहे बल म-क्रमारिय व्यानक मछ। उछावलशी मसूत्रा মিথা কথা অভ্যাস করিয়াছে, অনেক সাধু वाक्ति कोर्या दृष्टि अञान कतियादह, अवः **ज्यानक महानीन लाटक उन्नकत निर्कृत** হইরা উঠিরাছে। ফলতঃ সঞ্চ হেভু যে কত সাধু স্বভাব মনুষ্য কত প্রকার অ-ধর্মে লিপ্ত হইয়াছে, এবং কত অসাধু লোক সাধুত। লাভ করিয়াছে, তাহা সম্যক ৰূপে वास्क कता स्वमाधा नरह। यथन नः मर्श कल মনুষ্যের উত্তমাধম ঘটনের প্রতি একপ এবল কারণ বলিয়া প্রতীয়মান হইতেছে, তথন ঋজু স্বভাব বালক গণকে ধর্ম শিক্ষা-श्रमान कंत्रत्वत कना त्य नर्वमा छेखमा-ধম সঙ্গের বিচার করা নিতান্ত আবশ্যক তাহাতে আর সন্দেহকি? সরল **স্বভা**ব শিশুগণ আপন সঙ্গী দিগের মধ্যে দশক্তন-কে যে কার্য্য করিতে দেখে ভাহার দো-বালোব বিচার না করিয়াই আপনা হইতে তাহার অনুষ্ঠান আরম্ভ করে। যদিও কোন বালকের প্রকৃতি উত্তম হয়, এবং সহসা কোন কুকর্ম অনুষ্ঠান করিতে নাহ্ন করে না, সক্লাবে ভাহারও স্বভাব ক্রমে मनिम रहेशा छिट्ठे. तिहे मिख श्रथमण्डः क-বল নজীর অনুরোধে নিতান্ত অনিচ্ছা পূৰ্বক বে কাৰ্য্য অমুষ্ঠান করে, জনাগত দর্শন ও অনুষ্ঠান স্বারা উক্ত কার্যা,ভাহার विमक्त अकार रहेता यात्र अवर शक्तिनाटम के কুমিনা। পরিত্যার করা ভাষার কঠিন रहेश। छेट । करे बर्ग भरतक अकृष्टि निष केवम यागक सुगरक श्रीकृती वापन करेगा THE PERSON STREET, CHAR

चनाकारम अध्य रहे. त्मरे बल नत्मत् छत्। चिं तर्कर उद्घम रहे एउ नमर्थ रत। সহবাসী মিত্র গণের প্রণয় ও সমাদর বেম-ন প্রার্থনীয়, ভাহাদিগের অনাদর ও অঞ্চলা-ও তক্রপ অসহ। যে দলের মধ্যে কোন অপকর্ম অনুষ্ঠিত হইলে সমুদার মিত্র এক-ত্রিত হইয়া দেই কুকন্মী বা কুকন্মীদিগকে তিরক্ষার ও ভূর্থনা করে, সে স্থলে কুজি-য়ার অনুষ্ঠান হওয়াই অসম্ভব। সহবাসী মিত্র দিগের অনাদর ও ভর্থননা কুকন্মী বালকের পক্ষে যেমন থাকুতর দণ্ড, গুরু জ-নের শাসন ও শিক্ষকের ভাড়না সে ৰূপ নহে। প্রণয় পরিচিত সহবাসী গণ কুকর্মা দে**ধীও সংকর্মানুরাগী হইলে লোকে**র অধর্ম ঘটনা হওয়া নিতান্ত অসম্ভব। অত-धव वालक शंगरक धर्म शिका श्रमान कत-गार्थ তाहानिगरक मर्यामा मर्मरभर्ग तका করা সর্বতোভাবে বিধেয়। যাহাতে বা-লক গণের কুদংসর্গ ঘটনানা হয়, পিতা মাতার সেই দিকে সর্বাদা দৃষ্টি রাখা উ-চিত এবং বাহাতে বিদ্যালয়েও কোন মন্দ সঞ্ঘটিতে না পারে, শিক্ষক গণের তা-হার প্রতি **সর্বভোভাবে মনোযো**গ করা কর্তবা।

৪া—চতুর্থতঃ উৎক্লফ বৃদ্ধির পরিচালন ও निक्रके दुखित निर्ताध कर्न। य नकन নিক্লফ বৃত্তি উত্তেজিত হইলে মনুষা অ-ধার্মিক হয় এবং যে সমস্ত উৎক্লট প্রবৃত্তি বলবতী হইলে মন্ত্র্য ধর্ম্ম শিখরে আরো-হণ করিতে পারে, অতি শৈশবাবস্থা হই-তেই তাহাদিগের কার্য্য আরম্ভ হয় এবং অতি শিশু কালেই ভাহাদিগের হ্রাস রুদ্ধি প্রকাশ পায়, অতএব ঐ সময় হইতেই বালক গণকে ধর্ম শিক্ষা প্রদান করিতে আরম্ভ করা আবশ্যক। উক্ত সময় ধর্ম শিক্ষা প্রদান করিতে আরম্ভ করিলে অভি দহ-**ब्लाइ वालक भगरक धर्मा भरधत भर्धिक** করা মাইতে পারে। শৈশবাবস্থা হইতে बांशात्र निक्षके दुखि नक्ल উट्डिक्कि इहेग्रा चारेरम् अवर जेरह के श्रद्धि चतिन निष्टक হর্মতে খাতে, পরিবাবে তাহাকে উপ্রে-जाकि बाढा धर्च लिका बारान करा प्रकार

কঠিন। অভএৰ ৰাহাতে বালকের কুঞ-वृष्डि नकन निरस्क रहेश पर्य श्रव्हित अधीन इस अवर छेरक्क हिन्ह नकन करम थावना इहेन्ना निक्क वृ**खि मकनटक**्ष्था-निय़त्म চালन क्रिएड পात्त, क्ष्यम रहेएडरे পিতা মাতার শেই দিকে দৃটি রাখা ক-र्खना। य दृष्टि श्रीय विषय आश्र रहेशा সর্বাদ চরিতার্থ হয়, তাহাই সমধিক তে-कविनी रस जवर यारा पूनः पूनः निजान হয়, সে বৃত্তির আর কিছুমাত্র তেজ থাকে না। যে বালকের স্বাভাবিক ক্রোধাধিকা থাকে, ভাহাকে যদি সর্বাদা ক্লোধোৎপাদক বিষয় হইতে পৃথক্ বাখা যায় এবং সভত প্রশাস্ত ভাবের উপদেশ দেওয়া যায়,তাহা হ-हेटल व्यवश्रहे पिटन पिटन छ। होत ब्बनाधतुर्जि বলহীনা হইতে থাকে, এবং যাহার লোভ বুজি প্রবলা বোধ হয়, তাহাকেও ক্রমাগত লোভ জনক দ্ব্যাদি না দশাইয়া যাহাতে লোভের উদয় না হয় এমত ভাবে রাখিলে অবশ্ব ক্রমে তাহার ঐ রুদ্তি নিরুত্ত হইতে খাকে। এই ৰূপ নিয়ম অবলয়ন করিয়া नकल প্রকার .নিরুষ্ট রুত্তিকেই নিরোধ ক-রিতে পারা যায় এবং সমস্ত ধর্মা প্রবৃত্তিরই তেজ সাধন করা যাইতে পারে! বিষয় পাইলেই মনোগত বৃত্তি জাগ্রত হয় এবং বিষয়ের অভাব হইলেই রুত্তিরও কিঞ্ছি তেজ নফ হয়। অতএব যে বৃদ্ধিকে নিরে! ধ করা আবশ্যক এবং যে বালকের যে হৃতি স্বভাবতঃ উত্তেজিত থাকায় তাহার অধর্ম ঘটনার সম্ভাবনা, তাহার সম্থে সেই ব্রক্তি উত্তেজক বিষয় উপস্থিত করা অস্ত্র-চিত এবং তাহাকে তদ্ধপ অবস্থাতেও রক্ষা করা অবিধি। আর পু্দ্রাদির যে **সকল** ধর্ম প্রবৃত্তি তেজস্বিনী হইলে তাহাদি-পের পুণ্য সঞ্চার ও পাপ ত্যাগ হওয়া সহজ হয়, উলিখিত উপায় ছারা পুনঃ পুনঃ মেই দকল প্রবৃত্তিকে মার্জিত ও বর্দ্ধিত করা আৰম্ভক। এই ৰূপ নিয়ম অবলয়ন করি-য়া প্ৰথম কাল হুইতে বালক গণকে ধৰ্ম শিকা প্রদান করিতে আরম্ভ করিলে, তা-হারিবের বর্ণার্থ লৌহ সম্পুট অপেকাও কুক তম্ব আনে মক্তিত ব্যুক্তবং কলিব কালেও

কোন বাসে বিমন্ট বা অপজ্জ কইতে পারে मा। যে বিজ্ঞাও বিচক্ষণ পিতা বালকের বিদ্যারত্ত কাল পর্যান্ত প্রতীক্ষা না করিয়া প্রথম হইতেই উলিখিত প্রকার নিয়মে তা-হাকে ধর্মশিকা প্রদান করিতে আরম্ভ ক-রেন, তাঁহার সন্তানাদি অনারাসেই পবিত্র ধর্ম গেদতে বিচরণ করিতে পারে এবং তিনি স্বরংও চরমে পরম ফল ভোগ করে-কোন বালকই এক কালে উত্তম বা অধন হয় না, কেহ ক্রমাগত নিক্লফ বুদ্ভি দকলের অনুগত কার্য্য করিয়া অধঃপতন थां थ रत्र. कर रा मध्यत् जित्र रभवजी ह-ইয়া ক্রমে ক্রমে উন্নতাবস্থায় উপনীত হয়। অতএব প্ৰথমকাল হইতেই যদি পিতা মাতা ও শিক্ষক গণ বালকের মনোরভির প্রতি দৃষ্টি রাখিয়া তাহাদিগকে যথাযোগ্য ৰূপে পরিচালিত করেন, তাহা হইলে প্রথম হই তেই বালকের অধর্ম সংঘটন হইবার মু-লোৎপাটিত হইয়া যায়, এবং প্রথমাবধিই ধর্ম বীজের সংস্থান হইতে থাকে। ৰালক गर्गंत्र मरनातुं जि नकन अथमाविध यिमिरक অবনত হয় পরিণামে আর সেদিক হইতে রন্তির পুনরাবর্ত্তন হওয়া অতি কঠিন। অত-এৰ প্ৰথম হইতেই শিশু দিগের মনোরুত্তি শকল বৰ্ণাযোগ্য ৰূপে পরিচালিত করিয়া ধর্মা শিকা প্রদান করিতে আরম্ভ করা বিধেয়।

বালক গণের ধর্মাশিকা সম্পাদনের যে সকল মহৎ মহৎ উপায় আছে, যদিও তৎসমুদার এন্থলে সম্পূর্ণ রূপে উক্ত হইল
না, তথাপি বালকের পিতা মাতা ও শিক্ষক
গণ যদি পূর্বোল্লিখিত কএকটি উপায় অবলয়ন করিয়া যথানিয়মে তাহাদিগকে শিক্ষা
প্রদান করেন বোধ হয় তাহা হইলেও কিক্ষিৎ উপকার দর্শিতে পারে।

পাপকর্মে মানব প্রকৃতির কি কি অনিষ্ট হইতেপারে, তাহার সংক্ষেপ বিবরণ ! ১০০ সংখ্যা প্রকার ১০০ সুক্ষার ক্ষার্থ । কা বিশারভাগ, কি মুক্ষার ক্ষার্থ । এই জনীক বিশারক্ষা অসম প্রক্রেক্ষার

হইবে না, বেখানে ভরম্মর পাল বুক্তের উৎপত্তি হর নাই ও তাহার গরলম্ম কলের আন্বাদ কাহারে৷ অনুভূত হয়নাই; ভ্রাপি উহার সমূলে উন্স্লম করিতে কেহই हेक्श वा सञ्ज करत मा,वेत्रश करनटक हे " शान কর্ম আমাদিনের স্বাভাবিক ধর্ম " এই মর্ম ভেদী বিষম শংস্কার ৰূপ সলিল সেকে উহার বৰ্জনেই অনবরত রত রহিয়াছে ! মন্তুব্যের পকে खम धमार पिण्ड हथश दिहू वि-िक कथा नरह ; किन्ह डेल कथ अस्त्रत सम আর কিছুতেই প্রত্যক্ষ হইবার নহে। পু-থিবীতে পাপ যে একটি মনের ভাবমাত্র প-দার্থ, অমুষ্ঠান ভারাই তাহার বিলকণ পরিচয় পাওয়া যাইতেছে; কিন্তু আশ্চ র্যোর বিবয় এই, যাহার নাম শুনিলে শক্ষিত ও কম্পিত হওয়া উচিত, যাহা অপেকা অ-ধিক অনিষ্টকর ও শোকাবছ ব্যাগার আর কিছুতেই হইতে পারে না, তাহাই স্বভাব-সিন্ধ ও অত্যাবশ্যক কার্য্য বলিয়া লোকের নিকটে প্রতীয়মান হইতেছে। এমন কি পাপাচরণে লোকে এতদূর আদর ও আ-গ্রহ প্রকাশ করে যেন মনে করে উহা क्रभिष्टत्रव অভিপ্রায়সিদ্ধ। যদি প্রাদি প্রাণী বর্গের বর্তমান অব-স্থার পরিবর্ত্তন হয়, যদি জন্ত মাত্রই আপন আপন প্রকৃতি নির্দ্দিষ্ট প্রবৃত্তি নি-চয়ের অবাধা হইয়া উঠে, यनि সকলেই স্ব স্বভাবনিদ্ধ সংস্কার সমূহের বৈ-পরীতো বদৃচ্ছাচরণে প্রবৃত্ত হয়, ভাহা रहेल नकन लाकिहे এक काल विश्वशा वि**चे रव्न नत्मर मारे, किन्छ द्**किनीवी म-মুবাদিগকে ক্দয়ন্থিত বিবেকের অমৃত্নয় শাসন অবহেলন পূর্বক কুমার্গধাবিনী জ্ঞা-चित्र व्यरताहरन अस्त्रामकूरण निमध ७ वि-বনতর চ্ছাতপঙ্কে অনবরত বিলুপিত হ-ইতে দেখিয়াও কেহই বিশ্বিত বা পরিতা-পাৰিত হয় না। বিশ্বিত হওরা দুরে ধা-কুক ঐ ৰল পশুৰং ব্যবহারকে প্রভৃতিবিদ্ধ পুরুষার্থ সাধক জ্ঞাব করিয়া, সকলে সুম্ধি-क व्यक्ति । पुत्रकी जनरमाने कहिता शास्त्र। क्ष केन बारक महानद्यका क्रियारियाहीत व्याप अकारी अवस्थाती अवस्थाता

আত্রর স্থানি প্রতিষ্ঠা লোকের চুংগ্র পারাবার উচ্ছবিত করিতেছে, কত কত কপটধর্মি স্থার্থপরায়ণ পাষণ্ডের! সরল ক্ষম মানবদিগকে অধর্মজালে আবজ্ব করতঃ বিশুদ্ধ বর্দ্ধা পদবীতে সঞ্চরণ জনিত অনুপম স্থান্থাদে বঞ্চিত করিতেছে, কত কত দত্ম মূর্জিখারি পামরেরা জঘণা অর্জ্জনস্থা ও অত্যাকাজ্জা চরিতার্থত। নিমিত্ত করাল স্থার্থপরতা গর্পরে দলাকে বলিদান করিয়া স্কাতি শোণিত প্রবাহে বস্তুস্কারাকে মাবিত করিতেছে,কে বলিতে পারে? কিন্তু তাহারাই আবার ক্লতী, ধার্ম্মিক ও শৌর্যান্থানী বলিয়া সর্বত্ত সম্মান ভাজন, পূজনীয় ও খ্যাত্যাপম হইতেছে।

" এই ধরাতলই আমাদিগের সূথ চুঃপ **ভোগের স্থল, পরকালে স্থুখ চুঃখের** ভোগ সমস্ত অলীকমাত্র, অতএব যে কোন উ-পারে হউক্ ঐহিক সুখ লাভের চেক্টা করাই সর্বতোভাবে কর্ত্রা; আর কাছাকে আপন শুভাশুভ কর্মোর পরিচয় দিতে হইবে ? শ ইত্যাকার ভয়-স্ব মতের অন্তবর্তী হইয়াই পাপশীল মরেরা আপন আপন অভীষ্ট চুষ্কত ক-म्बिश्व इहेश थारक, मस्मक नाहे। किछ। থাঁছারা সদ্বিচার সহকারে উক্তরূপ সাংঘা-তিক মতের প্রভূত অনিফ কল প্রত্যক করিয়া উহা নিতাস্তই ভ্রান্তি মূলক বলিয়া , প্রতীতি করেন, তাহার: উক্ত মনুষা কুল নং**হারের কারণ স্বরুপ দর্বানর্থকর মতে**র निताकतरा अवश्र काय्मरमावाका महका-त यन कतिया थारकन छ। हात है आ लाहनार्थ পাপকর্মে মানব প্রকৃতির কি কি ঘনিষ্ট হইতে পারে, জাহার সংক্ষিপ্ত বিবরণ বণন করা যাইতেছে।

ছ্ছর্মের অবস্থঞ্জাবী ফল রোগ, শোক, পরিতাপ, নির্ফেদ, আত্মগানি প্রভৃতি বছবিধ যন্ত্রণার ব্যাপার সমস্ত যথন স্টরাচর প্রত্যক্ষ গোচর হইতেছে, তথন ইছা
অসংকাচে বলা যাইতে পারে বে, বৈ সকল সম্ভত্ত উৎকৃত স্থারাগে আমাদিনের মনোর্জা রঞ্জিত রহিয়াছে, অবৈশ্রিক্তে প্রভৃত্তি পে স্কল্ই প্রভা-

খুনা ও কলকিত হইরা বার। প্রথমতঃ আ-মাদিগের প্রকৃতির একটি প্রধান অলভার স্বৰূপ যে যুক্তি, পাপকৰ্ম ছারা তাহা প্র-ভূত ৰোবাভিভ হয়। পাপকারী ব্যক্তির: প্রগাঢ় জমাজকারে অন্ধীভূত হংরার স্বপ্র-শক্ত যুক্তিমার্গ হইতে যে পদে পদে পরি-ভ্ৰম্ভ হইতে থাকে, তাহার ভূরি ভূরি উ দাহরণ প্রাপ্ত হওয়া 'যার। লোক মধ্যে যে কোন বিষয়ে বাহার সমাকু অভিরতি থাকে, তাহা বিবেক **সহ**ক্ত**যুক্তিযুক্ত** বলিয়া সপ্রমাণ করিবার নিমিন্ত সে অ বশ্চই প্রয়াস পায় সন্দেহ নাই, কিন্তু বিবেচনা করিয়া দেখি**লে উক্ত ৰূপ অবথা** প্রয়াদ ছারা অনেক স্থলেই যুক্তির বিশুদ্ধ স্বৰূপে জুরপনেয় কলঙ্ক মাত্র অর্পিত হইয়: থাকে: বাহারা অভান্ত রূপণ স্বভাব ৰশ-তঃ প্রতি নিয়তই কেবল ক্ষতি লাভের প্রতি দুটি রাখিতে তৎপর থাকে, স্থতরাং অর্থ **শাপেক অত্যাবশুক বিষয়ের বায়েও সক্ষ** চিত বা প্রাপ্তমুখ হইয়া আত্মবঞ্চনা জ নিত অশেষবিধ ক্লেশ ভোগকরে,তাহারাও তাদৃশ প্রত্যক্ষ বিরুদ্ধ বাবহারের প্রতি যুক্তি প্রদর্শন করিতে ত্টি করে নাঃ লক্ষালেশ খুনা যে সমস্ত ছুর্কে ক্ফি মন্ত্র-गा मिन्नरक, ज्यालन डेलयुङ डेलस्ट बट স্থায় অসম্ভট হইয়া সংগাড়ীত উচ্চপদ ব অসদৃশ সম্মান লাভে ব্যাহিড ও ছুর্ভি সন্ধি দারা স্বাভীক্ট সংধনে শবিশেষ যত্নবান্ **হউতে স**চরাচর দুফি করা যায়, ভাহারাও স্ব স্থ চেফিড বিষয়ে কোন না কোন সুক্তি প্রয়োগ করিয়। খাকে। এমন কি বাছার: নিরুফী রুক্তি নিচয়ের দাস হইয়া সাধুক্ষন বিগহিত অফিঞিৎকর ইন্দ্রির স্কুথ সড়োগে চিরকাল ব্যাসক্ত থাকে, তাহাদিগকেও কু-টবুকি সকলিত অযুক্ত অসণ্যুক্তি ভারা আপন আপন অভিন্বিত ক্যণা ব্যা-পার সকলের নির্দোধত্ব প্রতিপাদন ও ব-**ছ**তর গুণবর্ণনকরিতে দুটি করা বার। এই ৰূপে লোক প্রবৃত্তির প্রালোচন ষারা সবিশেষ অনুসন্ধান করিয়া দেখিলে অশেব মঞ্জমনী যুক্তির যে কতদুর ভূপতি ইইডেছে, ভাষা বিশক্ষণ বোধগন্য হইতে

পারে 🕫 আহাবা । যে নহীয়নী পাতির 🤚 প্ৰভাবে জীব স্থাীয় মুখ্য ভাৎপৰ্য্য দিছ হইতেছে, ঘাহাতে অধিকার থাকার মন্ত্র-या कांजि कीव ध्यक्त दिलाया व्यवधात्रिक ও নিশীত হইরাছে, বাহা বারা সদসংপ-ৰাৰ্থ সকলের প্ৰকৃত ৰূপে **প্ৰভেদ হও**-য়াই উচিত : অধিক কি বলিব, বাহার 🤒-সাহাযো তুরবগাছ অথিল সং-সার তত্ত্বে মর্মান্নবোধে ও বিশ্ব সম্রাটে-র অভিপ্রেত অনন্ত জ্ঞান পূর্ণ প্রাকৃতিক जिश्मावित्र यथार्थ छान लाए नमर्थ रहेश পরম পুরুষার্থ প্রাপ্ত হওয়া বিধেয়, সেই বিশ্বসঞ্চারিণী যুক্তিকে বিষয়াসক্ত পাপা-চারি নরাধম গণের স্বার্থসাধনের উপবো-গী, এবং **অ**যুক্ত ব্যাপারে প্রযুক্ত দে-থিয়া ধার্মিক লোক দিগের অন্তঃকর-ণে কতেই ক্লেশ অমুভূত হয়। উম্বস্ত লোকেরা কোন অসকত কথার উল্লেখ বা अञ्चाकाविक हाञ्चकत व्याभारतत अञ्चलीन করিয়া তাহার পরিশোধন নিষিত্ত বেমন পুর্ব্বাপেক্ষা অধিকতর অসঙ্গত বছবিধ প্র-লাপ বাক্য প্রলোগ ও অস্কৃত ব্যবহারে এ-বুদ্ধ হইয়া থাকে, পাপকারী ব্যক্তিরাও সেই ৰূপ অমানবোচিত নিতাম্ব যুক্তি বি-হয় কার্যোর অনুষ্ঠান করিয়া লোক স-निर्फाषी बिलाया भग इहेरात. ৰন্য যতদুর পারে কৃট্যুক্তি দারা আ-পন অমুষ্ঠিত ছুক্কর্মের কর্তব্যতা প্রতি-পাদনে সমুৎস্কুক ছইয়া কেবল শেষ উপহাসের আম্পন হর। কলতঃ বস্তু বিচার পরাঙ্মুখ অজ্ঞান লোক দিগের পাপ কর্ম্মে যে অবলীলা ক্রমে অরুত্তি क्हेब्रा थाकि छाहारक खेनारमबहे अकि चारका राजम बनिएड इट्टरा छान अर्थ বিহুংখিনী যে বিষয়রী প্রবৃত্তির বশস্ক रहेल बसूया कात्र बसूया बॉलकारे शतिन-निङ रहेएक शारत मा, वाहात स्वतावर्विनी मर्गाराजिमी फेरलकमात्र किरमास्थि इरेस হিচেপ্তিক চিকা ও ওড়াগুড় বিবেচনার বঞ্চিত হুট্ডে হয়, ভাহাকে উমাদ সক্ষা-नाः बन्निया जात् कि तमा बाबेटक श्रीवह है

बर्गकात्रकाः वारिन्सः

-1849W 1-

देवनन्त्राज्ञ करिएला, अन्त्रक्षत्र अन्तर्भः ন্ ভার্ম রোম পর্যশ হইয়া মিংহামলো-পবিত রাজা রুবপর্কার নিষ্ট উপস্থিত হ-ইলেন এবং কোন কথার সক্ষোত্ত না করিয়া কহিতে লাগিলেন, নহারাজ ৷ অথশ্র ফ-রিলে তৎকণাৎ ভাষার কল ভোগ হয় না, किन्छ त्र हे जनमाँ जयरंगरव जग्नकाम कर्जा-কে সমূলে নিশাত করে। যদি কর্তা স্থারং ফল ভোগ না করিয়া যায়, ভাহার পুত্র ঋ-থবা পৌত্রদিগকৈ ভাছায় ফল ভোগ করি-তে হয়। বৃহস্পতিভনর কচ আমার মি-কট অধারণ করিতে আসিরাছিল, লে খ-र्षास्त्र, माधुनील ७ सृक्षायाभन्नात्रनः, दुवि व्यना দারা তাহার প্রাণ বধ করিয়াছিলে। আদি আবার ভোষার কন্যা আমার দেবয়ানীর প্রাণ বধান্দেশে ভাহাকে অস্ত্রকুপে নিকে-প করিয়াছিল। এই সকল অভ্যাচার 🤟 ইতে আইল হইয়াছে, এজনা আমি ভো-মাদিগকে পরিত্যাগ করিয়া ঘাইব। অতংপর আর তোমার রাজ্যে যাস করিতে পারিষ ন। আমি যে সকল কথা বলি, ভূমি সে ममुनाइरक विशा वार्या छेवछ अमान व-লিয়া বোধ কর, নডুবা ভূমি তদমুসারে আ-পনার শোষ সংশোধনে যতুবান না হইয়া তদ্বিরে উপেকা প্রদর্শন কেন কর। বুধ-পর্বা কহিলেন, হে ভৃত্তকুল ভিলক ! আ-মি কখন ভোমাকে অধার্মিক বা মিখ্যা-वानी माम कति ना, नक्क धार्मिक বতাবাদী জ্ঞান করিয়া থাকি। আমি কথন ভোমার প্রতি অবজ্ঞা প্রহর্ণন করি না, অভএব কোপ করিও না, আমার প্রতি প্রসঙ্গ । যদি তুসি আমাদিখকে পরি-উচাল কারিয়া আন্তর স্বাস্ত, তাহা হইলৈ थागारमत चात्र रकान गठि गाहे, चामहा गाभन्न भटर्व बार्डिंग कन्नित्र । चक्र कहिएसँब, क्षामता नमुद्रकारे ब्यादन कत्त, वा किंग्नि-जबाजरे कहान कर, कार्यात करान हर ना-नागर क मर्पनाम क्लेसाइट कार्ग कार्प THE WHOLV WISH W. MICHAEL WITH অত্যন্ত ভালবারি। ব্রহশানি বেমন ইলের পরন্ত সবার আনি তেমনি তোমার। বলি আমাকে তোমার। বলি আমাকে তোমার রাজের রাখিতে ইক্ষা থাকে, তালা বইলে দেবরানীগত প্রাণ। ব্রহ্মর্থনা কহিলেন, বে তার্গব! অস্থার দিগের বালা কিছু সম্পত্তি আছে, এবং ভুমগুলে গো, অব, ছ-তী প্রভৃতি বালা কিছু আছে, ভূমি সে সমুন্দারের ও আমার কিছু আছে, ভূমি সে সমুন্দারের ও আমার কিছু আছে, ভ্যানি অস্থানিক প্রকার করিতে পারি। ক্রিয়ার করিতে পারি।

অস্তরেশ্বর ব্রবপর্কা শুক্রাচার্য্যের এই কথা ক্ষেনিয়া তৎক্ষণাৎ ভাষা অঙ্গীকার ক विद्यान अवः अकाष्ट्रांची (मवश्रानीत नि-कर्ট शिया अहे मक्त कथा कानाहरलन। দেবয়ানী কহিলেন, কে পিড়া! ভমি বে অ-সুর্দিধের সমস্ত সম্পত্তির অধীশর একথা রাজা স্বয়ং বলক, নতবা আমার প্রতায় জ चिर्वक ना । अच्छ दाकारक अहे कथा का-नार्रेट्सन। उथन द्रष्मश्री (मनवानीटक क-হিলেন, ছে মধুর হাসিনি! তোমার যে কোন বস্তুতে অভিলাম থাকে বল, বদি ভাছা চুল্ভ হয়, তথাপি আমি ভোমাকে ভা**হা** अमान कतित। छश्च (मन्यानी कहिरसन আমার অভিলাম এই, শর্মিষ্ঠা সহস্র অস্তুর কনা সহিত আমার দানী হউক: আমি পরিবীতা হইয়া ধর্মন পতি গ্রে যাইব, ড খন তাহাকে আমার সমভিব্যাহারে তথায় ষাইতে হইবেক। ব্ৰণকা পাৰ্যৱৰ্তিনী পরিকারিকারে করিবেন, ভূমি যাও শীভ্র मर्थिकारक फ्रांकिश चान । तिरुवानी त्य कामना क्षिप्राट्यन, काहा मुख्यापन कुतुक । थाकी ताकात मारकम शारेका मर्थिकात नि-करें भिन्न कहिन, डाकक्टना ! बाक्स की-मादक माम्बान कतिहादक्रन, फेंग्सब निकड़े রুল, এবং পিছে মুবের মঞ্চল কর ; শুক্রা-हाजा स्वरक्षातीत अञ्चरकार्थ अञ्चरकृत श-जिल्हाण कविता वारेटहरूम : दन्त्रशानीरक কাৰে কৰিবার নিমিক আজি তেমাকে कारात व्यक्तियाम्बन वर्षा यहिए। हरे-्राक्त वर्षिक्षा करिएमन्, इव इत कामना क

ब्रिटनक, चानि अधेवरे पाला कतिव ; चात्र দেবরাদীকে প্রদান করিবার নিনিজে গুরুও ৰাহা কৰিবেন, ভাহাও করিতে প্রস্তুত আছি। শামার দোবে ওক ও দেবরানী যে স্কল্পর কুল ত্যাপ করিয়া বান, তালা কদাচ ক্রিড नदर। धरे बनिया नर्निका निविकास आ-ৰঢ়া ও দাসী সহজ্ঞে পরিবৃতা হুইয়া সম্বন্ধ অন্তঃপুর হইতে নির্গতা হইলেন, এবং দেব-বানীর নিকটে উপস্থিত হইয়া কহিলেন, শুরু কনো! আমি দাসী সহজ্র সহিত তোমার দাসী হইয়া পরিচর্য্যা করিব এবং পাণিএছণের পর যুখন তুমি পতি গুছে যা ইবে আমি দাসী ভাবে তোমার সমভিবা: शादत शाहेव। उथन (पदशानी कहिस्सन: वाधि চাটুकाর ও ভিক্তের कना, कृषि ताक कना। श्रेश कि काल आयात मानी श-हेरव। नर्निकी कहिलान, लिज कूलाइ वि-भव উপস্থিত इक्ट्रेल (व क्यांब **छ**शास তাহার প্রতিবিধান করিতে হয়, এলনা তোমার দাদী হইলাম। এই ক্রপে শব্দিল मानौ ভाव श्रीकात कतिता (मवशानी शि-তাকে কহিলেন, তাত! আমি অক্টোধ হ-ইয়াছি, এক্ষণে নগরে প্রবেশ করিভেছি এখন বুকিলাম ডোমার বিদ্যাবল ও বিক্ষা-मबल प्राप्ता कनाः कर्डक এই न्नू উক্ত ও দানৰ রাজ কর্ত্ত্ক পুজিত হইয়া শুক্র इन्देश्यान श्रुत श्रादन क्तित्तन।

४) क्राथन्त ।

বৈশাপায়ন কছিলেন, মহারাজ ! এই ঘটনার বছদিন পরে বরবর্ণিনী দেবরানী বিহার বাসনায় পুনর্বারে মেই বনে গমন করিয়াছিলেন। রুষপর্বা ভনয়া শর্মিষ্ঠাও দি সহজ্ঞ লাসী সমভিবাহারে বনে প্রবিষ্ঠ হইয়া মনের উলাসে ইক্ছায়ুরপ বিহার করিছে লালিলেন। করলে উলাদিত মনে মধুপান এবং স্থান কলাও অপরাপর বছবিধ জক্ষাম্বরা আহার করিতে ক্রিতে ক্রিনিজন।

এই বসরে রাজা ব্যাদি মুগরায় নির্মান্ত ক্রানিবেলন তিনি মুগের অনুসরণে স্বানে নানে ক্রানা করিয়া লাতিশয় প্রান্ত ও পিলা নাম একাত অভিভূত ক্র্যা জলাবেদণ ক্র নিক্তে করিতে ব্যুক্তানামে পুদ্রায় কেই প্রদেশই উপস্থিত হইলেন। দেখিলেন,
নর্মালকার ভূষিতা স্থানা কন্যা সকল চারিদিকে বেক্টন করিয়া পরিচারিকাভাবে
অবস্থিতি করিয়া আছে, মধ্যদেশে এক মৃভূগানিনী সর্বাক্ষ্মন্দরী কামিনী উপবিষ্টা
আছেন, এবং আর এক পরম স্থন্দরী কানিনী তাঁগার চরণ স্থানা করিতৈছে।

রাজা তাহাদিগের সমীপবভী হট্রা দেবরানীকে সংসাধন করিয়া কৃহিলেন স্থ-করি! ভোমাদিগকে দেপিয়া আমার অ-কঃকরণে অভাত কৌতুহল জিয়াছে, সেই কৌতুহল পরতক্ত হইয়া জিজাসা করিছে-চি, ভূমিও ডোমার এই সহচরী কে? এবং তোমরা কোন্ বংশে জয় গ্রহণ করিয়াছ? দেবঘানী কহিলেন, আমি সবিশেষ সমুদায় নিবেদন করিডেছি প্রবণ করুন। আমি দিতাকুল গুরু গুরুলাচার্যোর কর্মা, আমার নাম দেবয়ানী; আর আমার এই সহচরী দৈতারত রুপপ্রবার করা; আমি ঘেথানে যাই, ইনি পরিচালিকাভাবে আমার সম-ভিবাহারে যান:

स्रुनिश दिनेषुकाविक इहेश बाला कि দ্রাসা করিলেন, স্থব্দরি ! ইনি রাজকন্যা হ-ইয়া কি কারণে তোমার পরিচারিকা হই-য়াছেন, জানিবার নিমিত্ত আমার অত্যন্ত को छुर्न क गिएड छ । अन्यं शारी कि रिलम, रमकुश विधि नियंत्रक चारक मकनरकंडे छ-তদমুযায়ী কর্ম করিছে হয়; রাজকনার যে দাদীভাবে আমার পরিচ্যা! করা তাহাও দৈৰ্মিকলৈ মূলক; অত্এব **নে**্বিৰয়ে আপনি আর কোন কথা উত্থাপন করিবেন না ৷ আপনকার রাজার ন্যায় আকার প্র-কার ও বেশ ভূষা দেখিতেছি, এবং আপনি পণ্ডিতের নাায় বচন বিন্যাস করিভেছেন, অতএব বলুন আপনি কে, কাহার পুঞ্জ, ও কোথা হইতে আগমন করিতেছেন? যথাতি কহিলেন, আমি বাল্যকালে ব্ৰহ্মচৰ্য্য कतिशा मारङ्गाभाक ममल द्या प्रधायन क-রিয়াছি: আমি স্বরং রাজা, রাজবংশে জন্ম গ্রহণ করিয়াছি, আমার নাম ধ্যাতি। (नरशामी कहिएलन, बहातीक। जानि त्यान कार्यााणनरक करे शासरन वासम्ब করিরাছেন, জানিতে বালনিক্টি জালা কহলেন, হে কল্যানি। আমি হুগরা উল্লেখ্য রাজধানী হুইছে নির্মাত হুই, পরিল্লেষ রাজধানী হুইছে নির্মাত হুই, পরিল্লেষ রাজধানী ছুইছে কিন্তুত হুইরা জল্পানাভিলাকে এই প্রবেশে উপস্থিত হুই রাছিলাম; পিপাসা লান্তি করিরাছি। জনক ক্ষণ ভোমাদিগের সহিত্য কথোপকধন করিলাম একণে অনুমতি কর, প্রস্থান করি। তথন দেবরানী কহিলেন, মহারাজ! আমি এই তুই সইক্র লানী ও আমার প্রিচারিণী শর্মিটা সহিত ভোমার অধীন হুইলাম; অতঃপর ভুমি আমার স্থা ও আমী হুইলে, দেবতারা ভোমার মঙ্কল কর্মন।

দেবয়ানীর অকন্মাৎ এই ৰূপ আত্ম স্-মপ্ৰ অবলোকন করিয়া যথাতি সক্ষচিত হইয়া কহিলেন, হে শুক্র তনরে ! ভূমি ভা-ল বিবেচনা করিতেছনা। আমি ভোমার বোগা পাত্র নহি। ভূমি ব্রাহ্মণ কন্যা, আমি ফত্রিয় জাতি ; তোমার পিতা কথনই আ-মাকে কন্যা দান করিতে সম্মত হইবেন না ! जनसामी कहित्तन, महाबाख! ক্ষত্রিয় উভয়ের পরস্পর যেরূপ সম্বল তাহাতে আমার পাণিএছণ করা তোমার পক্ষে বিশেষ দুষণাবহ নহে; বি-শেষতঃ তুমি স্থাং ঋষি ও ঋষির পুতা; আ-ভএব তুমি অসম্ভচিতচিত্তে আমার পাণি গ্রহণ কর। রাজা ক**হিলেন, দেবয়ানী!** চা-রিবর্ট এক ব্রহ্মার অঞ্চ হইতে উদ্ভব হ-ইয়াছে যথার্থ বটে; কিন্তু সকল বর্ণেরই ধর্ম ও আচার পৃথক্ পৃথক্। এই চারি ব-র্ণের মধ্যে ব্রাহ্মণ সর্বচ্চেষ্ঠ। আমি হীনবর্ণ হইয়া কি ৰূপে শ্ৰেষ্ঠ বৰ্ণের কন্যা পরিঞ্ছ করিতে পারি। তথন দেবয়ানী ক*হিলেন*. মহারাজ ! পুর্ব্বাপর এই প্রথা প্রচলিত হ-ইয়া আসিতেছে, পাণি গ্রহণ করিলেই বি-বাহ ক্রিয়া সম্পন্ন হয়। মনে করিয়া দেখু, यश्कारन आमि कृत्र शिष्ठ हिनाम, कृषि আমার পাণি এহণ করিয়াছিলে; এই ঋন্য একৰে আমি তোমাকে পতিত্বে বরণ করি-८७ कि । स्टब्स विद्युष्टमा क्षित्रकारमञ्जू विद्युष्टि ভূমি আমার পঞ্জি ইইয়াছ; এক্ষণে অন্য ব্যক্তি थातं भागात शाहि त्यानं ऋविष्यं मान

ত্রবোধিনী পত্রিকার চতুর্থ করের তৃতীয় ভাগের নির্ঘণ্ট পত্র।

| >७६ नः श्री | र्श्व |) ११३ मन्या | 70 |
|--|-------------|--|------------|
| नेचरत्र महिमा-धावरगिखन | 1 | भर्मा भिक्ता | 90 |
| মরু ভূমি ও মরীতিক। | 1 | क्यादशादकर्वविधान | ₹.% |
| মহাভারত—আদিপর্ব ৭৪ অধ্যায় | 1 | केश्वरतत महिसा | ډ. |
| ১৬৬ সংখ্যা | | বিপুরা ত্রাক্ষান শক্ষের স্কৃতিয় সংখ্যসন্ধিক শভ | 55 |
| | રુ | মহাভারত —আদিপ্র গণপ্রগত্ত | ر
د ب |
| ন্তেরি | 36 | > 9 মংখ্য | |
| केस्ट्रं महिमा-न्यार्निस्य | 24 | भार्मिटकत सूथ हु । य | r î |
| বিক্ষান বার্জা
ত্রিপুরা ত্রাক্ষা সমাক্ষে পঠিত স্থোত্র | \$ a | व्यादिकवैविधान | |
| किन्द्राय भाषा उक्तममार्क्द्र वस्तृष्ठा | \$ } | দেহেৰ সহিত আ ্যার সম্বন্ধ | , * |
| महा जात्रज व्यामिशकी १८ व्यक्षात्र | ٠,
২২ | दिक्षाभवार्जा | : 3 |
| | ** | ১৭৩ সংখ্যা | |
| ১৬৭ সংখ্যা | | | ~ A |
| কলিকাড়৷ ব্রাহ্মসমাঞ্জের বক্তা | | ব্রাদ্ধনাকের বজুতা | 300
300 |
| मेश्वद्भव महिमा त्रमदनक्तिय ७ खोलिस्य | | বিভান শাস্ত্র | , 0 0 |
| ष्यपर्म | ৩২ | থাপ কর্মো নামৰ প্রকৃতির কি কি | |
| मरामन निः रुख उक्तिममारखन खाणम | | অনিত হট্ডে পারে ভাষার সংক্ষেপ | |
| সাহৎস্থিক ব্ড-্ড; | 57 | विनत्रभं |) o © |
| ১৮৮ সংখ্যা | | धारशारकर्व विधान | >•¢ |
| শীবালার সহিত পর্যালার সমন্ধ | তৰ | বিশ্বন বর্তি। | 5 e 5r |
| সংরক্ষিত শব | 8.0 | विधना विवाह | 55. |
| रिकान वार्डा | 69 | >৭৪ সংখ্যা | |
| | | थर्मा निका | 27.0 |
| ১৬৯ সংখ্যা | | আত্মোৎকর্ম বিপান | >>6 |
| টম্র জগতের আশ্রয় | 68 | মহভেরেজ—আনিপর্ব ৭৮।৭৯ সংগায় . | 24.3 |
| ছুটি বিভন | (3) | · _ न ाट महचा | |
| মহাভারত—মাদিপর্ব ৭৫ মধ্যায় | t t | व्यक्तिविश्नं मात्रश्मतिक व्यामामभारकत | |
| मेश्वद्राशीयना | 4.0 | সমস্ত বিৰরণ | : > ¢ |
| . >१॰ मरथा | | 59 <i>७ म</i> ध्या | |
| केंबद्दत गहिमा-क्यांजिः | 5 5 | भग्न भिका | 7.59 |
| হিন্দুসাভির পূর্বকীর্ত্তি—কুতবমিনার 🕠 | ৬৪ | পাপ কর্মে যানৰ প্রকৃতির কি কি অনিউ | |
| মহাভারত—কাদিপর্ব ৭৬ অখ্যায় | | হইতে পারে আহার সংক্ষেপ বিবরণ | 758 |
| ছিতৈষিণী সন্তার দ্বিতীয়সাধ্বসরিক সভা . | . 95 | মহাতারতআদিপর্ম ৮০৮১ অধ্যায় | 598 |

অকারাদি বর্ণ ক্রমে তত্তবোধিনী পত্রিকার কর্ম ক্রমের ১ তৃতীয় ভাগের নির্মন্ট পত্র।

| गर थेत | | পৃষ্ঠ | 1 | ंगः वा | | - |
|--|-------|------------------|---|--|---------------------|--------------|
| अधर्मा ১৬৭ | | ં હક્ | | Proc | | शृष्ठे |
| आरङ्गादकर्य विधान ১०১ | | 93 | 1 4 | 5 2 9 3 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 | | |
| षे | ••. | +2° | | (| | 2 . 2. |
| in in | • • • | 2.04 | 1 | ्र ५ १७ % | • | |
| ± | .** | 25F: | | ત્ર ેતુ છ | | >>• |
| লাধারর নহিমা — শ্রাবণে ক্রিয় ১৬৫ | • • | | | | | |
| वे व्यादर्गास्त्रम् . ५७७ | •••• | , , | তিপুরা | 700 | e 5 | ٠, |
| ব রুগনেদিয় ও খ্রাণেক্রিয় ১৬৭ | • • | 30 | ., ,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,, | 200 | | ુ ,રે |
| में स्कारिक ১५० | • • | 25 | থ কলিকাড়া | | •••• | ₹\$ |
| | • | Ø.2 | ं •• अनुसार | | • • • | 30 |
| প্রবিমাহনা ১৭১
পৃথব জগতের আত্রিয় ১৬১ | • • | 97 | ঐ কিপুর। | | , . | ጉኃ |
| _ | •• | 62 | এ কলিকাডা | 590 | | P G |
| প্রবোধামনা ১৬৯
জীবংখার মহিত | • • | a 9 | ঐ কলিকাতা অন্টাবিংশ | 398 | | >=# |
| | | | মক্রতি ও নরীচিক। | | | æ Ì |
| প্রশাসার সংক্ষ ১৬৮ | • • | ∵29 ¦ | महो∉ंद्रख १८ छारा | | | , ۵ |
| ন্ত(ক ১৬৬
ন্টি বিভাৰ ১৬৯ | | 7/3 | ৭৪ অ ধ্যা | | | 22 |
| =" | • • | ¢ > | ्वे १ ८ ≱ ष्ठ सा | ዝ ኃ৬৯ | | CC |
| দ <i>ের</i> সহিত আত্মা র | | | તો ૧૭ જારા | ष ১१० | | ው ሁ |
| FS有 | | * * | ्वे ११ खा र ा | | | ৮৩ |
| শে মিকা ১৭১ | ••• | 40 | े अन्। १३ अस्त | ष्र ५१८ | | ১২১ |
| 399 | • • | >>0 | র্ব ৮০।৮১ অধ্যায় | T 5935 | | 280 |
| t d | • • | 2/29 | হিতৈষিণী সভা | 39• | • | 9'5 |
| र्सिंदिकत्त सूर्य छ्रत्थः \cdots अवञ | | 40 | হিম্মাতির পূর্বকীতি 💥 | 390 | | ₩B |
| াপ কৰ্মে মানৰ প্ৰকৃ ব | | , | সংরক্ষিত শব | ን ነ ው ৮ | | 8. |
| केंकि अभिके हैं। एक शहरत | | 1 | | | | · |
| চাহার সংযোগ বিবরণ | | ſ | धक्क करे उन्दर्शास्त्री व | প্রিকা, জা | bracere | ten már |
| od >9৩s | | 288 | যে চাদাঁকোছিত তত্ত্বারিন | ो मरु: इ. क | Tarian n | **···* |
| জ্ঞান বার্জা় ১৬৬ | | 5 5 ∼ | তে আহিমানে প্রকাশিত হয় :- | ইছার জ | ್ಷ
ಕ್ಷಾಗ್ರಹ | ५२″
t≽ri. |
| ં . હે .: ১৬৮ | | 88 | ১ টেক শানিবার লম্ব ে: | | ··· , чече (| 1411
125 |

সক্ত প্রবেশ মাস কইতে তত্ত্ববোধিনী সভার প্রতি সভ্য প্রতি মাসে এইপত্রিকার এক শত বিনায়নের জাতা ক্রেন: